भूगोलसार

(नाना भाषाओंके भूगोल पुस्तकोंसे)

पण्डित हृषीकेश शास्त्री के द्वारा

संगृहीत

श्रीमान पञ्चनद महाविद्यालयके प्रधान

बहादुर की अनुमतिके अनुसार

प्रकाशित

Bhugol Sár

or

Outlines of Modern Geography

by

Pandit Rishi Kesh Shástri
Sanscrit teacher Oriental College

Published
under the auspices of the
Punjab University
Lahore
1883
Anjuman-i-Punjab Press-

بھوگول سار

मूल्य ।)

1st Edition
300 Copies

उत्सर्गपत्र।

मानतीय श्रीयुक्त बाबु नवीन चन्द्र राय
महाशय महोदय
करकमलयुगलेषु

बाबुजी !

मैं जिस दिन लाहोर में आया। उसी दिन से हि आप मुझ पर कृपा दृष्टि वर्षण करते रहे। मैंने जो कुछ ज्ञानादि का लाभ किया केवल आपके आश्रय से जानियेगा। अधिक लिखना व्यर्थ है क्योंकि जितना लिखूंगा आपके किए हुए उपकार का शतांश भी उससे प्रकट नहीं होगा। इसलिये उसके वर्णनसे निवृत्त होकर इस पुस्तक को आपके करकमलों में उपहार देता हूं, क्योंकि यह पुस्तक आपके आश्रय से लभे हुए ज्ञानों का एक फल स्वरूप है। आगे आप प्रमाण हैं। इति

विनयावनत
हृषीकेशशर्म्मा

विज्ञापन।

आजतक हिन्दी में जितने भूगोल विषयक पुस्तक दीख पड़ते हैं वे सब असम्पूर्ण हैं। कई एक तो इस कारण से असम्पूर्ण हैं कि उन्में सारे महादेशों का वर्णन नहीं और कई एक ऐसे छोटे हैं कि उनसे भूगोल का विस्तारित ज्ञान नहीं होता। इस अभाव को हटाने के लिये पञ्जाब महाविद्यालय के अध्यक्ष डाक्टर श्रीयुत लाइट्नर साहिब बहादुर एम.ए. इत्यादि, इत्यादि, महाशय की अनुमति ले कर मैं ने बहुत परिश्रम से नानाप्रकार के भूगोल पुस्तकों से सार ले २ कर इस पुस्तक को बनाया। मैं जानता नहीं कि यह कैसा बना है। इसलिये इसे पण्डितों के साम्हने रखता हूं। क्योंकि "हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा"।

अन्त में यह भी कहना उचित है कि मेरे प्रिय छात्र पण्डित अनन्तराम शास्त्री ने इसके संशोधन में बड़ा परिश्रम उठाया। और इसके बनाने के समय दूसरे छात्र पण्डित हरमुकुन्द शास्त्री ने भी बड़ी सहायता की ईश्वर इन दोनों को सदा ही सुख देवें। इति

ओरिएण्टल कालेज
लाहौर

हृषीकेशशर्म्मा

भूगोलसार

प्रथम अध्याय

गोलत्व निरूपण ॥

१ पृथिवी के आकार और परिमाण के विषय में।

भूगोलशास्त्र उसे कहते हैं कि जिसमें पृथिवी के स्वरूपका वर्णन किया जाता है।

पहिले पहिल लोग समझते थे कि पृथ्वी चपटी और बहुत विस्तृत है, परन्तु अब पण्डितों ने निश्चय कर दिया है कि पृथ्वी नारंगी के तुल्य गोल है (अर्थात् सम्पूर्ण गोलाकार नहीं है, दक्षिण और उत्तर की ओर कुछ चपटी सी है)।

पृथिवी की गोलाई में कई एक प्रमाण हैं १म- जब एक बड़ा जहाज़ समुद्रतीर से खुलता है तब उसका निचलाभाग पहिले अदृश्य होता है पीछे से मस्तूल अदृश्य होता है: ऐसे ही जब कोई जहाज़ तीर पर आता है तो पहले उस के मस्तूल की चोटी दिखाई देती है फिर ज्यों२ जहाज़ समीप आता जाता है त्यों२ उस का नीचे का भाग क्रमशः दिखाई देताहै। औरजब मैदान में खड़े होकर चारों ओर देखते हैं तो प्रथम दूरस्थित वृक्षों के अग्रभाग देखने में आते हैं और जैसे२ उनके समीप जाते हैं वैसे ही उनके निचले भाग मूलतक देखजातेहैंइसी तरह जब कोई बड़े पर्वतों की ओर च-

लता है तब उसको पहिले उन पर्वतों के शिखर दिखाई देते हैं फिर उनके अधोभाग दिखाई देते हैं। इन प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि पृथिवी कच्छप की पीठ की नांई मध्य उन्नत है अर्थात् देखनेवाले और दूरस्थित दृश्य पदार्थों के बीच उन्नत भूपृष्ठ रहने से दृष्टि रुक जाती है। जब सर्वत्र ऐसे ही प्रमाण मिलते हैं तो यह निश्चय होता है कि पृथिवी गोल ही है चपटी नहीं, २य– यदि कोई मनुष्य सीधा पूर्व से पश्चिम को वा पश्चिम से सीधा पूर्व को चले तो चलता२ उसी स्थानमें आपहुंचे गा कि जहां से प्रथम चला था। सन् १५१९ और १५२१ ई॰ के बीच मिलन नामक नाविक पृथिवी के गिर्द इसी तरह घूमा था और उस के पीछे डेरू, एनसन और कुक प्रभृति नाविक लोग भी पृथिवी के गिर्द घूम आये थे ३य– सूर्य्य के किरण एक ही बार सारे भूतल पर नहीं फैलते किन्तु उस के एक अंशमें पड़ते हैं; और सूरज पूरब के देशों में पच्छिम के देशों से पहले उदय होता है, इस से यह जाना जाता है कि भूतल पूरब और पच्छिम की ओर चपटा नहीं किन्तु गोल है। इसी तरह हम लोग जितना२ उत्तर की ओर चलते जाते हैं ध्रुव नक्षत्र उतना ही ऊंचा दिखाई देता है और जितना ही दक्षिण को आते हैं उतना ही वह नीचा दिखाई देता है, तो इससे सिद्ध हुआ कि उत्तरदक्षिणमें भी पृथ्वी गोल है, क्योंकि यदि पृथिवी उत्तर और दक्षिण की ओर गोल न होती तो ध्रुव तारा ऐसा नहीं दिखाई देता ४र्थ– पण्डितों ने निश्चय किया है कि पूर्णिमा के दिन पृथ्वी, सूर्य्य और चंद्रमा के बीच जब आती है तो उसकी

छाया चंद्रमा के ऊपर गिरती है जिसे छायापात वा चन्द्र ग्रहण कहते हैं (यह कुछ नियम नहीं कि इस के एक पार्श्व की छाया ही सर्वदा उस पर गिरे) परन्तु वह छाया सर्वदा ही गोल देख पड़ती है तो पृथ्वी की गोलाई सिद्ध हुई, क्योंकि गोल वस्तु से भिन्न और किसी वस्तु की छाया सदा गोल नहीं होती है ॥

हमारे पुराणों में पृथिवी को समतल और चपटी कहते है, परन्तु लल्ल प्रभृति ज्योतिर्वेत्ता पण्डितों ने पुराण मत को इस युक्ति से खण्डन किया है कि यदि पृथिवी समतल हो तो दूरस्थित वृक्षादि क्यों नहि देख पड़ते १। भास्कराचार्य्य ने भी कहा है कि पृथिवी यदि शीशे की तरह समतल होती तो इस के ऊपर घूमने वाला सूर्य्य क्यों नहीं सर्वदा देखनें में आता । हिन्दू ज्योतिषियों के मत में भी यही निश्चय हुआ है कि पृथिवी कदम्ब के फल की नाई गोलाकार है । हमारे नेत्र जितनी दूर तक फैलते हैं उतना स्थान समतल होने से सारी पृथ्वी को समतल ही लोग समझते हैं ।

पृथ्वी की गोलता में बहुतेरे और भी प्रमाण हैं

जैसाकि निम्नलिखित प्रमाण से सिद्ध होता है कि पृथ्वी प्रायः सर्वथा गोल है केवल गोल वस्तु ही हरतरह से वृत्ताकार रेखाओं से घिरे हुए दीखते हैं अब वह रेखा जो कि पृथ्वीको घेरे हुए है सदा गोल ही देख पड़ती है, किसी समुद्रस्थित किसी जहाज़ के बीच में से देखने से पृथ्वी

और आकाश को मिलानेवाली रेखा[1] सदा गोल ही प्रतीत होती है; यदि हम व्योमयान यन्त्र में चढ़ कर बहुत ऊंचा उठें, तथापि वह, पृथिवी और आकाश को मिलानेवाली रेखा गोल ही दीख पड़े गी ।

पृथ्वी वृत्ताभास[2] है और उस का व्यासार्द्ध ४००० मील के लगभग है। यद्यपि पृथ्वी सम्पूर्ण गोल नहीं, तथापि यह ऐसी वृत्ताकार है कि हम इस को साधारण भूगोल विद्या के समुदाय प्रयोजनों में वृत्त करके समझ सकते हैं ।

द्वितीय अध्याय

वृत्त के गुणादि वर्णन में

यदि हम किसी गोलक को दो भागों में विभक्त करें तो उस का एक २ भाग चाहे समान हो वा न हो, परन्तु उसकी सीमास्थित रेखा वृत्त होगी । यदि किसी गोल को केन्द्र से विभक्त किया जाय तो सीमावृत्त बहुत बड़ा होगा और अन्य वृत्त उस से छोटे होंगे, ।

किसी वृत्त के दो भाग करके उस में से एक २ का चपटा पार्श्व किसी मेज़ पर रक्खा जावे तो उसकी गोलाई के सब से ऊंचे विन्दु को उस गोलको घेरने वाले बड़े वृत्त का ध्रुव कहा जाता है, अतएव जो बड़ा वृत्त किसी गोल को घेरता है उस के दो ध्रुव होते हैं, और दूसरा बड़ा वृत्त जो उन ध्रुवों में से होकर उस गोल को घेरता है उस से पहिला बड़ा वृत्त समकोण में काटा जाता है और प्रथम बड़ा वृत्त और उस के ध्रुवों के बीच को से जाने वाले वृत्तों से जो चापदेश बनेंगे, वह एक एक ९० अंश का होता है, समुदाय

(१) अर्थात जहां पृथ्वी आकाश से मिली हुई प्रतीत होती है वह रेखा चारों ओर गोल दृष्ट होती है

(२) जो सम्पूर्ण वृत्त नहो परन्तु उसके प्रायः समान उसे वृत्ताभास कहते हैं

बड़ा हत्त समान आकार का होता है, इस से यह सिद्ध होता है कि यदि एक २ हत्त को ९० अंशो में विभक्त किया जाय तो एक अंश के इन्च, दूसरे अंश के इन्चों के बराबर होगा ।

ऊपर कही हुई बातों से सिद्ध हुआ कि पृथ्वी के दो ध्रुव हैं उन में से उत्तर में रहने वाले को सुमेरु वा उत्तरध्रुव कहते हैं और दक्षिणस्थित को कुमेरु वा दक्षिणध्रुव बोलते हैं, इस सुमेरु को फ़ारसी में "कुतब समाली" और कुमेरु को "कुतब जनूबी" कहते हैं ।

पृथिवी के दोनों ध्रुवों से समानान्तर पर एक बड़ा हत्त है जो, भूगोल के मध्य दो भाग करता है, इस रेखा को निरक्ष रेखा कहते हैं । फ़ारसी में इसको "खत इस्तवाह" कहते हैं। इस रेखा से भूगोल उत्तर और दक्षिण में समान विभक्त हुआ उत्तराई को उत्तरगोल और दक्षिणाई को दक्षिणगोल कहते हैं, इस रेखा से प्रत्येक देश वा स्थान की चौड़ाई वा अक्षांश गिने जाते हैं और उस का नियम यह है कि –

प्रत्येक हत्त के ३६० समान भाग किये जाते हैं और उन को अंश कहते हैं, इसलिये अर्द्धहत्त में १८० अंश और हत्त के चतुर्थांश में ९० अंश होते हैं। दोनों ध्रुव परस्पर १८० अंश दूर हैं और निरक्ष देश से प्रत्येक ध्रुव ९० अंश पर है, निरक्षदेश से किसी स्थान के अंशात्मक अन्तर को अक्षांश कहते हैं, यह जगह निरक्ष देश के उत्तर में हो तो उत्तर अक्षांश और दक्षिण में हो तो दक्षिण अक्षांश कहते हैं, परन्तु संस्कृत में जिस स्थान की जिस देश में

निरक्षरेखा से उस दिशा को अक्षांश कहते हैं अर्थात् निरक्ष की उत्तर दिशा में स्थान हो तो उसे दक्षिण अक्षांश और निरक्ष की दक्षिण दिशा में हो तो उसे उत्तर अक्षांश कहते हैं। निरक्षरेखा से जो २ स्थान अधिक दूर रहते हैं वहां अक्षांश अधिक होता है। निरक्षरेखा से देशों की अक्षांशगणना करने के लिये भूपृष्ठ पर उस रेखा के समानान्तर वृत्त खैंचे जाते हैं, कृत्रिम भूगोलों में सब समानान्तर वृत्त प्रायः एक दूसरे से १० अंशान्तर पर खैंचा जाता है, परन्तु इसके बीच में जो स्थान रहते हैं वे भी समानान्तर वृत्तों से बने हैं, कोई स्थान ९० अक्षांश से अधिक दूर पर नहीं रहता है। निरक्षरेखास्थित प्रदेशों में दिन और रात तुल्य होते हैं इस से जितने अक्षांश की संख्या बढ़तीजाती है उतना ही दिन और रात में अन्तर पड़ता है। यहां तक कि ध्रुवों में ६, ६ महीने दिन और ६, ६ महीने रात होती है, अक्षांशरेखाओं में एक २ अंश ६९½ मील पर होता है और उन में निरक्षरेखा से एक ध्रुव तक ९० अंश होते हैं।

जो वृत्त दोनों ध्रुवों में होकर जाते हैं उनको याम्योत्तर वृत्त अथवा मध्याह्न वृत्त कहते हैं, भूगोल के पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर घूमने से पृथिवी का केन्द्र और सूर्य इनके ठीक बीच में जब कोई मध्याह्न वृत्त आता है तब उस मध्याह्नवृत्त पर सूर्य के सन्मुख जितने देश रहते हैं उनमें मध्याह्न होता है, प्रत्येक मध्याह्न वृत्त रेखा निरक्ष और अक्षांशरेखाओं को समकोण पर काटती है और

पृथिवी को समान दो भागों में विभक्त करतीहै। उनमें से ए-क को पूर्व गोलार्द्ध और दूसरे को पश्चिम गोलार्द्ध कहते हैं। इस मध्याह्नवृत्त रेखा को उर्दू में "निस्फुन्निहार कहते हैं।

जो स्थान आपसमें एक दूसरे के सीधे उत्तर वा दक्षिण में होते हैं वे एक मध्याह्न रेखा पर रहते हैं, अर्थात् इन स्थानों में एक ही समय में मध्याह्न काल होता है। जैसा लं-डन और टिंबकटू एक मध्याह्न रेखा पर हैं, इसलिये जब लंडन में १२ बजते हैं, तब टिंबकटू में भी ठीक १२ बजतेहैं।

ये मध्याह्न रेखा तो बहुत हैं। परन्तु भूगोलविद्याके जा-नने हारे पण्डित अपने २ देशकी राजधानी वा मुख्यस्थान की मध्याह्न रेखा को प्रथममध्याह्न रेखा कहते हैं; जैसा अंग्रेज़लोग (ग्रीनविच) नामक नगर से गई हुई मध्याह्न रे-खा को मुख्य मानते हैं और फ्रान्सीसलोग पेरिस नगर से गई हुई रेखा को मुख्य कहते हैं।

स्थान की लंबाई वा देशान्तर रेखा मानी हुई मुख्य मध्या ह्नरेखा से गिनी जाती हैं, अर्थात् अंगीकृत मुख्यमध्याह्न रेखा से पूर्व अथवा पश्चिम अन्तरों को देशान्तर कहतेहैं। इन देशान्तर रेखाओं को अंशादि अर्थात् इत्यादि से मापतेहैं। प्रत्येक देश के मनुष्य अपनी २ स्वीकृत मध्याह्न रेखा से देशान्तररेखाओं को गिनते हैं। जैसा फ्रान्सीस लोग पेरिस नगरस्थित मध्यरेखा से देशान्तर रेखाओं की गण-ना करते हैं और अंग्रेज़लोग ग्रीनविच नगर से गई हुई म-ध्याह्न रेखासे देशान्तर रेखा गिनते हैं।

अब अंग्रेजी भूगोलों में देखा जाता है कि यह स्थान

१९ अंश पूर्व में है तो इस से जाना जाता है कि ग्रीनविच में से गई हुई मध्याह्नरेखा से वह स्थान १९ अंश पूर्व में है। जैसा छतरी की तीलियां अग्र में समीप रहतीं और विस्तृतभाग में दूरवर्ती रहती है वैसे ही ध्रुवों से निरक्षरेखातक देशान्तररेखा खेंची जाती हैं, निरक्षरेखा में देशान्तररेखा का एक अंश ६९ ½ मील होता है और लंडन में उस का एक अंश ४३ मील का होता है ।

सम्पूर्ण भूगोल की देशान्तर रेखा ३६० अंशों में विभक्त हुई हैं ।

सारी देशान्तररेखाओं को एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक खेंचते हैं । ये ध्रुवों के निकट थोड़ी २ दूरी पर और निरक्ष रेखा के निकट अधिक २ दूरवर्ती होती हैं, देशान्तर रेखाओं की स्थिति एक खुली हुई छतरी से भली भांति अनुमित की जायगी, छतरी का विस्तृत भाग पृथिवी का मध्य अर्थात् निरक्ष रेखा की स्थिति के स्थान की नाईं है ।

जहां आकाश और पृथिवी मिले हुए प्रतीत होते हैं, उस हद को क्षितिज बोलते हैं और हमारी दृष्टि उस हद्द से आगे नहीं जाती। मनुष्य के ठीक सिर के ऊपर जो आकाशभाग होता है उसे खमध्य कहते हैं और फारसी में इस का नाम "समत अलरास" है, जब किसी स्थान की खमध्यरेखा पर सूर्य आता है तो वह उस स्थान के लंब पर होता है । सूर्य जब किसी स्थान की खमध्यरेखा के ऊपर होता है तब उस की किरण केवल उस स्थान के चारों ओर ९० अंशतक फैलती है उस से उपरान्त अंशों में अ-

न्धकार रहता है । जो रेखा आलोक और अन्धकार के बीच होती है वह एक बड़ा वृत्त है और उसे लोका लोक बोलते हैं, । क्रान्तिमण्डल एक बड़ा वृत्त है जिस से सूर्य्य की कल्पित वार्षिक गति (अर्थात् जिस स्थान पर क्रम से सूर्य्य एक वर्ष में फिरता हुआ विदित होता है,) प्रकाशित होती है, यह स्थान निरक्षरेखा को दो बेर २३ $\frac{१}{२}$ अंश के कोन पर काटती है । मार्च की २० बीस तारीख मे, और सितम्बर की २३ तेईस तारीख में सूर्य्य निरक्षरेखा में लंब होता है । इसी समय सारी भूमि में दिन रात तुल्य होते हैं । इस वृत्त को अंग्रेज़ी में इक्लिप्टिक कहते हैं, क्योंकि जब चन्द्रमा इस पर वा इस के समीप आता है तो अवश्य ही ग्रहण होता है । निरक्षरेखा के दोनों ओर, और क्रान्तिमण्डल के स्पर्श करने वाले दो समानान्तर वृत्त हैं, इन को अयनान्तवृत्त वा क्रान्तिसीमावृत्त कहते हैं, क्योंकि जब सूर्य्य अपनी कल्पित गति से इन्में से एक के ऊपर आता हुआ जानाजाता है तब उस की वह कल्पित गति फिर आती है अर्थात् आगे नहीं बढ़ती है किन्तु पीछे हट आती है । इन्में से उत्तरस्थित को कर्क और दक्षिणस्थित को मकररेखा बोलते हैं । फारसी में क्रम से इन्को "खति सर्तान" और "खति जदी" बोलते हैं । ये क्रान्तिमण्डल को स्पर्श करती हैं और इन्में से एक २ निरक्षरेखा से २३ $\frac{१}{२}$ अंश के अन्तर पर रहती हैं और इन्के बीच जो देश हैं वे बहुत गर्म होते हैं उन्हें उष्णकटिबन्ध कहते हैं ।

यह पहले कह चुके हैं कि पृथ्वी के अक्ष की दोनों सीमाओं को ध्रुव कहते हैं और उन्में से उत्तरीय को उत्तरध्रु-

व और दक्षिणीय को दक्षिणध्रुव बोलते हैं। उत्तरध्रुवसे २३ १/२ अंश तक और मध्यरेखा से ६६ १/२ अंशकी दूरीपर उत्तरध्रुव मण्डल नामक एक वृत्त है। इसी तरह मध्यरेखा से ६६ १/२ अंश कीदूरीपर और दक्षिण ध्रुव से २३ १/२ अंशतक दक्षिणध्रुवमण्डल नामक एक वृत्त है और इन्को फारसी में "कुब्बतबी" बोलते हैं। जब सूर्य्य कर्करेखास्थितदेशोंके ठीक ऊपर आता है तब उसकी किरण उत्तरध्रुव को लंघ कर २३ १/२ अंश आगे बढ़ती हैं और तब दक्षिणध्रुव मण्डल स्थित सब स्थान अन्धकारमय होते हैं इसी कारण ध्रुवों में ६ महीने दिन और ६ महीने रात होती है।

तृतीय अध्याय

कटिबन्धों का वर्णन

अब पृथिवी के कटिबंधों का, जिन्को फारसी में अकली कहते हैं, वर्णन किया जाता है। पृथिवी तल ५ कटिबन्धों में विभक्त है, एक उष्ण कटिबन्ध, दो समकटि बन्ध और दो शीतकटिबन्ध।

पृथिवी के मध्यभाग को, जो, कर्क और मकर रेखाओं के बीच विस्तृत है, उसे उष्णकटिबन्ध कहते हैं। यह स्थान निरक्षरेखा के उत्तर और दक्षिण इन दोनों पार्श्वमें १६०० मील व्याप्त है। वरस के किसी अंशमें जब सूर्य्य इस कटिबन्ध के अन्तर्गत देशोंमें रहने हारे मनुष्यों के ठीक सिर पर आता है, तब यहां बड़ी गर्मी होती है। सम्पूर्ण वरस भर ही यहां दिन और रात समान होते हैं अर्थात प्रत्येक दिन सूर्य्य प्रातःकाल ६ बजे उदय

होता है और सन्ध्या को ६ बजे अस्त होजाता है, आफ्रिका और दक्षिण आमेरिका बहुधा उष्णकटिबंध के अंतर्गत हैं। उत्तर समकटिबन्ध उष्णकटिबंधकी उत्तरसीमासे ३००० मील तक उत्तर में विस्तृत है। यह स्थान कर्करेखा से उत्तरध्रुवमण्डल तक विस्तृत है, इसके अन्तर्गत प्रदेशों में सूर्य्य कभी ठीक सिर पर नहीं आता है इसलिये उष्णकटिबन्ध की नाईं यहां बहुत गर्मी नहीं होती, प्रायः सम्पूर्ण यूरोप और एशिया के ४/२ अंश और उत्तर आमेरिका के भी ४/५ अंश इस कटिबन्ध के अन्तर्गत हैं॥

उत्तरशीतकटिबन्ध उत्तरगोल का अन्तिमभाग है, और उत्तरध्रुव से १६०० मील के बीच जितने स्थान हैं सब इस के अन्तर्गत हैं। इस कटिबन्ध के बीच बरस के किसी ऋतु में सूर्य्य एक बार ही अदृश्य होता है यहां का जलपवन बहुत ठंढा है, प्रायः सारे बरस में यहां का समुद्र और भूमि बर्फ और हिमबिंदुओं से ढंपी रहती है। एशिया के और आमेरिका के सम्पूर्ण उत्तरभाग उत्तरशीत कटिबंध में आगए हैं।

दक्षिण समकटिबंध उष्णकटिबंध की दक्षिणसीमासे तीन हजार (३०००) मील विस्तृत है, अर्थात् यह मकररेखा से दक्षिणध्रुव मंडल तक विस्तृत है। इस की प्रकृति उत्तरसमकटिबंध की नाईं है। आफ्रिका का १/६ अंश, दक्षिण आमेरिका का १/२ अंश और आष्ट्रेलिया का १/५ अंश इसके अन्तर्गत है. दोनों समकटिबन्धों में सारी पृथ्वी के आधे से भी अधिक अंश आगया है।

दक्षिणशीतकटिबंध दक्षिण गोल की शेषसीमापर है। इस की प्रकृति उत्तर शीतकटिबन्ध की नाईं है, और यह भी उस के तुल्य १६०० मील विस्तृत है और यहां भी वर्ष के किसी समयमें सूर्य्य एकवारही अदृश्य होताहै।

चतुर्थ अध्याय

अब कृत्रिमभूगोल बनाने की रीति और उस पर जोस्थान हैं उन्के अक्षांश और देशान्तर के चिह्न करने की रीति इत्यादि आवश्यक विषय लिखे जाते हैं। कृत्रिम गोल किसी धातु कीतार के आधारमें रहता है। यह तार उसगोलके बीच में से केन्द्र होकर जाती है। और इस के दोनों छोर एक पीतल के चलवृत्त में जो दो छेर होते हैं, उस में लगे रहते हैं। इस पीतल के चलवृत्त को आधारवृत्त कहते हैं और उस तार को अक्षकहतेहैं ऐसा एक गोल बनाकर उस पर किसी एक छल से उत्तरध्रुवका एक चिह्न करके उसकी विपरीतसीमामें गोल पर दूसरा एक दक्षिण ध्रुव का चिन्ह करना। फिर उन दोनों ध्रुवों से समानान्तर पर एक निरक्षरेखा अंकित करके सोलह समानान्तरवृत्त एक दूसरे से १० अंश के अन्तर पर खींचना और १२ मध्याह्नरेखा एक दूसरी से १५ अंश दूरी पर खींचना, और मध्याह्नरेखाओं मे से किसी एक को मुख्य रेखा अर्थात् लंडन की मध्यरेखा ठहराना।फिर कृत्रिम गोल पर इस मुख्यरेखा के किस विन्दुपर लंडन का चिन्ह किया जावे इसका विचार करना चाहिये यदि पृथ्वी के पृष्ठ पर लंडन से उत्तरध्रुवके अन्तर मापाजातातो

अतिसुगमता से उस रेखा पर लंडन का चिह्न कियाजाता, परन्तु आजतक कोई मनुष्य उत्तर ध्रुव नहीं जासका, अतएव उस विन्दु को ठहराने के लिये जो आकाश से सम्बन्ध रक्खे ऐसे किसी दूसरे प्रकारको यहां अवश्य विचारना चाहिये। यह बात कह चुके हैं, कि पृथिवी की गति निश्चय है, और यह पृथिवी अपने अक्ष पर प्रतिदिन एक बार घूमती है; तब पृथिवी के केन्द्र से ध्रुवस्थान में हो करजाने वाली रेखा के सामने जो कोई नक्षत्र होता, और सब घूमते हुए नक्षत्र मेंसे वही एकस्थिर देख पड़ता है, उसनक्षत्रको ध्रुव नक्षत्र कहते हैं। पृथिवी के निरक्षदेश और ध्रुवों के बीच में जो देश ध्रुव के बहुत पास होगा वहां ध्रुव तारा अधिक ऊंचा देख पड़ेगा। अब ध्रुवताराकी ऊंचाई, एक वृत्त में, प्रत्येक क्षेत्रतत्त्वज्ञ माप सक्ता है और इस ऊंचाई में जितने अंश होते हैं वे ही निरक्षसे भूमि पर अक्षांश हैं। इसी प्रकार से अथवा इसके सजातीय और किसी प्रकार से स्थान के अक्षांश ज्ञात होते हैं। परन्तु केवल अक्षांशों से प्रत्येकस्थान का निश्चय नहीं होता,। इसलिये पृथिवी के पृष्ठ पर जो स्थान हैं उन्के देशान्तरजानने की रीति का अवश्य विचार कर्ना चाहिये।

सब वृत्तों की परिधि ३६० अंश में विभक्त होती है, इसलिये पृथिवी की परिधि भी ३६० अंशों में विभक्त है। यह पहले कह चुके हैं कि पृथिवी अपने अक्ष पर २४ घंटों में एक बेर घूम जाती है, इससे यह जाना जाता है कि एक घंटे में इसके १५ अंश घूमते हैं। और ६० मिनट का

एक घंटा होता है अतएव ४ मिनट में इसका एक अंश घूमता है । अब यह निश्चय हुआकि जो स्थान मुख्यरेखा से पूर्व मे १५ अंश पर हैं ये सब मुख्यरेखा से एक घंटा पहले सूर्य्य के नीचे आते हैं अर्थात् वहां तब मध्याह्न होता है और जो स्थान मुख्यरेखा से पूर्वमें एक अंश पर हैं; वहां ४ मिनट पहिले मध्याह्न होता है; इसी तरह जो स्थान मध्यरेखा से पश्चिम में १५ अंशपर हैं वहां मुख्यरेखा-स्थितस्थानों से एक घंटा पीछे मध्याह्न होता है इत्यादि

अब जिस स्थान का देशान्तर ठहराना है, उसका मध्याह्नकाल वेध से निश्चय कर और उसी क्षण मे मुख्यरेखास्थितदेशों का भी काल जान कर सुलभगणित से इष्ट स्थान का देशान्तर जान लेना ।

इस में इतना ही करनी चाहिये कि इष्ट स्थान का मध्याह्न काल और लंडन का मध्याह्नकाल इन दोनों का अंतर जान कर उस के चार २ मिनट में एक २ अंश गिनना और वे पूर्व वा पश्चिम में जैसे होंगे वैसा देशान्तर कहना जैसा यदिनिर्दिष्ट नगर के मध्याह्न काल में लंडन में ११ बजे हैं तो निर्दिष्ट नगर में १५ अंश पूर्व देशान्तर जानना और जो लंडन में एक बजा हो तो निर्दिष्ट नगर में १५ अंश पश्चिम देशान्तर होगा ॥

मानचित्रबनानेकीरीति

कृत्रिमभूगोलमें पृथिवीस्थितदेशोंका सम्पूर्ण चित्र नीचे लिखे हुए उपायोंसे बन सक्ते हैं ।

कृत्रिम भूगोलपर पहले अक्षांश और देशान्तर रेखा खेंचीजाती हैं। इस्के पीछे कलकत्ता, कुमारी वा कन्या अन्तरीप और ऐसे और २ स्थान, जिन्के देशान्तर और अक्षांश विदित हुए हैं, उस कृत्रिमभूगोलपर यथा स्थानमें चित्रितकिएजाते हैं। जिनस्थानों का अक्षांश ठीक ठीक विदितनहीं उनका स्थिति स्थान केवल अन्दाजेसे चित्रितकरना होता। जिनदेशों के पर्वत और प्रधान नगरों के अक्षांश और देशान्तर भली भांति विदित हुएहैं उनदेशोंके और औरस्थानोंकीस्थिति जञ्जीर वा कोणमापक यन्त्र के द्वारा नापनेसे जानीजातीहै। स्कूलोंमे जोकृत्रिम भूगोलोंका व्यवहारहोताहै वे सब इसीरीतिसे बनतेहैं। अंग्रजी जहाज़ी लोगोंने प्रायः समुद्रय देश और द्वीपोंके कनारे के अक्षांश और देशान्तर विदितकिये हैं, भूगोलशास्त्र जानने वाले साधारणतः उन्हीके अनुसार उन कनारे ओंकी स्थिति चित्रितकरतेहैं। एशिया, आफरिका और अष्ट्रेलियाआ महाद्वीपोंके अन्तर्गत स्थानों की स्थिति सम्पूर्ण शुद्धरूपसे चित्रित नहीं होतीहै।

ऊपर यह सिद्ध कियागया कि कृत्रिम भूगोल पर किसी देश का नक्शा सम्पूर्णरूप बना जासक्ता है। परन्तु उन कृत्रिम भूगोलोंको एकस्थानसे दूसरे स्थानमें ले जानेमें बड़ापरिश्रम होताहै इसलिये कृत्रिमभूगोलोंका चलन बड़ा नहीं कियाजाता है और इस्के स्थानपर हम बड़े २ मानचित्रवा नकसेओंका व्यवहार करतेहैं, जिनमें पृथिवी के समुदय वा एक २ अंश विस्तृत रूपसे चित्र होते हैं।

मानचित्रमें पृथिवीके किसी छोटे अंशको, जैसाकि किसी गाँवको, चित्रितकरनेमें पृथिवीकी गोलाई पर कुछ ध्यान नहीं दिया जाताहै, अथवा यदि कृत्रिम भूगोलसे इङ्गलण्ड वा और किसी छोटे देशका नकसा उखाड़ लिया जावे तो भी उसनकसेको बहुत सुगमतासे सीधा औरचपटा कर सके हैं। परन्तु कृत्रिम भूगोल से यदि आधी पृथिवीका नकसा उखाड़ लियाजावे तो उसको सीधा वा चपटा करनेमें वह अवश्य ही फटजायेगा ।

वस्तुतः पृथिवीका कोई अंश सम्पूर्णरूप चपटानहीं इसलिये हमारे मान चित्र समुदय सम्पूर्ण ठीक नहीं, कृत्रिम भूगोल ही पृथ्वीकी ठीकठीक प्रतिमाहै ।

एक स्थानका समय जान कर दूसरे स्थान के समय जानने की रीति ॥

जब किसी नगर में दो वा चार घंटे बजे हों तो उससे जोनगर पूर्व वा पश्चिम होतो वहां क्या बजा होगा, इस के जानने की रीति पहले ही एक प्रकार कही गई; जैसा कि पूर्वोक्त वर्णन से सबको यह ज्ञान हुआ कि पृथिवी एक घंटे में १५ अंश और चार मिनट में एक अंश अपनी परिधि का घूमती है।इस कारण जो देश पूर्व में १५ अंश होगा वहां एक घंटा पहिले सूर्योदय होगा इत्यादि,

अब इतना ही कहना चाहिये, कि पूर्व के नगर में जितने घंटे बजे हों वहां से पश्चिम का नगर जितने अंशों पर हो उस अंतर के अंशों को घंटा वा मिनट बना कर पूर्वोक्त घंटों में से घटाने से पश्चिम के नगर का उसी समय के घंटों

का प्रमाण निकल आवेगा, और पूर्व के नगर में उतने घंटे। बढ़ाने से स्थिर होगा क्योंकि वहां सूर्य पहले उदय होचुका है जैसे लंडन में जब १२ बजे होंगे उसी समय कलकत्ते में १२ के ऊपर ५ घंटे और ५३ मिनट बजे होंगे। कलकत्ते और लंडन दोनों नगरों में ८८ देशान्तरांश का अन्तर है।

पंचम अध्याय

पृथिवी की प्रकृति का वर्णन।

पृथिवी की प्रकृति निरक्षरेखा के समीप बहुत गर्म और उससे ध्रुवों की ओर क्रम २ से शीतल है। पृथिवी की प्रकृति केवल निरक्षरेखा की दूरी पर नियत नहीं किन्तु समुद्रतल से स्थानों की ऊंचाई पर भी नियत है।

उष्णकटिबन्ध के उच्च देशों में भी जलपवन बहुत मनोरञ्जक है; यहां तक कि निरक्षरेखा में यदि हम लोग समुद्रतल से ३ मील ऊंचे जावें तो सर्वदा विराजमान हिमराशि देखी जाती है; निरक्षरेखा के उत्तर वा दक्षिण के ओर हम लोग जितने ध्रुवों के समीप पहुंचते हैं उतने ही हिमराशि की स्थिति नीचे आती है और अन्त में समुद्र से मिलित हुई है॥

लंडन नगर स्थित अक्षांश में हिमराशि की स्थिति समुद्रतलसे १½ मील की ऊंचाई पर है। अतएव यदि लंडन के समीप १½ मील ऊंचा कोई पर्वत होता तो उस का शिखर सर्वदा ही हिमसे शोभित होता।

किसी देश की प्रकृति समुद्र और वायुवेग के आधीन भी होती है, इसकारण जो जल उष्णकटिबंध में सूर्य के

तपेते हैं ये यूरोप के पश्चिम समुद्र में समुद्र की ओर बहते हैं और उन्के ऊपर जो गर्मवायु चलती है वह ब्रिटिश द्वीप और फ्रान्स के पश्चिम तीर प्रभृति स्थान को उस अक्षांश स्थित और स्थानों से गर्म रखती है, ।

उष्णकटिबन्ध में पूर्वी वा वाणिज्यवायु (ट्रेडविंड) सम्पूर्ण बरस में चलती रहती है, इसलिये इसके अन्तर्गत महाद्वीप के पूर्व की ओर पश्चिम से अधिक वर्षा होती है, उत्तर सम कटिबंध में एक दक्षिण पश्चिमी वायु सर्वदा बहती है और दक्षिण सम कटिबन्ध में उत्तर पश्चिमी वायु नियत बहती है इसलिये इन दोनों कटिबंधो के बीच महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में जलवायु शीतल और आर्द्र होता है। किसी देश के जिस अंश में सर्वदा मेंह होता है उस के समीपस्थ पर्वत भूमि को स्वभावसे ही कुछ तिर छी रखते हैं

यह साधारण नियम है कि द्वीपसमूह महाद्वीपस्थित प्रदेशों के साथ एक रूप सामुद्रिक पवन के अधीन होकर भी उन्के समान उष्ण वा शीतल नहीं होते ॥

ऋतुओं का वर्णन

पृथिवी का उत्तर ध्रुव आकाश के उत्तर ध्रुव के सम्मुख रहता है और पृथ्वीका अक्ष इस की कक्षा पर ऐसो एक विशेष प्रकार से रहता है कि जिस से ऋतुओं का परिवर्तन होता है। यह अक्ष ठीक कक्षा पर तीन तरह से रह सकता है प्रथम तो कक्षा में समान्तराल रूप से दूसरे उसपरलम्ब, और तीसरे तिरछा,

यदि कक्षा में पृथिवी का अक्ष समानान्तर होता तो गर्मी की ऋतु में, भूगोलार्द्ध पर कई सप्ताह तक रात न हुआ करती और शीतकाल में कई सप्ताह दिन न होता, इस पक्ष में ऋतुओं का परिवर्तन और दिन रात की न्यूनाधिकता न हुआ करती, ये दोनों पक्ष अच्छे नहीं हैं तो ज्ञात हुआ कि पृथिवी का अक्ष उस के कक्ष पर तिरछा है, इसलिये आधा बरस अर्थात् ६ महीने तक उत्तर भूगोलार्द्ध में दक्षिण भूगोलार्द्ध से अधिक गर्मी रहती है, अवशिष्ट ६ महीने दक्षिण भूगोलार्द्ध में गर्मी होती है और दिन भी ६ महीने तक बढ़ता है और ६ महीने घटता है जिन दिनों में उत्तरध्रुव जो हमारे समीप है सूर्य्य के सन्मुख नहीं रहता उन दिनों में दोपहर के समय भी सूर्य्य आकाश के मध्य से नीचे जान पड़ताहैऔर उसकी किरण सम्पूर्णदिन उत्तर भूगोलार्द्ध पर तिरछी पड़ती हैं, इस कारण से उत्तर भूगोलार्द्ध में उन दिनों सर्दी होतीहैऔर रातें बड़ी होती हैं और दिन छोटा होता है, इसी तरह जब उत्तर ध्रुव सूर्य्य के साम्हने होता है तो उन दिनों में उस की किरण हम पर लंब अर्थात् सीधी होके गिरती हैं इसलिये उस समय में गर्मी होती है, इस से ज्ञात हुआ कि जितना सूर्य्य हमारे अतिशय ह्रस्व और सिर पर लंब रूप से दीख पड़ता है उतनी उसकी किरनें हम पर सीधी पड़ती हैं —

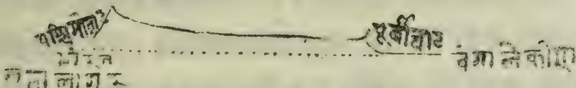
षष्ट अध्याय ॥

पर्वत और उच्च समतल देशों के स्वरूप प्रदर्शनमें पृथ्वी के विस्तृत अंशों के मानचित्र,(प्राजेकशन)

अर्थात् परिलेख की सहायता से बहुत ही ठीक बनते हैं जिन के द्वारा हमको देश और समुद्रों के अवस्थान प्रायःवि दित होजाते हैं । और छोटे अंशों के मानचित्र सम्पूर्ण ठीक होते हैं । परिलेख के आश्रय से भ्रम बहुत थोड़ा ही होता है । इस के विना जो मानचित्र खेंचा जाता है वह ठीक नहीं बनता उस से सर्वदा बहुत भ्रम उत्पन्न होता है । क्योंकि मानचित्र का यह कार्य्य है कि देशों की ठीक २ अवस्थिति दिखलावे, परन्तु समुद्र से जमीन की किसी प्रकार से उच्चता न दिखलाने से ऐसा नहीं होसक्ता । किसी देश की समुद्र से उच्चता के किसीप्रकारके ज्ञान से और उस के पर्वतों की संस्थिति के बोध से हम को उस देश के जलवायु और उर्वरतादि के विषय में भली भांति ज्ञान होता है । साधारण मानचित्रों में निदर्शित काली रेखाओं से सदा केवल पर्वतों का स्वरूप प्रदर्शन किया जाता है, पर्वतश्रेणी की स्थिति के अनुसार खेंची जाती है । जैसा भारतवर्ष के साधारण मानचित्र में हम देखते हैं कि उस के पश्चिम कूलके समीप एक लंबी काली रेखा से पश्चिम घाट पर्वतश्रेणी दिखलाई गई है और पूर्वकूल में उस से थोड़ी काली रेखा से पूर्वीघाट पर्वत श्रेणी दिखलाई गई है । इस से पश्चिम से पूर्व तक अर्थात् भारत महा सागर से बंगाले की खाड़ी तक भारतवर्ष की ऊंचाई का ज्ञान निम्नलिखितरूप होता है —

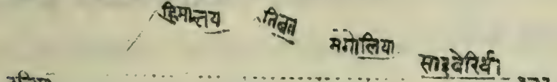


परन्तु विचार करके देखने से यहां पर्वतश्रेणी का जैसा आकार प्रदर्शित हुआ वास्तव से ऐसा नहीं होता साधारणतः पर्वतों की श्रेणी एक पार्श्व में ऊंची होती है और एक पार्श्व में क्रमशः प्रवण होती है, तो अब भारतवर्ष के उस प्रायद्वीप का स्वरूप नीचे लिखे हुए चित्र के समान समझाजाता है



"इस देश का आकार ठीक इस प्रकारका है" यह हम इस हेतु से भी अनुमान कर सकते हैं कि नदियें पश्चिमघाट पर्वत से निकल कर बंगाले की खाड़ी में गिरती हैं। पूर्वीघाट एक ऊंचा पहाड़ है, जिस पर हम इस के पूर्व दिशा में स्थित समतल क्षेत्रों से चढ़ते हैं; परन्तु जब हम इस के शिखर पर आते हैं तब यह विदित होता है कि हम एक उच्च समतल क्षेत्र पर चढ़े हैं जो पश्चिम की ओर क्रमशः ऊंचा है,

ऐसा ही यदि हम कलकत्ते से उत्तर महासागर तक विस्तृत भूभाग का स्वरूप दिखलाएं तो नीचे लिखे हुए चित्रके समान होगा



८ इस चित्र में विद्यार्थियों को समझना चाहिये ऊंचाई

की माप यहां कुछ अति रिक्त कीगई है, धरातल में जब एक इंच में ५०० मील समझा जाता तब इसकी ऊंचाई में एक इंच में पांच मील समझा जायगा)

आजकल किसीचिपटा मानचित्रसे जितना होसके समुद्रतलसे पृथ्वीके हर प्रदेशकी ऊंचाई देखतेही ठीकठीक अनुमान करनेकेलिये निदर्शित मानचित्र बनाने की नाना-रीतिआं आविष्कृतहुईहैं । परन्तुउन्मेंसे कोई ऐसी अच्छी नहीं कि उसे आदर्शकियाजावे । उनरीतिओंके बीच जो अच्छीहैं, उन्मेंसे "कन्टोरलाइन" नाम । अर्थात्(सीमारेखासंक्षिप्त) रीति अधिक व्यवहृतहोतीहै । इसरीतिमें समुद्रय मानचित्र पर ऐसी एकरेखा खेंची जातीहै जो समुद्रतलसे ५०० फुट ऊंचे स्थानोंमेंसे जाती है, दूसरी रेखा ऐसी खेंची जातीहै जो १००० फुट ऊंचे स्थानोंमेंसे होकर जातीहै,औरतीसरीरेखा१५०० फुट ऊंचे स्थानोंमेंसे होकर जाती है । इनमानचित्रोंमें हम देखतेही जोस्थान समुद्रतलसे ५०० फुटकी अपेक्षा नीचा वा ऊंचाहै यह जान सक्तेहैं, । और अभ्यास के बलसेउसस्थानकाप्राकृतिक स्वरूपभी जानसक्तेहैं ।

साधारणमानचित्रोंमें ऐसानहीं होताहै । उन्में केवल पर्व्वतोंको निदर्शनकियाजाताहै जैसाकि तिब्बतसे हजारों फुट निम्न भूलतार्ई पर्व्वतको रेखासे निदर्शितकरते हैं और तिब्बतको नहीं ।

द्वितीय भाग
जल और स्थल के
वर्णन मे
परिभाषा

अब हम पृथ्वी के प्राकृतविभागों का वर्णन करना चाहते हैं, परन्तु उन के पहिले कितनी एक परिभाषा ओं का जान बहुत ही आवश्यक है, इसलिये पहिले उन परिभाषा ओं का वर्णन करते हैं ।

१। पृथिवी के ऊपर कुछ स्थल और कुछ जल अर्थात तीन भाग जल और एक भाग स्थल है । आकार की भिन्नता के हेतु उन भागों का नाम भी भिन्न है. जैसा कि नीचे लिखे जाते हैं जो पृथिवी के खण्ड चारों ओर जल से घिरे हैं उन को द्वीप वा टापू कहते है, (फारसी में जज़ीरा कहते हैं,) यदि वह द्वीप बहुत बड़ा हो तो उसे महाद्वीप बोलते हैं ॥

२। बहुत बड़े भूमिखण्ड जिस में अनेक राज्य होते हैं और नाना प्रकार की जाति के लोग रहते हैं उसे महाद्वीप वा महादेशबोलते हैं और इसे उर्दू में बर्रीआज़म बोलते हैं ।

३। जिस भूखण्ड के तीन ओर जल है उसे प्रायद्वीप बोलते हैं. और फारसी में जज़ीरा नमाह ।

४। जो भूखण्ड क्रमशः सूक्ष्म होकर समुद्र में दूर तक चला जाता है उसे अन्तरीप कहते हैं । फारसी में रास ।

५। जो संकीर्ण भू भाग दो बड़े विस्तृत भूभागों को मिला देता है । उस का नाम डमरूमध्य है । फारसी में ख़ा-

कनाय बोलते हैं ॥

६। समुद्र के तीरवर्त्ती स्थान को उपकूल बोलते हैं, और फारसी में साहिल,

७। जो ऊंचे और पत्थरीले भूभाग सर्वप्रकृतिमसेटंचे रहते हैं उन्को हिन्दी में पर्वत, और फारसी में कोह कहते हैं।

८। छुद्र पर्वतों को पहाड़ी बोलते हैं; जिन पर्वतों से समय २ धूम, अग्निशिखा और धातु निकलते हैं, उसे ज्वालामुखी पर्वत बोलते हैं; और फारसी मे कोह आतश खिजर,

९। जो पर्वतसमूह एक दूसरे से संयुक्त होकर दूर तक चले जाते हैं, उन्हें पर्वतश्रेणी बोलते हैं; और फारसी में सिलसिलश्र - पहाड़ ।

१०। पर्वतों के नीचे की भूमि को उपात्यका वा तराई कहते हैं ।

११। जो भूमि विस्तृत और समतल होती है, उसे समतलक्षेत्र बोलते हैं; फारसी में "मैदान" बोलते हैं। ऐसी भूमि यदि आसपास की अन्यभूमि ओं से ऊंची हो तो उसे उच्चसमतलक्षेत्र बोलते हैं; और फारसी में सतामर्त्फा कहते हैं । (१)

१२। पर्वतों के बीच में से जो संकीर्ण मार्ग निकलता है उसे घाटी बोलते हैं ।

१३। जिस भूखण्ड में केवल रेत ही होती है और वृक्षादि उत्पन्न नहीं होते उसे मरुभूमि वा ऊषरक्षेत्र कहते हैं; और फारसी में उस का नाम बीया बान है ।

(१) उच्चसमतलक्षेत्रों को संस्कृतमे मालक्षेत्र कहते हैं।

१४। बड़े से बड़े जल के भाग को महासागर कहते हैं; और फारसी मे उस का नाम बहर है।

१५। जो जलभाग महासागर से छोटा होता है और प्रायः तीन ओरस्थल से घिरा होता है उसे समुद्र वा सागर बोलते हैं। जो समुद्र किसी एक दिशामें स्थल पर बहता हुआ चला जाता है, उसे खाडी कहते हैं, जिस खा डी का मुंह चौड़ाहोता है उसे खलीज बोलते हैं।

१६। जो संकीर्ण जल भाग दो बड़े जल भागों को मि ला देता है उसे प्रणाली वा मुहाना कहते हैं।

१७। जलभाग चारों ओर स्थल से घिरा हो उसे झील कहते हैं।

१८। जो जल किसी पर्वत वा पहाड़ी वा झील में से निकल कर समुद्र में प्रविष्ट होता है उसे नदी कहते हैं; और फारसी में दर्या।

१९। जो नदी किसी नदी में से निकल कर उस्से किसी भिन्न दिशा में बहतीहुईसमुद्र में जा गिरती है उसे शा- खा नदी कहते हैं।

२०। और जिस नदीका पानी और किसी बड़ी नदी में गिरता है, उसे तो पर वा सहायक नदी कहते हैं।

जब नदी की शाखें इस प्रकार से निकलती हैं, कि उन से एक एक तिकोना देश बनता है, तो उस देश को डेल्टा कहते हैं। इस नाम का कारण यह है कि, यूनानी में त्रिभुज कोनाई एक अक्षर है उस का नाम डेल्टा है।

महाद्वीप और महासागर

समस्त भूमण्डल दो बड़े महाद्वीपों में विभक्त है। एक पूर्व महाद्वीप और दूसरा पश्चिम महाद्वीप इन दोनों को क्रमशः प्राचीन और नवीन महाद्वीप भी कहते हैं,

जिस महाद्वीप में ऐशिया यूरोप और आफ्रिका ये तीन महादेश हैं उसे प्राचीन वा पूर्व महाद्वीप बोलते हैं और जिस में उत्तर और दक्षिण आमेरिका ये दो महादेश हैं उसका नाम पश्चिम वा नवीन महाद्वीप है। किसी २ भूगोलवेत्ता ने आष्ट्रेलिया, पालिनिशिया प्रभृति द्वीपसमूहों को ओसनिया वा सामुद्रिक देश नाम रख के एक स्वतन्त्र महाद्वीपभी कहा है। पूर्व महाद्वीप बहुत बड़ा है इस का क्षेत्रफल ८०००००० अस्सीलाख वर्गकोस है और इस की मनुष्यसंख्या ७७८०००००० है॥

पश्चिम महाद्वीप का क्षेत्रफल चालीस लाख वर्गकोस है और इस की मनुष्यसंख्या ५८०००००० है, ।

इसे इसलिये, नवीन महाद्वीप कहते हैं कि थोड़े दिन हुए, इस को कलम्बस नामक नाविक ने प्रकट किया है (1)

पृथिवी में महासागर एक ही है परन्तु स्थानकी विभिन्नता से यह पांच पृथक २ नामों से प्रसिद्ध हैं ।

१ यथा आटलाण्टिक महासागर
२ स्थिर महासागर
३ भारत महा सागर
४ उत्तर हिम महा सागर
५ दक्षिण हिम महा सागर

१ अट्लाण्टिक महासागर,

यह महासागर उत्तरहिममहासागर से लेकर दक्षिण हिम महासागर तक लंबा और इस की लंबाई ४५०० कोस है। इस की चौड़ाई सब स्थानों में समान नहीं है। मोराको उपकूल से फ्लारिडा प्रायद्वीप तक इस की चौड़ाई २०५० कोस, ब्रेजिल और सिएरालियोन के बीच ८५० कोस है, और ग्रीन लेण्ड और नार्वे के बीच ४५० कोस है।

इस का क्षेत्रफल ६५०००० वर्ग कोस है।

स्थिर महासागर —

प्रसिद्ध नाविक मगीलन साहिब पृथिवी भ्रमण के समय जब इस में पहुंचे तो शान्तस्वभाव देखकर इस का नाम स्थिरमहासागर रक्खा।

यह महासागर, अन्य महा सागरों से बड़ा है, यह एशिया के पूर्व से आमेरिका पर्यन्त विस्तृत है, इस का क्षेत्रफल १२०००००० वर्गकोस है।

भारत महा सागर

यह एशिया के दक्षिण में कर्कट वृत्त से दक्षिणध्रुव मण्डल तक विस्तृत है। और इस का क्षेत्रफल३२५०००० वर्गकोस है।

उत्तर हिममहा सागर

इस का आकार गोल है। यह उत्तर ध्रुव मण्डल में है इसका जल बहुत गम्भीर नहीं है। नार्वे और आइसलेण्डद्वीप के मध्य से यहां जहाज का प्रवेश होता है अन्यमार्ग से यहां जहाज प्रवेश नहीं कर सक्ता क्योंकिव-

ह सागर बरफ से ढंपा रहता है ।

दक्षिण महासागर

इस को प्रायः सब लोग नही जानते; इस का जल अ-तिशीतल है; इस के मध्यस्थितद्वीप समूह और इस के उपकूल में बहुत आग्नेय वा ज्वालामुखी पर्वत हैं। उत्तर और दक्षिण महासागरों का परिमाण आजतक विशेष करके परिज्ञात नहीं हुआ है ॥

एशिया

यह महादेश और २ महादेशों से बड़ा है, इस में सब से अधिक मनुष्य वास करते हैं। यह यूरोप से पांच गुणा बड़ा है और प्राचीन महाद्वीप की पूर्व दिशा मे अवस्थित है।

इस के उत्तर में उत्तर महासागर, पूर्व में स्थिर महासागर, दक्षिण में भारत महासागर, पश्चिम में लालसमुद्र, स्वेज का मुहाना, भूमध्य सागर, कालासागर काकाशस, पर्वतश्रेणी, कास्पियन सागर, यूराल पर्वत और यूराल नदी है; इन में से स्वेज पहले उमरूमध्य था और एशिया को आफ्रिका से मिलाता था, परन्तु थोड़े दिन हुए कि यह मुहाना बनायागया और भूमध्यसागर को लाल सागर से मिलाता है। एशियाकी पश्चिम सीमापर हमें यह सन्दिग्ध होताहै कि —

१। स्वेज के मुहानाको सीमाविभाजक बनाकर हमने आफ्रिका को अब एक सम्पूर्ण पृथक् द्वीप बनाया। परन्तु स्वेज का मुहाना मिसर राज्य की ठीक सीमा नही है।

२। काकाशस को सीमा विभाजक रूप से निर्देश कर हम एक भौगलिक सीमा का निर्देश करते हैं। परन्तु अब रूसलोगों ने आर्मेनिया के आधे से ऊपर अपने राज्यके अन्तर्गत कियाहै। अतएव यदि किसी तरह काकाशस एशिया और यूरोप देश की सीमा होवे किन्तु निश्चय है कि वह यूरोप —जराज्य और पारसराज्य की विभाजक सीमा नहीं है।

३) कास्पियन सागर से यूराल पर्वत तक जो सीमा निर्दि ष्ट हुई वह एक प्रकार गतानुगतिक* है यथार्थ सीमा नहीं, क्योंकि यूराल पर्वत बहुत छोटाहै, और उसकेदोनों ओरही एकराजा का राज्यहै और देश और मनुष्योंकी प्रकृति एक ही प्रकारकीहै ।

एशिया, । उत्तर अक्षांशों में १ एक अंश और २· अंश से ७८ अंशतक और पूर्वदेशान्तर रेखा ओं में २६ अंशोंसे १९० अंशतक ४२५०००० वर्गकोस है । लम्बाई वेरिंगमु हानासे बाबलमण्डप मुहानातक ४३५० कोस और चौड़ा ई सिवेरो अन्तरीप से रोमानिया अन्तरीप तक २७०० को स है और मनुष्य संख्या प्रायः ७००००००००० के लगभग है । पहिले एशिया में ही मनुष्य जाति का वासस्थान था और यहां ही पहले बड़े २ साम्राज्यस्थापित हुए और बाई बल में जितनी विचित्र घटना लिखी हुई हैं ये सब यहां ही हुई । यह सम्पूर्ण पृथ्वी की १ तिहाई है ।

जब हम एशियाके अभ्यन्तर को अच्छी तरह से दे खते हैं तो हम को पहिले यह दीख पड़ता है कि एशिया के प्रधान वाटरशेड वा अपवाहिका काकाशस वा आशि या माइनरस्थित पर्वतों से निकलकर पारसिया के उत्त र होकर काश्मीर पर्यन्त विस्तृत है; और वहां एक चौड़ा उच्चतलक्षेत्र विस्तृत है । मानचित्रोंमें तिब्बत और चीनी तातार इसके अंतर्गत लिखेजाते हैं । और हिमालय उसके दक्षिण दीवार के तथा आल्टाई पर्वत उस की उत्तर दी वार के बराबर हैं । प्रकृति ने एशिया को तीन प्रकार के

*गतानुगतिक उसे कहते हैं, कि जो प्राचीन काल से चला आता है कल्पसे लीकत दि

देशों में विभक्त किया । यथा

(१) मोङ्गोलियन उच्चसमतलदेश जो मध्य मे हैं और इ-सके पार्श्वस्थित उच्चदेश । इस देश का अधिक अंश समुद्र तलसे १०००० फुट उचा है । इसकी ऐसीउच्चताके कारण यहां वृष्टि बहुत कम होती है । शीत और वायुवेग बहुत है । इस में वृक्षादि से घास बहुत होता है ।

(२) उत्तर स्थित साईबिरिया वा एशियाटिक रूसिया का विस्तृत समतल क्षेत्र । इस में शीतका अधिक प्रादुर्भाव है, । मनुष्यसंख्या थोडी है और अच्छीतरह शस्य पैदा नहीं होता, ।

(३) वे देश, जो उस विस्तृत वाटरशेड वा अपवाहिका के दक्षिण में हैं । वे देश समकोटिवन्ध के सब से उ-ष्णभाग में हैं । इन्में से पूर्वदिशास्थितदेशों में जलवा-यु का स्वभाव बहुत आर्द्र है और वे पृथिवीके और सब देशों से उर्वर हैं, तथा उनके निवासियों की संख्या भी पृथिवी के अपरदेशों से अधिकहै ।

एशिया के दक्षिण पश्चिम अंश मरुमय हैं, यह मरु स्थल लालसमुद्र से प्रारम्भ होकर अरब तुर्किस्तान का दक्षिण, फारस, अफगानिस्तान, बलोचिस्तान, औ-र तुर्कस्त के दक्षिण तक व्याप्तहै । और यहमरुस्थल अ पनी दक्षिणगति से भारत वर्ष में विस्तृतहुआ, जिसकार-ण सिन्धुदेश, पञ्जाब के दक्षिण और राजपूताना के पश्चिम सेसबदेश मरु मय हैं । पूर्वोक्त मरु की उत्तर शाखा मों गोलियनतक विस्तृत है जहां बडी २ उच्च

मरुभूमि शीतल पड़ती हैं । पूर्वोक्त वाक्य से यह समझना नहीं चाहिये कि पूर्वोक्त मरुस्थल समुद्य स्थानोंमें एकही प्रकृति के हैं । किन्तु उनसब मरु भूमि यों की साधारण प्रकृति यह है कि ये सब शुष्क तृणशून्य होती हैं । और बरस के अधिक समय इस में घास नहीं होती है । इन मरुस्थलों मे से जोस्थान समुद्र तल से १००० फुटके नीचे हैं उनमें ग्रीष्मकाल में अतिशय गर्मी होती है । इस मरु भूमि के अधिक स्थल प्रस्तर मय वा रेतमय ऊसर भूमि हैं । इन में कोई सोता वा नदी नहीं । और जलके समीपी नगर वा ग्राम होते हैं इसलिये यहां बस्ती भी बहुत थोड़ी होती है । अरब और फारस में इसमरुस्थलका जो विस्तृत अंशहै वह मालदेव अर्थात् उच्च समतल भूमि है और उन की उच्चता समुद्रतल से २००० से ४००० फुट तक है । इन में रेत कम है और पत्थर बहुत है, और इन के बहुत स्थानों में नदियें बहती हैं, और भूमि उर्वर है । मोंगोलिया में जो मरु भूमि हैं उन में कुछ घासादि नहीं होता है । उन को, शुष्क मालदेव कहना उचित है ।

एशिया के दक्षिण पूर्व भाग जिसमें चीनका दक्षिणभाग, श्यामद्वीप सारे भारतवर्ष और आर्किपिलेगो द्वीप समूह हैं उसकी प्रकृति दक्षिण पश्चिमस्थित मरु भूमि की प्रकृति से सम्पूर्ण विपरीत है अर्थात् यह बहुत आर्द्र है । इस में वृक्ष बहुत होते हैं, भूमि उर्वर है, और बस्ती भी बहुत घनी है ।

एशिया के बहुत अंश समुद्र तल के भी नीचे हैं जैसा कि मुर्दा झील वा डेडसि, जो एशिया के तुर्किस्तान में है, समुद्रतल से १३०० फ़ुट नीचे है। और इस कारण जर्डननदी जो इस में गिरती है उसके तीरस्थ देश भी समुद्र से नीचे हैं। कास्पियनसागर समुद्रतलसे १०० फ़ुट नीचे है और यह भी प्रसिद्ध है, कि कास्पियन समुद्र के चारों ओर जो देश हैं वे थोड़े दिन हुए समुद्र से निकले हैं।

आरलसमुद्र समुद्रतलसेऊंचा नहीं। इस का पानी भी कास्पियन और मुर्दा झील की नाईं लवनमयहै। कास्पियन और आरल समुद्र अब क्रमशः शुष्क होते जाते हैं।

एशिया में बहुत समुद्र, खाड़िये और खलीज हैं जैसाकि, पश्चिम में काला मारमोरा इज़ियन और लीवान्तसागर, नेर्ऋतकोन में एडियन की खाड़ी दक्षिण में अरब वा फारस का समुद्र, मार्टाबान की खाड़ी; कच्छ और काम्बे की खाड़ी और मनार की खाड़ी। पूर्व में चीन सागर, पीला समुद्र, जापान का समुद्र तातारका खलीज, ओखटस्क समुद्र, अनादिर की खाड़ी और उत्तर में ओबे की खाड़ी और काला सागर,

एशिया में निम्नलिखित मुहाने हैं बाबुलमण्डप— लालसागर के प्रवेश का मार्ग है।

आर्मस— फारस की खाड़ी के प्रवेश का मार्ग है।

मनार वा पाक्स— लंका और हिन्दुस्तान के मध्य में है।

मलाक्का मुहाना – सुमात्रा और मलाया के बीच है ।
फारमोसा – चीन और फारमोसा के बीच है ।
कोरिया – पीले और जापान समुद्रों के बीच है ।
तातार का मुहाना – चीनीतातार और सिघालीन के बीचमें है।
बेरंग – एशिया और अमेरिका के बीच में हैं, यह १८ कोस चौड़ा है ।
बेगाज़ – नोवाजे म्ला और साईबीरिया के बीच में है ।
मक्कासर – बोर्नियो और सिलेबीज़ टापुओं के बीचमें है ।
संडा – सुमात्रा और जावा के मध्य में है ।

पर्वत

एशिया में,

हिमालय – भारतवर्ष के उत्तर, यह पर्वत पृथ्वीके सब पर्वतों से ऊंचा है इसकी सब से ऊंची चोटी गौरीशंकर जिसे अंग्रेजी में एवारेष्ट कहते हैं, समुद्रतलसे – १९३११ हाथ ऊंची है । हिमालयके और दो शृंग हैं ।
(१) कांचन जंघा जो समुद्रतलसे १८७६६ हाथ ऊंचाहै ।
(२) देवजंघा काकासस पर्वत – कास्पियन – और काला सागर के बीचमें है । इस की ऊंचाई ३०८२ हाथहै।
अरारट – आर्मीनिया में, ऊंचाई १८९८ हाथहै
टारस पर्वत – फारस और मारमोरा के बीच में हैं ।
इस की बड़ी चोटी आर्गिस २१९४ हाथ ऊंची है ।

मध्यस्थित पर्वत

धवलागिरि १९७२० हाथ ऊंचा । हिन्दूकुश – तातार और अफगानिस्तान के बीचमें ११११ हाथ ऊंचा,

(१) अलबुर्ज —
(२) बल्लूरटाग —
(३) आलटीन —
(४) पूर्वीघाट,
(५) पश्चिमीघाट और (६) नीलगिरि ये सब प्रसिद्ध पर्वत हैं ।

एशिया महाद्वीपमें आग्नेयपर्वत बहुत कम हैं परन्तु इसके समीपवर्ती द्वीपों में बहुत हैं । एक लंबी ज्वालामुखी पर्वत श्रेणी सुमात्रा और जावा में से होकर पूर्वस्थ द्वीपों तक विस्तृत है । थोड़े दिन हुए कि इनमें में से अग्नि निकली थी जिसने बहुत गांवोंका नाश कर दिया । दूसरी ज्वालामुखीपर्वत श्रेणी जापानद्वीपों में विस्तृत है । जिसकी शाखा कमस्कटका प्रायद्वीप और एलूशियन द्वीपों में चली गई है ।

नदियां ॥

फ़रात — आर्मीनिया पर्वत से निकल कर रूम और फारस के बीचसे होकर फारसकी खाड़ी में गिरती है । इसपर बाब्लोन के खण्ड, अलेपो, बसोरा ये प्रसिद्ध नगर हैं टिग्रिस वा दजला = टारस पर्वत से निकल इराकअरब अर्थात् मेसोपोटामिया में होकर बसोरा नगर के ऊपर फ़रात नदीसे मिलजाती है इसपर मोसल बगदाद ये दो बड़े नगर हैं । ओरोंटस — लबानन के पर्वत से निकल कर सिरिया होके भूमध्यसागर में गिरती है । इसपर आंटियक और हमह-

स ये दो प्रधान नगर हैं ।

आमू वा जेहून – इसको पहले आक्सस बोलते थे । यह तातार में होकर आरालकी झीलमें गिरती है इसप र खीवा नगर है । सेहून – इसे पहले ज्याक ज्ञार्टिस पु कारतेथे । तातार और चीनीतातार के मध्य से निकल कर ऊराल सागर में गिरती है । इस पर अद्ना नगर है।

हेलमंड – अफगानिस्तान से होकर ऊराल झील में गिरती है । इसपर कन्धार नगर है । येसबनदियां प्रसिद्ध हैं । औरभीछोटी २ नदियां हैं ।

भारतवर्ष की नदियों का वर्णन भारत वर्षके व र्णनमें कियाजावेगा ।

एशिया महा देश निम्न लिखित देशों में विभक्तहुआहे ।

संख्या	नाम	द्वीपसहित	वर्गक्षेत्र	मनुष्यसंख्या
१	भारतवर्ष	लंका	१६००,०००	२३८,०००,०००
२	गंगाके पूर्वका प्रायद्वीप	ऐडेमन वा कालापानी	६५० ००	३०,०००,०००
३	आर्किपिलेगो वा द्वीपसमूह	फिलिपाईन	१०००,०००	२५,००००००
४	चीन	फारमोसा और हेनान	१६००,०००	४२५,०००,०००
५	जापान	———	१५७,०००	३,३,०००,०००
६	मंगोलिया	— — — —	२,३००,०००	२०,०००,०००
७	अफगानिस्तान वलोचिस्तानसहित		४००,०००	६,०००,०००
८	फारस	——	६५०,०००	४,५००,०००
९	अरब		१,२००,०९०	८,०००,०००
१०	तुर्किस्तान	सैप्रस	६६०,०००	१६,०००,०००
११	तातार		७००,०००	२,०००,०००
१२	साईबीरिया और साट चूरिया	सिंघालीन	६,१००,०००	११,०००,०००

एशिया में प्रधानतः दो प्रकारकी मनुष्य जाति दीख पड़ती हैं । १ प्रथममोंगोलियन, दूसरी ककेशियन । चीन, ब्रह्मी प्रायद्वीप, मोंगोलिया साइबिरिया और तुर्कीस्तान इनके निवासीलोग मोंगोलियन जातीय हैं । भारतवर्ष, अफगानिस्तान, फारस, अरब और आर्मेनियाके निवासीलोग ककेशियान्जातीय हैं ।

मोंगोलियन और सिंहलद्वीपके निवासी लोग बौद्ध धर्मावलम्बी हैं । भारतवर्षके निवासी लोगोंमेंसे हिन्दु धर्मावलम्बी बहुत हैं और बाकी समुदय मुसलमान हैं ।

भारतवर्ष

एशिया के दक्षिण में तीन प्रायद्वीप लक्षित होते हैं, (१म०) अरबका प्रायद्वीप, (२य) भारतवर्ष, (३य) पूर्वीय प्रायद्वीप । भारतवर्ष इनके मध्यमें है । भारतवर्ष की लंबाई कुमारीअन्तरीप से हिमालयतक २,००० मील के लग भग है और चौड़ाई उसकी १,५०० मीलके बराबर है ।

भारतवर्ष के उत्तरमें— हिमालय पर्वत है, जो तिब्बत से इसको पृथक करता है, इसका प्रधान वाटरशेड वा अपवाहिका सारे उत्तर भारतवर्षको बांटता है और उसकी ऊंचाई समुद्रतलसे १९,००० फुटके बीचमें है । भारतवर्षके उत्तर पूर्वमें ब्रह्मदेश है । भारतवर्षसे ब्रह्मदेशतक एक जंगलमय पर्वत निकला है, जिसमें मनुष्योंको बड़ी कष्ट होती है ।

हुये है — पूर्वमें बंगालका सागर, दक्षिणमें भारतसमुद्र और लंकाद्वीपजो पाकके मुहानेके द्वारा भारतवर्षसे पृथक हुआ है, पश्चिममें अरब सागर, बलोचिस्तान, और अफगानिस्तान है।

भारतवर्षको साधारण भाषामें हिन्दुस्तान कहते हैं। इसनामका कारण आजकलके पण्डित लोग नाना प्रकार से निर्देश करते हैं। कोईकहते हैं कि फारसीमें हिन्दु शब्दका अर्थ काला है। जब मुसलमानलोग इसदेशकोजीतने केलिये आए उन्होंने इसके रहनेवालेंको काला देखकर इसकानामही हिन्दुस्तान अर्थात् "काले मनुष्योंकादेश" रखाहै। कोई कोई कहतेहैं कि, सिन्धुशब्द से हिन्दुबनाहै, और "हिन्दुस्तान" का यथार्थ अर्थ सिन्धुनदीके तीरवर्तीदेश। परन्तु भारतवर्षके निवासियोंमें इसका मध्यम प्रदेश हिन्दुस्ताननामसे प्रसिद्ध है, और "हिन्दुस्तानी" इसनामसे उसी प्रदेशके रहनेवाले कोही जाना जाताहै, बंगाला, पञ्जाब वा अपर किसी प्रदेशके रहने वाले को नहीं।

भारतवर्ष का दक्षिण भाग, जो त्रिकुणकीनाईं क्रमसे सरल और लंबा हुआहै, एकमात्र क्षेत्र वा उच्च समतल क्षेत्र रूप है, । और पूर्व तथा उत्तर पूर्वदिशाके ओर क्रमसे नवण है, इस लिये इसका सबसे ऊंचा अंश पश्चिम भाग ही है, जहां पश्चिमघाट पर्वतश्रेणी समुद्रकूलके साथ समानान्तराल रूपसे एक सीधीरेखामें विस्तृत हुई है, और उसे ४० मीलकी दूरीपरहै। उसपर्वतश्रेणीकेकुमारी

अन्तरीपसे तापीनदीतक उस प्रायद्वीपका वाटरशेड वा जल विभाजक बना हुआहै। यहपश्चिमघाट पर्वतश्रेणी समुद्र-तलसे ४००० से ६,००० फ़ट तक ऊंची है । इसका प्रधान निम्नभाग पैल्घाटकी घाटीपरहै, जहां वह वाटरशेडभी समुद्रतलसे १,००० फ़ट ऊंचे किसी नतमध्य भूभागमें मग्नहुआहै । यह स्थान सैनिकसञ्चारके लिये बड़ा उप-योगी है, क्योंकि इसके द्वारालोग शीघ्रही पूर्वसे पश्चिममें जासकेहैं । अब मदरासमे बेपुर और कालीकटमें जो रेलगई है वह इसीघाटीके बीचसे होकर गई है । इस-स्थानके अव्यवहित उत्तरमें नीलगिरिके पर्वतहैं । ये पर्वत पश्चिमघाट पर्वतके पाद अर्थात् अपन पर्वतहैं, औरसमुद्रतलसे ८६०० फ़ट ऊंचेहैं । दक्षिणमें ये सबसे ऊंचेपर्वतहैं । प्रायः इसके समानऊंचा और एक पर्वत त्रिवांकुरमें दीख पड़ताहै ।

दक्षिणका मालक्षेत्र पूर्वीघाटपर्वतोंके और अनेक शु कहुआहै, और कारोमण्डल उपकूलके समतल क्षेत्रमें एकबारही बहुत नीचा होगयाहै । इस मालक्षेत्रके कारोमण्डल उपकूलमें ऐसानीचा होनेसे पूर्वीघाटपर्वतभी समुद्रकूलके साथ थोड़ाबहुत समानान्तर हुआहै । परन्तु मालवार कूलसे पश्चिमघाट पर्वत जितना दूर है, पूर्वीघाट पर्वत कारोमण्डलसे उससे भी अधिक दूरवर्ती है । पूर्वीघाट और कारोमण्डलके बीच जो स्थानहै उसे कारनाटक कहतेहैं । इसस्थानमें चावल अधिक उत्पन्न होतेहैं । संस्कृतमें पश्चिम घाटको सह्य और पूर्वीघाटको

महेन्द्रपर्वत कहते हैं ।

यदि विचार पूर्वक देखा जावे तो दक्षिण मालक्षेत्र मध्यदेश (सेंट्रल इंडिया) और छोटानागपुर होके राजमहलतक (कोलकत्तासे २०० मीलउत्तरमें गंगाजीके कनारेपर है) विस्तृत हुआहै । इसस्थानकी ऊंचाई साधारणतः समुद्रतलसे १५०० फ़ुट है, और उसके पास जो देश आर उनके सामने कीभूमि एक २ ऊंचे धूलादिस्तूप पहाड़की भांतिदीखपड़तीहै । बंगाले में ऐसे जितने पहाड़ हैं, उनमेंसे छोटानागपुरस्थित पारसनाथ का पहाड़ सबसे ऊंचाहै । इसकी ऊंचाई समुद्रतलसे ४,००० फ़ुट है । इसप्रदेशमें पूर्वोक्त प्रकारके पहाड़ असंख्य दीखपड़तेहैं परन्तु पारस नाथ पहाड़के समान ऊंचा और कोई नहीं । वहांसे कैम्बाटूरतक रास्तेमें वैसे-पर्वत बहुत दीख पड़तेहैं । भारतवर्षकादक्षिणभाग यद्यपि बहुत विस्तृतहै, तथापिइसे एकही देश कहना उचितहै क्योंकि उसकी प्रकृति सबस्थानोंमें एकही प्रकारकीहै और समुदयस्थानोंमें एकही जातिके उद्भिद औरजीवदेखने में आतेहैं ।

बहुत लोग समझतेहैं कि, दक्षिणमाल क्षेत्र उत्तरमें तापी और नर्मदाके पुलिन वर्ति देशोंमें ही विश्रान्त हुआहै परन्तु वास्तवमें पूर्वोक्त पुलिनदेश उसमालदेशका, किसी कारण से उत्पन्न, एक निम्नभागमात्रहै क्योंकि वही मालक्षेत्र नर्मदाके थोड़ेउत्तर में फिर अपनीसम्पूर्णप्रकृति के साथ मालवाके मालक्षेत्र नामसे दृष्टहोताहै

उसक्षेत्रकादक्षिणभागविन्ध्याचलनामसे प्रसिद्ध है। भारतीय प्रधान मालक्षेत्रके पश्चिम में जैसा प्राचीरकीनाईं उच्चअंशहै, उत्तरमेंऐसानहीहै। यह क्षेत्र उत्तर पूर्वमें गंगाजीके ओर क्रमसे प्रवण हुआहै, और इसमें जोपर्व्वतहैं वेभी अपनी २ उपात्यकाके साथ उसीदिशामें विस्तृत हैं। औरगंगाजीके तटकोसमकोणमें काटते हैं।

भारतवर्षकी अवशिष्टअंश जिसे भारतवासी हिन्दुलोग हिन्दुस्तानकहतेहैं, वह एकसमतलक्षेत्रहै औरदाक्षिणात्यमालक्षेत्र औरभारतवर्षकी उत्तरसीमाकेबीचमें विस्तृतहै। यहक्षेत्र कलकत्तासे दील्हीतक थोडा २ करकेऊंचा हुआहै इसलिये दील्हीसे लाहोरजानेको रस्तेमें गंगा और सिन्धुनदीके वेसिन अर्थात् खातोंकेबीच जोवाटरसेड् (अधुत्यिका) है, वहअच्छीतरहलक्षित नही होताहै। यह देश वास्तवमें समुद्रतलकी अपेक्षा प्रायः १,००० फुट ऊंचा परन्तु इसके उभय पार्श्व ऐसे ढालुहैं कि, यदि कोईमनुष्य इसकेएकपार्श्वसे चढकर दूसरे पासमें उतर जावे तो उसकी दृष्टिमें इसकी क्रमोन्नति कुछभीनही लक्षित होगी।

यह हम पहिले कहचुकेहैं कि पश्चिम एशियाका मरुस्थल भारतवर्षतक विस्तृत है और उसके अन्तर्गत सिन्धुदेश और पञ्जाब के दक्षिण और पश्चिम प्रदेशहैं। उसमरुस्थलके जो अंश सिन्धु तथा अपर नदीयोंके कनारे परहैं वे बहुत उर्व्वरहैं और उनमें चावल बहुत उत्पन्न होतेहैं, परन्तु एकनदीकेकनारेसेदूसरी नदीके कनारे तक जोस्थान हैं वेहरित्शून्य, शुष्क, उष्ण औरवालुकामयबाप्रस्तरमयहैं।

भारतवर्षकी भूमिसंश्लिष्टसीमा प्रकृतिसे ही निर्दिष्ट हुईहै । उसपर पर्व्वतश्रेणी ऐसी परस्पर मिलित होकरचलीगई हैं कि, उनके भीतरसे सैनिक सञ्चारकेलिये कोई अच्छा पथ नहीं दीखपड़ता । समुदय हिमालय पर्व्वत श्रेणीकेबीच कोई ऐसा पथनहीं जिस्के द्वारा आजकालके सैनिकदलतोपखानासाथलेके जासके । उत्तरपश्चिमके प्रान्तमें केवल दोसंकीर्ण पथदीखपडतेहैं । एक खाईबरकीघाटी, जिस्केबीचसे लोग पिशा वरसे ज लालाबाद जातेहैं; दूसरी बोलन्की घाटी, जिस्केबीचसे लोग क्वेटा होकार कन्दाहारमें जातेहैं । उत्तरपूर्व्वके प्रान्तमें एक पथहै, जो आसामकी पूर्व्वसीमासे ब्रह्म देशके उत्तरमें जाताहै और इसीरस्तेसे पहिले ब्रह्मदेशीय लोग आसाममें सैन्यभेजतेथे । इसके थोडे ही दक्षिणमें बडे २ पर्व्वतदीखपडतेहैं जिनकी ऊंचाई कमसे कम १०,००० फुटहै । उसस्थानसे थोडे हटके पीछे चिटागांव वा चट्टग्रामके दक्षिण में भारतीय प्रान्त अनेक ऊंचे २ पर्व्वतोंसे घेराहै जो उत्तर दक्षिणमें लम्बे हैं । इन पर्व्वतों के कारण उसरस्तेसे कोई शत्रु भारतभूमि पर नहीं चढाई करसक्ताहै ।

भारतवर्षका समुद्रकूल लम्बाहोके चलाहै । उसमें ऐसे बड़े बन्दर बहुतथोड़ेहैं, जहां एककालमें बहुतजहाज रहसकें । पूर्व्वमें चिटागांव वा चट्टग्रामका बन्दरहै, जिसमें बहुतहीथोड़े जहाज़ आसक्ते हैं; कलकत्ता जोसमुद्रकूलसे ८० मील उत्तरमें है, इसमें जहाज़ लेजाने में बडाश्रम और भय होताहै । कारोमण्डल उपकूल में जितने बन्दरहैं उनमें सम-

पश्चायुके द्वारा बहुतजहाज़ नष्टहोते हैं । लङ्काद्वीपमें ट्रिं-
कोमालीकाबन्दर सबसे अच्छाहै, इसमें मानोयारी जहा-
ज़ निरापदमें रहतेहैं परन्तु उससे भारतवर्षको कुछ उप-
कार नहीं पंहुचताहै । मालावरके उपकूलमें कचिन, कली-
कट और मेंगलोर येतीन प्रसिद्धबन्दरहैं परन्तु उनसे वाणिज्य
की कुछ उन्नतिनहीं होतीहै । बुंबई सूरत और भरोच
ये भी बहुत अच्छेबंदर हैं । बुंबई यहशब्द "बुयन" और
बहिया" इनदो पर्त्तुगिजशब्दोंसे बनाहै । पर्त्तुगिजोंने ही
यहां पहिले बन्दर स्थापितकियाथा । वाणिज्यकेलिये क-
लकत्ता और बुंबई, ये दो मुख्य बन्दरहैं, उनके नीचे कराची
भी आजकाल प्रवल हुआहै ।

इस देशका नाम भारतवर्ष इसलिये हुआ कि, ऋषभ
देवका ज्येष्ठ पुत्र भरत राजाने यहां प्रथमराज्यकिया ।

पर्वत

भारत वर्षमें ये पर्वत प्रसिद्ध हैं —

(१) हिमालय पर्वत — यहपर्वतभारत वर्षके उत्तरमें पू-
र्वसीमासे पश्चिमसीमातक विस्तृतहै । यह पर्वत औरप-
र्वतोंसे ऊंचाहै इसलिये इसे पर्वत राजकहतेहैं । इसकी लं-
बाई ७५०कोसहै औरचौड़ाई ७५कोससे १२५ कोसतक है । हि-
मालयका प्रधानशृंग एवारेष्ट वागौरीशंकर जिसे देवडुङ्गाभी
कहतेहैं २९००२ फ़ुट ऊंचाहै । यहशृंग नेपालके राज्यमें है,
समुद्रपर पृथिवीमें इसके समान ऊंचा औरकोई पर्वत शृंग नहींहै । *

* अनुमान होताहै कि पूर्वकालमें इसका नाम गौरी शिखरथा ।

शिकममें काञ्चनजंघानाम और एकशृंग है जिसकीऊंचाई समुद्रतलसे २८१५६ फ़ुट है । नेपालस्थितधवलगिरि और भोटान स्थित सतुलारी प्रभृति हिमालयके औरभी अनेक ऊंचे २ शृंगहैं ।

भारतवर्षकीओर हिमालयके पाद अर्थात् प्रत्यन्त पर्व्वत अनेक दृष्ट होते हैं । जो मुख्य हिमालय श्रेणीसे प्रायःसर्व्वत्रही ४० मीलसे कम दूरीपर नहीं रहते हैं । मुख्यहिमालय और उसके पाद पर्व्वतोंके मध्यमें जोस्थानहै उसमें बहुत स्वाधीन राज्यहैं, जैसाकि काश्मीर, नेपाल और भुटान इत्यादि । हिन्दुस्तानके उत्तरमें हिमालय के पादपर्व्वत जिससमतल क्षेत्रसे ऊठेहैं, उसे तराई कहतेहैं । यह स्थान बहुत आर्द्र और जंगलमय है ।

सुलेमान— भारत वर्ष की पश्चिम सीमामें हैं । यह उत्तर दक्षिणमें १७४ कोस विस्तृत है । इसका प्रधान शृंग तान्कीसुलेमानहै । विन्ध्याचल— यहपर्व्वतभारतवर्षकेमध्यमें हिमालयकीनांई पूर्व्वसे पश्चिमतकविस्तृतहोकर भारत वर्षको— दोखण्ड करताहै। विन्ध्य और हिमालय के बीचमें जोस्थानहै उसेआर्य्यावर्त्तकहतेहैं । विन्ध्यकाभी चित्रकूट, किष्किन्धा आदि ऊंचे शृंगहैं । इनपर्वतों के सिवाय भारतवर्षमें कित नी एक छोटी पहाड़ियांभीहैं। उनमे से नेपाल, राजमहल, त्रिपुरा खासिया रामगढ़की पहाड़ियां प्रधान हैं ।

नदी

भारत वर्ष की प्रधान नदियें सिन्धु, गंगा, यमुना, ब्रह्म-

ञ, नर्मदा कृष्णा, कावेरी, माहो, पीनार, तापती, महानदी, गोदावरी, सुवर्णरेखा ब्राह्मणी प्रभृति हैं ।

सिन्धु— तिब्बतकी सायक ओर सिंखाबा रा नामकी छोटी नदियों के मिलने से उत्पन्न होकर अरबसागर में गिरती है । इस कीसहायक नदियें काबुल, कुनार, सतलुज व्यास रावि चेनाब ओर जेलम येहैं । सतलुज, व्यास, रावि, चेनाब ओरजेलमयेपांचपञ्जाबकीप्रधाननदीयांहैं संस्कृतमें इनको क्रमसे शतद्रु, विपाशा, ऐरावतीचंद्रभागाओरवितस्ताकहतेहैं । येसमभी हिमालय से निकलती हैं । पञ्जाबकीराजधानीलाहोररावि के तटपरहै । इसपर करांची बंदर, हैदराबाद खैरपुर शिकारपुर, डेरहगाजीखां, डेरहइस्माईलखां, कोहाट, ओर अटक ये नगर हैं ।

नर्मदा— गंदवाना प्रदेश में उत्पन्न होकर मालवा ओर गुजरातके बीच से पश्चिमकी ओर ३७५ कोस जाकर काम्बे की खाडी में गिरती है । इस पर भडोचहोशंगाबाद जब्बलपुर ओर मण्डला ये नगर हैं ॥

तापीवा तापती— सतपुडी पर्वतसे निकल कर काम्बे की खाडी में गिरतीहै । इसपर सूरत बुरहानपुर ओर नसीराबाद ये नगरहैं । कावेरी— पश्चिम घाट से निकल कर मैसूर ओर कर्नाटक प्रदेशों से बहकर बंगाले की खाडी में गिरतीहै इस पर श्रीरंगपट्टन तंजोर निगापट्टन, कारिकल, त्रिचनापल्ली ओर मैसूर ये नगरहैं ।

कृष्णा = पश्चिमी घाटसे निकल कर ३५० कोस घूमकर मछलीपट्टन के पास बंगाले के सागर में गिरतीहै ।

इसपर कोलापुर,सितारा, मछलीपट्टन और गंतूर येनगरहैं। गोदावरीब्रह्नदी उसीपर्वतोंसे निकलकर प्रायः हिन्दुस्तान के दाक्षिणात्य प्रायद्वीप की संपूर्ण चौडाई में विस्तृत होकर बंगाले की खाडीमें गिरतीहै । इसपर राजमहेन्द्री और कलिंगा येदोनगरहैं महानदी — नागपुर के पर्वतोंसे निकलकर कटक के समीप बंगाले के सागर में गिरती है । लंबाई इसकी २२५ कोसहै । इसपर कटक और बालेश्वर नगरहैं।

जमुना — एक सहायक नदी हिमालय से निकल कर दिल्ली और आगरे में होकर इलाहाबाद के नीचे गंगासे मिलतीहै । जहां गंगा औरयमुनाकामिलापहै वहांका नाम प्रयाग तीर्थ हैं । इसकीलंबाई २०० कोसहै । इसपर दिल्ली आगरा, मथुरा, और इलाहाबाद येनगर हैं । जमुना औरगंगाके मध्यमें जोस्थानहै उसेदोआब कहते हैं । गंगा— हिमालयसे निकलकर ७७८ कोस बहकर बंगाले के सागर में गिरती है हरिद्वार फतहगढ, कानपुर, इलाहाबाद बनारस राजमहल औरकलकत्ताआदिनगरइसकेतटमेंहैं।इसकी सहायक नदियें येहैं गोमती सरयू घाघरा, सोन और काली; गंगाकी शाखा नदियें येहैं। भागीरथी जिलंगी और हुगली । गंगा का मूल स्रोत जो ब्रह्मपुत्रीके मुहानेसेसमुद्रप्रभृति के नीचे होकर बहतीहै उसे पद्मानदी कहते हैं । फिर यह ब्रह्मपुत्र के साथमिल कर जब आगे बहतीहै तब इसे मेघनाकहते हैं । ब्रह्मपुत्र = तिब्बतके पर्वतोंमें से निकलकर आसाम और बंगाले में होताहुआ बंगाले के सागरमें गिरताहै । लंबाई इसकी ७७५ कोस इसपर लासा जोतांदी सिलभारी येनगर

रहै । ईरावती– तिब्बतके पर्वतसे निकल कर ब्रह्मदेश में होकर बंगालेके सागरमें गिरतीहै । इसकी लंबाई ६०० कोसहै ।

रेलवे

नदी की नाईं रेल से भी वाणिज्यद्रव्य एकदेशसे दूसरे देश में जाता है । इस लिये नदियों के पीछे उन्कावर्णन किया जाता है ।

भारतवर्ष में इतनियांरेलाबनीहै

(१) कलकत्ते से दिल्लीतक (दी ईस्ट इण्डियन)
(२) दीह्ली से लाहोरतक । वहांसे मुलतानहोकर कराचीतक।
(३) देहलीसे अजमेर होकर बुंबइतक
(४) इलाहाबादसे, जब्बलपुर से होकर बुंबईतक
(५) कलकत्ते से गूलण्डोतक (पद्मापर)
(६) बंबई से मध्य हिन्दुस्तानतक
(७) बुंबई से, पूना होकर, मदरासतक
(८) मदरासते (काइम्बाटूरहोकर) कलीकटतक
(९) कोलम्बू से काण्डीतक (लंकामें) ॥

झील

भारत वर्षमें छोटी २ झीलें तो बहुत हैं परन्तु उन्में से नीचे लिखी हुई बहुत प्रसिद्ध हैं ।

चिलका झील वा चिलका ह्रद– उडीसाके ईसानकोण में समुद्रके समीपस्थित है ॥

पलिकाट– मंदराज के उत्तरमें है । रन कच्छप्रदेश में है । इसका परिमाण १६१७ वर्गकोस है । इसकाजल

लवणमय और थोड़ा है । इसके चारो ओर कोई वृक्षादि न देखने से भय आता है ।

राजपूताना में सेनार, देवद, पुस्कर, और मीरथे झीलें हैं। कायर — उत्तर सर्कारमें है । मान सरोवर हिमालय के ऊपर है । काश्मीरमें बहुत झीलें हैं, उन मेंसे बुलरसबसेप्र-सिद्ध है । आसामकेपूर्वमें ब्रह्मकुण्डनामझीलहै, जहांसे ब्रह्मपुत्रनिकलता है ।

समुद्रोंके वर्णन में

१ बंगाले का सागर— जो हिन्दुस्तान और पूर्वी प्राय-द्वीप के मध्यमें हैं

२ अरब सागर—भारत वर्ष के पश्चिममें है ।

खाड़ियां

१ कच्छ की खाड़ी जो गुजरातके वायुकोनमें है ।

२ काम्बे की खाड़ी—गुजरातके ईशान कोनमें है

३ इमनार— भारतवर्ष के दक्षिणमें

४ फालस — उडीसा के पूर्व में ।

उपकूल और उनके नगर

१ पूर्वी और पश्चिमी उपकूल; पहले का नाम कारोमण्ड-ल है, जो कृष्णा नदी के मुखसे कुमारी अन्तरीपतक विस-त है । दूसरे का नाम मालवार जो बंबई से कुमारीतक है । पहले में गंजाम विज़गापट्टन, मछलीबंदर, मंदराज पांडु-चरी पोर्टनमो टुंकोबार और कारिकाल ये नगर हैं । प-श्चिमी उपकूलमें करांचीबंदर कालिकाट, माही, तेलीचरी, कनानोर मंगलो रगिरिया बंबई और नेजान प्रभृतिनगरहैं।

मुहाना

एक — भारतवर्ष और लंका केबीच है ।

पंपिन — वहां हीहै ।

प्रायद्वीप

दक्षिणहिन्दुस्तानका प्रायद्वीप अर्थात् भारतवर्ष का दक्षिणभाग, कारिमर, कांबे और कच्छके बीचहै । कच्छ सिन्धु का दक्षिणभाग और गुजरात का दक्षिण भाग येसब प्राय द्वीप हैं ।

द्वीप

दूद द्वीप — गुजरातके वायुकोनमें ।

दूमू — गुजरातके दक्षिण में ।

पारिम — नर्मदाके संगमके सन्मुखमेंहै ।

बंबई सालसिट अलफिंटा और करिंगा —

पश्चिम उपकूल के साम्हने है ।

सेन्ट मेरस, दुर्गम न्धि, दुर्ग — गोआके उत्तर दक्षिण ओर है ।

लंका — भारतवर्ष के दक्षिणमें हैं ।

आमिनप्रभृति कईएक छोटे२ द्वीप मालबाके सन्मुखहैं ।

पाईजन — विजगापट्टनके समीपहै ॥

सागर द्वीप — हुगलीनदी के संगम पर है ।

सवजपुर, हतिया मानछुर येद्वीप मे घना नदीके संगमपर ।

मास्कल कुतवदी, रेडक्राव — चटग्राम के समीपहै ।

आयस्टर — (शुक्तिद्वीप) और वलंवा द्वीप — अराकान नदीके संगम परहै ।

रामरी, चेडू, — अराकान उपकूल पर है ।

मालद्वीप — कुमारी अन्तरीपके पश्चिम में है।

लाक्षाद्वीप — मालावार के पश्चिममें, नीकोबर और इंडेमन स्यामके पश्चिममें हैं।

सिंगापुर— मलाया के दक्षिणमें है।

कुलपीनांग— मलायाके पश्चिम।

मालवक्षेत्र और मरुभूमि.

भारतवर्ष के मालवक्षेत्र देखने में बहुत सुन्दर हैं। दाक्षिणात्य देश के बहुत स्थानों और छोटा नागपुर प्रभृति प्रदेशों में ऐसी भूमि बहुत है। विन्ध्याचलपर्वतकेसमीप अमरकंटक और मालवदेशहैं। इनमें से किसी २ की ऊंचाई २५०० फुट से— अधिकहै

भारत वर्ष में सिन्धुप्रदेश और राजपूताना की मरुभूमि ऐसीहीमिलती है।

अन्तरीप

मांउस— सिन्धप्रदेशमें है।

जगत् पयारह और डयू — गुजरातमें है।

मारमगाव — गोआके पास।

रामास— गोआके दक्षिण।

मेलाइली— कनाडाके नैर्ऋतकोनमे।

कुमारी — भारत वर्षके दक्षिण।

कालिमिपर — कावेरी नदीके संगमपर।

डलमिन — त्रिजिगापत्तन में।

फाल्स पयन्ट — महा नदीके संगम के निकट।

पालमीरा — वीवभद्र नदीके संगमपर।

मे ग्रीस — पेरू के दक्षिण ।

। भारतवर्ष के स्वाभाविक आकार, दृश्य और शोभा का वर्णन ।

भारत वर्ष बड़ा विस्तृत देश है । इसका स्वाभाविक आकार दृश्य और शोभा बड़ी आश्चर्य है ।

उत्तरभागमे — पूर्वसीमा से पश्चिम तक लम्बायमान हिमालय पर्वत धनुष की नाईं भारतवर्ष को तिब्बत और अफगानिस्तान से पृथक करता है दक्षिणमे — सरितपति समुद्र की नाईं शोभायमान है । मध्यमे — विन्ध्याचल, दुर्भेद्य प्राचीर की नाईं खड़ाहोकर इस देशको दो भागों में बांटताहै। दक्षिण में समुद्र के तीरपर दो घाट पर्वत दो मत्त हाथी की तरह देदीप्यमान है । पश्चिम में मुलतानसे अजमेर तक और सतलुजसे कच्छ तक दो पर्वत श्रेणी प्रवाह स्थित हैं । दिल्लीके समीप रुद्रपुर और अलमोरा के बीच प्रक १० कोस विस्तृत मरु भूमि देखनेमें आती है । सिन्धुप्रदेशमें केवल रेतसे भरा हुआ मरुक्षेत्र जिसमे समय २ उत्तर दक्षिण वायुके द्वारा रेतराशि उड़कर समीपस्थित गढ़ और ग्रामादि को आच्छन्न करती है । नदियों के संगम और तट के निकट स्थितभूमि प्रायः हल हल और खेतीके लिये बहुत उपयोगी होती है । भारतवर्ष में घूमने से कहीं २ हिमयोग पर्वतश्रेणि कहीं तरंगित शैलश्रेणी. कहीं आकाश भेदकारी नयनाकर्षक अत्युच्च शिखर समूह .कहीं समतल क्षेत्र.कहीं निम्नतल भूमि, कहीं वेगवती नदी और कहीं छोटी २ नदी इत्यादि नाना प्रकार दृश्य नयनगोचर होते हैं । सिवाय इ-

से यहां प्रायः सर्वत्र ही फलभरावनत, पल्लवपुष्पों से सुशोभित नाना वृक्षलतादि और हरितवर्ण शस्यों से परिपूर्ण क्षेत्र सकल देखे जाते हैं अधिक क्या कहें मानो विधाता ने भारतवर्ष को समुदय पृथ्वी का एक प्रतिकृतिस्वरूप बनाया है ।

भूमिका वर्णन

भारत वर्ष की भूमि सब जगह एकसी नहीं है । नदियों की तटस्थ भूमि प्रायः उर्वरा होती है, और स्थानों की भूमि यद्यपि कठिन और कर्दम मय है परन्तु एक बार वर्षा होने से बहुधा उर्वरा होजाती है । गंगा नदीके तीरस्थित और संगमकी भूमि बहुत उर्वरा है । पंजाब की भूमि बंग देश की तरह सदा खेती करने के लिये बहुत उपयोगी है । सिंधु और गुजरात की भूमि रेतली है इसलिये उर्वरा नहीं । मालवे की भूमि उजाड़ है औरकालीहै । उड़ीसा और गोंडवानाकी भूमि उर्वरा नहीं है । मालवार और कारो मांडलकी भूमि रेतली है यहां अच्छी तरह खेती नहीं उपजती ।

जलपवन

भारतवर्ष बहुत बड़ा देश हैं । इसी कारण यहां की जलपवन सब स्थानोंमें एक सी नहीं है । हिमालयसे दक्षिण बंगाले तक जलपवन की बहुत विभिन्नता देख पड़ती है । यूरोपकी अपेक्षा भारतवर्ष उष्ण है । यहां किसी २ स्थान में तीन महीने निरन्तर धूप का ऐसा आधिक्य होता है कि मिट्टी नीरस और सूख जाती है और खड्ड, स्रोते (अर्थात् छोटी २ नदियां) आदि सूख जाती हैं कभी २ बड़ी २

नदियां सोनों की तरह होजाती हैं। हिमालय पर्वत के समीप जो प्रदेश है वहां शीतकाल में ऐसी बर्फ पड़ती है कि सूर्योदयके दो तीन घंटे पीछे सूर्य दीख पड़ताहै। इन सब स्थानों में वायु की उष्णाउष्णता विशेष रूपसे अनुभूत होतीहै। भारतवर्ष के बीच जो भूमि समुद्र अति प्राय निम्न तलहै। वहां की वायु सर्वदा उष्णाई होतीहै परन्तु करनाट की निम्न तल भूमि की ओर उन्नतसर्कार की वायु अत्यन्त उष्ण है। इन दोनों प्रदेशों में जैसा ग्रीष्मऋतु का अनुभव होता है भारतवर्षमें और कहीं ऐसा नहीं होता,। मालवे की वायु बहुत शीतोष्ण नहीं है,।

दिल्ली प्रदेश में ग्रीष्म के समय जैसा गर्मी का आधिक्य होता है शीत काल में शीत का भी एसा ही आधिक्य होता है ग्रीष्म वर्षा और शीत मे तीन ऋतु ही भारतवर्ष में अधिक अनुभूत होती हैं। ऋतुभेदके साथ इसदेश में वायुकीनानाविध गति अनुभूत होतीहै। इसदेश के बीच मेन्सूननामक एक आश्चर्य रूप वायु बहती है। यह वायु दक्षिण पश्चिम और उत्तर पूर्वसे बहती है मलबार उपकूलमें दक्षिण पश्चिम मान्सून चैत महीनेके अन्त से लेकर आश्विन तक बहती है। और कार्तिक के प्रारम्भ से उत्तर पूर्व मान्सून बहने लगती है। इसी समय से लेकर अग्रहायण मासतक जहाज के जाने आने में बड़ी कठिनता होतीहै प्रायः सारे पश्चिम उपकूल में और सिंधुनदी के संगम पर मान्सून वायु बहतीहै पूर्व और पश्चिम उपकूल में जब मान्सून चलने लगती है तब एक प्रकार की वर्षा

काम करने लगती है ॥

खेतियों का वर्णन

भारत वर्ष में नानाविध धान्य उत्पन्न होते हैं उन्में से चावल, जै, और गेहूं भारतवासियोंका प्रधान अन्न हैं। ये सब अन्न इतने होते हैं कि अन्यदेशों में ले जाने परभी यहां बहुत दुःख नहीं होता। इनके सिवाय मकई, चना, मोठ, मूंगी अरहर इत्यादि उत्पन्नहोते हैं। बंगाले में बहुतसा नील उत्पन्न होता है। मालवा बिहार और बनारस में अफीम बहुत होतीहै गुजरात और गंगाके समीपस्थ देशोंमें रुई बहुत उत्पन्न होती है परन्तु सूरत, और नागपुर देश की रुई बहुत उत्तम है। आजकल हिमालय के आसपासमें भी रुई बहुत होती है। भारतवर्ष के अनेक स्थानों में सन पाट बहुत ही उत्पन्न होती हैं। यहां ऊख और तमाकू विशेषकरके उत्पन्न होते हैं। आलू, सकरकंद, औरकालीमिर्च, लालमिर्च, हलदी, दालचीनी, इलायची, प्रभृति बहुत प्रकारके मसाले कपूर और नानाप्रकारकी बूटियां यहां बहुत परिमाण से उत्पन्न होती हैं। इनके सिवाय आम, कटहर, जामन, अनार, अंगूर, अमरूत, केला, नासपाती, अमली, खजूर, नारियल, निम्बू सन्तरे इत्यादि नाना स्वादु फल उत्पन्न होतेहैं।

आसाम कछहड़ और उसके आसपास और २ देशों में चाह की खेती होती है मलबार और त्रिचनापल्ली की काफी [illegible] गाजीपुरका गुलाब का अर्क और अतर बहुत प्रसिद्ध है। भारतवर्ष के जंगली पेड़ों में से साल

शिशम आबनूस और देवदार इत्यादि वृक्ष बड़े २ और लाभ कारी होतेहैं नर्मदा नदी के समीपस्थित किसी द्वीप में एक प्रकार का [illegible] वृक्ष होताहै जिसकी १००० के तुल्य शाखा होतीहैं और इसके नीचे प्रायः ७००० मनुष्य बैठ सकतेहैं भारतवर्ष में चन्दन काष्ठ बहुत होताहै

खानी द्रव्य

भारतवर्षकी खानों में नानाप्रकार बहुमूल्य धातु उत्पन्न होतेहैं बुंदेलखंड और गोलकुंडा में हीरों की खानें हैं सम्भलपुर से ४ कोस पूर्व हीराखंड नामकस्थान में बहुत हीरे मिलते हैं कुमाऊं और मेवाड़ में सोना पायाजाताहै मालवार में किसी २ नदीके जलमें बालूके साथ बड़े छोटे २ सोने के अंश देखेजातेहैं आसाम में सिसंग काकुई सोमश्री भेरवी और जाज इत्यादि नदियों में शुद्ध सोनाबहुतायत से मिलता है बिहार की सोन और बरारकी महानदी और अयोध्याकी गोमती इत्यादि नदियों में बहुतथोड़ा सोना मिलता है कर्णाटक कमाऊंपर्वत बहुतसोंमें लोहा बहुत मिलताहै इनके सिवाय बहुत स्थानों में टीन तांबा जीरो का खानें हैं चनार के समीप नाना प्रकार मार्बल पत्थर मिलतेहैं भारतवर्षके बहुतस्थानोंमें सूर्यकान्त चन्द्रकान्त अयस्कान्त और पद्मराग इत्यादि मणियां और आभरणयोग्य मणिहैं.

बर्दवान के निकट रानीगंज नामकस्थान में पत्थरी कोयलों की खानें हैं [illegible] पैदाहै [illegible] के अन्तर्गत [illegible] नाम स्थान में [illegible]

म अटक हरिद्वार और कच्छके किसी २ भाग में पत्थरी की पले मिलतेहैं पंजाब में सैन्धव नमक और सम्भरह्रद में बङ्गत नमक मिलताहै राजपूताना और   सुन्दरवन में भी नमक उत्पन्न होताहै उत्तर पश्चिम प्रदेश और विहार में शोरा बङ्गत उत्पन्न होता है लंका में समुद्र से बड़े २ मोती मूंगा निकलते हैं

जंगलीजीव

राजपूताना और गुजरात में सिंह देखाजाता है सुन्दरवन में बङ्गत व्याघ्र होते हैं राजमहल के समीपस्थ जंगल में भी बङ्गतव्याघ्रहोतेहैं भारतवर्षके पूर्व और दक्षिणदिशा के मध्य में बङ्गत हाथी देखे जाते हैं बंगाले के जंगलों में गैंडा देखा जाता है उत्तर पश्चिम प्रदेश के वालुकास्थलोंमें बङ्गत ऊंटहैं इनके सिवाय भारतवर्ष में चीता रीछ वन्यगधे वन्यसूर नानाविध हरिन चमरी गाय गिदड़ लोमड़ी खरगोश शाहीलंगूर और वानर बङ्गतहैं । गाय भैंस भेड़ा बकरी सूर कुत्ता बिल्ली इत्यादि बङ्गतग्राम्य जीव गिने जाते हैं भारतवर्ष में नाना प्रकार के पखेरू और जहरी सांप उड़ू और कीड़े मकोड़े हैं ॥

शिल्पविद्या

हिन्दू लोग शिल्प विद्या में बङ्गत चतुर हैं उनका बनाया काशमीरी शाल और ढाकाकी मलमल बङ्गत सुंदर और अमूल्यहै हाथीदांत और सोना चांदी इत्यादि धातुओं के कामों में हिंदू और फारसियों के समान और कोई

नहीं है भारतवर्ष में रेशमी और पशमी कपड़ों के ऊपर ऐसा विचित्र सोने और चांदी का काम होता है कि देखने से ही चित्त मुग्ध होजाता है कुमाऊं और दूसरे स्थानों में लोहे के उत्तम २ द्रव्य बनते हैं उनके सिवाय भारतवर्ष के स्थान २ में छुरी कांची बन्दूक चाकू तलवार नानाप्रकार लकड़ी काटने का द्रव्य रसीलकड़ी द्रव्यकांविस रेशम गलीचे दरी चर्म के द्रव्य पीतल कांसी के बर्तन नानाविध-तेल उत्पन्न होता है । गृहादि निर्माण विषय में भी भारतवर्षीय लोग चतुर हैं यद्यपि भारतवर्ष में बहुत अच्छे २ गृह नहीं देख पड़ते तोभी जो कुछ है उसी मे उनकी बुद्धिमत्ता जानी जाती है राजपूताना स्थित सुन्दर मन्दिर को देख के ज्ञान पड़ता है कि हिन्दूगण मिसर और यूनानियों से शिल्पविद्या में किसीतरह न्यून नहीं था फिर मुसलमानों के समय में भारतवर्ष में अनेक सुन्दर मसजिद स्तम्भ राजभवन और समाधिमंदिर बनेथे उनमें से शाहजहांबादशाह का बनाया ताजमहल सबसे प्रधान है ताजमहल के समान गृह पृथ्वी में नहीं देख पड़ते यह ताजमहल अबतक आगरे में है अंगरेजों ने भी अब बहुत गृहादि बनाकर भारतवर्ष को सुशोभित किया उनमें से जमालपुर की टनल(सुरंग) कनाल सतलुज सोन जमुना और हुगली का पुल और कलकत्ता का किला सब से विख्यात है ॥

वाणिज्यद्रव्य ॥

भारतवर्ष से तम्बाकू चीनी पाट रुई लाख चावल गेहूं मक्का काफी शोरा पशम हाथीदांत औषधि दारचीनी

मिरच इत्यादिमसाले अतर इत्यादि सुगन्धित द्रव्य छाके
कीमलमल हीरा आदि बहुमूल्य पत्थर एरण्डकातेल कैं
ड़ियां औरमोती ये सबद्रव्य फ्रांस ब्रटिन और यूरोप के
अन्यान्यस्थानों में जाते है अमेरिका में हाट थैले लाख
मोमी कोठी औरनील यहां भेजाता है और अफीम यहां
से चीन और सिंगापुर कोजाताहै ब्रटिनद्वीपसेआता ची-
नीवर्तन काचवर्तन अच्छे २ परिच्छद छुरी काचू कैंची
आल्पीन प्रभृति लोहेकेद्रव्य नानाविध पुस्तक ओडीक-
लम पामेटमप्रभृति सुगन्धार्क कागज कलम पेन्सल
इत्यादि लिखने पढ़ने की सामग्री नानाप्रकारयंत्र नाना-
प्रकार रत्नालंकार और नानाविध वस्त्र भारतवर्ष में आ-
ताहै अमेरिकासे रूई थान कपड़ा चीनसेचाह आतीहै
इंगलेंड अर्व अमेरिका आष्ट्रेलिया और उत्तमाशा अन्त-
रीप से घोड़े आते हैं ॥

रेल

अब रेल कीराह बननेसे भारतवर्ष में वाणिज्य को बहुत सुगमता हुई है प्राय भारतवर्ष के सबस्थानें में रेल बनीहै परंतु यह समुदय रेल एक मनुष्य वाएक कम्पनीके अधीन नहीं इनमें से कुछ तोमुख्य सर्कारके अधीनहै औरकुछ भिन्न २ कम्पनी के अधीन है समुदय भारतवर्ष में १० रेलवे कम्पनी हैं इनमें से इष्टइण्डिया रेलवे इष्टरनबंगाल रेलवे सिंधपंजाबदिल्ली रेलवे अवध और रुहेल खण्ड रेलवे बंबई रेलवे मदरास रेलवे ये सब प्रधानहै जोरेल मुख्य सर्कारके अधीनहैं उसको स्टेट रेलवे

बोलते हैं जैसा नार्थर्न रेलवे राजपूताना स्टेट रेलवे इत्यादि ।

अधिवासि

भारतवर्ष में नानाजाति के लोग रहते हैं जिनकी रीति नीति आकृति प्रकृति भाषा और धर्म्म नाना प्रकार हैं उन में से हिन्दू और मुसलमान अधिक हैं हिन्दूलोग चार वरणों में विभक्त हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र उन में से ब्राह्मण लोग प्रधान हैं और उन्हों ने जो नियम किये हैं उनके अनुसार प्रायः वेचारों वरण चलते हैं एकमात्र ईश्वर की उपासना यद्यपि हिन्दू धर्म्म का सार है तथापि ये लोग ईश्वरके अंश जान कर शिव दुर्गा प्रभृति बहुविध साकार देवताओं की मूर्त्ति बनाकर पूजन करते हैं और इसीकारण से शैव वैष्णव गाणपत्य और शाक्त प्रभृति बहुविध सम्प्रदाय में येलोग विभक्त हैं इनके सिवाय हिन्दूलोग रामकृष्ण प्रभृति अवतार चंद्र सूर्य्य प्रभृति ग्रह पिप्पल वट इत्यादि वृक्ष गंगा यमुना इत्यादि नदियों की पूजा करते हैं गाय प्रभृतिजन्तुभी हिन्दू लोगों के पूज्य हैं । मुसलमान लोग भी सीया सुन्नी प्रभृति जाति में बटे हुए हैं परन्तु हिन्दू लोगोंके बीच जैसे परस्पर विवाहादि नहीं होता मुसलमानों के ऐसा नहीं हिन्दू मुसलमानों के सिवाय बौद्ध जैन्य कृश्चानादि भी भारतवर्ष में वास करते हैं परंतु उनकी संख्या बहुत न्यून है भारतवर्ष में मनुष्यसंख्या २६० ००० ००० है ॥

भाषा

यहां की भाषा एकही नहीं संस्कृत बंगाली हिन्दी इ-

त्यादि भाषा प्रचलित हैं उनमें से संस्कृत बहुत प्राचीन और सब देशोंकी भाषाओं का मूल है अब यद्यपि बोलने में नहीं आती तथापि इस भाषा में लिखित पुस्तक प्रायः भारतवर्ष के सब प्रदेशों में पढ़े और पढ़ाये जाते हैं अब भारतवर्ष में ये भाषा बोली जाती हैं हिन्दी उर्दू बंगाली पंजाबी गुजराती कर्नाटकी मरहटी तैलंगी आसामी उड़िया और काश्मीरी इत्यादि ॥

बंगाला प्रेसीडेन्सी वा
बंगाल अहाता ॥

पहले हम कह चुके हैं कि भारतवर्ष में अंग्रेजोंका अधिकार [illegible] तीन प्रेसीडेन्सीवा अहातों में विभक्त है जैसा बंगाल अहाता बंबई और मदरास अहाता । अब क्रम[illegible] वर्णन कियाजाता है ॥

बंगाल अहाता और दो अहातों से बड़ा है इसका क्षेत्रफल [illegible] वर्गमील है और यह प्रेसीडेन्सी तीन [illegible] के है इसके बसने वालों की संख्या [illegible] है इस अहाते में तीन सर्कार हैं बंगाल सर्कार, उत्तर पश्चिम देशीय सर्कार और पंजाब सर्कार । इन तीनों सर्कारों में तीन शासन कर्ता हैं जिन्हें लफ्टनण्टगवर्नर बोलते हैं ।

बंगाल सर्कारके अधीनस्थ प्रदेश — बंगाल बिहार छोटा नागपुर और उड़ीसा ये चार प्रदेश बंगाल सर्कार के अधीन हैं । इनचारोंमें से बंगाल सब से बड़ा है और उड़ीसा सब से छोटा है बंगाल सर्कार की उत्तर सीमा नेपाल, सिकम, भोटान, पूर्व सीमा आसाम, मनीपुर और

श्रोर दक्षिण सीमा बंगालेकासागर श्रोर मंदराज आहाता श्रोर पश्चिम सीमा उत्तर पश्चिम प्रदेशीय सर्कार श्रोर रेवा इसकापरिमाणफल ५११६० वर्गकोसहै श्रोरमनुष्य गणना ६६००००००

पहले कह चुकेहैं कि बंगालसर्कार के अधीन चार प्रदेश है उनमें से बंगाल विहार श्रोर उड़ेसा ये तीन बंदोबस्ती प्रदेशहै श्रोर छोटा नागपुर बेबंदोबस्ती प्रदेशहै बंदोबस्ती तीनप्रदेश आठ भाग सूबों में विभक्त हैं जैसा बंगाल में बरदवान प्रेसीडेन्सी राजशाही कोचविहारढाका चट ग्रामये ५ पांच विहार में पटना श्रोर भागलपुर उड़ीसा में उड़ीसा छोटानागपुर में छोटानागपुरही है इन नौविभागों में ४८ जिले श्रोर ८९ महकमाहैं दोवस्तीतीनविभाग में ८ कमिश्नर वाप्रधान शासन कर्ताहैं हवड़ा को छोड़कर प्रत्येक जिला एक २ मजिष्ट्रेट श्रोर कलेक्टर के अधीनहै ॥

जिस नगर में उन मजिष्ट्रेटश्रोर कलेक्टरों का विचारालय है उसे स्टेशनबोलते हैं वे बंदोबस्ती प्रदेश में केवल एक कमिश्नर श्रोर उसके प्रत्येक जिला में एक २ डिपुटीकमिश्नर शासन कर्ता है ॥

बंगाला देश

बंगाले के उत्तर शिकम श्रोर भूटान है पूर्व में आसाम मनीपुर श्रोरब्रह्मा दक्षिन में गंगसागर श्रोर उड़ीसा पश्चिम में छोटानागपुर श्रोर विहार के अंतर्गत समतल पर्गना श्रोरजिला पूर्निया इसका परिमाणफल ३२३००

वर्गक्रोश ओर मनुष्य ३६७००००० से अधिक हैं परंतु इनमें हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान अधिक हैं ॥

बंगाल की भूमि

बंगाले में गंगातटस्था भूमि प्रायः उर्वरा है और बंगाले के दखिन की भूमि जंगली ओर प्रान्तर है ओर दखिन ओर पश्चिम के मध्य की भूमि पत्थरेली है बंगाले के मध्य की भूमि समतल है ॥

जल पवन

बंगाला प्रदेश समुद्र के समीपवर्ती है इसलिये सजल है यहां वर्षा बहुत होती है मार्गशिर पौष ओर माघ महीने जाड़ा पड़ता है चैत्र वैशाख जेठ में गर्मी पड़ती है ॥

खेती का वर्णन

बंगाले के सम्पूर्ण जिलों में चावल उत्पन्न होता है बकरगंज त्रिपुरा ढाका राजशाही दीनाजपुर बगुड़ा मैमन सिंह बर्दवान जसोहर और २४ पर्गना इनजिलों में विशेषकरके चावल उत्पन्न होता है ओर यहां से अन्यान्य देशों में जाता है हुगली नदिया जसोहर मुर्शिदाबाद रामपुर बगुड़ा ढाका फरीदपुर मैमनसिंह इनजिलों में नील बहुत उत्पन्न होता है ॥

बगुड़ा रंगपुर ढाका त्रिपुरा मैमनसिंह नदिया हुगली हवड़ा ओर २४ पर्गना इन जिलोंमें पाट बहुत होता है हुगली मुर्शिदाबाद बांकुड़ा बीरभूमि मालदा बगुड़ा रंगपुर ओर जसोहर इन जिलोंमें रेशम बहुत होता है बर्दवान सुंदर बन दीनाजपुर ढाका फरीदपुर ओर बकरगंज इन में

हर्र बहुत होतीहै चाटग्राम मे मनसिंह रंगपुर नदिया बर्द वान — हुगली और २४ पर्गनोंमे तम्बाकू बहुतहोतीहै ।

२४ पर्गना और मेदनीपुर इनमेंलवणहोताहै श्रीहट्टमें एक प्रकार का बहुत अच्छासंतरा है जिसेबंगाली में कमलानिम्बू बोलते हैं इनके सिवाय बंगाले में प्राय सब स्थानें में नानाविध दाल और सरसों तिल और लालमिर्च इत्यादि नानाविध मसाले और नाना फल उत्पन्न होते हैं ॥

राज्यविभाग

विन्ध्याचल भारतवर्ष के मध्य में खड़ा होकर इसे दो भागें में विभक्तकरता है उत्तर भाग का नाम आर्य्यावर्त्त और दक्षिण भाग का नाम दाक्षिणात्य आर्य्यावर्त्त चार भागें में विभक्त हुआहै एकहिमालय प्रदेश दूसरा मध्य देश तीसरा प्राच्यदेश और चौथा उदीच्य देश ।

हिमालय प्रदेशमें

राज्य	राजधानी
१ भूटानवा भोटराज्य	तासीसुदन
२ शिकम — — — — —	शिकम
३ नेपाल — — — —	काठमाराडुवा काष्ठमराडप
४ कुमाउं — — — —	अलमोरा और केदारनाथ
५ गड्वाल — — — —	शिमला
६ सिरमोर — — — —	सिरमोर
७ काश्मीर — — — —	श्रीनगर

मध्यम देशमें

राज्य — — — — राजधानी

१ दुआब ------ दिल्ली, मेरठ आगरा इलाहाबाद
२ अयोध्या ------ लखनौ
३ राजपूताना ------ जयपुर, जोधपुर उदयपुर ४६
४ मालवा ------ उज्जैन, इंदौर
५ अजमेर ------ अजमेर
६ बुंदेलखंड ------ बांदा, कालिंजर, झांसी
७ रेवा ------ रेवा

मध्यप्रदेश = यह हिमालय और विन्ध्याचल के मध्यवर्त्ती है प्राचीनलोगों नें इसे आर्य्यावर्त्त कहा हैं·

प्राच्यदेश

राज्य ------ राजस्थान
बिहार ------ बिहार, गया और पटना
बंगला ------ कलकत्ता, ढाका और मुर्शिदाबाद
आसाम ------ सलंग, ग्वालपाड़ा

उदीच्यप्रदेश

राज्य ------ राजधानी
पंजाब ------ लाहोर, अमृतसर और मुलतान
सिन्ध ------ हैदराबाद, ताता, कराची
कच्छ ------ भुज
गुजरात ------ बरोदा सूरत द्वारका

दाक्षिणात्य

यह प्रदेश भी चार भागों में विभक्त है पहले नर्मदा प्रदेश २ प गोदावरी, ३ प कृष्णाप्रदेश ४र्थ कावेरी प्रदेश

नर्मदाप्रदेश

राज्य	राजधानी
खानदेश	बुरहानपुर, धूलिया
गोंडवाना	सम्बलपुर, देवगढ़
उड़ीसा	कटक, पुरी, बालेसर
बरार	नागपुर, एलचपुर

ये सब प्रदेश नर्मदा नदी के समीप वर्त्ती हैं

गोदावरी

औरंगाबाद	औरंगाबाद, अहमदनगर, नासीक
कोकनवा कंकण	बंबई, रत्नगिरि
बिदर	बिदर, दौलताबाद
हैदराबाद	हैदराबाद
उत्तरसर्कार	विजिगापट्टन, मुसलीपट्टन, वेटूर

ये सब प्रदेश गोदावरी नदी के समीपवर्त्ती हैं

कृष्णाप्रदेश

बीजापुर	बीजापुर, पूना, सितारा
बालपर	बल्लारी, कुड़प
उत्तर कर नाटक	मंदराज, अरकाट पांडुचरी, विलोर, नेलरू और चिंगलपट्ट

ये सब प्रदेश कृष्णा नदी के समीपवर्त्ती हैं ।

कावेरी प्रदेश

राज्य	राजधानी
मैसूर	श्रीरंगपट्टन, बंगलोर

कनाड़ा ——————— बंगलोर, बलोनोर
कुरग ——————— मरकरी
मलबार ——————— कालीकट, माही, टेलूचरी
द्रविड़ ——————— तनेजोर, देवीपट्टन
कोचीन ——————— कोंची
त्रिवाकुर ——————— त्रिं विंड्रुम
दक्षिण ——————— मदुरा टाकीवार
कर्नोटक ——————— त्रिचुनापल्ली

मुगलसम्राटों के राज में भी भारतवर्ष नानाप्रदेशोंमें विभक्त हुआ था १५८२ ई॰ में अकबर ने अपने साम्राज्य को ११ सूबों में विभक्त कियाथा जैसाकि, लाहोर मुलतान् अजमेर, दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद वा प्रयाग, अवध, विहार, बंगाला, मालवा, और गुजरात। कुछदिन के पीछे उन्होंने सिन्धुनदी के पश्चिम तटस्थ कई एक स्थान और काबुल तथा बरार खानदेश अहमदनगर ये सब अपने राजमें मिलालिये अब प्रायः सारा भारतवर्ष अंग्रेज़ों के अधिकार में है— १६ ९९ ई॰ मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने वाणिज्यके लिये भारतवर्ष में प्रथम कलकत्ता बम्बई इत्यादि नगरों में कोठियां स्थापन कीं। १६ ३९ ई॰ में मदरास के बीच थोडीसी भूमि प्रथम उन्के अधिकार में आई इस दिनमें इन्हों ने अपना बल और कोशल विस्तार करके प्रायः समुदय देश को अपने अधिकारमेंलाये अंग्रेजों का अधिकार तीनभागों में विभक्त है प्रथम बंगाला प्रेसीडेंसी २ य मदरास प्रेसीडेंसी ३ य बंबई प्रेसीडेंसी। सारा हे-

टि : शराज्य एक प्रधान शासन कर्त्ता के अधीन है उस का नाम गवर्नरजेनरल है । बंगाला प्रेसिडेंसी में बंगाला गवर्नमेंट पश्चिमोत्तरीय गवर्नमेंट और पंजाब गवर्नमेंट ये तीन हैं अर्थात् इन तीनों स्थानों में एक २ लफटनेण्टगवर्नर रहता है परन्तु मंदराज और बंबई प्रेसीडेंसी में केवल एक २ गवर्नर है ।

(८) प्रदेश विभाग

पहले कहा गया कि बंगाला प्रदेश पांच कमिश्नरी में विभक्त है । जैसा वर्दवान, प्रेसीडेन्सी राजशाही, कोचविहार, ढाका, और चटग्राम इन विभागों में २७ जिले और इन जिलों में कितनेक पर्गने और ५४ महकमे हैं ॥

बंगाले के प्रसिद्ध नगर

कलकत्ता—— यह इंगरेजों की राजधानी है और गवर्नर जेनरल यहांही रहते हैं यह समुद्र से ५० कोस के लगभग दूर है और हुगली नदी पर बड़ी सुंदरताई से बसा है । इस की मनुष्य संख्या ५००००० है उन में से ८००० यूरोपियन हैं यह दो भागों में विभक्त है प॰ भाग में देशी लोग रहते हैं उसे अंगरेजी में नेटिव क्वाटर बोलते हैं, यह उत्तर की ओर है इस में बहुत रस्ते तंग और अपरिस्कार हैं और दखिन भाग में यूरोपीय लोग बस्ते हैं इस के रस्ते बहुत खुले और साफ हैं इस भाग में फोर्टविलियम नामक एक अंगरेजों का बनाया किला बहुत सुंदर और दृढ़ है और इस में लार्डसाहिब की कोठी इत्यादि बहुत अच्छी हैं कलकत्ता का वाणिज्य बहुत हरतरका विस्तृत है एशिया के बीच ऐसा अच्छा नगर और कहीं नहीं और

यहां प्रेसीडेन्सी संस्कृत मेडिकल कालेज इत्यादि गवर्नमे-
न्ट विद्यालय और जेनरल असेम्बलीज़ इत्यादि मिशनरी-
यों के भी बहुत विद्यालय हैं १६९० ई॰ में अंगरेज़ लोग कल
कत्ते में प्रथम ही आये और १७५६ ई॰ में इनकी बनाई हुई
कोठियां बंगाले के नवाब सिराजुद्दौला ने लूटलीं। और
५७ में लार्ड क्लाइव ने प्लासी के संग्राम में नवाब को जीतकर
बंगाला, बिहार, और उड़ीसा, की सूबेदारी आपलेली और त-
भी से इनके राज्य की प्रथम जड़ जमी और कलकत्ते की शो-
भा बढ़ने लगी ॥

कलकत्ते के १२ मील उत्तर में श्रीरामपुर नाम एक-
छोटे से नगर में १८४५ ई॰ तक डेन लोगों का अधिकार था
तभी अंगरेज़ों का अधिकार आया यह कमिसनरियों का प्र-
धान वासस्थान था अबतक भी यहां कमिसनरियों का एक
कालेज है और बहुत कमिसनर लोग रहते हैं इसके उत्तर में
वर्दवान नगर है जिस के कुछ दूर पर रानीगंज नामक स्थान
है यहां बहुत पत्थरी कोयलों की खान है मुर्शिदाबाद उसके
उत्तर है यह नगर पहले बंगाले की राजधानी थी कलक-
त्ते के ७० कोश ईशान कोन पर ढाका नगर है जो प्राचीन
काल से मलमल के लिये प्रसिद्ध है कलकत्ते के २४० कोस
वायुकोन पर पटना नगर गंगा के तट पर है यहां चावल
नील और कपड़ों का व्यापार होता है कलकत्ता के ११० को-
स नैऋत कोन पर कटक नाम नगर महानदी के तट पर
है २१ कोस दक्षिण पर विख्यात जगन्नाथ देव का मंदिर है
जो हिन्दुओं का बड़ा तीर्थस्थान है और दूर २ के लोग यात्रा-

करके आतेहैं कलकत्ताके ३०० कोस नैऋत कोन पर नागपुर है यह पहले बरार देशकी राजधानीथी १८५३ में अंगरेजी-राज्य में मिलगया ॥

जिला

बंगाले में इतने जिले हैं

विभाग	जिला
प्रेसिडेन्सी	२४ परगना, नदिया, जसोहर, मुर्शिदाबाद
बर्दवान	बर्दवान, बंकुड़ा, बीरभूमि, मेदिनीपुर, हुगली, हेवडा,
राजशाही	दीनाजपुर, मालदा, राजशाही, रंगपुर, बगुड़ा, पाबना, दार्जिलिंग, जलपाईगुडि, और कूचविहार,
ढाका	ढाका, फरीदपुर, बकरगंज, मैमनसिंह, त्रिपुरा, और त्रिपुरापर्वत
चटग्राम	चटग्राम, नवाखाली, और चाटग्रामपहाड़
पटना	पटना गया शाहाबाद मुजफ्फरपुर दारभंगा सार्न चंपार्न
भागलपुर	मुंगेर, भागलपुर, पुर्निया और सौंताल
उड़ीसा	कटक, पुरी, बालेसर,
छोटानागपुर	हजारीबाग लोहारडागासिंह भूम औरमानभूम

बंगाली लोगोंकेस्वभाव

बंगाली लोग शांत भीनस्वभाव बुद्धिमान और साहसहीन होतेहैं विद्यालाभमें इनका यत्नहै परंतुविद्यालयछोड़नेपर उनका मन नहीं रहता येअतिथिपालकहैं

भाषा

बंगाले में बंगाली उर्दू और उत्कलभाषा प्रचलितहै इसके सिवाय आसामी प्रभृति भाषाओंकाभी व्यवहार होताहै ॥

उत्तर पश्चिम प्रदेश वा हिन्दूस्थान

इसके उत्तर में हिमालय अथवा नेपाल पूर्वमेंबंगाल द-

दिशामें रेवा बुंदेलखंड सागर ग्वालियर धौलपुर भरतपुर इ-
सका क्षेत्र फल १०६९९ वर्गकोस है औ मनुष्य संख्या प्राय-
६१००००० है इसदेशके जिनस्थानों से गंगा जमना रामगंगा
गोमति घाघरा औररोहणाप्रभृति नदी प्रवाहितहोतीहैं वह
सम्पूर्ण समतलदेशहै इसमें कहीं२ ऊंचीनीची भूमिभीहै ।

जल पवन

उत्तरपश्चिम प्रदेशका जलपवन प्रायःअच्छाहै परंतु स्वास्थ्य करनेके लियेबहुत उपयोगी है यहां वृष्टि बहुत थोड़ी होतीहै ग्रीष्म ऋतु में यहां कभी२ ऐसीउष्णवायुचलती है कि सहनहीं होती यहां ग्रीष्म ऋतुमें जैसाग्रीष्म का आधिक्य होताहै शीतऋतु में ऐसा शीतकाभी आधिक्य होता-
है इस प्रदेश के बीच नैनिताल मसोरी उत्तमस-
स्य कर स्थान है ।

भूमि

यहांकी भूमि प्रायःउर्वराहै परंतु स्थान२में ऊसरनाम वहै वहां खेतोंकेबीच गहराकूआ खोदकरपानीनिकालतेहैं ।

खेती

यहां उत्पन्न खेतियों के बीच गेहूं प्रधानहै परंतु यहां केलोग जौ, भुट्टा, और बाजरा बहुत खातेहैं यहां किसी२ जिले में चावल भी उत्पन्न होतेहैं इनके सिवाय चूट,मटर प्रभृति अनाज और आलू,गाजर निम्बू नन्तरे आम अमरू-
द खांड अंगूर इत्यादि फल मेवे उत्पन्न होतेहैं देहरादून औ-
र कुमाऊंमेंउत्तम चाय उत्पन्नहोतीहै रुहेलखंडमें चावल चीनी रुई सन,पाट,तम्बाकू औरनील उत्पन्न होताहै ।

वन

यहां इतनेबनहैं कुमाउंकावन, देहरादून, रुहेलखंड गोरखपुर श्रौरझांसीकाजंगल इन जंगलोंमें बड़े २ मोटेमोटे वृक्ष होतेहैं । इनमें शालादि पेड़ों सिवाय यूरोपीय श्रौरश्रा- ष्ट्रेलिय वृक्षभी बोये गयेहैं

खानिद्रव्य

बुंदेलखंड के भीतर पन्ना नामकस्थान में हीरों की खान है चुनार श्रौर मिर्ज़ापुर में अच्छे २ संगमर्मर के पत्थर मिलतेहैं ॥

जंगली जन्तु

हिमालय के निकटस्थित प्रदेशों में बाघ, चीता, रीछ, बनबिल्ली, हाथी जंगलीगा या पहाड़ी बकरी कस्तूरीवालामृग, चमरीगाय, श्रौर जंगलीकुत्ते, बहुतहैं । यहां गाय भैंस श्रौर बिल्लीप्रभृति नानाविध ग्राम्यजीवहैं इनके सिवाय यहां अनेक भांति के सांप श्रौरजलचर जीव श्रौपखेरू देखेजातेहैं ।

वाणिज्य द्रव्य

इसप्रदेश सेरुई, नील, लवण, चीनी, तम्बाकू नानाप्रकार का अन्न, घोड़ा, पशम, शालदुशाले, भांति २कीछींट, बनारसी दुपट्टे सीनखावकेवस्त्र गुलाब अतर श्रौरगंगाजल वाणिज्यकेलिये अन्यदेशोंमेंजाताहै ।

रहनेवाले

यहां के लोगोंमें सुंदर बलवान बहुत लंबेनहीं होते ये लोग, साहसी, बलवान, परिश्रमी श्रौर दयालु होतेहैं परन्तु यहां बहुत गंवार, मूर्खलोगभी देखेजातेहैं श्रौर यहां

हिन्दी और उर्दू इन दो भाषाओं का व्यवहार है ।

प्रदेश विभाग

उत्तरपश्चिम प्रदेशीय गवर्मेन्टके अधीन सात ७ कमिश्नरी हैं । जैसा बनारस इलाहाबाद आगरा, मेरठ, रुहेलखंड, कुमाउं, और झांसी और ७ विभागोंमें ४९ जिले हैं

विभाग	जिला
बनारस	आजमगढ़, मिर्जापुर, बनारस, गाजीपुर, गोरखपुर, और बस्ती
इलाहाबाद	कानपुर, फतहपुर, बान्दा, हमीरपुर, इलाहाबाद, और जौनपुर,
आगरा	मथुरा, आगरा, फरुखाबाद, मैनपुरी, इटावा, और एटा
मेरठ	देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बुलंदशहर, अलीगढ़
रुहेलखंड	बिजनौर, मुरादाबाद, बदाउं, बरेली, और शाहजहांपुर
झांसी	झांसी, जालन, ललितपुर,
कुमाउं	गढ़वाल कुमायुं और तराई

प्रसिद्ध नगरोंका वर्णन

बनारस जौनपुर के पूर्व और गाजिपुरके दखिन गंगाके पूर्व तटपर स्थित है

यह वरुना और असिनामक दो नदीके मध्यमें स्थित है इसलिये संस्कृत में इसका नाम वाराणसी है और जिसका अपभ्रंश बनारस है यह नगर कलकत्ता से २०० कोस दूर है यह संस्कृत विद्या का स्थान है और हिन्दुओं का सर्वप्रधान तीर्थस्थान है यहांकी चीनी बड़ी प्रसिद्ध है और इसका वाणिज्य बहुत दूरतक विस्तृत है यहां गंगा नहाने के लिये मणिकर्णी का केदार दशाश्वमेधादि अनेक घाट हैं यहां राजा मानसिंहकृत बहुत कौशलमय एक मानमंदिर है इसके ५॥ कोस ÷

हूलीपर सिकरल नाम स्थान में अंगरेज़ बास करतेहैं और वहां गवरमेन्ट कालेज प्रभृति देखने योग्य स्थानहैं इस के पश्चिम पार में रामनगर नामक स्थान है यहांवर्तमान काशीराज बासकरतेहैं काशीके नीचे गंगा उत्तर दिशाकोबहती है इसलिये वहां दिशाओंका निर्णय नहीं होता ॥

मिर्ज़ापुर

यह नगर भी गंगातटपर अवस्थित है यहां रेशम और रूई काबड़ा वाणिज्य होताहै इस से कुछ इधर चनार प्रसिद्ध किलाएकपर्वत पर बना हुआ है

जौनपुर

यह गोमती नदिके तीरपर है यहां अकबर काबनाया एक दृढ़ पुल है ॥

इलाहाबाद

यहगंगा और यमुनाके संगमपर बसाहै संस्कृत में इसे प्रयाग बोलतेहैं औरयहभी कहतेहैं कियहांसरस्वती नदी गुप्त होकरबहती है यह बंबईसेथ ८९ कोसहै यहांएक दृढ़किलाहै जिसके भीतर अक्षयवट १ लम्भ और एक देवमंदिरहै प्राचीनकाल में यहभारद्वाजमुनिका आश्रमथा अब अंगरेजों की उत्तर पश्चिम प्रदेशीयराजधानीहुई कईएक वर्षहुए कि यहां हाईकोर्ट स्थापित हुआ और मेडुरकालेज प्रभृतिविद्यालय नियतहुए यहभीहिन्दुओं कातीर्थ स्थानहै यहां से सन रूई नील औरचीनी औरदेशों में जाती है ॥

बान्दा—— इलाहाबाद के दक्षिण बेतवती के तट पर है इसका प्राचीन नाम कालिञ्जरगिरी कानपुर—— गंगानदी

के दक्षिण तट पर स्थितहै यहां सेनाकी छावनी है इसका वाणिज्य बहुतदूरविस्तृतहै १८५८ ईस्वी में नानासाहिबनेय हां बहुत अंग्रेज़ोंकाहननकिया जिस स्थलमें वह हत्याकाण्ड हुआथा उसके ऊपर एक समचतुष्कोण सुंदरबागहै और उसके बीच एकसमाधिमंदिरहै इसके समीप स्थित बिठूर नामक स्थान महर्षिवाल्मीक का आश्रमथा ॥

फ़रुख़ाबाद — यहांएकटकसालथीजिसमें १८२४ ईस्वीतक रुपैये बनाये जाते थे परंतु अबबंदहोगये इसके समीपवर्ती कन्नौज जिसे पूर्वकाल में कान्यकुब्ज,बोलतेथे मुसलमानों के आने के पहले बड़ा समृद्ध था और हिन्दू राजा ओं की राजधानी थी उस के पास फतहगढ़ नामस्थान में अंग्रेज़ों की एकछावनी है ॥

आगरा — यमुनानदी के पश्चिमतीरमेंबसाहै और कलकत्तासे ३५५ कोस वायव कोनपर है यह नगर अकबर के समयतक मुगलों की राजधानी थी और उस समय इस समान सुन्दर दूसरा कोई नगर नथा इस नगर में शाहजहां ने अपनी बेगम स्मरणार्थक ताजमहलनामक मंदिर बनाया जोपृथ्वी के सब गृहों से बहुत सुंदर है इसके तीन- कोसउत्तर में सिकंदर नगर के बीच अकबरकी समाधिहै मथुरा वृन्दावन स्थान यमुना के तटपर है हिन्दुओंकेतीर्थ स्थान हैं और श्रीकृष्णकी लीला के लिये प्रसिद्धहैं परंतु अब यहां ब्राह्मणों की चमत्कार लीलाहोती है वृन्दावन बड़ा रम्यस्थान है यहां अच्छे २ सुंदर मंदिर देखने में आते हैं

अलीगढ़ — यहां दौलतरावसेंधियाका बनाया प-

सिद्ध दुर्ग (किला) है १८०३ ईस्वी में लार्ड लेकने सेंधिया के सेनापति पेरिन को पराजित किया

मेरट — यहांका जलपवन बहुत स्वस्थ करहै यहां यूरोपदेशीय सबफलादि प्रायः उत्पन्न होते हैं कहते हैं कि मेरट प्राचीन काल में मय दानव की राजधानी था और इसकानाम मिर्थ था

सहारनपुर — इसके उत्तर में जो हिमालय की श्रेणी है उससे गंगा और यमुना निकली है और बहां सिद्ध भी हैं यहां चमड़े का काम अच्छा होता है यहां से होकर लोग हरिद्वार में जाते हैं हरिद्वारके समीप रुड़की नामनगर में इञ्जनीरिङ्ग कालेज और बहुत कलविद्याका घर है

देहरादून — यहांका जलपवन बड़ा स्वस्थकर है और इसलिये मसोरी नगर में अंगरेज लोग वायु सेवन करने को जाते हैं इसके समीप स्थित द्जिलानाम स्थान में एक आश्चर्य जलप्रपात है ।

बिजनौर — मुजफ्फर पुर के पूर्व है यहां ईख गेहूं और कपास बहुत होती है इस जिले में गंगा प्रधान नदी है नजीबाबाद इसका सदर मुकाम है और बिजनौर चांदपुर सम्भल हसनपुर प्रधान नगर हैं बिजनौर के पूर्वमें मुरादाबाद है जिसमें धान्यादि बहुत उत्तम उत्पन्न होता है

बरेली — यह बदाऊं के पूर्वमें है यहां की भूमि बहुत उर्वरा है यहां अच्छे २ स्वादु फल उत्पन्न होते हैं यहां लकड़ी की कामदारी बहुत उत्तम होती है यहां पिलभीत नाम एक मंडी है यहां पहाड़ी वस्तुओं का व्यापार होता है

शाहजहांपुर— यह बरेली के पूर्व में है यहां गंगा सरयू और गोमती नदियां बहती हैं यहां का जलवायु अच्छा नहीं है यहां धान, गेहूं, जौ, तम्बाकू, और कपास आदि खेतियां उत्पन्न होती हैं यहां मदिरा बहुत अच्छी बनती है और हाथी बाघ आदि जंगली जीव बहुतायत से हैं

कुमायुं— और हटिस गढ़वाल— इन दोनों जिलों में बहुत पर्वत हैं जिनसे अलकानन्दा आदि कई एक छोटी २ नदियां निकलकर गंगा में मिलती हैं अलकानन्दा की रेत में सोना मिलता है कुमायुं में प्रायः भूचाल होते रहते हैं यहां शाल देवदारु आदि पेड़ जंगलों में होते हैं और लोहा और शीशे बहुत मिलते हैं यहां धान कपास जौ गेहूं भुट्टा और तम्बाकू बहुधा उत्पन्न होता है किदारनाथ बैजनाथ देव-प्रयाग इत्यादि तीर्थस्थान भागीरथी और अलकानन्दा नदियों के संगम पर है रुद्रप्रयाग नाम तीर्थ सार गंगा मंदाकिनी और अलकानंदा नदी के संगम पर है अलमोरा कुमायुं का सदर मुकाम है नैनीताल इस में प्रसिद्ध स्वस्थ का स्थान है यह एक प्रतिनिधी कमिश्नर के द्वारा शासित होता है ॥

झांसी— यहां कपड़े का बहुत व्यापार होता है यहां तीर कमान बर्छी इत्यादि शस्त्र अच्छे २ बनते हैं यहां का सदर मुकाम भी है ॥

पञ्जाब

इस की उत्तर सीमा हिमालय, पश्चिम सीमा सुलेमान पर्वत श्रेणी और काबुल दक्षिण में सिंध प्रदेश की -

मरुभूमि और पूर्व में उत्तर-पश्चिम प्रदेश इसकी लंबाई ४००० कोस और चौड़ाई ३२५ कोस और परिमाण फल ५०००० वर्ग कोस है पंजाब के आधे से अधिक करद और मित्र राजाओं के अधीन है पंजाब में इंगरेजों के राज का क्षेत्रफल २५५०० वर्ग कोस है यहां की मनुष्य संख्या १७५००००० से भी अधिक है इस में पांच नदी रहने से प्राचीन काल में इसे पंचनद पुकारते थे फिर पंच आप जिस से मुसल्मान लोग पंजाब पुकारने लगे क्योंकि फारसी भाषा में अप (जल) को आप कहते हैं पंजाब के उत्तर भाग में पर्वत श्रेणी शोभा पाती है दक्षिण भाग समतल क्षेत्र है और इसके बीच से सिंधु नदी पंचधारा होकर बहती है हिमालय के दक्षिण और पंजाब की उत्तर पूर्व सीमा में जो पर्वतीय देश है उस में बहुत प्रकार के पत्थर मिलते हैं यहां बहुत लाल लवण की खान है पश्चिम में जो पर्वत श्रेणी सिंधु और जेहलम के बीच स्थित दुआबे को उलंघ सुलेमान पर्वत से मिलती है उस में बहुत लवण फिटकरी रसांजन और गंधक उत्पन्न होता है अब पंजाब में पत्थरी कोइलों की खान भी निकली है पंजाब में ये पांच नदी हैं सतलुज व्यास रावी चनाब और जेहलम.

यहां सिंधु नदी सब नदियों से बड़ी है और पांचों नदियां सिंधु में मिलकर अर्ब के सागर में गिरती हैं पंजाब की भूमि पांच नदियों के द्वारा पांच भाग में विभक्त होती है और प्रत्येक भाग को दुआबा बोलते हैं जैसा जालंधर अथवा बिस्त दुआबा सतलुज और ब्यास के बीच में बारी

दुआबा ब्यास और रावीके बीच रचना रावी और चनाबके बीच जच चनाब और जेहलम के बीच सिंधदुआबा जेहलम और सिंधु नदी के बीच है पंजाब की पांचों नदियों के नाम संस्कृत में ये हैं सतलज– शतद्रु, ब्यास–विपाशा, रावी– ऐरावती, चिनाब–चंद्रभागा औरजेहलम वितस्ता हैं

जलवायु

पंजाब की जलवायु बहुत शुष्क और गर्म है यहां ग्रीष्मकाल में जैसी गर्मी होती है वैसीही शीत काल में सर्दी होती है इस प्रदेश के बीच डलहौजी, शिमला, सबाटू, कोहमरी धर्मशाला अर्थात् भागसू विशेष स्वस्थकर स्थानहैं।

खेती

पंजाब की भूमि उर्वरा है इसलिये यहां नानाविध खेतियां उत्पन्न होती हैं उन में से गेहूं नील कपास अफीम ईख तम्बाकू प्रधान हैं इनके सिवाय यहां धान जौं बाजरा मूंगी मटर ज्वार भुरा सरसों सन कसुंभा छोले आलू आदि बहुत होते हैं और अम्ब अनार संतरा आड़ू खरबूजा सेब अंगूर इत्यादि स्वादु फल उत्पन्न होते हैं यहां सहत मोम मक्खन बहुत मिलता है मुलतान की हींग बड़ी अच्छी होती है जिला गुरगांव में और कांगड़ा की पहाड़ियों में लोहा अच्छा मिलता है बन्नू और कइएक पर्वतों में शीशा अच्छा मिलता है।

शिल्प अर्थात कारीगरी

पंजाब के और शिल्प कलाओं से अमृतसर, लाहौर और मुलतान इत्यादि नगरों में रेशमी वस्त्र और दुशाले –

आदि वस्त्र वहुत प्रसिद्ध हैं ॥

व्यापार

पंजाबी लोग नाना देश से वहुविध द्रव्यादि लाकर सिंधनदी के पश्चिम तटस्थ देशों में वाणिज्य करते हैं यहां से भी नाना प्रकारका अन्न, पशुओंके सींग, पशम, रूई, दुशाले, रेशम, लोहा, चाकू, चमड़ा, तमाकू, लवण, और घोड़े, खच्चर, और २ देशों को जाते हैं सम्प्रति कांगड़ा जिला के वीच पालमपुर नामक नगर में प्रतिवर्ष एक मेला होता है जिसमें वहुत देशी विदेशी द्रव्यका व्यापार होताहै दिवाली को ऐसाही वड़ाभारी मेला अमृतसर में भी होताहै ॥

जंगली जीव

यहांसिंह, वाघ, चीता, रीछ, उल्कामुखी, भेड़िया, गिद्दड़, लोमड़ी, सूर, हरिन, वानर, लंगूर, इत्यादि अनेक जीव हैं जो वनमें रहते हैं ग्राम्य जंतुओं में भैंसगाय घोड़े भेड व करी ऊंट और गधे वहुत हैं

कमिश्नरी

पंजाव में १० कमिश्नरी हैं जैसा पिशोर डेराजात, रावलपिंडी, लाहोर, मुलतान, जालंधर, अमृतसर, अम्वाला, दिल्ली, और हिसार, इन १० कमिश्नरीयों में ३२ जिले हैं और १३२ तहसील हैं ॥

३२ जिले और उन के प्रधान नगरों के नाम नीचे लिखे जाते हैं ।

जिला प्रधान नगर अर्थात् तहसील

पिशोर	पिशोर अटक
कोहाट	कोहाट होटू.
हजारा	हजारा हरीपुर हैबटाबाद

येतीनो ज़िले पिशोर की कमिश्नरी में है

बन्नू	इसाखेल कालाबाग
डेरह इस्माईलखां	डेरहइस्माईलखां लय्या कुलाची
डेरहगाजीखां	डेरहगाजीखां जमपुर

येतीन डेराजात में हैं

ज़िला	रावलपिंडी तहसील
रावलपिंडी	रावलपिंडी पिंडीघेप
जेहलम	तलागांव, जेहलम, पिंडदादनखां
गुजरात	गुजरात जलालपुर
शाहपुर	भेरा शाहपुर सियाही खुशाब

लाहोर

लाहोर	लाहोर कसूर सरकपुर चूनियां
गुजरांवाला	गुजरांवाला शेखूपुरा
फिरोजपुर	फिरोजपुर आलीवाल [illegible]मुदकी
मुलतान	मुलतान मुलतान शुजाबाद
झंग	झंग मखियाना
मुजफरगढ़	मुलतान मुजफरगढ़ कोटअद्दू
मिंटगुमरी	मिंटगुमरी पाकपट्टन

जालंधर

जालंधर	जालंधर राहों करतारपुर [illegible] नकोदर
होशयारपुर	होशयारपुर उडमुड दसूहा [illegible] [illegible]

कांगड़ा	नूरपुर कांगड़ा धर्मशाला
	अमृतसर
अमृतसर	अमृतसर मजीठा जंडयाला
स्यालकोट	स्यालकोट पसरूर
गुरदासपुर	दीनानगर कलानौर गुरदासपुर
	अम्बाला
अम्बाला	लुदिहाना गुरगांव राईकोट
लुदिहाना	लुदिहाना गुरगांव राईकोट
शिमला	शिमलासबाटु महासुर कालका
	दिल्ली
दिल्ली	दिल्ली सुनपत फरीदाबाद
गुड़गावां	सोरी फिरोजपुर फिरैक
करनाल	करनाल पानीपत कैराना
	हिसार
हिसार	हिसार हांसी तोशाम फतयाबाद
रोहतक	रोहतक बिराई जभूर
सरसा	सरसा इलामाबाद

अब कई एक जिले और नगरों का विशेष वर्णन किया जाता है ॥

पिशोर — यहां सिंध और काबल प्रधान नदी हैं गेहूं जौं भुट्टा यहां बहुत होता है यहां का चावल पृथ्वी के सब चावलों से अच्छा है पिशोर नगर अकबर ने बसाया यह सहर पनाह के भीतर बसा है अटक नामक स्थान सिंधनदी के तट पर है यहां सिकंदर, तैमूर और म-

हरशाह ने इस नदी के पार होके भारतवर्ष में प्रवेश किया।

कोहाट इसकी भूमि उर्वरा है कोहाट नगर के कुछ पूर्व में सिकब नामक स्थान में कितने एक कुंड हैं जिनसे गर्म पानी निकलता है वहां बहुत गंधक निकलता है

लइया-यह प्रसिद्ध वाणिज्यस्थान है और सिंधु नदी के तीर से ५ कोस दूर पर है ॥

डेरहगाजीखां यह डेराजात कमिश्नरी के दक्षिण में है यहां बहुत उष्णप्राय जल है ।

यहां गेहूं बाजरा कपास और नील भी उत्पन्न होता है डेरहगाजीखां शाहर वाणिज्य का स्थान है वहां रेशम और रुई का कारखाना बहुत है उसके समीप सखिसरोवर प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है ॥

रावलपिंडी-यहां बहुत मनुष्य रहते हैं और यहां एक बड़ा बाजार है

जेहलम- इस जिले में गेहूं जौ रुई बहुत उत्पन्न होते हैं यह शाहर वितस्ता अर्थात् जेहलम नदी के दक्षिण तीर पर है १५४० ई. में रोहतास का प्रसिद्ध किला दिल्ली के बादशाह ने बसाया ॥

गुजरात - जेहलम और चनाब नदी के मध्य में है १८४९ ई. फरवरी में यहां अंगरेजों ने सिखों की सेना के पति शेरसिंह को पराजित करके पंजाब में अधिकार पाया इसी सन में इस जिले के बीच चुलियांवाले गांव में सिखों के साथ अंगरेजों का एक बड़ी लड़ाई हुई ।

लाहौर - इस जिले के मध्य से ऐरावती अर्थात् र-

की नदी बहती है जिससे यह दो विभाग में विभक्त हुआ उनमें से प्रथम—रचनादुआबा और दूसरा बारीदुआबाके बीच में है लाहौर रावीके पूर्व तीरमें है पंजाबकेलाटसाहिब यहां पर रहते हैं यहां गवर्नमेन्टकालेज ओरियण्टल कालेज, नार्मलस्कूल, मेडिकल और आर्टस् स्कूल इत्यादि बहुतस्कूलहैं पंजाबके डैरेक्टर का कार्य्यालय पंजाब युनिवर्सिटी कालेज केरजिस्ट्रार साहिबका कार्य्यालय औारसेन्टहाल यहां पर है यहां डाक्टर श्रीमान् लाइटनर साहिब के यत्न से अंजुमन पंजाब अर्थात् शिक्षासभा नामक एक कमेटी है जिससे पंजाबको बहुत लाभ होताहै पंजाबकी चीफ़ कोर्ट प्रभृति मुख्य कचहरियां यहां हैं लाहौर शहरपनाह के अंदर बसाहै इसकासदरबाजार अनारकली नामक स्थान प्रतिदिन उन्नति पाताजाताहै यहसदर शहरपनाह के बाहिर दक्षिण की ओर बसाहै और इसके ३ कोस पूर्व में मियामीर नामक एकबड़ी प्रसिद्ध छावनी है लाहौरशहरके समीप उत्तरकीओर किला है जिसके समीप बादशाही मसजिद, और रणजीतसिंह की समाधिहै, और यहां से ३ तीनकोस उत्तर पश्चिमकी ओर नदी के दायें किनारे शाहदरा नामक स्थानमें जहांगीर बादशाह की बड़ी बेगम ने योग्य समाधि बनी है और लाहौर के पूर्व ३॥ कोस के अंतरपर शालामार नामक एकमनोहर बागहै कहतेहैं कि शाहजहां बादशाहने इसेबनवायाथा इसबाग में (बाग) तीन मंजिल है और प्रत्येक मंजिल में बावली

हैं जिनकी संख्या ३६ है कहतेहैं कि लाहौरकानाम पहले लवपुरथा औरमहाराजा रामचंद्र के बड़े बेटे लवनेइसेबसायाथा औरयहनगर चारों ओर दो कोस विस्तृतथा यहनगर निःसंदेह बहुत प्राचीन है क्योंकि जबइसकी भूमि को खोदतेहैं तो बहुत प्राचीन गृहादियों के चिह्न देखने में आतेहैं १५२० ई. में बाबरने यहांअपनी राजधानी बनाई ॥

गुजरांवाला — यहरचनादुआबे के बीचमें है घी, पशम, लोहा, गल्ला का वाणिज्य होताहै गुजरांनवाले शहरमें रणजीतसिंह के पूर्व पुरुष वासकरतेथे ॥

फिरोजपुर — इसजिले की अल्पभूमिमें खेति होती है और सब मरु और जंगल मय है यहां टूटे हुए बड़े २ महल और गहरे २ कूए बहुतदिखाई देते हैं इस से जानाजाता है कि प्राचीन कालमें इसकी बस्ती अधिक थी फिरोजपुर को फिरोजशाह तुगलक ने बसाया, मुदकी, सतलजकेतीरहै १८ ४५ ई. में दिसम्बर महीनेमें इस स्थानपर सिख और अंगरेजों की बड़ीभारी लड़ाईहुई जिसमें सिख सेना पति लालसिंह ने बहुत वीरतासे लड़ाईकरके अंतमें अंगरेजोंके सेनापति गफ साहिबसे पराजितहुआ १८ ४६ में आलीवाल ग्राम और सुब्राम पाहन में अंगरेज और सिखों से बड़ाभयंकर युद्ध हुआ था परंतु दोनों युद्धों में अंगरेजों ने विजय पाई॥

मुलतान — यहनगर लाहौर के दक्षिणपश्चिम चनाब नदीके पूर्व तीर पर शाहनसमाह के अंतर्गतबसा

हुआहै यहां नानाविध स्वादुफल और शस्य उत्पन्न होतेहैं दुशाला रेशम, रुई, मखमल, तिलेकपड़ा, गलीचे, प्रभृतिकाव्यापार यहां बहुत होता है इसके समीप एक अंगरेजों की छावनी है ॥

जालंधर— यहां की जलपवन स्वस्थ्यकर और भूमि उर्वराहै और यहां आंब और गेहूं ईख बहुत उत्पन्न होतेहैं। और यहां जल बहुत थोड़ा गहराहै अर्थात् कहीं २ तो एक दोहीगजभूमिखोदने से जल निकलपड़ता है इसनगर में पहले लोदीवंश वासकरता था, शहरके तीन ३ कोस पर अंगरेजी छावनीहै ॥

कांगड़ा— इसनगर के समीप बहुतअच्छीचाह उत्पन्न होतीहै इसके १३ कोस ईशान कोनमें मनिकरणनाम एक उष्णाकुंड है उसका जल ऐसा उष्णहै कि उसमें चावल डालने से शीघ्र ही पकजातेहैं औरकांगड़ा के ११ कोस दूरी पर ज्वालामुखी नामकतीर्थ है जिसमें मंदिर के अंदर औरबाहिरभी रातदिन अग्निकीज्वाला निकलती रहतीहैं कांगड़ा में एक टीले पर पत्थरका किला बहुत दृढ़ बना है और उसकेबीच सेना रहती है धर्मशाला अंगरेजों की छावनीहै और उसमें गर्मी के दिनों में बहुत अंगरेज रहने के लिये आतेहैं ॥

अमृतसर— लाहौर के उत्तर पूर्व २० कोस है यहां बहुत बस्तीहै १५८१ ई॰में गुरुरामदासने इसनगर के बीच एकताल लावनाया और उसका नाम अमृतसर इसलिये रखा कि यहां नहाने से मनुष्य अमर हो जायेंगे और उसदिन से

यहां बहुत यात्री आते हैं १७०४ में यहां गुविंद गढ़ का किला रणजीतसिंहने बनाया अमृतसरमें दुशाले और रेशम का व्यापार अधिक होताहै ॥

अम्बाला—इस जिले की बहुतभूमि निम्नतल है परंतु उर्वराहै यहां का प्रधान नगर अम्बाला है अम्बाले काजेला पवन गर्म है थानेसर सरस्वतीनदीके बायें तट पर है १०१० ई॰ में महमूद गजनवी मुलतान से अबुलफतह लोदी को कैद करले गया और फिर दूसरे वर्ष आकरथानेसर लूटा इसनगर के समीप कुरुक्षेत्र और कुरुक्षेत्र नामक झील है इसस्थान में कौरव और पांडवों का युद्ध हुआ और कहते हैं कि यह झील अर्जुन ने एक बाणसेबनाईहै। लुद्हियाना—यह नगर लोदी घराने से संस्थापित हुआहै यहां के लोग बड़े सूरवीर होतेहैं और मोटे २ कपड़े पहनतेहैं लुद्हियाने में बहुततरह का कपड़ा बनता है यहांका पशमीरीदुशाला और अन्य २ द्रव्यों का व्यापार होता है।

शिमला—यह नगर हिमालय पर्वत के ऊपर बसाहै यहांका जलवायु बहुतस्वस्थकर है अंग्रेज लोग ग्रीष्मऋतु में प्रायः यहां आकर रहते हैं औरभारतवर्षके गवर्नर जेनरल अप्रैल से अकटूबर तक प्रति वर्ष यहां आकर रहतेहैं ।

दिल्ली—इसके उत्तर में लाहौर दक्षिण में अजमेर और आगरा पूर्वमें अवध पश्चिम में लाहौर और अजमेर इसजिले के उत्तर और पश्चिम में यमुना और उसकी शाखा नदियां बहती हैं यहां की भूमि रेतली है पवन उष्णहै यहां

गेहूं, जौ, और भांति २ की दाल उत्पन्न होती है दिल्ली के समीपबहुत जलाशय और नहरहैं दिल्लीनगर यमुना के पश्चिम तीर बसाहै यह बंबई से ८३९ और मंदराजसे ८८६ कोस दूरपरहै यह नगर पहले मुसलमानबादशाहों की राजधानी था १५२६ ई. में मुगलबादशाहोंकी जड़जमाने वाला बाबर बादशाह इब्राहीमलोदीकोजीतकर दिल्लीकेसिंहासन परबैठा पहले यहनगरयमुना के पूर्व तीर परथा १६४१ में शाहजहांबादशाह उसको पश्चिमतीर परलाया और इसका नाम शाहजहानाबाद रक्खा यह नगर तीन ओर दीवारसे घिराहुआ है और इसमें ११ द्वारहैं औरंगजेब के समय यहां २० लाखकी बस्ती थी यहां जुमामसजिद मोती मसजिद कुतबमिनार और लाल पथरी किला इत्यादि शोभायमान वस्तु हैं इंद्रप्रस्थ जो युधिष्ठरकी राजधानी थी उसके अब खंडहर शेष दिल्ली के समीप देखे जातेहैं १८७७ ईस्वीकी १जनवरी महारानीविकटोरिया ने इस नगर में सारे भारतवर्ष के राजाओं को बुलाकर उनकी सम्मति से राजराजेश्वरी,(कैशरहिन्द) पदवीली ॥

पानीपत— यहशहर पनाह के भीतर बसा है इसनगर में तीन विख्यात लड़ाई हुई प्रथम १५२६ में बाबरऔर इब्राहीमकेबीच जिसमे इब्राहीम पराजित हुआ और दूसरी १५५६ में अकबर ने हेमू को पराजित किया तीसरा अहमदशाहदुररानीने सदाशिवराव भाऊ को १७६१ में पराजितकिया । इसजिलेका "सदरमुकाम" करनालहै॥

हिसार— इसजिले के जंगल में सिंह और व्याघ्रादि

बहुत घातक जीव रहतेहैं इसका प्रधान नगर हिसारहै है अकबर के समय यहां दोकिले थे ॥

बंबई अहाता

इस अहाते के अंतर्गत सबप्रदेश समुदय केवल अंगरेजों के अधिकार में नहीं किन्तु अन्य २ राजाओं के अधिकार में भीहै । संपूर्णसिंधुदेश, औरंगाबाद, बिजयपुर, खानदेश, और गुजरात का कुछ अंश इस अहाते के अंतर्गतहै इसकी उत्तर सीमा गायकवाड़ और हुलकर राज्य, पूर्व सीमा सेंधिया और हैदराबादका राज्य और मंदराज, दक्षिणसीमा दक्षिणकनाड़ा और मैसोर पश्चिमसीमा अरबसागर और गुजरात इसकाक्षेत्रफल ४६९४९ वर्गकोसहै और मनुष्यसंख्या १२६००००० से कुछ अधिकहै ॥

नर्मदा, सबरमती, माही, तापती, ये नदियां इसके उत्तर से बहकर काम्बेकी खाड़ी में गिरती हैं पश्चिम घाट पर्वत और समुद्रलहरों के भावसे यहां का जलपवन औरस्थानों से स्वस्थकर है बंबई की कहीं २ भूमि यद्यपि रेतली और पत्थरमयहै तो भी सामान्यता से बंबई की भूमि उर्वरा है यहां धान्य गेहूं, जौ, बाजरा, ज्वार, नील, तमाकू, काफी, पाट, कपास, ईख, औरआलू प्रभृति फलमूल उत्पन्न होतेहैं यहां मौआ नामक वृक्ष के पुष्पों से एक प्रकार का मद्यबनताहै यहां के जंगल में बड़ी २ लकड़ी होतीहैं मालप्रभा नदीकेतट में लोहा और धारावार जिला केरीव इम्बल पर्वत में सोना निकलता है बंबई में शिल्पविद्याकी भी बहुत उन्नतिहुई है यहां वस्त्र बनाने के लिये —

विलायत से बहुत यंत्र आये हैं जिनसे बहुत अच्छे २ वस्त्र बनते हैं इनामें अच्छा कागज़ भी बनता है यहां कपास, पशम् दुशाला, काफी, अफीम, मिरचकाली, गजदंत, इत्यादिका व्यापार होता है विलायत से जो वस्तु स्वेज़ की राह आती है उनमें से बहुत द्रव्य पहले बंबई में उतर कर रेलसे अन्य २ स्थानों में जाताहै बंबई के जंगल में केशरहीन सिंह, बाघ, चित्ता, हयना, वन्यमहिष, जंगलीसूर, जंगलीगधा, साही, लंगूर, इत्यादि जीवरहतेहैं और घोड़े, महिष, गाय, सूर, भेड़, बकरी, इत्यादि ग्राम्य जीव यहां बहुतहैं बंबई अहाते के दक्षिण और मध्यमें कनारी और महाराष्ट्री लोगवास करतेहैं येलोगबहुतकरके खेती करतेहैं तापती नदी के पूर्व खान्देश औरनाशिक प्रदेश में भीलकोल और ठाकुर नाम असभ्य लोग वासकरते हैं सितारके दक्षिण में जोप-हाड़ हैं उनमें रामशीनामक पहाड़ीलोगवासकरते हैं बंब-ई शहर और उसके चारों ओरजोग्रामहैं उनमें बहुत यूरोपी य फारसी औरयहूदी लोगवास करते हैं वहांगुजराती म-हाराष्ट्री औरकनाड़ी भाषाबोलीजाती है और फारसी उर्दू अर्बी अंगरेजी इत्यादि भाषाओंकाभी प्रचारहै बंबई के शासन कर्त्ताको गवर्नर बोलते हैं और बंगालेआदि लेफ-नाण्टगवर्नरों से इसका अधिकार अधिकहै इसके शासन कार्य्य में सहायता करनेके लिये एक "कौंसल" भीहै ॥

प्रदेश विभाग

बंबई प्रेसीडेन्सी में तीन कमिश्नरी हैं प्रथमउत्तर क-मिश्नरी द्वितीयदक्षिणकमिश्नरी तृतीयसिंधुविभाग —

इन विभागों में २४ जिले हैं ॥

उत्तर विभाग में

जिला	प्रधान नगर
बंबई	बंबई और सालसिट
जिला	प्रधान नगर
कोलावा	कोलावा अलीबाग
ठाना	ठाना कल्याण वेसीन
सूरत	सूरत मान्दवी
भड़ोच	भड़ोड जंबूसर
अहमदाबाद	अहमदाबाद धोलिआ
खेड़ा	महमुदाबाद खेड़ा
पंचमहल	गोधरा चम्पनी
खान्देश	खान्देश धुलिया

दक्षिण विभाग

अहमदनगर	अहमदनगर अकोला
नासिक	नासिक मालीगांव
जिला	प्रधान नगर
पूना	पूना जूरी पुरन्दपुर
सितारा	सितारा विजयपुर किरकी महाव लेसर
रत्नगिरी	रत्नगिरी विजयगाढ़
शोलापुर	शोलापुर बारसी
धारावार	धारावार मूलगन्ध बंकापुर
उत्तरकनाड़ा	हनावर कुन्दपुर
बेलगांव	बेलगांव चांदगढ़

कलादगी	कलादगी बागलकोट

सिंधु विभाग में

हैदराबाद	हैदराबाद सियाणी
खैर "बा" पारकर	अमर कोट
करांची	करांची ताता
सिकारपुर	सिकारपुर सकर
उत्तरसिंधुसन्मुखजिला	जेकबाबाद अलीपुर

अब बंबई के कई एक विख्यात जिलों का वर्णन कियाजाता है ॥

बंबई— यह शहर एक छोटे द्वीप के ऊपर है वह द्वीप प्रायः ४½ कोश विस्तृतहै इसके उत्तर में एक शालसिटका टापूहै और इनके बीच एक पुल बना हुआहै यहशहर बंबई अहाते की राजधानी है इसके चारों ओर दीवार हैं यह कलकत्ता से ५६० औरमंदराजसे ३८० कोस दूर परहैं इस शहर में बंबई अहाते के गवर्नरादि प्रधान २ अधिपति वासकरतेहैं यहांएककिला भी है बहुत फारसी व्यापारी लोग रहते हैं इसमें एकबहुत अच्छा बंदर है पहले बंबईशहर पोर्टगीजों के अधिकार में था १६६१ इंगलेंड के राजा २ चार्लसने उनसे इसको दहेजमें पाया और १६८३ में यहां अंगरेजोंने कोठी स्थापितकी उसदिन से यह नगर अंगरेजों के अधिकार में है बंबई से सातआठकोसकी दूरी पर एलीफेन्ट नामद्वीपहै उसमें एकबड़ी विशाल हाथी की मूर्ति और अनेक देवताओं की प्रतिमा देखीजातीहैं शालसिट और कालीद्वी-

य में हिन्दू और बौद्धों के देवताओं की बहुत मूर्तियां ब नी हैं ॥

सूरत — ज्ञात होता है कि इसका प्राचीन नाम सौराष्ट्र था यह ठाणा से भड़ौच तक विस्तृत है सूरत नगर तापती नदी के दहने किनारे पर बसा हुआ है १६१२ ई॰ में अंग्रेज लोगों ने एक कोठी बनाई १६७६ में यह अंग्रेजों के अधिकार में आया

भड़ोच — नर्मदा नदी के तीर पर एक प्रधान शहर है इसमें चाम मोटा कागज़ वस्त्रादि व्यापार होता है ॥

अहमदाबाद — सवरमति नदी और कांबे की खाड़ी के पश्चिम में है अहमदा शहर सवरमति नदी के पूर्व तट पर है मुसलमानों के राज के समय यह नगर गुजरात की राजधानी थी यहां अहमद शाह बादशाह ने एक जुमा मसजिद और एक और मसजिद है इस नगर के समीप एक सुंदर जलाशय है जिसके बीच में एक बड़ा अट्टालिका बना है इसके दो कोस हट पर सवरमती नदी के तीर में शाबाग नामक एक उद्यान है यहां पहले सोना, रेशम, चांदी, गोटा का व्यापार होता था अब यहां से नील, रुई, अफीम, और अच्छा कागज़ और देशों में जाता है ॥

नासीक — अहमद नगर के उत्तर पश्चिम में ब्राह्मण लोग इसको बनारस की नाई विद्या और धर्म का स्थान बोलते हैं यहां बहुत देवमंदिर हैं ॥

पूना — बंबई के दक्षिण पूर्व यहां भीमा नदी बहती है यहां की भूमि प्राय नीरस है ऐसा कि किसी स्थान में हरीलतादि भी नहीं देख पड़ते हैं पूना बंबई हाते के

बीच विद्यालोचनाका प्रधान स्थान है ॥

सितारा— पश्चिमीघाट पर्वत की कणासे इसे विभक्त करताहै बहुतकालतक यह नगर महाराष्ट्रों अर्थात् मरहटों की राजधानी थी सेवाजीने इसको स्थापन किया १८४८ ई॰ में यह अंग्रेजोंके अधिकारमें आया इसके उत्तर पश्चिम में वालेश्वरनगर महावालेश्वर पर्वत के ऊपर है यहांका जलपवन बहुतठंडाहै अंग्रेजलोगप्रायः यहां वायुसेवन करने केलिये आतेहैं सिंधुके उत्तरपश्चिम में बेलोचिस्थान पूर्व में राजपूताना दक्षिण में कच्छ है इसका क्षेत्रफल १२००० वर्गकोस है यह सिंधुनदीकेमुखसे ऊनावके संगम तक विस्तृत है यहां सिंधु औरउसकी शाखा नदीबहती हैं यहां की जलवायु नीरस औरउष्ण है किसी २ ने सिंधुदेशको भारतवर्ष का मिसर कहाहै इसके भागकी भूमि उर्वराहै जिसमें धान, गेहूं, भुट्टा, प्रभृति उत्पन्न होतेहैं दक्षिणकी भूमि जंगली औरमारुहै वहांबहुतअरण्य जीवरहतेहैं भारतमें सिंधुप्रदेश प्रथम मुसलमानों के अधीनहुआ १८४८ में सरचारलसने पिपरने इसदेश को जयकरके बंबई प्रहाता में मिलायदिया मियाणी नामक स्थान में यह लड़ाई हुई सिंधकीराजधानी हैदराबाद जो सिंधुनदी के पूर्व तटपर है वहां ढाल तलवारादि शस्त्र बहुत अच्छे बनतेहैं सिंधुनदी के पश्चिम तीर पर नाना नगर है ॥

करांची— यह एक बन्दर है यहां बहुत द्रव्य अन्यान्य

देशों से जहाज़ों से आतेजातेहैं सिंधुविभागमें हैदराबाद् करांची, सिकारपुर, और थरपारकर ये ज़िले बेबन्दोबस्तीहैं

मन्दराज अहाता

इस अहाते की उत्तर सीमा निजामका राज्यबरार और बंबई अहाता दक्षिण सीमा भारत महासागर पूर्व सीमा बंगाले का सागर पश्चिम सीमा अर्बकासागर इसकाक्षेत्रफल १३०१२२ बर्गकोस है और मनुष्य गणना प्राय: ३३१००००० सेकुछऊपर हैं मंदराज अहाते के पश्चिमभागमें पश्चिमीघाट पर्वत श्रेणी से बहुत छोटी२ नदी निकलती हैं इसकेबीचकाभाग समतल है इसमें कृष्णाकावेरी, गोदावरी, तुङ्गभद्रा, और पनार, पलार, प्रधान नदीहैं कालिकट, कलायर, और चिलिका ये तीन झीलेहैं उत्तर सर्कार की भूमिसमतल और बालुकामय अर्थात् रेतली है परंतु उसका कोई२ स्थान उर्वरा है करनाटक की भूमि मरु और वृक्षलतादिसे रहित है करनाटक का जलपवन भारतवर्ष में उत्तम है यहां उत्तर पूर्व मेंमनूननामक वायु बहतीहै मंदराज अहातेकेबीच नीलगिरी के उपरिस्थित उटकमंड नगर बड़ा स्वास्थ्यकर है मदराज में धान,नील, रुई, नारियेल, मुद्दा, और केला प्रभृति उत्पन्न होतेहैं त्रिवांकोड़, और कनाड़ा प्रभृति स्थानों में बड़े२ पाहतीर होतेहैं मालाबार औरपूर्व में चन्दन की लकड़ी बहुत उत्पन्न होतीहै मैसूर और मदुरा में चान्दी और रसाञ्जन मिलताहै माल्लाबार प्रभृति स्थानों में लोहा पाया जाता है राजमहेंद्री गन्तूर और चि-

जिगापट्टन में हीरा और पद्मराग देखाजाताहै बहारी और नेल्लूर में तांबा बनता है यहां के लोग रूई, रेशम, कार्पेट, लोहा, प्रभृति के शिल्प में दक्ष हैं ये लोग यूरोप, आमेरिका, चीन, बरमा, और कलकत्तादि स्थानों में व्यापार करते हैं जंगली जीवों में से कालासार, हयना, उलकामुखी और महिष प्रभृति प्रधान हैं ग्राम्य जन्तुओं में भेड़, बकरी, गाय, भैंस, और गधे इत्यादि जीव हैं यहां के रहनेवाले मनुष्यों में हिन्दू मुसलमान, इसाई, और यहूदी बहुत हैं यहां तामील, तैलंगी, और उड़िया ये तीन भाषा प्रचलित हैं बंबई की नाईं यहां एक गवरनर शासन करता है और उसकी एक सभा है ।

प्रदेश विभाग

मंदराज अहाता ४ प्रदेशों में विभक्त है जैसा उत्तर मध्य दक्षिण और पश्चिम प्रदेश इन चारों में बाईस जिले हैं

उत्तर प्रदेश

जिला	प्रधान नगरादि
गंजाम	श्रीकाकूलन, ब्रह्मपुर
विजिगापट्टन	विजिगापट्टन विजयनगर वोंटेपर
जयपुर	जयपुर
गोदावरी	राजमहेंद्री कारिंगा

मध्य प्रदेश

जिला	प्रधान नगरादि
कृष्णा	मुसलिपट्टन, गन्टूर, कन्दापिला, इलोर
नेलूर	नेलूर अंगोल
कड़प	कड़प राजुरी

बल्लारी	बल्लारी रोईदुर्ग गुट्टी
कार्नूल	कार्नूल कम्बम
उत्तरअर्काट	अर्काट चित्तूर बेलोर
मंद्राज	मंद्राज चिंगलीपट कांचीपुर मद्रास

दक्खिन प्रदेश

दक्खिन अर्काट	कडलूर कोटनद जिंदी
तन्जोर	तंजोर टंकीबार नागोर कम्बुकोनम
त्रिचन्नापल्ली	त्रिचन्नापल्ली श्रीरंगम
मदुरा	मदुरा दिंदीगल रामनद रामेश्वर
त्रिनीलवल्ली	त्रिनीलवल्ली पलांकोटा

पश्चिम प्रदेश

सेलम	सेलम त्रिपातुर
कंबाटूर	कंबाटूर धर्मपुर
नीलगिरी	उत्कमण्ड
उत्तर और दक्खिन मालाबार	कोची कन्नानोर तेलूचेरी कालीकट-बेपुर
द॰ कनाड़ा	मंगलोर

अब इनमें से प्रधान २ नगरों का वर्णन किया जाता है

उत्तर अर्काट — वेलूर के दक्षिण में है इसकी बहुधा भूमि रेतली है यहां चावल और कपास बहुत उत्पन्न होती है १७००० ई॰ के पहले अर्काट नगर कर्नाट की राजधानी थी उसके पश्चिम में विलोर और दक्षिण पूर्व में वंदी वास-१७ ५९ ई॰ में वंदीवासनगर फरासीसी गवरनर (लाली) अंगरेजों के सेनापती कर्नल कूट से पराजित हुआ इसके समीप अम्बर नगर बड़ा संदर है १७ ४९ इस्वी में फरासीसों

ने इस नगर में अनारुद्दीन को मारडाला और १७६० में इसी नगर में अंगरेजों ने हैदरअली को पराजित किया

चिंगलीपट्टन— यह नगर पलार नदी के तीरमें है इसमें एक दृढ़ किलाहै पलिकटझीलकेबीच पलीकट नगर है पलार नदी के तीरमें कांचीपुरनगर जिस को कांजीवरम भी कहतेहैं वहांवलीपुर में बहुत पुराने देवमंदिरहैं ।

मंदराज— यहकारोमंडल के किनारे पर बसाहै और मंदराजअहाता की राजधानी है यह कलकतासे ५३२ और बंबईसे ३०१ कोस दूरमें हैं यहांका व्यापारबड़ी दूर तक विस्तृत है मंदराज के गवर्नर यहां वासकरते हैं भारत-वर्ष के बीच यहां ही अंगरेजलोग पहले आये १६३९ ई में यहांकिलावनाने के लिये कुछ भूमि इनकोमिली १६४३ इन्होंने सेंटजार्जनामक किलाबनाया १७०२ ई॰ में औरंगजेब के सेनापतिदाऊदखां ने इसपरचढ़ावकिया १७४६ फरासीसी लोगोंने इसपर अधिकारकिया परंतु १७४९ ई॰ में जब अंगरेज और फरासीसों के बीच संधिहुई तबफिर यह नगर अंगरेजोंनेपाया १७६७ से १७८२ तक हैदरअलीने इसपर उपद्रव किया परंतु सफलनहुआ ॥

दक्षिणआर्कट— यह पनारनदी के तीरपर अवस्थितहै यहां सेंटडेविडनामक किला है १७८१ ई॰ में सर आयर कूटने इसस्थानपर हैदरअलीको पराजित किया तंजोर इसकीभूमिबहुत खेतीकी उत्पत्ति कारक है १७४९ ई॰ में अंगरेज लोगोंने टंकीबारकोडेनलोगों से मोललिया ॥

कालिकट— मालाबारमें है १४९७ ई॰ में पोर्ट गाल

नाविक वास कोडिगामा इसनगर में प्रथमआया ॥

कमिश्नरी प्रदेश

जो स्थान पूर्व कथित तीन अहातों की शासन प्रणालीके अधीन नहीं हैं परंतु भारतवर्षीय सरकार के अधीन हैं और चीफकमिश्नर केद्वारा शासन होते हैं उसे कमिश्नरी प्रदेश बोलते हैं वहां का शासन प्रबन्ध चीफकमिश्नर डेपुटीकमिश्नर प्रभृतियों सेकिया जाताहै । आसाम, अवध, अयोध्या, मध्यप्रदेश, आजमेर, मेहरवरा, कुड़ग, हइशावला, निजामदराज्य, अंडेमन ये आठ कमिश्नरी प्रदेश हैं इन्हें बेवदोवस्ती कहते हैं ॥

आसाम

इसके उत्तर में भूटान पश्चिम में रंगपुर कूचबिहार और जलपाइगुड़ी दक्षिण में मैमनसिंह त्रिपुरा और लुसाई पर्वत पूर्वमें मनीपुर और ब्रह्मादेश इसकाक्षेत्रफल १२४८३ वर्गकोस और मनुष्यगणना ५२,००० ०० से कुछ ऊपरहै आसाम की नदी ब्रह्मपुत्रहै यह चारों ओर पर्वतों से घिराहै ब्रह्मपुत्र इसकेबीच होकर इसको दो भागों में विभक्तकरतीहुई बंगाले के सागर में गिरती है इसकी जलपवन बंगाले के समान है आसाम में भांति २ की धातु पाईजाती हैं यहांधान्य, अफीम, तमाखू, रुई, पान, बहुतउत्पन्नहोतेहैं यहांसेसोना, रेशम, लाख, सरसों, मिरच, और बेंत अन्य २ देशों में वाणिज्यकेलियेजाताहै यहां चाहभी बहुत उत्पन्न होती है पहिले आसाम बंगाल अहातेके अधीनथा परंतु कुछदिन हुएकि इस-

के उत्तर पूर्व स्थित असभ्य पहाड़ी जातियों के उपद्रवसे दूर से भिन्नकियागया इसकीराजधानी अबशिलांगहै सिहट और कछाड़ भी इसमें मिलायेगयेहैं आसामतीन भागों में विभक्तहै प्रथम उत्तर आसाम, मध्यआसाम, औरनिम्नआसाम आसाम में ११ जिलेहैं ॥

जिला	प्रधान नगर
लक्ष्मीपुर	देवरुगढ़ उत्तरलक्ष्मीपुर जैपुर सदिया
शिवसागर	शिवसागर जोरहट गोलाघाट
नागापहाड़	शामगुटिंग देमापुर
दूरग	तेजपुर विश्वनाथ मंगिलडिह
नौगांव	नवगांव
ग्वालपाड़ा	ग्वालपाड़ा धुबड़ी
कामरूप	गोहाटी नलबाड़ी बड़पेटा
गारोपहाड़	तुरा
खसियापहाड़	चेरापूंजी जोआई शिलंग
कछाड़	सिलचर हैलाकांदी
सिलहट	सिहट जगन्नाथपुर

आसामचिरकालसेहिंदुओं के अधीनथा १८ २८ ई॰ में अंगरेजों ने इसके राजा पुरंदरसिंह को हटाकर अपना अधिकार पाया ॥

अयोध्या

इसके उत्तर में नेपाल दक्षिण में इलाहाबाद पूर्व में गोरखपुर पश्चिममें दिल्ली और आगरा इसकाक्षेत्रफल प्रायः २४ ६० वर्गकोसहै मनुष्यगणना १००००००० सेभी कुछ

ऊपर है अयोध्यामें रामगंगा सरयू गोमति प्रभृतिनदी बह
ती हैं यहांकी भूमि उर्वरा है यहां चावल, जौ, गेहूं सरसों,
आलू, ईख, तमाकू, प्रभृति उत्पन्न होते हैं यहां हाथी, मृ
ग, गैंडा, रीछ, बाघ, प्रभृति वन्य जन्तु बहुत हैं अयोध्या
में उनाव, गोंडा हरियाबाद प्रतापगढ़ फैजाबाद बैरच मु
हम्मदी रायबरेली लखनऊ सीतापुर सुल्तानपुर और हर
दुई ये १२ जिले हैं ॥

लखनौ— अयोध्या की राजधानी गोमती नदी के तट
पर बसा है फैजाबाद और एकनगर जो घाघरानदी के त
टपर बसा है इसके कुछ पूर्व में सरयू नदी के तीरपर प्रा
चीन अयोध्यानगर है जो सूर्यवंशियों की राजधानीथी ।

मध्यप्रदेश — १८६१ ई॰में नागपुर सागर औरनर्मदा
प्रभृती प्रदेशोंको मिलाकर मध्यप्रदेशबनायागयाहै इस
के उत्तर में बुंदेलखंड के अंतर्गत तेहरी अथवा पन्नानाम
क राज्य पश्चिम औरउत्तरपश्चिम में ललितपुर भूपाल सें
धियाराज्य बरार औरनिजाम का हैदराबाद दक्षिण औरद
क्षिणपूर्वमें निजामराज्य औरगोदावरी जिला पूर्वमें जैपुर
और रैवा इसकाक्षेत्रफल २१.२५ वर्ग कोस है मनुष्यसंख्या
९२ लाखके कुछ ऊपर है मलुडी पर्वतश्रेणी इस के चैागिर्द
स्थित है गोदावरी नर्मदा महानदी औरबानगंगा प्रभृति नदी
इसमें बहती हैं नवगांव और सेउनीवन्य ये दो झीलें इस में
हैं यहां गेहूं मुंग पाट प्रभृति उत्पन्न होता है यहां हीरा लो
हा सोना औरकोइलोंकीखान है मध्यप्रदेशचार भागोंमें
विभक्त हुआ है नागपुर जबलपुर नर्मदा और छतीसगढ़

ये चार विभाग हैं ॥

नागपुर विभाग

जिला	प्रधान नगर
नागपुर	नागपुर कामटी
भंडारा	भंडारा महरी
चंदा	चंदा आरमोरी
वार्दा	हिंगनघाट पूली
बालाघाट	हट्टा लांजी

जब्बलपुर

जब्बलपुर	जब्बलपुर, पुनगड़ा
सागर	सागर गुराकोट
दुमो	दुमो हट्टा
सिउनी	सिउनी
मंडला	मंडला

नर्मदा विभाग

होसंगाबाद	होसंगाबाद हर्दी सुहागपुर
नरसिंहपुर	नरसिंहपुर
बैतूर	बैतूर मुलताई
छिंदवाड़ा	छिंदवाड़ा
निमार	बुरहानपुर

छत्तीसगढ़

रायपुर	रायपुर राजिम
बिलासपुर	रतनपुर बिलासपुर
संभलपुर	संभलपुर

जिला उत्तर गोदावरी। कुमगोड़ियाम मध्यप्रदेशमें १८ करदराज्यहैं जैसा वस्तार, खारोंड़ी, देगढ़, बड़गढ़, सारंगढ़, पटना, सोनपुर, बिंद्रानवागढ़, कामदा, भाजि, कवर्दा, खैरागढ़, काकीर, छेनागढ़ नंदगांव सुकमार

आजमेर

आजमेर अर्वली पर्वतके पूर्व में श्रीरजयपुर के नैरतकोन में है यह भारतवर्ष के बीच यह एक उत्तम प्रधान देशहै इसके पूर्वीभाग रेतली श्रीर पश्चिमीभाग पथरेली भूमिहै इस में प्रायः नदी नहीं है केवलकितनेएक एक बड़े २ जलाशय हैं जिनकेबीच पुष्कर प्रसिद्ध है सुहावन आजमेर नगर पहाड़केबीच है यह पहले उत्तर पश्चिम प्रदेशीय सर्कार के अधीनथा १८७१ ई. से कमिश्नरी हुआ ॥

कुड़ग — कुड़गकी उत्तर सीमा मैसूर श्रीरकनाड़ा पूर्व सीमा मैसूर पश्चिम सीमा मलबार कनाड़ा दक्षिणसीमा मालावार इसकाक्षेत्र फल प्रायः २९ वर्गकोसहै श्रीर मनुष्यगणना ११५००० है कुड़ग का बहुतसाभागजंगलों से घिराहै श्रीर उन जंगलों में बहुधा हाथी बाघ चीता सिंही इत्यादि बहुत जीवरहते हैं इसकी भूमि ऊंची नीची श्रीरपथरेली है यहां के लोग सुंदर श्रीरउद्योगी होते हैं इनकीस्त्री एकसे अधिक भी पति रखसक्ती हैं पहले यह देश स्वाधीन था अब मैसूरके कमिश्नर के अधिकारमें है ॥

हिंदिशब्रह्मा

इसके विषयमें पूर्वीप्रायद्वीपके वर्णनके समय अभी

तरह वर्णन कियाजायेगा ।

निज़ामदत्तराज्य

निज़ाम के कार्य्य में जो अंग्रेज़ी सेना नियुक्त है उसके खाने पीने के लिये निज़ामने जोराज्य अंग्रेज़ों को दिया है उसकानाम निज़ामदत्तराज्य है और उसके दोभाग हैं पूर्व बरार और पश्चिम बरार पूर्व बरार में अमरावती इलीचपुर और ऊन ये तीन जिले हैं पश्चिमबरार में अकोला बुलढाना और वेसीम येतीन जिले हैं पहले इलीचपुर इसका प्रधान नगर था उसकेदक्षिणपश्चिममें आरगम नगर जिसमें विलज़ली ने सेंधिया की सेना को पराजय किया ।

अंडेमन द्वीपश्रेणी

यद्यपि यह द्वीपश्रेणी भारतवर्ष के बीच नहीं है तोभी भारतवर्ष के गवर्नर जेनरल के शासनमें है इसका अधिकांश जंगल पड़ा है पोर्टब्लेयर यहां प्रधानबंदर है यहां सब कैदीलोग भेजे जाते हैं १८७२ में फर्वरी महीने में इस स्थान में एकमुसलमान ने भारतवर्ष के गवर्नर जेनरल लार्ड मेओ को मारडाला कुछदिनबीतेनीकोबरद्वीप भी इसमें मिलायागया ये सब द्वीप बंगाले के सागर में हैं ॥

भारतवर्ष में अंग्रेज़ों के यहां सम्पूर्ण अधिकार उनका विषय लिखागया अब यहां केस्वाधीन कई और मित्रराज्यों का वर्णन किया जाता है ॥

स्वाधीनराज्य

नैपाल — इसकी राजधानी कठमांडू वाकाष्ठमण्डप क्योंकि इस नगर में बहुतकाठकेबनेहुएमंदिरहैं नैपाल

की भूमि उर्वरा है यहांका वाणिज्य द्रव्य हाथी घासका दस्तरी चांवल लोहा पाटन ताम्बा रेशम मोम बड़ी इलायची खयर (कत्थ) और हरड़ इत्यादि वस्तु हैं शिवरात्री के दिन यहां बहुत यात्री आते हैं ।

भोटान — इसकी राजधानी तासीसूदन पूनाक और नमस् थेदो प्रसिद्ध नगर हैं कर्द और मित्रराज्य ।

सिक्कम — यह नेपाल और भोटान के मध्य में है पृथिवी के सम्पूर्ण पर्वतों के शिखरों से ऊच्चतम पर्वत मउन्ट गौरी शंकर इसके अंतर्गत है यहां का राजा तमलों नगर में रहता है और बौद्ध धर्मावलम्बी है यह ५०००) रु अंग्रेजों को बर्सौड़ी कर देता है और स्वाधीनभाव से राज्य करता है यहां धान्य संतरा ताम्बा और चूना उत्पन्न होता है ॥

कूचबिहार — जिला रंगपुर और भूटान के बीच है इसका प्रधान नगर बिहार है सम्प्रति यहां का राजा नाबालिग होने से गवर्नमेण्ट ने इसका प्रबन्ध अपने हाथ में लिया है १८७८ ई. की ६ छठी मार्च को यहां के राजकुमार से ब्रह्म धर्म के आचार्य बाबू केशवचन्द्रसेन की लड़की का ब्राह्मसमाजानुसार विवाह हुआ यहां धान्य तमाकू पाट सरसों और बांस उत्पन्न होते हैं यहां का राजा अंगरेजों को ६७७००।।।=) रु. कर देता है ॥

बघेलखंड — यह इलाहाबाद के दक्षिण और बुंदेलखंड के पूर्व में है विन्ध्याचल इस के बीच में है इसकी राजधानी रेवा यहां राजा हिन्दू है और अंगरेजों को कर नहीं देता यहां गेहूं, जौ, मूंगी मोठ इत्यादि अन्न-

उत्पन्न होता है बुन्देलखंड—यह इलाहाबाद के दक्षिण और रेवाके पश्चिम में है यहां किसी २ स्थान में हीरा मिलता है इस प्रदेश में बहुत छोटे २ राजा हैं ॥

भरतपुर—यह आगरा के पश्चिम में है इसका विस्तार बहुत नहीं है इसकी राजधानी भरतपुर यहां का किला अतिशय दुराक्रम्य है १८०५ लार्ड लेक ने इसपर चढ़ाव किया परंतु सफल न हुआ १८२६ में फिर अंगरेज इसे अपने अधिकार में लाये ॥

धौलपुर—यह राज्य ग्वालियर के उत्तर और भरतपुर के दक्षिण है इसका प्रधान नगर धौलपुर चर्मन्वती नदी के तीरपर बसा हुआ है ॥

भूपाल—यह मालवे के बीच है इसके पूर्व सागर और नर्मदा प्रदेश और तीन और ग्वालियर का राज्य है इसकी राजधानी भूपाल है अब इस में एक बेगम राज्य करती है

ग्वालियर वा सेंधिया का राज्य इसके उत्तर में धौलपुर है और दक्षिण में बुंदेलखंड सागर नर्मदा भूपाल और इंदौर इसका प्रधान नगर ग्वालियर है इसके कुछ दूर पर पनार और महाराजपुर है जिन में १८४३ ई॰ में मर्हठों को पराजित किया इसके दक्षिण पूर्व में शिप्रा नदी के तीर पर उज्जैन नगर जो पहले विक्रमादित्य की राजधानी थी। ग्वालियर का राजा केवल कुछ अंगरेजी सेना को पालता है और कुछ इसके सिवाय नहीं देता ।

राजपूताना वा राजवाड़ा यह सिंधसे यमुना तक विस्तृत है अब यह देश उदयपुर जयपुर जोधपुर बूंदी

अलवर बीकानेर जैसलमेर कृष्णगढ़ बांसवाड़ा प्रताप-
गढ़ डूंगरपुर करौली और सिरोही ये १४ राज्य हैं पहले अ-
जमेर और मेहरवाड़ा भी इसके अंतर्गत थे परंतु अब
अंगरेज़ों के अधीन हैं यहां लूनी लूकरी आदि नदियां
बहती हैं इसके बीच में अर्वलीपर्वत जिसके पश्चिमें रे-
तली मरुभूमि है राजपूतानाकी जलवायु ग्रीष्मकाल में
बड़ी तपन होती है जैपुर और जोधपुर के बीच संबरझी-
ल है जिसमें बहुत नमक उत्पन्न होता है ।

उदयपुर— अर्वली पर्वत के पूर्वमें है पहले चित्तौड़
इसकी राजधानी थी अब उदयपुर है उदयपुर का रा-
णा सूर्य्यवंशी और सब राजाओं से कुलीन है ॥

जयपुर— यहां की राजधानी जयपुर बड़ा सुंदर ब-
ना है कहते हैं कि राजा जयसिंहने इसे बसाया है ।

जोधपुर वा मारवाड़— अर्वलीपर्वत के पश्चिम में है
इसका प्रधान नगर जोधपुर है जैसलमेर यह जोधपु-
र के पश्चिम इसका प्रधान नगर जैसलमेर है ।

बीकानेर— जोधपुर के उत्तर। अलवर जयपुर के
उत्तर इस राज्य के बीच लसवारी नामक ग्राम में १८०३
में लार्ड लेक ने सेंधिया की सेना को पराजित किया ॥

बड़ौदा— वा गायकवाड़ यह कांबे खाड़ी के दोनों ती-
र पर है तापती माही नर्मदा सबरमती और बनास यह-
हां की मुख्य नदी हैं राजधानी बड़ौदा माहीनदी के पूर्व
तीर पर है । सुप्रसिद्ध द्वारिका नगर इसी राज्य के पश्चि
म में समुद्र तट पर है काठीगढ़ वा गुजरात के प्रायद्वीप

के दक्षिण प्रान्त में सोमनाथ पट्टन जिसनगर में सोमनाथ महादेव का बड़ाभारी मंदिर बनाथा १०२४ ई॰ में गजनी के बादशाह महमूद ने इसे तोड़ा ॥

कछ बड़ोदा के पश्चिम यह राज्यएक द्वीपकी तरह मालूम होताहै । क्योंकि पूर्व में कछकीखाड़ी गुजरात से पृथक् करती है पश्चिममेंसिंधु नदी की एक शाखा इसे सिन्धुदेशसे पृथक् करतीहै दक्षिण में समुद्र उत्तर मेंलवणामय दलदल भूमि है इस दलदल भूमिको रणबोलतेहैं वर्षाकाल में यह समुद्र के जल सेभरजाती है और समय में इसको किसी स्थान में झील किसी स्थानमें विस्तृत लवण क्षेत्र और किसी स्थान में गोमहिषप्रभृति पशुओं से आकीर्ण तृणाछन्न क्षेत्रदेखपड़ते हैं जानपड़ताहै कि रण पहले समुद्रका अंश था अबसमुद्र इससे हटगया प्रतिवर्ष यहां बहुत रुपये का लवण उत्पन्न होताहै ॥

बहावलपुर — यहराज्य जेसलमेर औरबीकानेर के उत्तर पश्चिम सतलजनदी के पूर्वतट में गारा औरसतलजक्षणा के बीचमें है यहां धान्य नील तमाकू औरचीनी आदि उत्पन्न होतीहैं यहां की राजधानी बहावलपुर है यहांका वाणिज्य प्रसिद्ध है और यहां के अधीश्वरकी खांउपाधि होती है ॥

पटियाला — यहलुधियाने के दक्षिण औरबहावलपुर के उत्तर पूर्व में है इस राज्य की — राजधानी पटियालानगर है यहां की भूमि बहुत उर्वराहै औरनानाविधकी खेति उत्पन्न होती है यहां का राजा अंग्रेजोंस-

रोंको १०० सवारस्वार देता है पटियाले के उत्तर सतलुज और जमुना के बीच कोहलूर हंडूर सिरमोर और बिशाहर ये ५ छोटे राज्य हैं इन सबके पश्चिम में सुकेत और मंडी नामक दो छोटे राज्य हैं उनके पश्चिम हिमालय के गर्भ में ऐरावती नदी के तटपर चम्बा का राज्य है इस राज्य में तांबा लोहा और शीशे की खान है यहां के जंगल में बड़ी २ लकड़ी मिलती है यहां का राजा अंगरेजों को ९ हजार रुपैया करदेता है ॥

गढ़वाल — यहराज्य हिमालय पर्वत के गर्भमें कुमायुं और ब्रिटिश गढ़वाल के उत्तर पश्चिम है इसका प्रधान नगर टिहरी है यहां गंगा जमुना उत्पन्न हुई हैं इसलिये बहुत यात्री लोक प्रतिवर्ष आते हैं ।

काश्मीर — यह भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम प्रान्त में है इस के चारों ओर पर्वत मध्यभाग समतल क्षेत्र है इसकी भूमि उर्वरा है और चावल और सुस्वादु फल उत्पन्न होते हैं काश्मीर में बहुत छोटी २ झील हैं उनमें से उलर सबसे प्रसिद्ध है यहांकी उपत्यकाभूमि में गुलाब फूल के खेत हैं इन गुलाब फूलों से अच्छा अतर निकलता है काश्मीर की जलवायु अतिमनोहर है काश्मीरी शाल तो सर्वत्र प्रसिद्ध है काश्मीरकी राजधानी श्रीनगर झेलम नदी के तटपर बसा है १५८६ में अकबरने काश्मीर को अपने राज्य में मिलाया और इसे पृथिवी का स्वर्ग यह पदवी दी १८१९ में काश्मीर राज्य सिक्खोंके अधीन हुआ १८४६ में गुलाब सिंह राजा हुआ काश्मीर का राजा

अंग्रेजों को तीन जोड़े शाल १ घोड़ा १२ तिब्बती बकरी कर देता है ॥

हुलकर— यह राज्य ग्वालियर राज्य के दक्षिण पश्चिम में नर्मदा नदी के दोनों तटपर विस्तीर्ण है इस की भूमि उर्वरा है यहां गेहूं इख अफीम तमाकू और कपास बहुत परिमाण से उत्पन्न होताहै १६९३ में हुलक-रवंश के स्थापन कर्ता का जन्म हुआ है यह सामान्य अव स्था से क्रम से राजा हुआ था इसकी राजधानी इन्दौर वि-न्ध्याचल के उत्तर में है ।

हैदराबाद— यह राज्य बहुतविस्तृत है इसके उत्तर पूर्व में मध्य प्रदेश दक्षिण में मदराज अहाता प-श्चिम में बंबई पूर्व में बड़ोदा और गोदावरी नदी है इस की उत्तरसीमा में तापी और दक्षिण में तुङ्गभद्रा और-कृष्णा नदीबहती हैं इस राज्य में बहुत जागीर दार हैं इसके अल्प अंशही मुख्य अधीश्वर के हाथ में है यहांके प्रधान अधीश्वर की उपाधि निजाम है इसकी राजधानी हैदराबाद है इसकी भूमिउर्वरा है परन्तु अधिक जंगली है हैदराबाद नगर के तीन कोस पश्चिम में गोलकुंडा यहां पूर्वकाल में बहुत हीरा पाया जाता था हैदराबाद के उत्तर पश्चिम में विदर और औरंगाबाद है औरंगाबा-द से तीन कोस दूरीपर इलोर की विख्यात गुफा है औरं गाबादके ४५ कोश उत्तरपूर्व में आशयनामग्राम है यहां १८०३ ई में सेनापतीविलजली ने सेंधिया और नागपुर के अधीश्वर को पराजय कियाथा ॥

मैसूर— यह राज्य हैदराबाद के दक्षिन पूर्व और पश्चिम घाट पर्वत के मध्यमेंस्थित है इसके उत्तर में तङ्गभद्रा और हाज़िरी और दक्षिण में कावेरी नदी बहती है यहां की जलवायु बहुत शीत वा उष्ण नहींहै यहां धान्य गेहूं और नाना प्रकार के मीठे फल होतेहैं यहां जंगल में सेगून प्रभृति बड़े वृक्ष होते हैं यहां कनारी (कर्नाटी) भाषा बोली जाती है हैदरअलीके समय में मैसूर एकबड़ा प्रसिद्ध राज्य था १७९९ इसी में अंग्रेजों ने श्रीरंगपट्टन में हैदरअली के बेटे टीपू को मार कर उसकी गद्दीपर महाराज कृष्ण उदयवर को बिठाया परंतु मैसूर केराजा राज्य शासन में असमर्थ होने पर अंग्रेजों ने १८३१ में अपने हाथमें लिया और इसके शासन के लिये एक कमिश्नर नियुक्त किया है उनके अधीन कुरग का राज्यभी है अब मैसूर में तीन कमिश्नरी हैं नन्दीदुर्गविभाग अष्टग्राम विभाग और नागर विभाग इन तीनों में ८ जिला हैं बंगलोर कुलर तुंकुर मैसूर हासन सारेमाज़ा काहूर और चित्रदुर्ग बंगलोर में मैसूर के कमिश्नर रहतेहैं कुलर में हैदरअली का जन्म हुआथा श्रीरंगपट्टन मैसूर की राजधानी है ॥

कोची— मालाबार के दक्षिण में है यहां सेगून प्रभृति बड़े २ वृक्ष उत्पन्न होते हैं चावल मिरच दालचीनी नारीके आदियहां बहुत उत्पन्न होतेहैं यहांनोहरी और नायक प्रभृति लोग बास करते हैं ॥

त्रिवांकोड़ इसकीराजधानीत्रिविन्द्रमहै— यह

राज्य कुमारी अन्तरीपके उत्तर ओर को चौके दक्षिण साठ-कोस विस्तीर्ण है यहां के जंगल में हाथी व्याघ्र महिष ओर बन्दर बहुत है यहांसे मिरच इलायची दालचीनी और चन्दनकाष्ठ आदि अन्य देश में जाते हैं ॥

कोलापुरऔर सावंतवाडी — यह दोराज्य महाराष्ट्रों के अधीन हैं कोलापुर बीजापुर के अंतरगत सितारा के दक्षिण में है सांवतवाडी गोआके अधीनहै ॥

॥ फ्रासीस और पोर्टगेजों का राज्य ॥

अबतक भी भार्तवर्ष के किसी स्थान में फ्रासीस और पोर्टगेजोंका अधिकारहै ॥ फ्रासीसोंकाअधिकार ॥

पांडुचेरी — कारोमंडल के किनारे मदरास से ३८ कोस दक्षिण में यहां फ्रासीसों का गवर्नर रहताहै ॥

कारिकाल — कावेरीनदि के संगम पर अवस्थितहै और मंदराज से ६७ कोस दक्षिण में है

माही — मालावार के किनारे परहै बंगाले में चंदर नगर कलकत्ता के १० कोस उत्तर हुगली नदी के पश्चिमतीर पर है ॥

यानन — उडेसा उपकूल में है

पोर्टगेजों का अधिकार

गोआ — कनाड़ा के उत्तर है डमाडम पश्चिम उपकूल में है डिवदीप काठिगढ़ प्रायः दीपके दक्षिण में है ॥

भारतवर्ष के दक्षिण में लंकाद्वीप है यह द्वीप अकार है यहांकीभूमि उर्वरा है यहां बहुमूल्य धातुओं की खान है और इसके समीप समुद्र में प्रतिवर्ष बहुत

रुपय के मोती मिलते हैं इसकी लंबाई १०९ कोसहै और चौड़ाई इसकी ९२ कोस इसका प्रधान नगर कारडी त्रिंको माली और कोलंबू है ।

गाल नामक एकनगर है यहां डाकके जहाज ठहरतेहैं अब लंकाके सिवाय और २ छोटे द्वीपों कावर्णन पहले कर चुका हूं ॥

भारतवर्षकीशासनप्रणाली ॥

भारतवर्ष में अंग्रेजों के जितने अधिकारहैं उनपर एकप्रधान शासन कर्ता और चार मंत्री कर्त्तत्व करते हैं इस प्रधान शासन कर्ता को गवरनरजेनरल वा वाइसराय कहते हैं और उन चारमंत्रियों को कौंशिलर कहते हैं गवरनर जेनरल और कौंसिल मिलकर जोसभा करते हैं उस सभा को सुप्रीमकौंशिल वा गवरनरजेनरल इन कौंशिल कहते हैं सन्धी युद्धादि जितने कार्य्य सब इस सभाके अधीन हैं

प्रथम इससभासे भारतवर्षीय अधिकार संबंधि समुदय कानून प्रस्तुत होतेथे थोड़ेदिन के पीछे कानून प्रस्तुत करने के लिये और एकस्वतन्त्र सभासंस्थापित हुईथी जिसे लेजिसलेटिव कौंशिल वा व्यवस्थापिक समाज कहतेथे अब वह सभा भी दूर हुई उसके स्थान में एकसाधारण व्यवस्थापिक समाज और प्रत्येकहाते में एक २ विशेष व्यवस्थापिक संस्थापित हुईहै साधारण समाज अंगरेजों के सम्पूर्ण अधिकारके लिये कानून बनाती है परंतु प्रत्येक हाते के अधिकार में जो २

विशेष कानून की आवश्यकता होती है ये सब उस अ-
हाते की व्यवस्थापक सभा से बनते हैं ।

साधारण सभामें गवरनर जेनरल आप और प्रत्येक
अहाते की सभा में उसअहातेकागवरनर जेनरल सभा-
पती होतेहैं प्रत्येक सभाके मिम्बरों में कोई नौकर औ
र कोई एकसर्कार के नौकर जो नहीं देशी और अंगरेज
रहते हैं, मंदराज बंबई इनदोनों अहातों में एक एक ग
वरनर और उसके साथ दो दो कौंशिलर रहते हैं बंगा-
ल प्रयाग और पंजाब में एक २ शासन कर्त्ता रहताहै
जिसको लफटनेण्टगवरनर बोलते हैं ये सब अपने२
अधिकार में कर्त्तत्व करते हैं परंतु गवरनर जेनरल इन
कौंशिल का अधीन होता है गवरनर जेनरल इनकौंशि-
ल " कौंशिलआफ़ इंडिया" नामक सभा के अधीन होती
है यहसभा इंगलैंड में संस्थापित है इसके अध्यक्ष का
नाम सेकरटर आफ स्टेट है उस सभा में और १९ सभा-
सद होतेहैं जबभारतवर्षका कोई प्रबन्ध सुनियम से
नहीं होता तो सेकरटरी आफ स्टेट को पार्लिमेण्ट ना-
म महासभा और इंगलैंड की रानी के समीप उत्तरदाता
होना पड़ता है इसलिये सेकरटरी आफस्टेट की ऐसीक्ष-
मता है कि वह अपने कौंशिलर के मतों को अतिक्रम क-
रके अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य्य करसकता है ॥

बंगाला मंदराज और बंबई इनतीन प्रेसीडेन्सी की
राजधानी में इंगलैंड देश के कानून प्रचलितहैं इनतीनों
राजधानी और इलाहाबाद नगर में हाईकोर्ट नामक एक२

प्रधान विचारालय स्थापित हुआ है । पंजाबके सर्वोत्तम प्रधान विचारालय को चीफकोर्ट बोलते हैं अंग्रेजों का शासन कार्य्य कलेक्टरी दीवानी और फौजदारी इन प्रणाली में सम्पन्न होता है जहां राजकर विषयक प्रबन्ध होता है उसे कलेक्टरी बोलते हैं और जहां सम्पती और अधिकार विषयक मुकद्दमा की निष्पती होती है उसे दीवानी अदालत बोलते हैं जहां मारपीट चोरीप्रभृतीका न्याय होता है उसे फौजदारी बोलते हैं ॥

कलकत्ता मंदराज और बंबई इन तीन नगरों के सिवाय और सब स्थान में हिन्दू और मुसलमान शास्त्रोक्त कानून प्रचलित है कोई २ स्थान उपर्युक्त प्रणालीसे शासित नहीं होता उन सब स्थानों का कानून स्वतन्त्र है वहां कमिश्नर वा एजेण्ट नामक प्रधान राजपुरुष और उनके अधीन में और २ न्यायकर्ता नियुक्त होते हैं उनसब स्थानों को कमिश्नरी वा एजन्सी बोलते हैं भारतवर्षीय स्वाधीन करद और मित्रराज्य में एसा प्रबन्ध नहीं है वहां के राजा लोग प्रायः येच्छाचारी होते हैं परंतु अंगरेजों की भांति प्रजा से अधिक कर नहीं लेते ॥

पूर्वी प्राय द्वीप

येशिया के नकशे में बंगालेकी खाड़ी के पूर्वतटपर जोवड़ा प्राय द्वीप देख पड़ता है उसे पूर्वी प्रायद्वीपबोलते हैं बंगाले की खाड़ी और चीनी समुद्रके बीच जोदेश है सब इसके अन्तर्गत है इसपूर्वी द्वीप में अनेक पर्वतश्रेणी उत्तरसे दक्षिणतक विस्तृत हैं उन पर्वतों के बीच

वड़े २ उर्वर क्षेत्र हैं जो बड़ी २ नदी के जलों से अच्छी तरह सींचे जाते हैं ऐरावती और सैलूएन नामक दो नदी दक्षिण की ओर वहकर मार्टाबान की खाड़ी में गिरती हैं मिलननदी स्याम की खाड़ी में गिरती है मेकमनदी चीनके समुद्रमें गिरती है

जलवायु खेती इत्यादि

यहां की जल वायु भारतवर्ष की नाईं है परंतु कुछ उससे आई है यहां की भूमि उर्वरा है खेती बहुत अच्छी होती है जंगल में बड़े २ पेड़ है जिनमें टीकनाम एक दृक्ष है जिसकी गोन्द से रवर बनता है गोटापार्चा के दृक्ष भी बहुत पाये जाते हैं धान्य खेतियों में प्रधान है परंतु यहां के लोग साबुदाना और नारियल इत्यादि फलों को बहुत खाते हैं यहां के जानवर भारतवर्षकी नाईं होते हैं परंतु यहां बड़े बन्दर हाथी और सिंघुधोरक प्रभृति बहुत होते हैं यहां खानि द्रव्य बहुत हैं दक्षिण पश्चिम में अच्छी टीन मिलती है इसके बीच ब्रह्मा, स्याम, मलाया, अनाम, और लेपस, ये पांच प्रदेश हैं ॥

ब्रह्मा

ब्रह्मा का क्षेत्रफल ३८००० वर्गकोस और लोक संख्या ४०००००० है इसके उत्तर में आसाम और चीन पूर्व में लेपस और स्याम है दक्षिण में बंगाले की खाड़ी पश्चिम में बंगाले की खाड़ी और बंगाला इस देश का दक्षिण का भाग समतल क्षेत्र उत्तर में वन और पर्वत हैं यहां की भूमि अतिशय उर्वरा है यहां धान्य गेहूं आदि खेति बहुत होती है यहां चाह भी उत्पन्न होती है परंतु चीन की भांति वह अच्छी नहीं होती है यहां सोना चांदी लोहा सीसा और पत्थरी कोइले की खानि हैं यहां कि

खानि में नानाविधमणि और बहुत चिटा संखमर्मर भी मिलता है यहांके भूगर्भ में एक प्रकारका तेल मिलता है बहुत गहरा कुआ खोद कर लोक उसतेल को निकालकर दीपक जलाते हैं भारतवर्ष के जंगल में जितने पेड़ हैं ब्रह्मा के जंगलों में भी उतने ही हैं यहां के घोड़े बहुत छोटे होते हैं परंतु बहुत कठिनता सहसके है और चलते हैं इसदेश में हाथी बहुत होते हैं उन में स्वेतवर्ण के हाथी भी देखने में आते हैं। ब्रह्मा के लोग स्वेत हाथी का बहुत मान करते हैं और इसको राज्य का बहुधा मंगल कर समझते हैं इस केलिये प्रासाद बनाते हैं और वह प्रासाद राज गृह के समीप ही बनाया जाता है उस स्वेत हाथी के शयन के लिये मखमल की शय्या उसके स्थान में बछाई जाती है उसके सन्मुख के दोनों पांव को बान्धने के लिये चांदी की जंजीर हीरे औरसोने की चित्रकारी के साथ बनाई जाती है इस की सेवा के लिये प्रायः एक हजार मनुष्य नियुक्त होतेहैं जब एक स्वेत हाथी मरता है तो जबतक दूसरा वैसाही न मिले ब्रह्मा के लोग राज्य का बहुत अमंगल समझते हैं ॥

ब्रह्मा के लोग बहुत नाटे होतेहैं उनका रंग ताम्बेकी नाईं और शरीर सबल होता है ये लोगहिन्दुओं से बहुत असभ्य हैं परंतु किसी २ व्यवहार में हिन्दुओं से भी सभ्य जान पड़ते हैं ये लोग अतिशय कुटिल अहंकारी और संदेहयुक्त होतेहैं जूआ खेलने और अफीम खाने में इनका बड़ा अनुराग है इनकी स्त्री अंतःपुर में निरुद्ध वा अवगुंठन से आच्छन्नहीं रहती ये अपने सम्पूर्ण घरका काम औरद्रव्या-

दि क्रय विक्रयभीकरती हैं पुरुष लोग एक से अधिक विवाह नहीं करते हैं परंतु वह भी हिन्दुओं की भांति बाल्यावस्था में नहीं करते ये लोग बौद्ध धर्मावलम्बी हैं इसलिये जाति भेद नहीं मानते हैं इनका धर्म शास्त्र पाली भाषा में लिखा है यहां के सम्पूर्ण शिक्षा कार्य्य पुरोहित मंडली के द्वारा सम्पन्न होते हैं पुरोहित लोग यावज्जीवन विवाह नहीं करसक्ते हैं परंतु ये लोग अपनी इच्छा से पुरोहित के काम को छोड़ कर अन्यकामों में नियुक्त होते विवाह कर सक्ते हैं यहां संग मर्मर पत्थर की नाना प्रकारकी मूर्त्ति पट वस्त्र धातु और मिट्टी के वर्तन बनते हैं यहां के लोग अच्छे २ जहाजभी बनासक्ते हैं । कहते हैं कि ब्रह्माके राजाओंका आदि पुरुष मगधदेश में उत्पन्नहुआ था अब २५०० वर्षबीते हैं ब्रह्माके राजासम्पूर्ण स्वाधीन हैं जैसा की प्रजालोग उनका नामभी नहीं लेसक्ते हैं यदि कोई नाम ले तो राजा उसको मारडालताहै बीस वर्ष उमर होने पर दो वर्ष के पीछे प्रत्येक प्रजा को एक वर्ष करके राजा को बगार देना पड़ता है युद्धके समय समुदय कार्य्यक्षम प्रजा को युद्ध में जाना पड़ता है ब्रह्माकी नवीन राजधानी मंदालय इसके पहले रतनपुर औरउसके पहले अमरापुर थी रतनपुर को अंगरेज लोग आवाबोलते हैं येतीन नगर ऐरावती नदी के तीर पर हैं इन के सिवाय पान्दावो, पादानागा और वहामो प्रभृति प्रसिद्ध नगर यहां हैं ॥ ❖ ❖ ❖

१८२४ और १८५२ ईस्वी में जो संग्राम हुए थे उन में अंगरेजों ने ब्रह्माका पश्चिमी भाग चटग्राम से मलायातक समुदय स्थान अपने अधिकार में लाये वहां के राज्य प्रबन्धके लिये

तीन कमिश्नर नियुक्त हुए हैं ॥ ✣ ✣

१— अराकान का कमिश्नर आकायब नगर में अवस्थि ती करता है अराकान के अंतर्गत ३ जिले हैं प्रथम आकायब दूसरा रामडे तीसरा सांडोवे। अराकान के लोगों को मग कह ते हैं ब्रह्मा के लोग मगों को अपने पूर्व पुरुष जानते हैं ॥

२— मौलमीन का कमिश्नर मौलमीन नगर में निवास करता है मौलमीन कमिश्नर के अधीन जितनी भूमि है उस सब को तनासरिम बोलते हैं इस प्रदेश में ३ जिले हैं मौलमी न मोरगई और टेवाय। मौलमीन नगर प्रधान बाणिज्यस्था न ऐरावती नदी के तट पर बसा है ॥

३— पेगू का कमिश्नर पेगू नगर में रहता है पेगू नग र कों प्रायः २७ कोस दक्षिण में ऐरावती नदी के तट पर रंगून नगर है रंगून में एक बड़ा ऊंचा अष्टकोन मंदिर है उस मंदि र में सोमदेव की पूजा होती है पेगू के कमिश्नर के अधीन ६ जिले हैं मर्तबान बेशिम रंगून टांगू प्रोम और मिआंग।

बंगाल और ब्रह्मा के मध्य में मनीपुर नामक एक छो टा सा प्रदेश है मनीपुर का राजा अबतक स्वाधीन है मनीपुर की राजधानी मनीपुर है मनीपुर के लोग हिंदू हैं ये लोग तोप बना सकते है ॥

स्याम

स्याम का क्षेत्रफल ५५००० वर्ग क्रोश और मनुष्य संख्या २८ ४५ ००० है ये ब्रह्मा के दक्षिण पूर्व में स्याम की खाड़ी पर है इस की उत्तर सीमा लेयस पूर्व सीमा अनाम दक्षिण सीमा स्याम की खाड़ी और मलाया पश्चिम सीमा

ब्रह्मा इसदेश का मध्य भाग समतल क्षेत्र है वहां मीनाम नदी बहती है इसके अन्य २ भाग जंगल और पर्वतों से घिरे हैं बंगले के समुदय द्रव्य यहां उत्पन्न होते हैं उन के सिवाय यहां इलायची तेजपत्र दालचीनी मिरच बहुधा परिमाण से उत्पन्न होते हैं यहां चावल बहुत न्यून मिलते हैं इस देश में मंगोस्तीन नामक एक प्रकार का फल होता है जिसकास्वाद आंब से भीबहुत मिष्ट है भारतवर्षीय समुदय ग्राम्य जन्तु यहां देखने में आतेहैं इसके जंगलों में बाघ गैंडा और हाथी बहुत देखे जाते हैं ब्रह्मा की भांति यहांभी श्वेत हाथी का बहुत सन्मान है इसदेश में सोना तांबा लोहा और नानाविध रतन मिलते हैं यहांसे सीसम और सेगून प्रभृति अनेक प्रकार की लकड़ी और २ देशों में लेजातेहैं ॥

यहां लोगों का आचार व्यवहार ब्रह्मा देशीय लोगों की नाईं हैं यहां के मनुष्य बौद्ध धर्मावलम्बी हैं परन्तु अन्य धर्मावलंबियों से द्वेष नहीं रखते हैं यहां के राजा स्वेच्छाचारी हैं युद्ध के समय सम्पूर्ण प्रजा को राजा की आज्ञा से युद्ध करना पड़ता है यहां के लोग गाने बजाने के प्यारे होते हैं और वाणिज्य के लिये चीन और भारतमहा सागरीय द्वीप समूहों में जाते हैं कभी २ भारतवर्ष और सिंगल द्वीप में भी आते हैं यहां की राजधानी बंकाक मीनाम नदी के तट पर है इस नगर के सब घर काष्ठनिर्मित हैं और वर्षा काल में जल में डूबजाने के भय से यह गृह बांस के ऊपर संस्थापित होतेहैं बहुत घर बांस के उडुप पर निर्मित होकर मीनाम नदी के जल में तैरते हैं इयुथिया नगर इसकी प्रथम

राजधानी थी स्याम के लोग अपने देशको टई बोलते हैं

मलाया

इसकी उत्तर सीमा स्याम पूर्व में स्यामकी खाड़ी दक्षिण में भारतमहासागर पश्चिम में बंगालेकीखाड़ी मलाया के मध्य भागस्थित क्राडमरुमध्य से रोमानियांके अन्तरीप तक समुदय स्थान पर्वत मय हैं पर्वत के दोनो ओर की भूमि भंगीमती अर्थात् तरंग कीनाईं क्रमशः ऊंची नीची है उस भूमि के अधिकांश जंगलमय हैं इस देश में जायफल चन्दन मिरच सुपारी चावल बेंत नानाप्रकार की लकड़ी सोना रांगा हाथी दान्त बहुत पाये जातेहैं भेड ओर घोड़े छोड़ कर यहां भारतवर्षीय समुदय जन्तु उत्पन्न होते हैं यहांकीजलवायु बहुत अच्छी है भारतवर्षीय अंगरेज लाग बीमार होकर चंगा होने के लिये यहां आतेहैं मलायादेशमें दो प्रकारके लोग बसते हैं प्रथम आदिम लोग दूसरी मलाया जाती आदिम लोग बड़े असभ्य हैं ओर सम्पूर्ण नंगेरहते हैं ओर वन के फल मूल ओर अहेर से अपना पेट भरते हैं येलोग वामन ओर काले होते हैं इनके केश ऊनकीनाईं होठ मोटा ओर नाक चपटी होती है मलाया जाती के लोग पहले सुमात्रा द्वीपमें बसते थे फिर खृष्टीय १२ शताब्दी में मलाया देश में आकर बसते हैं इनका स्वभाव बड़ाभयानक हैओर दस्यु हत्तीसे आजीविका करते हैं येलोग बहुत मूर्ख नहीं किन्तु लिखने पढ़ने की चरचा रखते हैं कुरान भी पढ़ सकते हैं किसी २ शिल्पकर्म में इनकी निपुणता देख पड़ती है ओर इनमें से कोई २ वाणिज्यभी करते हैं

परंतु इनकी न्याईं धूर्त क्रूर विश्वासघाती और बैर निर्यातक मनुष्य इनकीनाईं पृथिवी में और नहीं हैं येलोग छोटी २ नावोंपर चढ़कर मलाया के समीपस्थ समुद्रमें दस्युवृत्तिकरते हैं येलोग मुसलमानीधर्म मानते हैं और अफीम खाने जूआ खेलने में बहुत आसक्त हैं यहां के लोग नाना सम्प्रदायों में विभक्त होते हैं प्रत्येक सम्प्रदाय का राजा स्वाधीन है परंतु यहां की नाईं दरिद्र राजा और कहींनहीं हैं राजा का वास स्थान सामान्य झोंपड़ी सिंहासन मट्टी चटाई औरराजवेश लंगोटी रखते हैं राज्यकार्य में सर्वदा फलमूल पशु और पक्षियों का विक्रय होताहै इनकी भाषा संस्कृत और अर्बी से मिलीहुई है इनके अक्षर अर्बी हैं

मलाया से लौंग जायफल मिरच मोम साबू औरहाथी दांत और २ देशों में लेजाते हैं इसका प्रधान नगर मलक्का जो १८२४ इस्वी में अंगरेजों ने डचलोंगों से खरीदा सिंगापुर नगर मलाया प्राय द्वीप के प्रान्त में स्थितहै १८१९ ई॰ में यह अंगरेजों के अधिकार में आयाये दो नगर और इनके अधीनस्थित प्रदेशों को स्टेटससेटलमेण्टबोलते हैं प्रसिद्ध पिनांग द्वीपजिसे पुली पनांग्रो बोलते हैं मलायाके पश्चिम उपकूल के समीप बंगाले के सागर में अवस्थित है ॥

आनाम

इस के उत्तर में चीन पूर्व और दक्षिण में चीन सागर पश्चिम में लेयस और स्याम यह देश तीन भागों में

विभक्त है उत्तर में टांकिन मध्यमें कोचीन दक्षिण में कंबोडिया इस देश के पूर्व और पश्चिम में उत्तर दक्षिण विस्तृत दो पर्वत हैं इनपर्वतों के मध्यस्थित देश सकलप्रति लम्बे है औरउनकी भूमि बहुत उर्वरा यहांबहुत धान्य चीनी रूई रेशम पाट तमाकू दालचीनी इलायची मिरच नारियेल और सेगून आगून इत्यादि बड़े २ पेड़ होते हैं चाह यहां होतीहै परंतु कुछ अच्छी नहीं होतीहै टांकिन प्रदेश में सोना चांदी ताम्बा लोहा बहुत पाया जाता है किसी २ नदी के किच्चड़ धोने सेंभी सोना मिलताहै यहां शोरा और लवण बहुत उत्पन्न होता है भेड़ गधा और ऊंट छोड़ कर और सब भारतवर्षीय जन्तु यहां उत्पन्नहोते हैं यहां के लोग हाथी कामांस खाते हैं इसदेश के लोग बड़े आलसी होते हैं परंतु जहाज और तोप बनाने में बहुतनिपुण हैं येसब बौद्ध हैं मरने के पीछे येलोगमृत शरीर को दोवर्ष संदूख मेंरखते हैं और रोज उसके सामने भोग चढ़ाते हैं

चीन देश का वर्णन

यह साम्राज्य स्काट लेंड के साथ १ अक्षांशरेखा में है और इसका आकार समुदय यूरोपका १ एक पञ्चमांश है और इसके अन्तर्गत कोरिया, मंचोरिया, मंगोलिया, तिब्बत, तरकीस्थान, और सुंगेरिया है परंतु मुख्य चीन स्थन बीमध्यगत अक्षांश रेखापर है और उसका क्षेत्रफल १३१२००० वर्ग कोस है ॥

चीन की पूर्व सीमा पीलासागर और स्थिरमहासागर

दक्षिण सीमा आनाम ब्रह्मा टोंकिन की खाड़ी पूर्वप्राय द्वीप पश्चिमसीमा तिब्बत उत्तर सीमा चीनीतातार मंगोलिया मंचोरिया ॥

चीन का पश्चिमी भाग पर्वत मयहै परंतु अधिकांश इसका निम्नतल है पूर्व में पेकिन और नानकिन के बीच एकबड़ा विस्तृत समतल क्षेत्र है जो समुदय पृथिवी के उर्वर क्षेत्रों में गिना जाता है इसके बीचसे बहुत नदियां और नहरें बहती हैं उन नदियों में से ह्वांगहो यंगसीकियांग और चूकियांग ये प्रधान हैं यद्यपि पेकिन नेपल्स से बहुत दूर उत्तर में नहीं है तोभी यहां की जल वायु नेपल्स से ठंडी है शीघ्र परिवर्तित होती रहती है और यहां शीतऋतु बड़ी प्रबल होतीहै मध्य देश में जल वायु की प्रकृती मध्यमहै परंतु दक्षिण में गर्मी बहुत होतीहै जून और जुलाई महीने में बहुत आंधी चलती है यहां रहने हारे लोगचीन को फलोंवीलेंड अर्थात् पुष्पोद्यान बोलते है वस्तुतः इसमें जैसी अच्छे २ पेड़ मीठे फल सुंदर फूल और बाग बनाने की सचारु निपुणता है यहां चावल गेहूं और अन्यप्रकार की खेतियां होतीहैं यहां बहुत अच्छी चाह उत्पन्न होती है इनके सिवाय यहां तंबाकू कपास नील चीनी आंब और भांति भांति के संतरे और अच्छे मीठे फल उत्पन्न होते हैं यहां नाना प्रकारके बांसहैं जिनसे बहुत काम बनते हैं यहां एक प्रकार का दृक्षहै जिसकी छाल से कागज़ बनते हैं और एक ऐसा पेड़ है जिसके दूध से मोमबत्ती बनती है यहां कपूर औरवर्निसके भी दृक्ष उत्पन्न

होतेहैं यहां के लोग धम्म और अन्य प्रकार जलीय व-स्तुओं से भी भोजन बनाते हैं चीन में पत्थरी कोइला और सोना चांदी प्रभृति धातु बहुत पाई जाती है और यहां से चाह रेशम और स्थानों में जाते हैं चीन में बस्ती बहुत घनी है यहां के रहनेवालोंकी संख्या ४००००००० है इनका रंग पीला आंख छोटी और नाक भी छोटा होता है ये लोग प्रायः मूंछ डाढ़ी और सिरका अधिकांश मुड़ाडालते हैं केवल एक जगह चोटी रखते हैं जो इनके पीछे लटकी रहती है ये लोग बहुत मोटे मनुष्यका आदर करते हैं और दुबले मनुष्य को मूर्ख समझते हैं इनके मत में स्त्री के पांव बहुत छोटे होंठ मोटे पतले और काले केश आंखें छोटी होती है यह स्त्री बहुत रूपवती है और पांवको इतना सुंदरता का चिन्ह समझते हैं कि बाल्यावस्था से ये लोग पांव छोटे करने के लिये लोहे की जूती पहराती हैं भारतवर्ष से भी चीन की स्त्री अधिकरुद्ध रहती हैं। चीनीलोग शांत परिश्रमी और प्रतिभाशालि होते हैं ये लोग अपर जातियों की सहायता के बिना ही अपनी रीति से एक प्रकार सभ्यता को पहुंचे हैं परंतु खेद की बात यह है कि ये लोग दो हजार वर्ष पहले जैसे थे अबभी ठीक वैसे ही हैं जिस समय चीनी लोगों ने तोप निर्माण और दारू बनाया था जिस समय इन लोगों ने आयस्कान्त के गुण जान कर उसे दिग दर्शन यंत्र अर्थात् "कम्पास" बनायाथा और जिस समय इन्होंने काठ के अक्षर के बना कर पुस्तक छापने

की रीति निकालीथी उससमय बहुत यूरोपीय लोग पशु चमड़ा पहरते थे श्रोर बनके फल खाते थे श्रोर पशुश्रों कीभांति काल गंवातेथे अब ये यूरोपीय लोग तो सभ्यताके शिखर पर पहुंच कर पृथिवी का भूषण स्वरूपहुए हैं परंतु चीनी लोग उस समय जैसेथे अब भी वैसे-हीहैं चीन देश में अतिशय निन्दनीय काम नहीं होता परंतु साधारण कोई २ बुरा काम श्रोर ठगना सदैव होताहै इन सब कामों के लिये केवल लाठी मारने वाला दंड दिया जाता है चीनी लोग अपने कुटुंब श्रोर आत्मीय जनों के ऊपर बहुत दयालु व्यवहार करतेहैं श्रोर बूढ़ों की सेवा अच्छी करते हैं परंतु परदेशी वा निःसम्पर्कीय लोगोंसे बहुत कठिन व्यवहार करतेहैं ये लोग लड़कपन में विवाह करतेहैं इसलिये इनके संतान बहुत होतेहैं चीनदेश में विद्या का बहुत आदर प्रचारहै केवलविद्यावत्ता के अनुसारही वहां की राजकीय पदवी "जजौमजिष्ट्रेटी" मिलतीहै इनकीभाषा में एक २ अक्षर एक २ शब्द का प्रतिरूपहै इसभाषा में ८०००० अक्षर हैं इसलिये इतनेही शब्द हैं परदेशी लोगों को इसके सीखने में बहुत परिश्रम करना पड़ताहै शिल्पविद्या में चीनी लोग बहुत निपुणहैं ये लोग जो देखते हैं उसका ठीक २ अनुरूप वस्तु बना लेतेहैं श्रो चेलिखे हुए दोनों अद्भुत कार्य्यों में इनका परिश्रम धीरता श्रोर कार्य्य कुशलता का परिचय मिलताहै प्रथम चीन की भीत जो तातारियों के उपद्रव हरकरने के लिये चीन कीसीमा में बनी हैं इसकी लंबाई ७०० कोसहै श्रोर चौड़ाव ६

ता है कि ६ छोटे जुड़वाढ़े परस्पर पार्श्ववर्ती होकर इस पर च ल सके हैं दूसरा हां चुपु नाम नहर जिसकी लंबाई ३५० कोस है इसके देखने से यह ज्ञानहोता कि यह ठीक नदी है । चीनी लोग बौद्ध हैं परंतु बहुत यहां के पंडित लोग कंफ़ूशु का मत मानते हैं कंफ़्यूशु के मत में एक ईश्वरउ पास्य है और दया प्रभृति सत्कार्यों का अनुष्ठान प्रधान धर्म है चीन में प्रायः परदेशी लोग नहीं रह सकते हैं प- हले विदेशी व्यापारी लोग केवल कांटन नगर में ही प्रवे- श कर सकते और वहां चीनसम्राट के निर्दिष्ट व्यापारियों को अपनी वस्तु वेचते चीन का महाराज अपने देशी व्या पारियों को विदेश में नहीं जाने देता था परंतु अब यह रोक नहीं है अब चीन के सब नगरों में विदेशी व्यापारी लोग प्रवेश करते हैं और चीनी लोग भी भारतवर्ष पूर्वी प्रायद्वीप हिन्दमहासागर के सब द्वीप कालीफार्निया और आष्ट्रेलिया इत्यादि द्वीप और अन्यान्य देशों में जाते हैं चीन की राजधानी पेकिन यह नगर बहुत विस्तृत है और चीन के उत्तर की ओर है यहां प्रायः १०००० लाख मनुष्यों की बस्ती है इसमें राजप्रासाद और सुंदर "बाग" है इस- के ५० मील उत्तर में पूर्वोक्तभीत है जो २००० वर्ष पहले बनीथी और पूर्वोक्त नहरभी यहां बहती है ॥

नानकिन नगर यह यंगसीकियांग नदी के तटपर है और पेकिन में २५० कोस दक्षिण की ओर बसता है इस में सबप्रकार का शिल्पीकाम होता है ॥

कियांगचियाव - ये नगर पियांग झील के पूर्व मेंहै

इस ॥ १०००००० लाख मनुष्यों की वस्ती है और चीनी वर्तन वनते हैं यह वात हम कह आये हैं कि पहले केवल कांटन नगर ही विदेशीय व्यापारियों का वाणिज्य स्थान था परंतु प्रथम चीन युद्धकेपीछे १८४२ इस्वी में नानकिनकी संधी के समय हांगकांग नगर अंगरेजों को मिला और कांटन आमय फुचु निंगपो और सांगेही नगर विदेशीव्यापारों के लिये छोडदिये गये फिर दूसरी लड़ाई केपीछे १८५८ इस्वी में टेनसिन की संधी के समय केंचू स्वाटू नेवान टैंगचू नियुचांग सिकियांग किउकियांग और हांकू इन सब में भी विदेशी व्यापारियों का प्रवेशाधिकार हुआ १८६० में पेकिन के चढ़ाव के पीछे जो संधी हुई थी उस में ट्यनसिन नगर साधारण वाणिज्य का स्थान हुआ और उसी दिन से इंगलैंड का एलची पेकिन नगर में वसता है कैंचू नगर उत्तर उपकूल में एक बड़ा भारी वंदर है कांटन नगर से एकनदी द्वारामें वसा हुआ है । उसकावाणिज्य वहुत विस्तृत है यहां के वहुत लोग नाव और बैरमे हुए छतोंमें वसते हैं १८५८ में फ्रांसीस और अंगरेजों ने इसपर अधिकार पायाथा ऐसे ही इमोंक स्वाटू आमय प्रभृति वंदर विदेशीय वाणिज्य के प्रभाव से वहुत धन शाली होते जाते हैं ॥

चीन के समीपस्थ द्वीप

हेनन दक्षिण उपकूल के समीप यह येलन देशा से देढगुना है और १०००००० मनुष्योंकी वस्ती है इसमें किसी २ पर्वत पर सर्दी व हिम जमी रहती है यहां से बड़े ॥

शाहतीर चावल चीनी मोती श्रोर मुंगा अन्यान्य देशों में जाताहै । फारमोसा द्वीप आनय के साह्मने स्थित है श्रोर परिमाण में स्काटलैंड़से आधा है इसमें एकज्वालामुखी पर्वत है जिसकी चोटी १२००० फ़ुट ऊंचीहै इसपर्वत के पश्चिमकी श्रोर प्राय २०००००० चीनीलोग वास करतेहैं श्रोर पूर्व में उसदेशके लोग बसते हैं जो सम्पूर्ण स्वाधीनहैं फारमोसा द्वीप से चावल कपूर नून श्रोर गंधक अन्यान्य स्थानें में जाताहै चीनदेशकेराजदंडित लोग यहां निर्वासित होतेहैं । हांगकांग द्वीप कानटनसे ७५ मील दूर पर है यह द्वीप १८४२ इस्वी से अंग्रेजों का एक उपनिवेश हुआ है इसमें ६५००० मनुष्य रहते हैं इसके प्रधान नगरकानाम विकटोरियाहै मेकाेउ नामद्वीप हांगकांग से ५० मील पश्चिम की श्रोर है १५८० इस्वी से यह पोर्टगेजों के अधीनहुआ ॥

कोरिया एक प्रायद्वीप जापान के साह्मने है इसका क्षेत्रफल ८०००० वर्गमील है श्रोर यह चीन को करदेता है इसदेशका विषय बहुत थोड़ाही ज्ञानहुआहै इसदेशके लोगें की प्रकृति चीनी श्रोर जापानी लोगें से भिन्न है यहां से चावल रुई पशम धातु चर्म पर्वती नमक श्रोर पत्थरीकोइला प्रभृति अन्य देशोंमें जाता है इसकीराजधानी हिंगीयांग वा कियागकीटाउ है ॥

मंछूरिया देश का वर्णन

मंछूरिया जो मंछूरियन लोगें की वासभूमि है मंछूरियन लोगें को साधारणतः तातारी कहते हैं परंतुइनका

प्रकृत नाम रंगसियन है १६ ४४ में इन्होंने चीन को अ
धीन किया और अबतक राजवंशीय और प्रधानक
र्म्मचारीलोग इसवंश के हैं १७ ५७ में अमूर के उत्तर
और उसरी के पूर्व स्थित देश सकल रूशिया के अ-
धीन ऊए हैं अब इसका क्षेत्रफल ३८ २००० वर्गमी
लहै और इस्के अधिवासि ओं संख्या ३५००००० है
इस्का दक्षिणभाग यद्यपि पर्वत मय हैं तोभी चीनके
दक्षिण भागकी नाईं उसमें खेती होती है, औरभागों-
में मनुष्योंकी वस्ती विरलहीहै और बऊत जंगल हैं
इसमें ये प्रधान नगर हैं ।१। मोकदीन जोपेकिन से
३८७ मील ईशान कोनमें हे यह पहले मंचूरियनरा
जाओंकी राजधानीथी (२) गिगन्ना यह पेकिनके अ
ग्निकोनमें है (३) अइगून अमूर नदी पर मंगोलिया इ-
स देशकी उत्तरसीमा साईबीरिया, पूर्वसीमा मंचूरिया
और चीन, दक्षिणसीमा तिब्बत पश्चिमसीमा तातार औ
र मंगोरिया । इस देशके मध्यमें गोबी नामक बडीविस्त
त मरुभूमि है, इस्के उत्तर भागमें अमूर और इनेसी नदि
योंकीः शाखा नदी बहती हैं । और इसमें ये नदियां बह-
ती हैं जो उबसा और इकी आरल झीलोंमें गिरती हैं ।
दक्षिण में हो आंगहो नदीशाखा नदी और कोकनार
झील में गिरने हारी नदियां हैं यहां के निवासियोंकी सं-
ख्या ४०००००० है औरवे प्रायः पशुपालनव्यवहार क
रते हैं । यहां १२७९ से १३६८ चीनकाराजा राजकरते
रहे, इस्के प्रधान नगर ये हैं — उर्गा जो बैकाल झीलसे

३० मील दक्षिणमें है, वह नगर मंगोलिया की राजधानी है और यहां मंगोलियनका इष्टदेव लामा रहता है । बैकाल झीलसे २०० मीलपर किआचीन नगर है, यहां चीनीलोग रूसियों से व्यापारकरते हैं उर्गाके २००मील अग्निकोनमें करा कुर्म नगरके खंड दिखाईदेतेहैं, यहनगर प्रसिद्ध मुगल विजेता चंगेजखांकी राजधानी थी चंगेजखांने ११०६ से ११२७ ई तक इस नगरमें राज्यकिया ।

तिब्बत देशकावर्णन

यह देश मूडाकोके साथ एक अक्षांशरेखा में है, इसका परिमाण फल १८०५०० वर्गकोस है और मनुष्य संख्या ६०००००० है । इसकूनलव पर्वत को हिंदूलोग कैलास पर्वत कहतेहैं । तिब्बतके उत्तरमें चीनी तातार, पूर्व में चीन, दक्षिणमें भारतवर्ष, पश्चिममें तरान अर्थात् तातार तिब्बतके रहने हारे अपने देश को पियू अर्थात् बर्फस्थानबोलते हैं । तिब्बत ऊंचे समतल क्षेत्रों से बनाहै और इसके बीच में बहुत पर्व्वत हैं । यहांसे दक्षि एशियाकी प्रधान नदी सिन्धू, सतलज, यमुना ब्रह्मपुत्र ऐरावती प्रभृति नदियां निकलतीहैं। तिब्बतमें शीतका बहुत प्रादुर्भाव है यहां इसलतादि बहुत थोड़े उत्पन्न होते हैं । इसलिये यहां लकड़ी बहुत कठिनतासे पाईजातीहै । यहां भांति २के पशुपक्षी देखने में आते है, सर्व्वत्र ही गाय, भेड, बकरी घोडे और खच्चर देखनेमें आते हैं हिमालयके दुर्गम रास्ते

में गाड़ी वा गाय इत्यादि पशु नहीं चलसके इसलिये ति-
ब्बतसे भारत वर्ष में मेष और छागोंसे लाद कर द्रव्य
लाते हैं यहां चमरी नामक एक प्रकार की गाय है जि-
सके दुम्ब का चमर बनताहै यहां कस्तूरी का मृग भी
पाया जाता है इस देश में उत्पन्न छाग अर्थात् बकरों
के लोम से शाल दुशाले बनतेहैं ऐसे बकरे और दे-
शों में कहीं नहीं होते यहां कुत्ते बड़े बलवान और बड़े २
भारी होतेहैं यहांकी खानों मे सोना पारा सुहागा औ
र लवण मिलता है भारत वर्षियों से तिब्बत वासियों
का कुछ व्यवहारादि नहीं मिलता तातार वासियों से इ-
नका शरीर बहुत मिलताहै ये लोग अतिशय आलस्य
शान्त और सन्तुष्ट होते हैं शाल और अन्यान्य पशमी
वस्त्रों का बुनना उनका प्रधान शिल्प है ये लोग सदैव
चीनों के साथ वाणिज्य करते हैं मरने के पीछे ये लोग
शव को फूकते और गाड़ते नहीं हैं किन्तु शमशानमें
फेंक देते यहां के लोग भेड़ का मांस बहुत खातेहैं ब-
हुत लोग कचे मांसको खालेतेहैं पांडवों की नाईं यहां
समुदय भाई मिलकर एक स्त्री से विवाह करते हैं उनमें
से बड़ा भाई स्त्री को प्रसन्न कर्ता है तिब्बती लोग बौद्ध हैं
इन के प्रोहितों का नाम लामाहै इन लामों में डालय
लामा और टिस् लामा परम पूज्य हैं तिब्बतियों के मत
में डालय लामास्वयं ईश्वर मनुष्य के भेष से पृथिवी पर
रहताहै उसका मृत्यु नहीं परंतु समय २ शरीर परिव-
र्तन होताहै । एकडालय लामाके मरनेपर किसीवि-

शेष लक्षणाक्रान्त बालक को उसका अवतार जानकर उसकी गद्दी पर बैठा देते हैं और उसका मृत देह सोने में लपेट कर पूजा करते हैं टिसूलामा को बुद्ध देव का अंश समझते हैं ॥

तिब्बत की भाषा भारतवर्ष की भाषाओं से नहीं मिलती परंतु इनकी लिखने की रीति फारसी से मिलती है और वर्णमाला नागरी से मिलती है प्राय १०० वर्ष हुए कि तिब्बत चीन के अधीन हुआ और चीनी प्रतिनिधी शासन करता आकर राजकार्य करता है तिब्बत की राजधानी लासा यहां लामा का एक मंदिर है इसलिये तिब्बती लोग इसको परम पवित्र स्थान कहते हैं । ले और तिसूलम्बू तिब्बत के प्रधान नगर हैं । उनमें से ले लदाख की राजधानी है और यह लदाख चीन के अधिकार में नहीं है किन्तु काश्मीर राज के अधीन है ।

तातार का वर्णन

इसके पश्चिममें कास्पियन फारस, अफगानिस्थान् भारतवर्ष तिब्बत और चीन, उत्तर में रूस, यह, तातार देश दो विभागों में विभक्त है, एक स्वाधीन तातार ६० वा ७० वर्ष से लेकर फारसी लोगों ने विद्या की विशेष चर्चा करनी प्रारम्भ की बहुत दरिद्री मनुष्यों के बिना और सब लोगही अपने २ सन्तानों को विद्यालय में भेजते हैं यहां का काव्य बड़ा सुंदर है परंतु पदार्थ विद्या की कुछ आलोचना नहीं है फारस के राजा को शाह कहते हैं यह बड़ा यथेच्छाचारी है और प्रजाओं को दास की नाई

जानते हैं यहां की शासन प्रणाली ऐसी बुरी है कि झग
ड़ों में जो अधिक धन खर्च करे वही जय पाता है यहां शी
आ मतावलम्बी मुसलमान रहते हैं । प्राचीन काल में
फारसी लोग अग्निकी उपासना करते थे उनका प्राची
न आचार व्यवहार प्राचीन हिन्दूओं के आचार व्यवहार
से बहुत मिलता है और प्राचीन संस्कृत भाषा प्राचीन फा
रसी से बहुत मिलती है जो लोग इन दोनों देशों के इति
हास मनोनिवेश से पढ़ते हैं उनको निश्चय ही यह जा
न होता है कि फारसी लोग और हिन्दू दोनो एक जाति
य हैं परंतु समय से भिन्न प्रकार होगये हैं फारसी के
पण्डित लोगों को सूफी कहते हैं अर्थात् वे लोग कि
सी प्रचलित धर्म प्रणाली का अनुगमन नहीं करते हैं
अपनी इच्छा और युक्ति के अनुसार ईश्वरोपासना कर
ते हैं फारसी लोगों के चरित्रादि पहले कहे गये हैं फार
स को इरान भी कहते हैं ॥

फारस की राजधानी तहरान कास्पियन सागर के
४० कोस और अलबुर्ज पर्वत के ४ कोस दक्षिण में है
यहां ग्रीष्म ऋतु में ऐसी कड़ी गर्मी पड़ती है कि जो लो
ग समर्थ रखते हैं वे शहर छोड़ कर अन्यत्र चले जाते
हैं इस्पहान फारस की पूर्वकाल में राजधानी था और
तहरान से १०५ दक्षिण एक उर्वर उपत्यका में है यहां
अबतक इसका प्राचीन गौरव का चिन्ह इसके खंडों में
पाया जाता है रेसट और अस्त्राबाद कास्पियन सागर
के तीर स्थित दो बड़े बंदर हैं बुसार नामक एक बंदर

फारस की खाड़ी पर है इसके ६० कोस पूर्व एक उर्वर उ-
पात्यका में शीराज नामक नगर उद्यान और मदिरा के
लिये प्रसिद्ध है इसके समीप फारस का प्रधान कवी हा
फिज़ और शादी की समाधि है ढेवरज उर्मिया झील के
समीप है येज़द् नगर मध्य में है और मेसद इशान कोन
में है ये तीननगर सार्थवाह वणिकों का प्रधान व्यापार
स्थान हैं हमदन नगर तहरान के नैऋत कोन में १९०
मील पर है यहां पहले मेडों की राजधानी एक वटना
नगर था पारसी पोलिसनामक नगर शीराज के ९६
कोस उत्तर में है यह प्राचीन फारसियों की राजधानी था
और यहां अब जो खंडहर मिलते हैं लोग उनको
बड़े सिकंदर से नष्ट हुआ साईरस का प्रासाद खं-
ड समझते हैं । उर्मिया नाम नगर ज़ुर्तुश्त की जन्म भूमि है

अफगानिस्थान

इस के उत्तर में तातार पश्चिम में फारस दक्षिण में
बलोचिस्थान पूर्व में भारतवर्ष-
इसका परिमाण फल २२५००० वर्गमील है औरवि
स्तार हेरातनिपा से हुआहै अफगानिस्थान का आ-
कार नानाविध है उत्तर प्रदेशों में भयंकर हिम मय प
र्वत सकल हिमालय से लम्बमान होरहे हैं ॥ जिन
के बीच हिंदू कुश पर्वत है और जिनमें से किसी २ के
शिखर सर्वदा वर्फ से ढपे रहते हैं इन पर्वतों के भी-
तर बहुत मनोहर उपात्यका हैं जिन मे बहुत लम्बी
२ चरागाह हैं दक्षिण में यहां बलोचिस्थान और

सई स्थान है उसके अधिक अंश हल लतादि विहीन परिशुष्क मरु भूमि हैं यहां के पवन से वालु उठकर खेतों की बहुत हानि करता है और बीच २ में बहुत-न समाकीर्ण मनुष्यालय और शस्य क्षेत्र भी देखे जाते हैं ऐसे देश भेद में गर्मी सरदी का भी बहुत प्रभेद लक्षित होता है पश्चिम भाग में हेरात नगर के चारों ओर जितने स्थान हैं शीत काल में वे सब बर्फ से ढप जाते हैं उत्तर भाग में भी शीत का अतिशय प्रादुर्भाव है गजनि नगर के समीपस्थित सब नदियां बर्फ से आवृत होती हैं मध्य भाग कन्दहार नगर के निकटस्थित स्थानों में शीत वा उष्णता का बहुत प्रादुर्भाव नहीं वह स्थान रमणीय है पूर्व भाग में पेशावर नगर के चारों ओर स्थित सब देश बहुत गर्म हैं परन्तु वहां से वलोचिस्थान को प्रवेश करते ही फिर शीत का आधिक्य पाया जाता है

यहां गेहूं जौ और धान्यादि खेतियां और अनार अंगूर पिस्तादि सरस फल और तम्बाकू चीनी हींग बहुत उत्पन्न होते हैं यहां का तरबूज़ इतना बड़ा होता है कि एक बलवान पुरुष भी उसे उठा नहीं सक्ता यहां लोहा ताम्बा शीशा रसाञ्जन गन्धक सैन्धव लवण फटकरी और सोना ये सब खानी द्रव्य हैं यहां वनचर जीव बहुत थोड़े हैं केवल काबल के निकट व्याघ्र और एक प्रकार का तद्द सिंह देखा जाता है और किसी २ वन में चिता वन्य गर्दभ और वन्य बकरी

ओर पालने हारे जीवों में यहां के दुम्बे की पूछ कभी ४ सेर से भी अधिक होती है ओर यहां के कुत्ते बड़े बल वान होते हैं बिल्ली की पीठ में लम्बे २ बाल होते हैं ओर हेरात के घोड़े बहुत प्रसिद्ध हैं यहां ऊंट गधे खच्चर बकरे प्रभृति भी बहुत हैं यहां सांप ओर बि च्छू भी अनेक देखे जाते हैं यहां के लोग प्रायः पन चक्की ओर पवन चक्की के द्वारा गेहूं आदि पीसते हैं यहां पाल की वा गाड़ी कुछ भी नहीं है सब स्त्री ओर पुरुष ऊंट ओर घोड़ों पर चलते हैं अफगानि लोग साहसी दृढ़शरीर स्वश्रीकलम्बे परिश्रमी ओर योधा होते हैं यद्यपि इनमें से बहुत लोग दस्यु वृत्ति करते हैं परंतु यहां आतिथ्य ओर शरणागतों के पा लक भी अनेक हैं इन में बहुविधजाति हैं ओर स्वाधी नतासेसब लोग रहते हैं यहां मुहम्मदी लोग रहते हैं, बलोचिस्थान के लोग बलवान ओर बड़े जवान होते हैं ओर डाका मारना इनकी आजीविका है इन में से बहुत लोगों का निर्दिष्ट गृह नहीं रहता है मैदा न के बीच कम्बली यों के तम्बू बनाकर उनके भीतर निवास करते हैं अफगानिस्थान के उत्तर भाग में हि न्दूकुश पर्वत के ऊपर स्याहपोस नामक एक जाति के मनुष्य रहते हैं मुसलमान इनको काफ़र बोलते हैं ये लोग बड़े स्वश्रीक साहसी ओर बलवान होते हैं इनकी भाषा संस्कृत भाषा से बहुत मिलती है ये लोग नाना विध हिन्दू देवता ओं की पूजा करते हैं परंतु

वर्तमान काल के हिन्दुओं के साथ इन का आचार नहीं मिलता है अफगानिस्थान और बेलोचिस्थान इन दोनो को काबल राज्य बोलते हैं यहां की भाषा का नाम पश्तो है और अक्षर फारसी के हैं यहां के बड़े मनुष्य फारसी भी पढ़ते हैं ॥

क्योंकि एक तो यहां प्रचंड धूप दूसरे जल की बूंद भी नहीं मिलती और न कोई वृक्ष है कि जिसकी छाया में क्षण भर बैठ कर विश्राम करें विशेषता जब इस मरु भूमि में आंधी चलती है तो तरंग माला की रण समुद्र से भी इसका दृश्य भयंकर होता है तब पर्वताकार बालुराशि इसके तल से उत्थित होकर दिङ् मण्डल को आच्छन्न करती है और जो कोई पदार्थ इसके साम्हने पड़ता है उसे एकबार ही ढांप लेता है । यहां दिन में जैसा प्रचण्ड धूप रात में वैसाही प्रचंड शीत होता है ।

अर्ब की भूमि सर्वत्र ही शुष्क है यहां नौगमनोपयोगी नदी वा झील नहीं हैं जल बड़ा दुष्प्राप्य है कभी २ दोचार वर्ष लेके बिन्दु मात्र भी वृष्टी नहीं होती पृथिवी की और भूमियों से अर्ब की भूमि सूखी है यहां निम्न भूमि से पर्वतीय प्रदेशों की जल पवन कुछ ठंडी है उत्तरभाग में समूम नामक एकप्रकार उष्णवायु बहती है जो मुख में लगने सेही स्वास बंद होकर प्राण निकल जाता है और उसके दूसरे क्षण में वह मृत शरीर स्फीत मलिन और दुर्गंध युक्त होता है अर्बी लोग कहते हैं कि जब यह वायु बहती है उसके पहले गंधक की

गंध अनुभूत होती है और जिसदिशा से यह वायु आती है वह लाल होजाती है इस वायुसे बचने का एकही उपाय है जब वह वायु चलने लगती है तब स्पन्द हीन होकर मिट्टी में लेट जाना और जब तक वायु चले तब तक वैसा ही रहना तब कुछ विघ्न नहीं होता यहां के पशुभी स्वभाव सिद्ध संस्कार के बल से इस उपाय का अवलंबन करते हैं । अर्ब के ग्राम्य पशुओं में से घोड़े पृथिवी के घोडों से अच्छे हैं परंतु ऊंट यहां के बहुत उपकारी हैं केवल इस पर चढ़ कर अर्बी लोग पूर्वोक्त विस्तृत भयंकर मरुभूमि में पर्यटन कर सकते हैं इसलिये इसको वहां के निवासी मरुभूमि का जहाज बोलते हैं अर्बी लोग इसका दूध पीते हैं और ऊन से तंबू बनाते हैं मांस इस का उत्तम जान कर खाते हैं जंगली जीवों में क्रमानुसार यथा भेड़िया लूंबड़ी गिदड़ तरख और चिता ये प्रधान हैं ॥

अर्ब में सोने वा चांदी की खान नहीं है यहां लोहा सेंधव और लवण बहुत हैं कहीं सीसा भी पाया जाता है फारस की खाड़ी में स्थित बहरिन टापूके पास मोती उत्पन्न होते हैं लालसागर और फारस की खाड़ी में बहुत प्रवाल उत्पन्न होता है अर्ब के निवासी दो बड़े भागों में विभक्त हैं एक बदूइन दूसरे किसान वा नगर वासी बदूइन लोग मरुभूमि के मध्यस्थित छोटे २ भूखंडों में रहते हैं इसका कोई घर बनाहुआ नहीं तंबू

में रहते हैं और जब इच्छा होती है तब एक स्थान से तंबू उठाकर दूसरे स्थान में लेजाते हैं येलोग बलवान सुश्रीक मुखअंडाकार और ताम्रंग और ललाट ऊंचा और बड़ा आंख उज्वल शरीर छोटा होता येलोग अतिथी का बहुत सन्मान करतेहैं परंतु इनकी जीविका का बट मार एक प्रधान उपाय है। किसान वा नगर वासी लोग और २ देशों के किसानों से बड़े भिन्न नहीं है उनका आकार बद्दूइनों से कुछ भिन्न नहीं है केवल उनका शरीर कुछ दीर्घ है इनके बीचमें व्यापार और शिल्प विद्या भी प्रचलित है पूर्वोक्त फारसी की खाड़ी में उत्पन्न मोतियों का व्यवसाय प्रधानरूपसे इनकेही अधीन है। मध्यसमय में अरब में लिखने पढ़ने की चर्चा बहुत थी और अनेक उत्तम २ ग्रन्थ भी बने परंतु अब यहां लिखने पढ़ने की चर्चा एकबारही उठगई है यहां मुहम्मदी धर्म्म प्रचलित है और यहां हीं इसकी उत्पति हुई थी अरबके उत्तर पश्चिम प्रदेश रूमके अधीन हैं दक्षिण पश्चिम प्रदेश जिमन के बादशाह के अधीन है और दक्षिण पूर्व प्रदेश मस्कट के सुलतान के अधीन हैं और इससे अतिरिक्त प्रदेश पूर्वोक्त बद्दूइन भ्रमण कारी जाति के अधीन हैं ॥

मक्का और मदीना ये दो अरब के प्रधान नगर हैं और जिस प्रदेश में येहैं उसे हिजाज़ कहते हैं मक्का लालसमुद्र से १० कोस परे है इस के चारो ओर मरु

भूमि है और यह मुसलमानों का महातीर्थ है यहां ५७१ ई॰ में मुसलमान धर्म प्रचारिक मुहम्मद का जन्म हुआ मुहम्मद ने कहा है कि मुसलमानों को एक बार मक्का दर्शन करना बहुत आवश्यक है इसमें काबा नामक एक मसजिद है और यह मुसलमानों का बड़ा पवित्र धाम है इस मसजिद में हजरुल अपसद नाम एक पत्थर है और चांदी से मढ़ा है यात्री लोग इसकी ७ प्रदक्षिणा एकचुम्बन करते हैं यहां जमजम नामक एक कूआ है मुसलमान कहते हैं कि यह स्वर्ग से उतरा है और इस पवित्र जल के स्पर्श से सब पाप दूर होजाते हैं जिस हीरा पर्वत की गुफा में मुहम्मद ईश्वर का ध्यान कर्ता था वह भी मक्के के पास है।

मदीना।— यहां मुहम्मद की समाधि है यहां भी बहुत यात्री आते हैं इन दो नगरों के सिवाय जिदुडा साना मोका एडन मस्कट ये सब स्थानभी अर्बमें प्रसिद्ध हैं जिड्डा एक प्रधानबंदर है समुद्र पथ से जो वस्तु और यात्री मक्के में जाते हैं वे जिड्डा होके जाते हैं। और भारतवर्ष की तारकी खबर जिड्डा में होकर इंगलेंड में जाती है साना ईमन की राजधानी है मोका काफी के लिये प्रसिद्ध है और एक प्रधान बंदर है। एडन जो बाबुलमंडप के मुहाने पर है १८३९ ई॰ में अंगरेजों के अधिकार में आया मस्कट एक प्रसिद्धभी नगर है और फारस की खाड़ी पर बसा है और यहां व्यापार का भी बहुत प्रचार है ॥

मध्य में एलराडनामक नगर वहाबियों की राजधानी है ये वहाबी लोग गत सतावधि में प्रबल हुए थे ये लोग मुहम्मद को ईश्वर के तुल्य पूज्य नहीं मानते हैं उसको केवल एक भविष्य द्वक्ता कहते हैं उनके केवल ईश्वर ही पूज्य है इन लोगोंने एकसमय सारे अरब को अधीन करलिया था परंतु मिसर के बादशाह मुहम्मद अली इनको मक्के और मदीने निकाल दिया ॥

अरबाबा की खाड़ी और मुर्दा झील के मध्यमें पिट्रानामक प्राचीन इडिम की राजधानी का खंड है यह १८१२ ई॰ में बास्क हारड नामक भ्रमिक से प्रकट हुआ है

फारस

इसके उत्तर में जार्जिया कास्पियन सागर और तातार पश्चिम में एशियाई रूम दक्षिण में फारस की खाड़ी पूर्व में अफगानिस्तान और बेलोचिस्तान। यह उत्तर अक्षांशों के २६ अंश से ३९ अंशतक विस्तृत और पूर्व देशान्तर के ४४ अंश से ६१ अंशतक लंबा है इसकी लंबाई फुरात और दजिला के मिलने से अफगानिस्तान तक ३८० कोस और चौड़ाई कास्पियन सागर से फारस कीखाड़ी तक ३५० कोस है इसका क्षेत्र फल है मनुष्यसंख्या ९०००००० फारस में एक समतल देश है जिसमें प्रधान रूप से लवणमय मरुभूमि है इसके उत्तर और पश्चिम में एलबुर्ज पर्वत श्रेणी और कुर्दीस्थान के पर्वत हैं इसके दक्षिण

में जो समतल क्षेत्र और पर्वत हैं वे सब उपजाउ नहीं उत्तर देश स्थित प्रदेश सकल सुंदर और उर्वर हैं फारस के वायुकोन में उर्मिया की लवणामयझील है जिसकी ऊंचाई समुद्र तल से ४५०० फीट है फारसकी अवशिष्ट भूमि रेत से आछन्न है उन सब स्थानों को गर्मसर अर्थात् उष्ण प्रदेश कहते हैं इन में ग्रीष्म ४ महीने ऐसी प्रबल होती है कि वहांके रहने वाले से भी सहा नहीं जासक्ता उस समय यदि कोई प्रदेश से मनुष्य वहां आकर पीड़ित होजाय तो उसका अच्छा होना बड़ा कठिन है फारस में नदी बहुत न्यून और छोटी हैं और ये नदियां समुद्र में न पहुंच कर मध्यस्थित झीलों में गिरती हैं कास्पियन सागर के तीरपर जो एक मरुक्षेत्र है उनमें भी ग्रीष्मकाल में ग्रीष्म का प्रादुर्भाव होताहै परंतु शीतकालमें वह बहुत रमणीयहोताहै वहां का वायु सर्वदा सजल है स्वस्थ का अनुकूल नहीं इसीप्रकार दोसमतलक्षेत्र के मध्यस्थित क्षेत्र उन्नत और शुष्क ये भूखंड पर्वतोंसे आकीर्ण है और उन पर्वतों के बीच फारसियों का प्रकृत वासस्थान और शस्य क्षेत्र हैं परंतु उनका भी अधिकांश मरुभूमिहै उस मरु को कुबीर मरुकहते हैं इसके किसी २ स्थान में शुष्क क्षेत्र कोई २ स्थान लवण मय कोई २ स्थान जलमय और किसी २ स्थान में वालूका स्थल लहरों की तरह ऊंचीनीची दिखाई देताहै फारस की भूमि कहीं कर्म्म के लिये

विशेष अनुकूल नहीं है यहां की भूमि बड़ी कठिन है जल शेष के बिना यहां कुछ उत्पन्न नहीं होता है यहां गेहूं चावल जौ इत्यादि खेती होती और यहां के बागों में पिंडी खजूर अंजीर अनार आड़ू बादाम अखरोट अंगूर और नारंगी आदिफल उत्पन्न होते हैं उनमें से शेषोक्त दो फल बहुत बढ़तीहैं लून रूई ईख प्रभृति भी यहां बहुत होते हैं यहां रेशम और गलीचों के कारखाने बहुत हैं यहां के अश्व यद्यपि वेग में अर्ब के घोडों से न्यून हैं परंतु उन से सुंदर बहुत हैं यहां घोड़े और ऊंट के मिलाप से एक जाति की खच्चरें उत्पन्न होती हैं और खच्चरों से बलवान हैं और यहां की भेड़ लंबी पूंछ के लिये प्रसिद्ध है एक एक का बोझ १५ सेर के लगभग होता है यहां गाय प्रभृति ग्राम्य जंतु बहुत हैं और जंगली जीवों से सिंह रीछ वन्य सूकर छोटे व्याघ्र चीता और नाना प्रकार हरिन और खरगोश प्रधान हैं। यहां खानी द्रव्य बहुत है परंतु उनका व्यवहार थोड़ा होता है उत्तर पूर्व में हैं आमूर और सार ये दो नदियें आराल झील में गिरती हैं इननदियोंके तीर पर बहुत उर्वर प्रदेश है जिसमें चावल गेहूं रूई खरबूजा तरबूज और अच्छे २ फल उत्पन्न होते हैं यहां ग्रीष्म काल में गर्मी बहुत होती है ऐसे शीत काल में पाला अधिक पडता है यहां के मनुष्योंकी संख्या ५०००००० है ये सब पशु चारन करते हैं

श्रीर मुसलमान धर्मावलम्बी हैं ये लोग प्राचीन तु-
र्किस्थिय जाति की नाई युद्ध में साहसी होते हैं परंतु
क्रूर श्रीर विश्वास घाती होते हैं दक्षिणभाग में इन की
अधिक बस्तियें हैं श्रीर येलोग वहां बहुत परिमाण
से रूई प्रस्तुत करते हैं ये लोग जहां घास श्रीर पानी
का आधिक्य देखते हैं वहां ही स्थिती करते हैं परंतु
वहां के घासादि निःशेषित होने पर श्रीर २ स्थानों
में जाते हैं इसलिये इनकी कहीं नियत रहने की ज-
गह नहीं है येलोग दासों का विक्रय करते हैं रूस
वा फारस के प्रान्त में जो स्त्री पुरुष इनके साम्हने आ
ते हैं वे लोग उसे पकड़ कर दास बना कर बेच डाल
ते हैं यहां ताजिक श्रीर उज़बेग नामक २ सम्प्रदायों
के मनुष्य हैं ये लोग कुछ सभ्य श्रीर परिश्रमी हैं ये
लोग बुखारा कोकंद श्रीर कुन्दज प्रदेशों में वास क
रते हैं श्रीर फारस भारतवर्ष तिब्बत चीन श्रीर रू-
शिया के लोगों से व्यापार करते हैं इतिहासों में ता-
तार बहुत प्रसिद्ध है समय २ यहां के लोगों ने अपने
देश से निकल कर बहुत राज्यों का नाश किया अब
तक इस देश के लोग रूम की गद्दी पर बैठे हैं विख्या
त तैमूर श्रीर भारतवर्षी मुगलों का पहला बादशा
ह इस देश में उत्पन्न हुए थे तातार राज्य ६ भागों में
विभक्त है यथा तुरकिस्थान, खीवा, कोकन, बुखारा,
तुर्कमानिया श्रीर कुंदज यहां बहुत छोटे २ स्वाधी
न राज्य थे परंतु अब रूसी लोग क्रमशः इस देश में

अपना अधिकार बढ़ाते जाते हैं येलोग तासकंद न-
गर को अधिकार में लाकर समरकंद के समीप तक प
ऊंचगये हैं येलोग जिस प्रकार गति से दक्षिण की ओ
र आते हैं उस से बऊत मनुष्य अनुमान करते हैं कि-
भारतवर्ष इनका प्रधान लक्ष है ॥

तुरान का प्रधान नगर बुखारा यह बऊत वणिज्य
का स्थान है प्राचीनकाल में यह बऊत प्रसिद्ध था अ
बतकभी यहां १,२०,०००, मनुष्योंकी बस्ती है और
बऊत मसजिद औरपुस्तकालय हैं ॥

समरकंद—यह भीएक प्रधान नगर है बुखारा
से ५४ कोस पूर्वमें है यह नगर १३७० से १४०५तक
तैमूर की राजधानी रही बुखारा के अग्निकोनमें ११०को
सकी दूरीपर बालक नगरहै जो बकटरिया देशकी
राजधानी था और २ नगरो में से बदखसां पद्मरा-
ग मणि के लिये, कोकन औरतासकंद खीनखाब्
और अन्यविध पट्टवस्त्रकेलिये और खीवा दास व्य-
वसाय के लिये प्रसिद्ध हैं । मश्रेमाना और मर्व नग
र होकर बऊत समुद्रीय व्यापारी लोग जाते हैं ।

एशिया में का रूस

यूरोप के अन्तर्गत बालटिक सागर के पूर्व तीरसे
जितना यूरोपखण्ड है और एशिया के समुदाय उत्त
रांशों का नाम रूस है । यह भूमिखण्ड एक राजाके
आधीन है । उन्में से जो भाग यूरोप के अन्तरगत है
उस को यूरोपीयरूस और जो खण्ड एशिया के अन्त

गत है उसे एशियाईरूस कहते हैं । यूरोप के वर्णन के समय यूरोपीयरूस का वर्णन किया जायगा अब एशियाई रूस का वर्णन करते हैं ।

इसके उत्तर में उत्तरमहासागर, पूर्व में स्थिरमहासागर, दक्षिण में चीनी तातार, तरान, और फारस और पश्चिम में यूराल पर्वत वा यूरोपीयरूस । इस का क्षेत्रफल ९३७५००० वर्ग कोस है और मनुष्यसंख्या ६००००० है । काकाशस पर्वत के दक्षिण और फारस वायुकोणस्थित कुछ अंश छोड़के समुदाय एशियाई रूस को साईबीरिया कहते हैं । साईबीरिया उत्तर महासागर के गर्भ से निर्गत होकर क्रमशः उन्नत हुआ है । इस के दक्षिण में आलटाई पर्वत, इरियाजाबूलोनाय स्टेनोभय पर्वत है । मध्यस्थित भूमि कुछ समतल है और उसमें ओबी, इनेसी और लीना ये तीन नदियें बहती हैं । दक्षिण-पूर्व में बेकल झील है जो कि एशिया की सब मीठी झीलों से बड़ी है और इसकी लम्बाई ३६० मील और चौड़ाई ५० मील है । शीतकाल में इसमें ४ फुट बरफ जम जाती है ।

ऐशियाईरूस का उत्तर और पूर्व भाग बड़ा शीतप्रधान है । वहां ९ वा १० महीने तक शीतऋतु रहती है और यह सर्वदा बरफ से आच्छन्न रहता है । वहां की बड़ी २ नदियें बरफ राशि के नीचे

बहुत धीरता से और निःशब्द होकर बहती है इस के मध्यभाग मे भी शीत का बहुत प्रादुर्भाव होता है। केवल दक्षिण भाग मे बड़ा २ विस्तृत बन और खेतियों से भराहुआ धरातल देखने मे आता है। साईबीरिया के उत्तरभाग को तन्द्रा कहते हैं। और वहां कुछ वृक्षलतादि उत्पन्न नहीं होते न वहां कोई जीव रहता केवल समय २ एक प्रकार पक्षी का शब्द सुना जाता है। साईबारिया के उत्तरपूर्व की सीमा मे कमस्कटका नामक प्रायद्वीप है जिस में कई एक ज्वालामुखी पर्वत हैं।

एशियाई रूस के जो अंश फारस के उत्तर मे है उस में शीर्वाणनामक एक प्रदेश है उस प्रदेश का पूर्वप्रान्त बड़ा आश्चर्यस्थान है। वहां भूमि के नीचे से एक प्रकार का तेल सदा निकलता रहता है। वह तेल दो प्रकार का होता है एक कृष्णवर्ण द्वितीय श्वेतवर्ण। कृष्ण वर्ण तेल सूर्य्यकिरण के संयोग से थोड़ा सा लालवर्ण होकर प्रदीप्त होता है बहुत लोग उस से दीया जलाते हैं। श्वेतवर्ण तेल वायु के स्पर्श से झटपट जलपड़ता है। जलमे निक्षिप्त होकर भी यह प्रज्वलित होजाता है इसलिये वहां के मनुष्य क्रीड़ा करने के लिये समय २ उस तेल को समुद्र मे फेंकते हैं यह तेल जितनी दूर तक फैल आता है उतनी दूर तक जलमय समुद्र अग्निमय होजाता है। उस तेल की खान

से प्रायः तीन कोस की दूरी पर एक आश्चर्य अग्नि-क्षेत्र है उस क्षेत्र के किसी अंश मे अग्नि प्रज्वलित होती है और किसी अंश मे से राशीभूत वाष्प निकलता है। उस क्षेत्र के समीप एक अग्निमय झील भी है। समय २ वह अग्निमय क्षेत्र और यह अग्निमय झील प्रज्वलित होकर समुदाय स्थान को अग्निमय कर देते हैं परन्तु आश्चर्य यह है कि उस अग्नि में हाथ लगाने से हाथ जलता नही। प्राचीन समय में इस अग्निक्षेत्र को देखने के लिये नाना देशों से यात्री लोग आते थे। आजतक भी बहुत आते हैं। पहले कह चुके हैं कि साईबीरिया का बहुत अंश शीतप्रधान है वहां कुछ उद्भिजादि नहीं उत्पन्न होते। केवल दक्षिण और पश्चिम की भूमि उर्वरा है वहां पर घासादि उत्पन्न होते हैं। साईबीरिया में नानाविध वन्यजन्तु हैं कि जिनका लोम बहुत काम मे आता है उन मे से बीवर, मारटन प्रभृति प्रसिद्ध हैं। यहां पर रैन्डियरनामक एक प्रकार का हरिण होता है कि जिस के मुख में लगाम लगाकर वहांकेरहने वाले शकटादि चलाते हैं। इस हरिण को बङ्ग भाषा में बल्गाहरिण बोलते हैं। यहां के कुत्ते भी गो घोड़ा आदि बड़े २ चौपाओं की नाईं भार वहन करते हैं यहां के कुत्तोंका स्वभाव एक बड़ा आश्चर्य सा है। ग्रीष्मऋतु में ये वन मे घुसकर अपना २ आहार खोजलेते हैं परन्तु शीत के

आरम्भ में ही अपने स्वामी के पास आजाते हैं । साईबीरिया के अनेक स्थानों में वन्यगईभ और वन्य घोड़े देखने में आते हैं । बेकल भील के तीर में कस्तूरिकामृग और वन्यसूकर चरते हैं । काकाशस पर्वत के समीप पर्वतीय छाग और बीरान नामक जन्तु होते हैं । यहां की खानों में सोना, चांदी और लोहप्रभृति नानाप्रकार के धातु उत्पन्न होते हैं ।

साईबीरिया में नानाजातीय मनुष्य वास करते हैं । जो लोग यूरोपीय रूस से राजदण्ड के कारण निर्वासित होते हैं वे लोग इस स्थान में भेजे जाते हैं । क्योंकि यहां पर वास करना बड़ा क्लेशकर है । यहां के राजकार्य्य करने के लिये जो लोग यूरोपीय रूस से जाते हैं ३ वर्ष के पीछे उन को बड़ी उच्च पदवी मिलती है । साईबीरिया ३ प्रदेशों में विभक्त है । १म पाश्चात्य २य मध्य। ३य प्राच्य । यहां के रहने वाले बड़े असभ्य हैं । कमस्कटका के रहने वाले लोगों का शरीर नाटा सा और चक्षु भी छोटे से होते हैं । ये लोग सर्वदा एक स्थान से और स्थान में घूमते हैं और कुत्तों से अपने द्रव्यादि सम्भार उठाते हैं । यहां पर साम यिद नामक एक जातीय मनुष्य हैं जिनकी स्त्रियें १३ वा १४ वें वर्ष में सन्तानप्रसव करती हैं और ३० वर्ष के पीछे उन की सन्तति होना बन्द होजाता है।

सामयिद लोग अपनी स्त्रीसे बहुत घृणा से व्यवहा र करते हैं । साईबीरिया में प्रायः क्रिश्चन, मुसल- मान, बौद्ध, और पौत्तलिकप्रभृति समुदाय धर्मा वलम्बी मनुष्य वास करते हैं ।

एशियाई रूस के प्रधान नगर पश्चिम में टोवाल्सक जो १५ ९० ईस्वीमें जार्मक नामक सा इबीरिया के जय करने वाले किसी मनुष्य ने इसको बनवाया । श्रोमस्क और टोमस्क ये दो नगर वा- णिज्यके लिये प्रसिद्ध हैं । बार्नौल नगर ओबी नदी के तीर पर है । ईकाटरीम्बर्ग और नीजनी टाजीलस्क ये दो नगर यूराल नदी के तट पर स्थि त हैं और सोना और प्लाटि नाम धातु के खान हो- ने के कारण प्रसिद्ध हैं । मध्य में ईर्कुटस्क वेकाल झील के समीप है और वाणिज्य के लिये प्रसिद्ध है। कायेखटा नामक नगर में रूसी लोग चीनीलो- गों से व्यापार करते हैं । आमूरनदी के तीरस्थित नार्चिनिस्क नगर में शीशा लोहा और बहुमू- ल्य पत्थरों की खान है । पूर्व में यारूबटस्कनामक नगर लीना नदी के तीर पर है यहां पर लोम और हस्तिदन्त का वाणिज्य होता है और खटस्क समु- द्र के तीर में श्रोखटस्क नगर है ।

जर्जियाप्रदेश जो १८०२ ईस्वी में फारसियों से रूसों के हाथ में आया । काकेशस पर्वत के दक्षि ण में है । यहां के रहनेवाले बड़े सुन्दर हो

ते हैं और ग्रीसदेशीय चर्च के नियम मानते हैं इस का प्रधान नगर टेफ्लीस और एरीवान् और काकु ये से यहां प्रसिद्ध स्थान हैं

एशिया के समीपस्थ प्रधान द्वीपों का वर्णन ॥

जापान

जापान सागर की पूर्वसीमा में कई एक द्वीप हैं जिन्का साधारण नाम जापान है। उनमें से नाईफन, केऊसेऊ,, सिक्कफ और येसो ये प्रधान हैं। सिंघालीन का दक्षिण अंश और लोचू द्वीप जो के ऊसेऊ से ३०० मील दक्षिण पर है ये भी जापान साम्राज्य के आधीन हैं। जापान राज्य उत्तर–दक्षिण में विस्तृत है और इस में वक्रत बडे २ पर्वत हैं कि जिन्में से कई एक ज्वालामुखी भी हैं। जापान की भूमि उर्वरा है इसलिये यहां पर कृषिकार्य वक्रत उत्तम रूप से होता है। यहां पर धान्य, चाह और रूई ये सब शस्य प्रधान रूप से उत्पन्न होते हैं। यहां पर ग्राम्य वा वन्यजीव दीख नहीं पड़ते। यहां वक्रत सुवर्ण उत्पन्न होता है और चांदी, ताम्बा, शीशा, लोहा, गन्धक और पत्थरी आदियों की भी वक्रत खाने हैं। जापान में अच्छे खिलौने और मट्टी के पात्र प्रस्तुत होते हैं जापान का क्षेत्रफल ६५००० वर्गकोश और लोकसंख्या ३०५०००० है। जापानी लोग चीनियों की नाईं देखने में आते हैं। ये लोग बड़े बुद्धिमान्, परिश्रमी हैं। और

सर्वदा विद्या की चर्चा करते रहते हैं । और ये बौद्ध मतावलम्बी हैं । परन्तु इन्में से कई एक मनुष्य नाना विध देव और देवियों की पूजा भी करते हैं । जापानियों की भाषा चीनियों की भाषा से पृथगरूप है उनकी वर्णमाला में ४० अक्षर हैं उन सब अक्षरोंका आकार भी चार प्रकार का है । स्त्री और पुरुष मिले २ प्रकार के अक्षरो का व्यवहार करते हैं ।

बहुत दिन तक जापान में विदेशीय वाणिज्य बन्द रहा । कोई विदेशीय आदमी यहां प्रवेश नहीं कर सकता, और यहां के रहनेवालों में से भी कोई विदेश में नहीं जासकता केवल थोडे से चीनवालो के जहाज और दो डचों के जहाज एक बेर बरस भर में नागासकी में जाकर वाणिज्य करते थे । परन्तु अब यह सब प्रतिबन्ध छूटगया । १८५४ ई॰ में यूनाईटेडस्टेट के लोगों ने यहां वाणिज्य करने की आज्ञापाई और १८५५ में ब्रिटिशवालों ने भी आज्ञा पाई ।

जापान की राजधानी जदो है । जो कि नीफन के दक्षिण पूर्व में है । यह नगर बड़ा विस्तृत है । यहां के राजा का गृह इतना विस्तृत है कि उसी को देख के एक नगर मालूम पड़ता है । जापान के एक और प्रधान नगर का नाम मायाको है जो कि जदो के १३० मील दक्षिण पश्चिम में है । यह नगर भी नाईफन द्वीप के अंतरगत है । मत्समई

येशो द्वीप का प्रधान नगर है । और नांगासकी केऊ सेऊ का प्रधान नगर है ।

जापान के सिवाय एशिया के समीप भारतसमुद्र में, बोर्नियो, सुमात्रा, जावा, मिन्दिनियो, सिलेबस, और लूजनप्रभृति द्वीपश्रेणी है । ओशीनिया के वर्णन मे उनका विशेष वर्णन किया जायेगा ।

यूरोप

यूरोप की उत्तर सीमा उत्तर महासागर, पश्चिम सीमा अटलाण्टिक महासागर, दक्षिणसीमा अजोफसागर, कालासागर, मारमोरा कासमुद्र और भूमध्यस्थ समुद्र और पूर्वसीमा कास्पियन समुद्र, यूरालनदी और यूराल पर्वत है इस का क्षेत्रफल ९३०००० वर्गकोश है । और मनुष्यसंख्या २६४०००००० है ।

यद्यपि यूरोप पृथ्वी के और महादेशों से छोटा है तथापि यूरोप की शक्ति और प्रभुता सब से बढ़ कर है । शिल्पादि में इसकी बहुत उन्नति हुई है । यूरोप में बहुत छोटे २ समुद्र खलीज और खाडियों के होनेसे वाणिज्य के लिये बहुत सुगमता होती है । यूरोप में निम्नलिखित देश हैं ॥

ग्रीस वा यूनान टर्की वा रूम, रूस, स्वीडन नार्वे, डेन्मार्क, हालेण्ड, बेल्जियम, जर्मनी, प्रूशिया, आस्ट्रिया, इटली, स्विट्ज़र्लेण्ड, फ्रान्स, स्पेन, और पोर्तुगाल हैं ॥

यूरोप महादेश के समीपस्थित द्वीपसमूह भी यूरोप के बीच में गिने जाते हैं, जैसा ब्रिटिश द्वीप समूह जि-

स के अन्तर्गत इंग्लेण्ड, स्काट्लेण्ड और आयर्लेण्ड हैं। ऐसे ही सिसली माल्टाप्रभृतिद्वीपों को भी यूरोप के बीच ही गिनते हैं ।

अब क्रम से यहां के समुद्रों का वर्णन कियाजाताहै

प्रधान समुद्रों का वर्णन

श्वेत समुद्र, रूसके उत्तर में

उत्तर समुद्र वा जर्मन साग र, इंग्लेण्ड और यूरोप महा देश के बीच ।

बाल्टिक समुद्र, डेन्मार्क, जर्मनी, रूस और स्वीडन के बीच, यह बड़ा गंभीर है और यहां अधिक मीठा जल गिरने से इस का जल महासागर की नाईं लोना नहीं । शीतकाल में यह बहुत जम जाताहै।

आइरिश समुद्र वा सेन्ट-जार्ज का मुहाना, इंग्लेण्ड और आयर्लेण्ड के बीचमें है ।

इंग्लिश चैनल्, इंग्लेण्ड और फ्रान्स के बीच मेहै ।

भूमध्यस्थमहासागर, जो यूरोप को आफ्रिका से पृथक् करता है। यह पूर्व पश्चिम में २२५० मील लम्बा है ।

स्थान २ में इस की गहराई बहुत है महासमुद्र से इस का जल लूनाहै और नीचे लिखे हुए समुद्र इसके अंश हैं ।

टारहेनियन समुद्र इट-ली के पश्चिम में ।

अयोनियनसमुद्र,

इटली और ग्रीस के बीच आड्रियाटकसमुद्र वा वी नेष की खाड़ी इटली और टर्की के बीच,

ईजियन्समुद्र ग्रीस और टर्की के बीच ।

मारमोराका समुद्र,

यूरोप ग्रोर ग्रे शियाई टर्की के वीच काला समुद्र ग्रोर ग्रजोफ समुद्र रूस ग्रोर टर्की के घ वीच ।
इन के सिवाय यूरोप में ग्रोर भी छोटे २ समुद्र हैं ।

प्रधान खाडी ग्रोर खलीजों का वर्णन

उत्तर में वोथीनि या कीखाड़ी,
फिनलेगड ग्रोर रीगा की खाड़ि यें बालटिक समुद्र के पूर्व मे हैं ।
काटीगट ग्रोर स्केगारक ये दो खाड़िये बालटिक ग्रोर उत्तर समुद्र के बीच में हैं ।
विस्के की खाडी फ्रान्स के पश्चिम मे हैं ।
वा इन की खाडी, दक्षिण मे हैं ।
जिनो ग्रा की खाडी इटली के उत्तर पश्चिम मे है ।
नेपल्स की खलीज इटली के पश्चिम मे है ।
टारन्टो की खाडी इटली के दक्षिण में ।
कारिन्थ की खाडी यूनान के पश्चिम मे ।
सिलोनी की खाडी टर्की के दक्षिण में

प्रधान २ मुहानो का वर्णन

सोन्ड, स्वीडन ग्रोर ज़ीलेगड के वीच ग्रेट वेल्ल, ज़ीलेगड ग्रोर फूनन के वीच ।
लिटल वेल्ल बालटिक समुद्र के पश्चिम में ।
डोवर — उत्तर समुद्र ग्रोर इंगलिश चैनल के वीच
जिब्राल्टर — भूमध्यस्थ ग्रोर ग्रटलागिडक महा·

सागर के बीच ।
बोनीफेशियो कार्सिका और सार्डीनिया के बीच में
सीना, इटली और सिसली के बीच ।
ओट्रेन्टो ऽ आड्रियाटिक समुद्र का प्रवेशमार्ग डार्डिनेलिस, भूमध्यस्थ और मार्मोरा के सागर के बीच।
कान्स्टैन्टीनोपल वा बोस्फोरस, कालेसागर का प्रवेश मार्ग
काफ्फा वा येनीकेल काला और अजोफसागर के बीच

यदि फ्रान्स के दक्षिण-पश्चिम से श्वेतसमुद्र तक और कास्पियन सागर के उत्तर तक सूधी रेखा खेंची जावे तो उन रेखाओं के बीच यूरोप का एक तृतीयांश आजायेगा जिस में केवल प्रायद्वीप होंगे, यथा :-

स्केन्डीनेविया जिसके अन्तर्गत लैपलैण्ड भी है जिस के आधुनिक नाम नार्वे और स्वीडन हैं ॥
इस की एक दिशा में श्वेत समुद्र
अन्य दिशा में बालटिक और उत्तरमहासागर है॥
डेन्मार्क - जिस में जटलेण्ड प्रायद्वीप है, बालटिक और उत्तर सागर के बीच ।
कार्टैन्टीन - फ्रान्स के उत्तर पश्चिम में, ब्रिटेनी - फ्रान्स के पश्चिम में ।
स्पेन और पोर्तगाल जिस को आईबेरियन प्रायद्वीप कहते हैं । भूमध्य और अटलाण्टिक समुद्र के बीच इटली - भूमध्य और आड्रियाटिक समुद्र के बीच
मोरिया - ग्रीस का दक्षिण-

भाग क्रिमिया— रूस का दक्षिण भाग
यूरोप का है वा श्रंश द्वीप हैं ।
जिन का वर्णन नीचे किया जाता है ।

नोवाजेमूला श्रोर स्पिट्ज़वर्गन् द्वीप श्रोर लाफोडन द्वीपश्रेणी उत्तरमहासागर में ।
श्राइसलेण्ड द्वीप, फेरो, सेटलेण्ड, पश्चिमद्वीपसमूह श्रोर ब्रिटिशद्वीप समूह श्रटलाण्टिक महासागर में
जीलेण्ड श्रोर फूनन द्वीप काटिगट की खाड़ी मे ॥
श्रोलेण्ड, गथलेण्ड श्राजल, डेगो श्रोर श्रालेण्ड द्वीपसमूह बाल्टिक सागर मे ॥

बेली श्रारिक द्वीपसमूह जिन्मे से ईविका, माजरका, श्रोर मीनका प्रधान हैं ।
कार्सिका, सार्डीनिया सिसिली, श्रायोनियन द्वीपसमूह, क्रीटी, नेग्रोपान्ट साइक्लेडिस श्रोर कान्डिया ये सब द्वीप भूमध्यस्थ महासागर में ।

प्राय द्वीपों को मिलाके राइन नदी से निस्टर नदी तक यदि एक सूधी रेखा खींची जाय तो उस से यूरोप दक्षिण – पश्चिमीय, पर्वतीय प्रदेश श्रोर उत्तर-पूर्वीय समतल क्षेत्र में विभक्त होता हैं ।
उन पर्वतों में से पल्पस पर्वतश्रेणी प्रधान है ।

पल्पस पर्वतश्रेणी इटली फ्रान्स स्विट्ज़र्लेण्ड श्रोर जर्मनी के बीच । इस की सबसे ऊंची चोटी मान्ट ब्लेन्क है जो स्विटजर्लेण्ड के दक्षिण मे है श्रोर १५७४४

फ़ुट ऊंचा है और यूरोप
में इस के समान ऊंचा प
र्वत और कोई नहीं ॥
सेविनीज़, ज्यूरा, और व
स्जेस फ्रान्स के पूर्व में।
ब्लेकफारेस्ट, जर्मन ज्
रा, एर्ज़, सडेटिक पर्वत
श्रेणी जर्मनी में कार्पे-
थियन् आस्ट्रिया के उत्त
र-पूर्व में ।
कीलेराड-स्वीडन और
नार्वे के मध्य में ।
डाफ्राईन् वा डोवर फी
ल्ड नार्वे में ॥
पिरनीज़ फ्रान्स और
स्पेन के बीच में ऐपी-
नाईन-इटली के उत्तर
से दक्षिण तक विस्तृत-
है । बल्कान और पि-
न्डस तुर्किस्तान में
काकाशस पर्वत
काले और कास्पियन
समुद्र के बीच यूराल प
र्वत यूरोप की पूर्व सीमा में
ग्रेम्पियन् पर्वत स्काटले-
ण्ड में
पिनाईन, केम्बियन् और
ऊमेलिया इंगलैण्ड में
हेक्ला एक ज्वाला मुखी
पर्वत आइसलैण्ड में
एटना ज्वालामुखी पर्वत
सिसली में ।
विसूवियस ज्वालामुखी
पर्वत इटली के अन्तर्ग
त नेपल्स प्रदेश में ॥

अन्तरीपों के वर्णन में

उत्तर अन्तरीप नार्वे के
उत्तर ।
नेज-नार्वे के दक्षिण में ।
स्काउ-डेन्मार्क का उत्तर ।
डान्कन वे हेड, स्काटलैण्ड
के उत्तर पूर्व में
राथ-स्काटलैण्ड के उत्तर
पश्चिम में क्लीयर- आयर्लै
ण्ड के दक्षिण में
लैण्ड्स एण्ड और लीज़ार्ड
इंगलैण्ड के दक्षिण पश्चि
म में. सेन्ट मासस के

उत्तर पश्चिम में ग्रार्टिगल	में
ग्रोर फिनिस्टर स्पेनके उत्त	पासारो सिसलीके दक्षि-
र-पश्चिम में सेन्टविन्सेन्ट	गा में
पोर्तुगाल के दक्षिण पश्चि	स्पार्टीवेन्टो इटली के द-
म में	क्षिण पश्चिम में
टेफालगार स्पेन के दक्षिण	माटापान मोरिया के द-
	क्षिण में

यूरोप के समुदाय प्रदेशों में ही नदी बहती है ग्रे शिया वा ग्राफ्रिका में जैसी मरुभूमि है यूरोप में ऐसी नहीं ।

यूराल नदी — रूस के ग्रन्तरगत यूराल पर्वत से निकल कर रूस के मध्य से होकर कास्पियन् सागर में गिरती है ।

वल्गानदी — रूस के ग्रन्तरगत वल्डाई पर्वत से निकल कर कास्पियन् झील मे गिरती है डान नदी — टुलादेश से निकल कर रूस के मध्य होकर ग्रजोफ सागर में गिरती है ।

नीपर — नदी — इस्मलेनस्कनगर से उत्पन्न होकर रूस के बीच से बह कर काले सागर मे गिरती है डान्यूबनदी — जर्मन के ग्रन्तरगत बेडन प्रदेश से उत्पन्न होकर जर्मनी, ग्रास्ट्रिया ग्रोर टर्की मे होकर काले सागर में गिरती है पो नदी — ऐल्प्स पर्वत से निकल कर इटली के बीच से बेनस की खाड़ी में गिरती है

टाईबर नदी—ऐपिनाईन पर्वत से निकलकर इट-
ली के मध्य से भूमध्यस्थसागर में गिरती है ।
रोन नदी— ऐल्पस पर्वत से निकल कर फ्रान्स से
हो कर लीयन की खाड़ी में गिरती है । ईब्रो नदी-
स्पेन के पर्वत से निकल कर भूमध्यस्थसागर में
गिरती है ।

टेगस और डाउरो नदी— स्पेनदेशीय पर्वत से नि
कल कर स्पेन और पोर्त्तुगाल के बीच से अ टला-
ण्टिक महासागर मे गिरती है ।

लायारनदी— सिविनसपर्वत से निकलकर फ्रा-
न्स के बीच होकर विस्के सागर में गिरती है ।

सीननदी — फ्रान्स के अन्तर्गत बर्गन्डीप्रदेशीय
पर्वतों से निकलकर इंग्लिश मुहाना में गिरती है।

राईन नदी— स्विटजर्लैण्ड देशीय पर्वत से निकल
स्विटजर्लैण्ड जर्मनी और होलेण्ड मे होकर जर्मन
समुद्र में गिरती है ।

एल्बा नदी जर्मनी के अन्तर्गत बोहीमिया प्रदेश
से निकलकर प्रूशिया के बीच होकर जर्मन समु
द्र में गिरती है ।

ओडर नदी— जर्मनीसे निकलके प्रूशिया मे हो
कर वालटिक समुद्र में गिरती है ।

टेमस नदी— ग्लस्टर प्रदेशीय पर्वत से उत्पन्न
होकर इंग्लेण्ड के बीच से जर्मन सागर में गिर
ती है ।

टे नदी—स्काट्लैण्ड के बीच से बह कर जर्मन समुद्र मे गिरती है ।

स्याना-नदी— आयर्लैण्ड के अन्तर्गत एलनझील से निकल कर अटलाण्टिक महासागर में गिरती है ।

यूरोपीय सब समुदाय नदियों में से बाल्गा सबसे बड़ी है ।

प्रधान झीलों का वर्णन

वेनर और वेटर—स्वीडन में ।

लडोगा— रूस में ।

ओनीगा, साएमा, पजाना और पेईपस—ये सब रूस में जनेवा—स्विट्ज़र्लैण्ड में ।

कान्स्टैन्स— स्विटज़र्लैण्ड और जर्मनी के मध्यस्थित

ज़ूरीस,लूज़र्न, और न्यूसाटल स्विटज़र्लैण्ड में ।

मेगीयर,कोमो और गार्डी इटली में ।

बलाटन, आस्ट्रिया में ।

यूरोप के अधिक अंश उत्तर सम कोटिबन्ध में है। केवल अति अल्प अंश उत्तर हिम कोटिबन्ध की सीमा के बीच है । इसलिये पृथिवीस्थित और महादेशों की नाईं यहां बहुत शीत वा गरमी नहीं। यूरोप के पाश्चात्यप्रदेश उसके प्राच्यदेशों से अधिक तर उष्ण है ।

क्योंकि यहां दक्षिण—पश्चिमी वायु अटलाण्टिक

महासागर में होकर आती है ।

साधरणतः यूरोप को तीन कोटिबन्ध में विभक्त किया जाता है। प्रथम दक्षिण कोटिबन्ध । द्वितीय मध्य कोटिबन्ध । तृतीय उत्तर कोटिबन्ध ।

दक्षिण कोटिबन्ध मे स्पेन, पोर्तुगाल, फ्रांस का दक्षिण अंश, इटली, तुर्किस्तान दक्षिण अंश और ग्रीस है । इन सब देशो में शीतऋतु थोडी और ग्रीष्म ऋतु अधिक होती है ।

मध्यकोटि बन्ध में फ्रान्स के मध्य और उत्तर अंश, ग्रेट ब्रिटन, स्वीडन और नार्वे का दक्षिण अंश, जर्मनी, हंग्री, और रूस का दक्षिण अंश हैं ।

इन देशो मे चार ऋतु स्पष्टरूप से मालूम होती हैं ।

उत्तर कोटिबन्ध में नार्वे और स्वीडन का उत्तर अंश, लाप्लेण्ड, फिनलैण्ड और रूस का उत्तर अंश है । यहां ग्रीष्म ऋतु थोडी और शीत ऋतु अधिक और क्लेशकर होती है । यहां कई महीने तक नदी, झील और समुद्रप्रभृति जलाशय बरफ से आच्छन्न रहते हैं ।

यूरोप के दक्षिण देशो में द्राक्षा, कार्पास, सन्तरा, अंजीर निम्बू, इक्षु, चावल, तमाकू, गेहू और भुट्टा, आदि उत्पन्न होते हैं ।

और वन में ओकवृक्ष, देवदारु और बदाम के वृक्ष उत्पन्न होते हैं ।

मध्यदेशों में होता, और नानाप्रकार के शस्य, सेऊ, आडू, आलूबोखारे इत्यादि फल उत्पन्न होते हैं और वनोंमें ओक, देवदारु प्रभृति वृक्ष उत्पन्न होते हैं।

उत्तर प्रदेशों में उद्भिज बहुत ही थोड़े उत्पन्न होते हैं।

नार्वे और स्वीडन के उत्तर गेहूं नहीं उत्पन्न होता। यूरोपके खानिजद्रव्यों में से लोहा, शीशा, तांबा और टीन प्रधान हैं। सोना और चांदी बहुत अल्पपरिमाण में मिलते हैं।

बेलजियम और ब्रिटनमें पत्थरी कोले की खानि बहुत हैं।

परन्तु फ्रान्स, प्रूशिया, आष्ट्रिया, और रूसमें भी पत्थरी कोले मिलते हैं।

घोड़ा, गौ, भेड़, कुत्ता, और रेण्डियर प्रभृति व्यवहारिक पशु यूरोप में बहुत दीखपड़ते हैं पक्षियों में से ईगल, गीध, चील बाज और बुलबुल ये प्रधानहैं।

टर्की को छोड़कर यूरोप के समुदाय देशों में क्रिश्चन धर्म मानते हैं। केवल टर्की में ही मुसलमान रहते हैं।

समुदाय यूरोप की शासनप्रणाली तीन प्रकारकी है। यथा रूस, आष्ट्रिया और प्रूशिया में नियमतन्त्र। ब्रिटन इटली, स्पेन पोर्तगाल, बेलजियम, हालैण्ड, डेन्मार्क, स्वीडन, नार्वे और ग्रीस में प्रजातन्त्र। स्विटजर्लैण्ड आदि स्थानों में साधारणतन्त्र।

अब यूरोप के देशों की स्थिति स्थान और जिन २ देशों का जो २ प्रधान नगर है उसका वर्णन किया जाता हैं ॥

देश	स्थितिस्थान	राजधानी
इंग्लेण्ड	यूरोप के पश्चिम स्काटलैण्डकेदक्षिण	लण्डन
स्काटलेण्ड	इंग्लेण्ड के उत्तर	एडिन्बर्ग
आयर्लैण्ड	इंग्लेण्डकेपश्चिम	डब्लिन
फ्रान्स	इंग्लेण्डकेदक्षिण	पेरिस
स्पेन	फ्रान्स के दक्षिण-पश्चिम	मड्रिड
पोर्तुगाल	स्पेन के पश्चिम	लिस्बन
स्विट्जर्लैण्ड	फ्रान्स के पूर्व	बर्न
देश	स्थितिस्थान	राजधानी
इटली	स्विट्जर्लैण्ड के दक्षिण	रोम और फ्लोरेन्स
बेल्जियम	फ्रान्स के उत्तर पश्चिम	ब्रुसल्स
हालैण्ड	बेल्जियम् के उत्तर	एम्स्टर्डम्
जर्मनी	फ्रान्स और बेल्जियम् के पूर्व	फ्रेन्कफोर्ट
डेन्मार्क	जर्मनी के उत्तर	कोपनहेगन
नार्वे	यूरोप के उत्तर पश्चिम	क्रिश्चियानिया

स्वीडन	नार्वे के पूर्व	स्टाकहोम
प्रूशिया	बाल्टिक सागर के दक्षिण	बर्लिन
रूस	यूरोप के पूर्व	सेन्ट पीटर्सबर्ग
आस्ट्रिया	प्रूशिया के दक्षिण	वायना
देश	स्थितिस्थान	राजधानी
टर्की	रूस और आस्ट्रिया के दक्षिण	नोपल
ग्रीस	टर्की के दक्षिण	एथेन्स

यह पहले कह आये हैं कि यूरोप और सब महादेशों से छोटा है परन्तु इसके अधिवासियों की संख्या बड़ी है । यूरोप के मनुष्य धाराप्रवाही परिश्रम, अध्यवसाय नैपुण्य और आचारों के द्वारा और सब देशों के मनुष्यों से सभ्य, विद्यावान् और समृद्ध हुए हैं । अब समस्त पृथिवी में इन के बराबर कोई नहीं । जो पांच राजबल समुदाय पृथिवी में श्रेष्ठ गिने जाते हैं । वे यूरोप के ही हैं । जैसे ग्रेट ब्रिटन, जर्मन राज्य, रूस फ्रान्स और आस्ट्रिया ॥

अब संक्षेप से यूरोप के देशों का वर्णन किया जाता है

ब्रिटन

ब्रिटन द्वीप तीन प्रधान भागों में विभक्त है—इंग्लेण्ड, स्काट्लैण्ड और वेल्स। परन्तु अब इंग्लेण्ड और वेल्स इन दोनों को ही इंग्लेण्ड कहते हैं।

इंग्लेण्ड

इसके उत्तर में स्काट्लेण्ड, पूर्व में जर्मन सागर, दक्षिण में इंग्लिश मुहाना और पश्चिम में अटलांटिक महासागर, सेन्टजार्ज का मुहाना और आइरिशसागर हैं। इंग्लेण्ड के पूर्व उपकूल निम्न भूत हैं पश्चिम प्रस्तरमय। और बीच २ में यह सागरशाखा होने से आरा की नाई शोभायमान् है।

इंग्लेण्ड के अग्निकोण में बहुत दलदल क्षेत्र है। इसकी मध्यस्थल की भूमि भङ्गिमती इस के पश्चिम और उत्तरभाग में कई एक अनुच्च पर्वत भी हैं। इस देश के समुदाय समतलक्षेत्र तृण और शस्यों से पूर्ण हैं॥

इंग्लेण्ड पृथिवी के जिस स्थान में अवस्थित है उस के अनुसार यहां बहुत शीतातप का आधिक्य होना चाहिये परन्तु चारों ओर जल से वेष्टित होने से उतना नहीं होता।

भारतवर्ष की अपेक्षा इंग्लेण्ड में शीत का बहुत प्रादुर्भाव है। यहां की वायु सजल, अनच्छ और ग्रीष्म में उष्ण और तृण में शीतल होती है। स्वास्थ्य के लिये यहां की वायु अतिशय उपयोगी है और

उस का यह गुण है कि वह मनुष्य का आलस्य हर क रदेती है । इंग्लैण्ड के पश्चिम भाग में सर्वदा दृष्टि होती रहती है ।

पूर्व भाग में बहुत दृष्टि नहीं होती ।

इंग्लैण्ड की भूमि समतल और उर्वरा है । यहां विविध शस्य उत्पन्न हो सकते हैं । परन्तु गो प्रभृति तृणभोजी पशुओं के चरने के लिये बहुत भूमि अकृष्ट ही पड़ी है ।

प्राचीन काल में इंग्लैण्ड में बहुत जंगल थे । परन्तु अब कृषि की उन्नति होने से बहुत जंगल साफ होगये हैं ।

यहां के जंगलों में ओक, भूर्ज, एलम्, आस, और देवदारु ये वृक्ष प्रधानरूप से उत्पन्न होते हैं । खेतियों में गेहूं, जव और ओट ये प्रचुर हैं और फलों में बेर, सेव, चेरी, अखरोट और पियारा ये अनेक २ उत्पन्न होते हैं ।

यहां के अरण्यजन्तुओं में हरिण और अरण्य दृष प्रसिद्ध हैं । ग्राम्यजन्तुओं में भेड़, घोड़ा और गो प्रधान हैं ।

इंग्लैण्ड में पत्थरी कोला बहुत परिमाण से मिलता है ।

यहां ताम्बा, शीसा और दस्ता भी बहुत परिमाण से उत्पन्न होते हैं । यहां के वाणिज्य द्रव्यों में रेशम, पशम, कार्पास के वस्त्र, लोह और इस्पात से बने हुए

नाना प्रकार के अस्त्र और यन्त्र, पितल और ताम्रम
य पात्र, कांच और मट्टी के बरतन, टोपी, पुस्तक ब-
नी, साबुन और चमड़ा प्रचुर परिमाण से प्रस्तुत हो
कर प्रायः पृथिवी के समस्त देशों में प्रेरित होते हैं।
इन के सिवाय यहां लवणाक्त शुष्क मत्स्य और मां
स, आलू, मक्खन और पनीर प्रभृति उत्पन्न होते हैं
इंग्लैण्ड के रहने वाले मनुष्यों को अंग्रेज कहते हैं।
ये लोग बलवान्, साहसी, तेजस्वी, परिश्रमी अध्य
वसाय विशिष्ट, बुद्धिमान् चतुर और युद्ध में निपुण
होते हैं। समुद्रयुद्ध में इन के सदृश और कोई जा
ति पृथ्वीभर में नहीं। ये लोग स्वाधीनता की सर्व
था रक्षा करते हैं और सभ्यता में पूरे हैं। ये लोग
हठात् किसी काम में हाथ नहीं लगाते परन्तु ए
क बेर जिस में हाथ लगाते हैं उसे सिद्ध करके ही
छोड़ते हैं ॥ ये सर्वदा परिष्कृत रहते हैं और इन
का वासस्थान बहुत रमणीय होता है। ये लोग
वाक्य में जैसी धर्म की बड़ाई करते हैं उन के कार्य्य
में वैसी धर्मभीरुता नहीं दीख पड़ती। इंग्लैण्डी
य शिल्पकार्य्य अतिशय विस्तृत और और आश्चर्य-
कर है। अंग्रेज लोग शिल्पकार्य्य में जैसे और
सब जातियों से श्रेष्ठ हैं वाणिज्य में उस से भी अ
धिक हैं। पृथिवी मे ऐसा स्थान नहीं है जहां अं
ग्रेज व्यापारी होकर नहीं जाते। वाणिज्य के निर
न्तर अनुशीलन करके अंग्रेजलोग बहुत समृद्ध

हुए है । देखो वाणिज्य करने के लिये प्रवेश कर अंग्रेज लोग भारतवर्ष प्रभृति बड़े २ देशों पर कैसी प्रभुता विस्तार करते हैं । इंग्लेण्ड में विद्या की चर्चा बहुत है । यहां साधारण मनुष्यों की शिक्षा के लिये रविवारिकपाठशाला प्रात्यहिक पाठशाला प्रभृति छोटे २ विद्यालय स्थान २ में स्थापित हैं

बड़े और मध्यम अवस्था के लोगों की शिक्षा के लिये प्रायः प्रतिनगर में एक २ अच्छा विद्यालय स्थापित हुआ है । इंग्लेण्ड में आक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, लंडन, और डर्हम ये चार विश्वविद्यालय हैं । उन में से प्रथम दो बहुत प्रसिद्ध हैं । वहां पाठ कर के अंग्रेज लोग साहित्य, पदार्थ और गणितादि विद्या में पारदर्शी होते हैं ॥

इंग्लेण्ड की भाषा को अंग्रेजीभाषा कहते हैं । यावतीयब्रिटनराज्य में इस भाषा से पुस्तकादि रचित होते हैं । इंग्लेण्ड की शासनप्रणाली बहुत अच्छी है ॥

यहां के राजपद पुरुषानुक्रमिक अर्थात् एक राजा की मृत्यु के पीछे उसका उत्तराधिकारी स्त्री वा पुरुष हो सिंहासन अधिकार करते हैं जैसा अब एक स्त्री राजपद में अभिषिक्त है, जिसका नाम महाराणी विक्टोरिया हैं । महाराणी और उसके मन्त्रिगण सर्वदा कानून के अनुसार काम करते हैं ।

पार्लीमेण्टनामक सभा में ये सब कानून प्रस्तुत हो-

ते हैं । पार्लीमेण्टसभा के दो अंश हैं एक को हौस-आफ-लार्ड्स् और दूसरे को हौस-आफ-कामान्स कहते हैं ।

हौस-आफ-लार्ड्स् में इंग्लैण्ड के समुदाय २ ईस और प्रधान २ धर्म्मयाजक और स्काट्लैण्ड और २ आयर्लेण्ड से भी बडे २ धर्म्मयाजक और रईस लोग आते हैं । इस सभा में ४७० सभासद् हैं ।

हौस-आफ-कामान्स में ब्रिटन राज्य के अन्तर्गत प्रत्येकनगर वा ग्रामवासी प्रजाओं का एक २ प्रतिनिधि भेजा जाता है ।

इस सभा में ६५८ सभासद् हैं ।

दोनों सभाओं के बीच हौस-आफ-कामान्स सभा की शक्ति अधिक है । इस की आज्ञा के बिना गवर्न्मेण्ट किसी प्रकारके नूतन करादि का स्थापन नहीं कर सकती । जब राज्य का साधारण व्यय आवश्यक होता है तब उस के मन्जूर कराने के लिये इस सभा की आज्ञा लेनी पड़ती है ।

पार्लीमेण्ट सभा में प्रथम कानूनों की पाण्डुलिपि बान्धकर महाराणी के समीप भेजी जाती है । उस पर जब महाराणी की सम्मति हो जाती है तब वह कानून बनजाता है । किसी २ विषय में महाराणी की अखण्ड क्षमता है अर्थात् उन कार्य्यों में महाराणी को पार्लीमेण्ट की सम्मति नहीं लेनी पड़ती । इस विशेष क्षमता को रायलप्रिरोगेटिव कहते हैं ।

अब क्रम से इंगलेण्ड के खलीज आदि का वर्णन किया जाता है ।

प्रधान प्रवेशपथ और खाड़ियों का वर्णन ॥

पूर्व उपकूल में– मौथ– आफ़टीज़, मौथ– आफ़– हम्बर, वास और मौथ– आफ़–टेमस हैं ।

नार्फोक उपकूल में यार्मौथरोडसनामक स्थान है जिस मे जहाज बहुत निरापद से रक्षित होते हैं ।

दक्षिण उपकूल में सौथम्प्टनवाटर, वेमौथ वा पोर्टलेण्ड की खाड़ी, स्पेथे, लैमौथ सौण्ड, हलमौथ हर्टर और मौन्टस वे हैं । कैन्ट और फ्रान्स के बीच डोवर मुहाना है जो २१ मील विस्तृत है । सीथेड और सोलेण्ट नामक दो मुहाने हैं जिस्कापर और वाईट द्वीप के बीच है ।

पश्चिम उपकूल में वाईट फोर्ट की खाड़ी ब्रिस्टल का मुहाना, स्वान्सी की खाड़ी, के अरमार्थन की खाड़ी मिलफोर्ड– हेवन, सेन्टवाईट की खाड़ी, कार्डिगान की खाड़ी मौथ– आफ– डी, मौथ– आफ– मर्सी, मौथ– आफ–रिवल, मोरकेम्बी की खाड़ी और हेलापफार्थ हैं । मीनाई का मुहाना के अरनार्वन और ऐङ्गुलसी के बीच में है

प्रधान २ अन्तरीपों का वर्णन पूर्व उपकूल में– फ्लम्बरो– हेड और इस्पर्न– हेड येयार्क के पूर्व में हैं नेज अन्तरीप, ईसेक्स में हैं । नार्थ–फोर्लेण्ड केन्ट में दक्षिण उपकूल में–सौथ–फोर्लेण्ड और डन्जी

मेस कैन्ट में । बीचीहेड ससेक्समें । नीडुलेस वाईट द्वीप में पोर्टलेगड–पांइन्ट डार्सेट में स्टार्ट–पोईंट डेवन में । लीज़ार्ड और लैगड्स् ऐगड कार्न वाल में ।

पश्चिम उपकूल में–हार्टलैगड–पांइन्ट डेवनमें। वार्नस् हेड सैलमर्गेन में । सेन्ट डेविड सेडपेम्ब्राकमें ग्रेट ओर्मीज़ हेड डेन्बाई मे । सेन्ट– बीजहेड कमलैगड में ।

प्रधान २ द्वीपों का वर्णन

उत्तर मे—होली आईलैगड वार्विक के समीप पहले यहां प्रधान धर्मालय का स्थान था । फार्नी द्वीप और कोकेट द्वीप होली आईलैगड के दक्षिण में ।

पूर्व मे–सेपी द्वीप टेमस नदी के मुहाना मे । थेनेट द्वीप कैन्ट के समीप अब यह द्वीप भूमि के साथ मिल गया है ।

दक्षिण में–वाईट द्वीप हे मिस्फायर के समीप हे यह स्थान सुन्दरता के लिये बहुत प्रसिद्ध हे न्यूपोर्ट इसका प्रधान नगर है और उसके उत्तरतीर में ओस–वर्ननामक राजप्रासद है जिस में महाराणी सदा रहती हैं सिली द्वीप कार्न वाल के समीप है। चैनल द्वीपसमूह जिस के अन्तर्गत जर्सी, गरेन्सी, अलर्वी और सार्क द्वीप हैं केवल ये ही द्वीपसमूह नार्मन अधिकार का अविशेष है । सेन्ट–हेली-

यार्क और सेन्ट पीयर ये दो इस के प्रधान नगर हैं । यहां की वायु स्वास्थ्य कर है और यहां बहुत कर नहीं देने पड़ते इसलिये बहुत आदमी यहां आके रहते हैं । पश्चिम में- लंडी द्वीप २ ब्रिस- स्टल के मुहाने में । पेंज़ाल्सी और होली हेड कार्नवरसायर के समीप । बेल्नी द्वीप लेन्कशायर के समीप। मैनद्वीप आईरिशसमुद्र में । इस में केसल टौन, पील, डगलस और रामसे ये नगर हैं । यहां सीस शीशे की बहुत खानें हैं ।

प्रधान २ पर्वतों का वर्णन

उत्तर में- पीनाईन पर्वतश्रेणी चेवीयट पहाड़ों से डर्वीस्थित पिक तक विस्तृत है । इस के अन्तर्गत ह्वार्नफेल, पारन्कार्ईड इंगलबर्ग और टेनीगेन्ट ये पहाड़ हैं ॥

कम्ब्रियन पर्वत श्रेणी जिस में स्केफिल, स्कीडा और हैलीवेलेन ।

वेल्स के मध्य में- प्लीनलीमन पर्वत है । वेल्स उत्तर में- केडार इद्रिस, अरेन फोडी, ऐरानीग और स्नोडन हैं । ब्लेक पर्वत श्रेणी वेल्स के दक्षिण में हैं । इंग्लेण्ड के दक्षिण में डीवोनियन पर्वत श्रेणी है जो समर्सेटसे डेवन होकर कार्नवाल तक विस्तृत है ।

इन के सिवाय उर्सेट हिल्स सौथ डौन्स नार्थ डौन्स प्रभृति छोटे २ पहाड़ इंग्लेण्ड में बहुत हैं ।

प्रधान समतल क्षेत्रों का वर्णन

सेन्टरल प्लेन वा मध्यसमतल क्षेत्र इंग्लेण्ड के मध्य मेंहै । वेलआफयार प्लेन पिनाईन और वेल्स के पर्वतों के बीच मेंहै ।

यार्क का समतल क्षेत्र—पिनाईन और वोल्टस् के बीच में है । ईस्टर्न समतलक्षेत्र चिल्टर्न पहाड़ के पूर्व में । वेल्ट उत्तर और दक्षिण डौन्स के बीच । सेलीसवरी वेल्टशायर में । डार्थमूअर डेवन में ये दो उच्च समतल क्षेत्र हैं ।

प्रधान २ झीलों का वर्णन

डर्वेण्टवाटर वा केस्वीकील, विंडरमियर और वूलिस वाटर काम्वीरियन् पर्वतों में । ह्वीटिल सीमियर हंटिंगडनशायर में यह अब प्रायः सूक गया है । बालाझील उत्तर वेल्स में ।

इंग्लेण्ड की झीलों में कम्बीरियन् पर्वतस्थित झीलें बहुत रमणीय हैं । और वीण्डरमियर सब झीलों में से बड़ी है ।

प्रधान २ नदियों का वर्णन

पूर्व में—टाईन्, वेअर और टीज़ये नदियें पूर्व दिशा में बहती हुई जर्मन सागर में जा गिरती हैं । औसी यह अपनी सहायक डार्विण्ट, स्वेल, यूरी, नीड प्रभृति नदियों के सहित अग्निकोण में बहके हम्बरमौथ में गिरती है । ट्रेन्ट यह अपनी सहायक सोर, डव, और डार्विण्ट नदियों के साथ ईशान

कोण में बह कर हम्बरमौथ में गिरती हैं ॥

वीथम अग्निकोण की ओर बहती है । वेलैण्ड, नेन और ग्रेट ओस ये ईशान कोण में बह के वास में गिरती हैं । यार, स्टोर, आरवेल ये पूर्व दिशा में बह कर जर्मनसागर में गिरती हैं ।

टेम्स, जिस में दक्षिण की ओर से मोल, वे। और केनेट नदियां और उत्तर की ओर से चार्वेल, टेम कोलन और ली नदी मिलती हैं, पूर्व दिशा में बह कर जर्मन समुद्र में गिरती हैं । मेडवे ईशानकोण में बह कर टेमस के मुख में गिरती है ॥

दक्षिण में— ओसी, इचिन टेस्ट, आवन, स्टोर, इक्सी, और टामर ये नदियें दक्षिण दिशा में बह कर इंग्लिश समुद्र में गिरती हैं । पश्चिम में— टा और पेरेट उत्तर की ओर बहकर ब्रिस्टल के मुहाने में गिरती हैं ।

लोवर— आवन पश्चिम की ओर बह कर ब्रिस्टल के मुहाने में गिरती है ॥

सेवरन, वी और आस्कथ नदियें दक्षिण की ओर बह कर ब्रिस्टल के मुहाने में गिरती हैं । डी और लेवर उत्तर की ओर बह कर आइरिशसमुद्र में गिरती हैं । मर्सी, रीवल और लून ये नदियें पश्चिम की ओर बह कर आइरिशसमुद्र में गिरती हैं ।

ईडन यह उत्तर की ओर बहकर सेलफार्थ में गिरती है ।

समुदाय इंग्लण्डदेश ४० प्रदेशों का कौण्टी में और वेल्स १२ प्रदेशों में विभक्त हैं । उन के नाम नीचे क्रमशः लिखे जाते हैं ।

उत्तर पूर्व स्थित प्रदेश ॥

प्रदेश	प्रसिद्ध २ नगर
नार्थम्बरलैण्ड	न्यूकैसल, नार्थशील्ड, टाईनमौथ मार्पेथ, आलनवीक और वार्विक

प्रदेश	प्रसिद्ध २ नगर
डर्हम	डर्हम, सण्डर्लैण्ड सौथशील्ड, हार्टलपुल, स्टाकटन और डार्लिंगटन

इन प्रदेशों में शिल्प और कृषि की चर्चा बहुत है । नार्थम्बरलैण्ड में अब तक भी एक प्राचीन रोमीय दीवार का खण्ड मिलता है वार्विक नगर ट्वीड नदी के किनारे पर । पहले यह एक स्वतन्त्र नगर था अब यह नार्थम्बरलैण्ड के साथ मिलगया है । इस्के १२ मील अग्निकोण पर फ्लाडन फील्ड नामक स्थान है जहां १५१३ ईस्वी में स्काटलैण्ड का राजा जेमस चौथा पराजित हुआ ।

टाईन नदी के किनारे में— टाईनमौथ, नार्थशील्ड, सौथशील्ड, इनतीन नगरों में जहाज बहुत बनते

हैं और यहां से पत्थरी कोला और देशों में भेजा जा-
ता है । न्यूकैसल और गेटस् हेड इन शहरों में विस्त-
न पत्थरी कोलों की खान है और नानाविध यन्त्र र-
स्सी, शीशा और रसायन द्रव्य प्रस्तुत होते हैं यहां
टाईन नदी पर दुहता पुल है । उनमे से ऊपर की
छत पर से रेल जाती है और नीचे से आदमी, घोड़े,
बग्घी प्रभृति चलते हैं । वेअर नदी के किनारे में स-
न्डरलैण्ड है यहां पर बहुत जहाज बनते हैं । डर्हम
में विश्वविद्यालय है ।

टीज़ के किनारे पर स्टक्टन नगर जहां से बहुत प-
त्थरी कोला और देशों में जाता है । डार्लिंगटन य-
हां वस्त्र प्रस्तुत और धातुओं का वाणिज्य होता है।
हर्टलपुल टीज़ के मुख में है । यहां एक अच्छा
बंदर है जिस में प्रतिदिन वाणिज्य की उन्नति होती है

प्रदेश प्रसिद्ध २ नगर

प्रदेश	प्रसिद्ध नगर	विशेषवर्णन
यार्क	यार्क, लीड्स, ब्रैडफोर्ड, हैलीफाक्स, हडार्सफील्ड, वेकफील्ड, सेफील्ड, डन्कास्टर, स्कार्बरो	यार्क नगर बड़ा प्राचीन और नदी के किनारे पर स्थित है । यहां हाड्रिअन, से वारस और कान्स्टाइन प्रभृति रोम के सम्राट कुछ दिनों के लिये रहे थे। यहां द्वितीय आर्क बिशप वास करता है। यार्क के पश्चिम में मार्स्टन मूर नामक स्थान है जहां कि क्राम्वेल ने १६४४ ई॰ में चार्लस प्रथम की सेना को जीता । इसके दक्षिण पश्चिम में टौटन नामक स्थान है जहां १४६१ ई॰ में यार्क वाले को जय मिली । शेफील्ड में छुरी, कैंची आदि लोहे द्रव्य तथा और २ धातुओं का कारखाना है ।

	ह्वीटबी, हाल	लीड्स नगर ऐर नदी के तीर पर बसा है। यहां बड़ा भारी पशम का कारखाना है। हाल नगर हम्बर नदी के तीर में एक प्रधान बन्दर है। यह समुद्र के किनारे पर है यहां कप्तान कुक साहेब का जन्म हुआ। इस के २२ मील दक्षिण-पश्चिम में कार्कडेल नामक गुफा है जहां बड़े २ हाथी और सिन्धुघोटक प्रभृति जन्तुओं की हड्डियें मिलती हैं॥
डर्बी	डर्बी, बेल्पर, वार्कसवर्थ, मैटलक, चेस्टरफील्ड	डर्बी, नाटिंगहम। और लिसेस्टर ये तीन बड़े नगर ट्रेण्ट नदी के तीर में हैं। इन में मोजा, गोटा और फीता प्रभृति का कारखाना है। १७४५ ई॰ में प्रिन्स चार्ल्स डर्बी तक आया था और उसके ४ महीने में पराजित हुआ॥
स्टेफोर्ड	स्टेफोर्ड, लीचफील्ड, टैमवर्थ, बर्टन औ पौटरीस स्टोक, बार्सलम, हेनली, उल्वरहैम्पटन, बील्स्टन और वाल्सल और वेड्नसबरी।	स्टेफोर्ड में चमड़े का कारखाना है। लीचफील्ड में १ बड़ा गिरजाघर है। यहां १७०९ ई॰ में महाकवि जानसन का जन्म हुआ। स्टोक बर्सलम और हेनली ट्रेण्ट नदी के तीर पर स्थित हैं, और सुन्दर मृन्मय पात्रों के लिये प्रसिद्ध हैं।
लिसेस्टर	लिसेस्टर, लाफबर्ग, आश्बीडिला ज़ौश।	

नाटिङ्गहम इनप्रदेशोंमें अनेक पत्थरकोलोंकी भूमिये हैं। डार्बीशायर इंगलेण्ड के सब प्रदेशों से बड़ा है। यहां विविध द्रव्यों का कारखाना	नाटिंगहम न्यूआर्क	
लिन्कन	लिन्कन बा॰स्टन, ग्रेम्सोई, स्पाल्डिंग	लिन्कन नगर वीथम नदीके किनारे पर है ॥ रोमवालों ने प्रथम ही इस नगर को बनाया। यहां एक स्व सीय गिरजाघर है। बास्टन नगर में विस्तृत शस्यका व्यापार है ॥
	ग्रेनथम ग्रेन्सबर्ग ग्रिम्सबी	ग्रेन्थम नगर के समीप उलीसरोप नामक स्थान में १६४२ ई॰ में सर न्यूटनसाहिब का जन्म हुआ ॥
रटलैण्ड	ओकहम आपिंगहम	
नार्थम्प्टन	नार्थम्प्टन पीटर्बर्ग वेलिंगबर्ग	यह नगर लेननदी के तीर में है। यहां अनेक चमडे के कारखाने हैं। इस के ११ मील पश्चिम मे नेस्बी नामक स्थान है जहां १६४५ ई॰ में क्राम्वेलने चार्ल्स प्रथम को जीता। पीटर्बर्ग नगर लेन नदी के तीर में है। इस के पास फथरिङ्गे नामक एक किला है जहां क्वीन मेरी कैद हुई थी और १५८७ ई॰ में उसका सिर काटा गया।
बेडफोर्ड	बेडफोर्ड, लिटन, बाजाई, डन्स्टबल ल्यूटन	

हटिंगडन	हटिंगडन सेन्ट आइविस, सेन्ट निओटस, हील्टन	यह नगर ओस नदी के तीर में है। यहां १५९९ में क्राम्वेल का जन्म हुआ।
केम्ब्रिज *२ इन प्रदेशों में खेती अच्छी होती है।	केम्ब्रिज, इलाई, वीसविच, न्यूमार्केट	यह नगर काम नदी के तीरमें है यहां एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है जिसमें विशेष करके गणित की अच्छी तरह चर्चा होती है।
नोर्फोक	नार्विज, यार्मोथ लीनरेजिस थेटफोर्ड	यह नगर यार नदी के तीर में है और बहुत प्राचीन है। यहां हे-नरीपहले के समय से पशम का कारखाना चला आता है।
सफ़ोक	इपस्विच लोएस्टफ टिलबरी सड्बरी, सेन्ट एडमण्ड्स	टिलबरी टेम्स नदी के तीरमें है यहां १५८८ ई॰ में एलिजेवेथ की सेना ने स्पेनियों से युद्ध किया।
एसेक्स *३ इन प्रदेशों में अनेक कारखाने हैं और अच्छी तरह खेती होती है	कैम्सफोर्ड, कोलचेस्टर हार्विच, माल्डन, बार्किङ्ग.	

मिड्लसेक्स	लंडन	यह नगर ब्रिटिश सम्राज्य की राजधानि है । इसकी लम्बाई १० मील और चौडाई ७ मील है । यह समुद्रतीरसे १८ कोस दूर पर टेम्स नदी के उभयतीर मे अवस्थित है । अब यह नगर पश्चिम मे वेस्टमिनिस्टर उत्तर मे मेरिलबोनोंके बर्गं हिनस बरी, टौर हमलेड और दक्षिण मे सोथवर्क और लेम्बेथ प्रभृति पल्ली को अपने अन्तर्गत करके बडा विस्तृत हुआ है । पृथिवी के समुदाय नगरों से यह वाणिज्य का श्रेष्ठ स्थान है यहां के अधिवासियों का धन और उद्यम और सब नगरों के अधिवासियों से बढ़कर है । यहां का एक२ महल्ला एक नगर के समान है ।
	ब्रेन्टफोर्ड, स्टेन्स, आक्सब्रिज	यहांका गृह नीनछभा होताहैं । उनमें से लन्डनटवर, समल ओफ बेन्ज इंग्लेंड का बेन्कघर, सेन्टपाल्स का गिरजा, यूनिवर्सिटी, ब्रिटिश अजायबघर, पार्लिमेण्टगृह, वेस्टमिनिस्टर आदी ये गृह बहुत प्रसिद्ध है ।
हार्टफोर्ड	हार्टफोर्ड सेन्ट आल बन्स वेअर	टेम्सनदी के तलवर्ती पुल भी बहुत आश्चर्य है । ऊपर से जहाज और नौका जाती है और नदी के नीचे ऐसे कौशल से पुल बना है कि उस से मनुष्य गाडी घोडा और रेल चलतीहै ।
बकिंगहम	बकिंगहम ओल्नी, आइलज़बरी	लंडन के समीप बहुत अच्छे२ जानेके योग्य स्थानहैं । जैसा कि इसके दक्षिण-पूर्व में ग्रीनउनहम जहां किसिडनपेलेसनामक बहुत अच्छा महल है

	ईटन, ग्रेटमालो	ईटन नगर में १४४० ई॰ में हेनरी ६ठे ने एक पाठशाला बनाई थी कि जो आजतक विद्यमान है ।
आक्सफोर्ड	आक्सफोर्ड	यह नगर एक विश्वविद्यालय के लिये प्रसिद्ध है, जो विश्वविद्यालय ऐल्फ्रेड ग्रेट के समय से बना हुआ है । पृथिवी में यह विश्वविद्यालय सब से समृद्ध है । इसके अन्तर्गत १९ कालेज हैं । और एक बड़ा भारी पुस्तकालय है ।
	बीटनी, उड-	
	स्टक, बानबरी,	
	हेनरी	
बार्कशायर	रीडिंग, न्यूबरी,	
	ऐबिंगडन, विन्ड्सोर, बेरेटज़ ।	विन्ड्सोर नगर में एक किला, जंगल, और उद्यान हैं । विजयी विलियम के समय से इंग्लैण्ड के राजा लोग वहां पर वास करते रहे ।
प्रदेश	नगर	विशेषवार्त्ता
सरी	गिल्डफोर्ड	
	एफसम, क्राइडन,	
	डेप्टफोर्ड, रिच-	
	मंड, किंगस्टन	
	चार्टसी,	
केन्ट	मिडस्टोन	यहां पर लम्पहप का वाणिज्य है ।
	टान्ब्रिज,	

	रोचेस्टर	यहां एक अच्छा गिरजा है और एक दुर्ग का खंडहर मिलता है ।
	ग्रीनविच	यहां एक राजकीय वेध-शाला है जिस को १६७४ ई॰ में चार्लिस दूसरे ने बनाया था । और यहां से प्रायः देशान्तरों की गणना होती है । और इसमें एक हास्पिटल है जहां नाविक लोगों की चिकित्सा होती है ।
	उलविच	
	चेथम	
	ग्रेवसेन्ड	
	शियरनेस्स	
	मार्गेट	
	रैम्सगेट	
	सैन्डविच	
	डील	
	कैन्टरबरी डोवर फाकस्टोन	यहां इंग्लैंड का प्रधान आर्क बिशप अर्थात् धर्म प्रचारक वास करता है । यहां ११७० में टामस-ए-बेकट मारागया था । डोवर से फ्रान्स में जाने का रास्ता है । डोवर से कैलाय २१ मील दूर पर है ।
ससेक्स	लूइज़	
	हेस्टिंग्स	इस के समीप एक युद्ध १०६६ ई॰ में हुआ था जिस में विजयी विलियम ने सैक्सनों के राजा हैरल्ड को जीत कर इंग्लिश सिंहासन अधिकार किया ।

	ब्राईटन फोर्हम, चिचेस्ट र, हर्सहम	
हैम्पिस्सायर	विन्चेस्टर, सौथम्पटन, पोर्टस्मौथ, गास्पोर्ट	यह एक इंग्लएड का प्राचीन नगर है सैक्सनों के समय यह इंग्लेएड की राजधानी था और ऐल्फ्रेड का। यह समाधिस्थान है। पोर्टस्मौथ इंग्लेएड के युद्धीय जहाजों का प्रधान स्थान है।
सैलिसबरी	सैलिसबरी डेवीज़ेस वैस्टबरी ट्रोब्रिज न्यूकेलेट	सैलिसबरी आवन नदी के तीर पर है। यहां एक अच्छा गिरजा घर है जिस्की चोटी बहुत लम्बी है।
डोर्सेस्टरशायर	पुली, वेअरहम वेमौथ ब्रिडपोर्ट ब्लैन्डफोर्ड सेफ्टिसबरी	
डेवनशायर	एक्जिटर टाईवर्टन	यहां बहुत वारीगरी है और एक बड़ा अच्छा गिरजा घर है। और सैक्सनों के समय में यहां बड़ी रौनक थी॥
	टर्कें, प्लाईमौथ, डिवनपोर्ट.	यह इंग्लेएड के युद्धीय जहाजों का द्वितीय स्थान है।
कार्नवाल ×४ इन प्रदेशों में प्रधान रूप से टीन की होती है।	लन्सेस्टन बडमिंग ट्रूरो,	

समुद्रतीरस्थित नगरों में वाणिज्य और मत्स्यका व्यापार है। विल्टशायर और डेवन में दो एक कारखाने भी हैं। डेवन और कार्नवाल में ताम्बा और टीन की खान हैं।	फलमौथ केम्ब्रिज	
ऐडवर्ड तृतीय के समय तक इंगलैण्ड के राजा के बड़े लड़के को ड्यूक आफ कारनवाल की पदवी दीजाती थी।	सेन्ट आईविस,	
सामर्सेटशा-यर	बाथ, फ्रोम, ब्रिज	बाथ में स्वास्थ्यकर उष्णप्रस्रव-ण हैं।
	वाटर टौन्टन	यहां ड्यूक-आफ-मन्मौथ अपने चचा जेम्स द्वितीय से विद्रोह उठाकर १६८५ में पराजित हुआ। इस के समीप ऐथल्नी नामक स्थान है जहांपर अल्फ्रेड ग्रेट ८७८ में छिप रहे थे।
ग्लासेस्टर-शायर	ग्लासेस्टर ब्रिस्टल	ग्लासेस्टर में एक अच्छा गिरजाघर है। यहां हूपरनामक एक धर्मप्रचारक मेरी के समय १५५५ ई॰ में जलाया गया। इसके १५ मील दक्षिण में बारक्ली नामक स्थान है जहां १३२७ में ऐडवर्ड दूसरा मारा गया। ब्रिस्टल आवन नदी के तीर में एक प्रधान बन्दर हैं इस के पास
	क्लिफटन चेल्टिंगहम	क्लिफटन नाम एक रमणीय ग्राम है सिबस्टियन के बोट जिसने न्यू-

	स्ट्राउड	फ़ोर्ड लैराड को आविष्कार किया और सोथी नामक कवि विस्टल के अधिवासी थे । यहां भारतवर्षीय ब्राह्म धर्म के प्रथम प्रचारक राजा राममोहन राय की समाधि है । वोर्सेस्टर में चीनदेश के अच्छे बरतन मिलते हैं । और १६५१ ई॰ में चार्ल्स द्वितीय को क्राम्वेल ने पराजित किया । किडरमिन्स्टर में बहुत अच्छे गलीचे होते हैं ।
कूर्वे		
वोर्सेस्टरशायर	वोर्सेस्टर	
	किडरमिन्स्टर	
	स्टौरब्रिज	
	डडली	
वार्विकशायर	वार्विक,	
	कवेन्ट्री	
	बर्मिंगहम	यहां सब प्रकार के धातुओं के असबाब बहुत अच्छे रूप से बनते हैं । आवन नदी के तीर पर है । यहां पर १५६४ महाकवि शेक्सपीयर का जन्म हुआ ।
	रगबी	
	स्ट्राटफोर्ड	
श्रापशायर	श्रूस्बरी	
	वेनलाक	
	ब्रिजनार्थ	
	लडलो	
हीअरफोर्डशायर	हीअरफोर्ड, लेओमिन्स्टर	
मन्मौथ	मन्मौथ	
	चेपस्टो	
	न्यूपोर्ट	

X ५ से ७ प्रदेश सावरन् नदी के किनारे पर हैं। वार्विकशायर के पश्चिम में लोहे के प्रधान वाणिज्यस्थान है

ग्लासेस्टर श्रोर हेरफोर्डप्रदेश पशुचारण स्थान के लिये प्रसिद्ध हैं। श्रोर २ प्रदेशों में खेती श्रोर कारखाने हैं।	एबरगेवीनी,	
चेशायर	चेस्टर	यह इंग्लेण्ड का बहुत प्राचीन नगर है। इसके चारों श्रोर चौडी दीवार है।
	कंग्लिटन,	
	मेक्लिसफील्ड	
	स्टाकपोर्ट	
	नार्थविच	
लैंकेशायर	लैंकेस्टर	
	प्रेस्टन	
	लिवरपूल	यह नगर लंडन के नीचे है श्रोर इंग्लेण्ड स्काटलेण्ड के समुदाय बंदरों से बडा है। मेन्चेस्टर के अधिवासियों की संख्या लंडन को छोड इंग्लेण्ड के सब नगरों से बडी है। यहां कारपास वस्त्रों का बडा कारखाना है।
	मेन्चेस्टर	
	कारलटन	
	आनमेडलक,	
	आस्टन लीन	
	अंडरलीन	
	हैलीब्रिज	
	आल्डहम	
	रोकडेलवारी,	
	बोल्टन,	

	ब्लैकवर्न,	
	कोर्ली,	
	वीगान,	
	वारिंगटन,	
	प्रेस्कट	
वैस्टमो	स एप्लवी,	
रलैराड	केन्डर,	
कंम्बरलैराड	कैरलआईल	में एक प्राचीन दुर्ग और गिरजा घर है।
वैस्टमोरलैराडमे सम्पूर्णरूपसे खेती होतीहै और देशोमें पत्थरीकोलेकी खानि बहुत हैं।	ह्वाईटहैवन	
	वारकिंगटन,	
	केसविक	
लैन्कशायर के दक्षिण पूर्व में बहुतकारखाने वाले नगर हैं।		

वेल्स प्रस्तरमय प्रदेश है इसलिये यहां खेती अच्छी नही होती, यहां पर बहुत पत्थरी कोले और लोहे की खान हैं। वेल्स बहुत काल तक स्वाधीन रहा १२८२ मे ऐडवर्ड प्रथमने इस को जीत कर अपने देशके साथ मिला लिया, उसी दिन से इंग्लैराड के राजा के प्रथम लड़के की पदवी प्रिन्स-आफ-वेल्स होती है। इस मे १२ प्रदेश हैं यथा

फ्लीन्टशायर	फ्लीन्ट,	
	होलीवेल,	

	मोल्ड, सेन्ट	मोल्ड के समीप पत्थरी कोयले, सीसे और शीशे की खान है। होली वेल में शीशा ताम्बा और जिन्क की खान है।
डेन्बिग	आसबडेन्बिग, रूथिंग, रेक्सहम,	रेक्सहम, वेल्शपुल मण्टगुमरी और न्यूटन इन नगरों में फलालेन का वाणिज्य है।
कारनरवन	कारनरवन बंगर	कारनरवान के किले में ऐडवर्ड दूसरे का जन्म हुआ
ऐंगलसी	कान्हेबूमारीज, होलीहेड,	
मेरियनेथ	डलजली वाला,	
मन्टगुमरी	मण्टगुमरी, वेल्शपुल, न्यूटन	
कार्डिगेन	ऐबारिस्ट्वीथ लैम्पीटर	
पेम्ब्राक	पेम्ब्राक मिल्डफोर्ड हैवरफोर्डवेस्ट, सेन्टडेवीस	यहां बड़े २ जहाजोंका कारखाना है।
केअरमर्थन	केअरमर्थन, लेनली,	
ग्लेमर्गन	कार्डिफ, लेरडस, स्वान्सी,	

	मरथार डाईविल	मरथार डाईविल यह से एक ग्राम था अब वेल्स में सब नगरों से बड़ा है ।
ब्रेकनाक	ब्रेकन	
रैडनर	न्यूरैडनर	
	प्रिस्टिन	
इंग्लेण्ड के	औपनिवेशिक	और विदेशीय अधिकार
देश	यूरोप में स्थिति स्थान	विशेषोल्लेख
हेलीगोलैण्ड	एल्ब नदी के मुख में	यह एक छोटा सा द्वीप है
जिब्राल्टर	स्पेन के दक्षिण में ।	यह एक दृढ़ किला है
देश	स्थितिस्थान	विशेषोल्लेख
माल्टा	भूमध्यस्थसागर के बीच और सिसिली के दक्षिण में	यह एक छोटा सा द्वीप है ।
आयोनियनद्वीपसमूह	भूमध्यस्थ सागर में	
	एशिया में	
भारतवर्ष	र	
लंका द्वीप	भारतवर्ष के दक्षिण में	
एडन ----	अरब के दक्षिण	यह एक दृढ़ दुर्ग है
पेनांग ----	वर्मा के दक्षिण	
सिंगापुर	मलाया के दक्षिण	यह एक द्वीप है
हांगकांग --	चीन के दक्षिण	यह एक द्वीप है
	आस्ट्रेलिया में	
आस्ट्रेलियादेश तस्मेनिया न्यूजीलैण्ड	आस्ट्रेलिया के पूर्व के अन्तर्गत दक्षिण । ये द्वीप हैं । सब मिल के ग्रेटब्रिटन के तुल्य हैं ।	

प्रदेश	स्थितिस्थान	विशेषवार्ता,
	आफ्रीका में	
सिरलिओन गीनी	पूर्व उपकूलमें ॥	
सेन्ट हैलीना	केप कलोनी के दो हजार मील उत्तर-पश्चिम में	यह एक छोटा सा द्वीप है
केपकलोनी और नेटल	आफ्रीका की दक्षिण-सीमामें ।	
मारीशस	मेडागास्कर के पूर्व मे ।	यह छोटा सा द्वीप है ।
केप कोस्ट, गम्बिया, आसेंसन द्वीप और अन्य छोटे २ स्थानभी हैं ॥		
	आमेरिका	
ब्रिटिश नार्थ ऐमेरिका		इसके अंतर्गत में कनेडा हडसन के प्रदेश न्यूब्रनस्विक, नोवा स्कोशिया, न्यूफौण्डलेण्ड इत्यादि हैं ॥
ब्रिटिश वेस्ट इण्डिया द्वीप समूह	उत्तर और दक्षिण ऐमेरिका के बीच	
ब्रिटिश गाइना	दक्षिण ऐमेरिका के उत्तर मे	
हंडोरास	मध्य ऐमेरिका में ।	
फाकलैण्डद्वीप समूह	पैटागोनिया के पूर्व में ॥	

इन के सिवाय
केप ब्रिटन,
प्रिन्सएडवर्ड
द्वीप इत्यादि
स्थान भी अंग्रेजों
के अधिकारमे हैं ।

इंग्लेण्ड के समुदाय विदेशीय अधिकार मिल के स मुदाय यूरोप के १½ गुणा अधिक है और ग्रेट ब्रिटन से ८६ गुणा अधिक है ।

स्काट्लेण्ड

इस की उत्तर-सीमा अटलाण्टिक महासमुद्र,पूर्व सीमा जर्मन महासमुद्र दक्षिण सीमा आइरिश समुद्र और इंग्लेण्ड और पश्चिम सीमा अटलाण्टिक महा समुद्र है ।

स्काट्लेण्ड में समतलक्षेत्र बहुत विरल है । यहां पर्वत और उसके अन्तर्देश आकार की स्वाभाविक भिन्नता के कारण स्काट्लेण्ड दो भागों मे विभक्त है । एक उन्नत दूसरा न्यूनभाग । उत्तर-पश्चिम, और मध्यभाग उन्नत है । वहां की भूमि बहुत बन्धुर और पर्वतमय है । अवशिष्ट अंश निम्न है जिस में कई एक समतल क्षेत्र भी देखने में आते हैं । स्काट्लेण्ड में झीलें बहुत हैं । कई एक झीलें देखने में बहुत सुरम्य हैं ।

स्काट्लेण्ड की जल वायु इंग्लेण्ड की नांई है परन्तु कुछ शीतल है । इसके पश्चिम और दक्षिण अंश अट्-लाण्टिक समुद्र के समीप होने से सर्वदा उनमें बहुत वृष्टि होती रहती है । इस कारण वे अंश कोमल और आर्द्र है । इस के पूर्व अंश साधारणतः सूखे हैं और वहां वसन्त ऋतु में सूखी तथा पूर्व वायु बहती है । मध्यदेश पर्वतमय और शीतल है ।

स्काटलैण्ड अतीव बन्धुर और अनुर्वर है इसलिये इसकी एक चतुर्थांश भूमि खेती के योग्य है परन्तु इस अंश में केवल खेती होती है। स्काटलैण्ड के किसान लोग कृषिकार्य्य में बहुत निपुण हैं परन्तु मही के दूषित होने से ये लोग कुछ कर नहीं सकते। इंग्लैण्ड में जितने प्रकार के शस्य होते हैं स्काटलैण्ड में भी उतने ही होते हैं। और इंग्लैण्ड में जितने प्रकार के पशु हैं स्काटलैण्ड में भी उतने ही हैं। इसलिये उन का वर्णन पृथक् रूप से नहीं किया जाता स्काटलैण्ड के खानिज द्रव्यों में से पत्थरी कोला, लोहू, शीशा, पत्थर और स्लेट प्रधान हैं।

स्काटलैण्ड में कारपस, और अन्यप्रकार के सूत्रों के वस्त्र और पशमी कपड़ों का कारखाना बहुत है। यहां का मत्स्य व्यवसाय भी विस्तृत है। स्काटलैण्ड का क्षेत्रफल ८०५२ वर्गकोश है और मनुष्यसंख्या ३१ लाख। स्काटलैण्ड के अधिवासियों को स्काच कहते हैं। इनका आहार व्यवहार और परिच्छद अंग्रेजों के बराबर ही है। येलोग अतिशय परिश्रमी कष्टसहने वाले, साहसी मितव्ययी और सावधान हैं। ये लोग विविध शिल्पकार्य्यों का अनुष्ठान करते हैं वाणिज्य में भी ये लोग अंग्रेजों से न्यून नहीं।

एडनबरा, ग्लासगो, एबर्डीन और सेन्ट आन्ड्रस इन चार नगरों में एक २ विश्वविद्यालय है।

इन के सिवाय यहां और भी बहुत पाठशाला हैं। स्काट्लेण्ड पहिले स्वतन्त्र राज्य था १६०३ ई॰ में इंग्लैण्ड के अधीन हुआ और १७०७ ई॰ में इसकी पार्लिमेण्ट सभा इंग्लैण्ड की पार्लिमेण्ट सभा से मिलगई अब इसकी नदी पर्वतादिकों का वर्णन किया जाता है।

प्रधान खाड़ी और झीलों का वर्णन

पूर्व में—फर्थ—आफ—फोर्थ फर्थ—आफ टे, मरे फर्थ, डर्नक—फर्थ, क्रामार्टी फर्थ और सूली फर्थ।

उत्तर में—पेण्टलेण्ड फर्थ ओर्कनी द्वीप और ज़मीन के बीच।

पश्चिम में—लोच ब्रूम, लोच न्ही, लोच स्टेल, लोच लिवन लोच पेल, लोच फाईन, फर्थ-आफ—क्लाईड, लोचला ऊरव, लोच रीअन्

इन के सिवाय बहुत मुहाने हैं जिन्में से सौण्डस आफ—आईलिं जूरा, मूल और स्लीट ये प्रधान हैं।

दक्षिण में—लूसबे, वीकटन बे सोलवे फर्थ।

इन्में से फर्थ—आफ—फोर्थ और फर्थ—आफ—क्लाईड के मध्यस्थित प्रदेशों मे बहुत खाने हैं। मोरी फर्थ सब से बड़ा है। सोलवे फर्थ बहुत गंभीर नहीं।

भाटा के समय इस के समुदाय अंश प्रायः बाहिर होजाते हैं। परन्तु ज्वार भी शीघ्र ही आजाता है इसलिये यहां नौका चलानेमें बहुत विपत्ति होती है।

प्रधान २ अन्तरीयों का वर्णन

पूर्व उपकूल में—सेन्ट–ऐबीस–हेड, फाईफनेस्स व डन नेस्स, बूचाननेस्स, किनार्डिस हेड टार्बिटनेस्स। उत्तर उपकूल में डन्कान्सबे हेड, डनेटहेड, केप रैथ पश्चिम उपकूल में बट्आफ–ल्यूइस, आर्डना–मरकेन पाईन्ट, मल–आफकेनटायर, पर्सिल पाट्रिक दक्षिण में–मूल आफगैलो वे, बेरीहेड, सेंटबैस

प्रधान २ द्वीपों का वर्णन

उत्तर में–शेटलैण्ड द्वीपसमूह इसके अन्तर्गत २५ द्वीप हैं जिनमें–मेनलैण्ड, येल और अनस्ट ये प्रधान हैं आर्किनिया द्वीपसमूह। इस के अन्तर्गत २९ द्वीपों में मनुष्यों की बस्ती है।

पश्चिम में–ऐरन और बूट द्वीप। —— फ्राईडम है। हेब्राईडू द्वीप समूह जिस के अन्तर्गत आईले जूरा स्टाफा, आयोना, मुलरम, स्काई, ल्यूइस–नार्थ आइस्ट बेनबेक्यूला, सौथ आइस्ट और बारा ये द्वीप हैं। ल्यूइस द्वीप स्काटलाण्ड के और द्वीपों से बड़ा है इस का प्रधान नगर स्टोर्नोवे। आयोना द्वीप एक छोटा है परन्तु प्राचीन समय में यहां धर्म और विद्या की चर्चा बहुत थी। इस में आजतक भी बड़ी २
धर्मशालाओं का खण्ड और स्काटदेशीय राजा की समाधि मन्दिर दीख पड़ते हैं।

स्टाफा द्वीप आयोना द्वीप के उत्तर में है इस में फिंगलकेव नामक एक गुफा है जो पृथिवी के बड़े आ-

भाविक आश्चर्य्यों में से है ।

प्रधान २ पर्वतों का वर्णन

पहले कह चुके हैं कि स्काटलेण्ड की भूमि पर्वत मय है और पश्चिम की प्रायः समस्त भूमि ऊंची है और पूर्व की भूमि नीची है । स्काटलेण्ड की प्रधान २ पर्वतश्रेणी एक दूसरे से समान्तराल रूप से स्थित हैं और दक्षिण—पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर विस्तृत है स्काटलेण्ड के समुदाय पर्वतों को ३ श्रेणी में विभक्त करते हैं । प्रथमें लोवर और चेविपट पर्वत । दूसरा ग्रेम्पियन् । तृतीय नार्थरन् हाईलेण्ड । दक्षिण में— लोथर और लेड पर्वत डेम्फ्रायस् को पीबल्स और लेनार्क से जुदा करता है । चेविपटपर्वत स्काटलेण्ड और इंग्लेण्ड के बीच में है । लामार मूरिस पर्वत टीड नदी के उत्तर किनारे में हैं ।

मध्य में—ग्रेम्पियनपर्वतश्रेणी जिसका सबसे ऊंचा शिखर बेने विस है उत्तर में—नार्थरन् हाईलेण्ड जिसका सबसे ऊंचा शिखर बेनवाईविस है । बेननेविस स्काटलेण्ड के सब पर्वतों से ऊंचा है ।

प्रधान २ नदियों का वर्णन

स्काटलेण्ड की सब नदियें प्रायः पूर्व दिशा मे वहती हैं केवल क्लाईट पश्चिम में और ऐनन और नीथ दक्षिण में वहती हैं । ऐस्क, आनन और नीथपे नदियें स्लाये फार्थ मे गिरती हैं ।

डी और इस्की शाखा केन आइरिश समुद्र में गिरती हैं। ट्वीड नदी दक्षिण में टेविएट, पूर्व में और उत्तर में लीडर और ऐडर नदियों से मिल के पूर्व की ओर बहकर जर्मनमहा समुद्र में गिरती है। क्लाईड यह नदी डग्ला और आवन नदी से मिलके उत्तर-पश्चिम दिशा में बह के फर्थ-आफ क्लाईड में गिरती है। यहां इरवाईन, आइर और डून ये तीन नदियें भी गिरती हैं।

ऊपर लिखी हुई नदियें लोथर और चेविएट पर्वत श्रेणी में से उत्पन्न हुई हैं। फर्थ, और इसकी शाखें टेईथ और आलान नदियें पूर्वदिशा में बह के फर्थ-आफ फोर्थ में गिरती हैं यहां टाईन, एस्क, डेवन और लेवन ये नदियें भी गिरती हैं। टे नदी इस्की दाहिनी ओर से आर्न और अलमण्ड और बाईं ओर से ह्यूमेल, गैरी और इस्ला नदियों से मिल के दक्षिण-पूर्व में बह कर फर्थ आफ टे में गिरती है। साउथ-एस्क नार्थ-एस्क, डी और डान ये नदियें पूर्व की ओर बह के जर्मन महासागर में गिरती हैं।

डेवरन, स्पाई, फिंडहारन, नेईरन और नेस ये नदियें उत्तर-पूर्व में बहके मरे फर्थ में गिरती हैं। पूर्वोक्त नदियें ग्रेम्पियन पर्वत श्रेणी में से उत्पन्न होती हैं॥

प्रधान २ झीलों का वर्णन

स्काटलैण्ड में बहुत झीलें हैं उनमें से प्रधान ये

हैं,—ग्रेम्पियन पर्वत के दक्षिण में—लाच लामराड स्था परशिह्ट और डम्बरटन के बीच में है ।
यहां से लिवननदी निकल के फर्थ-आफ-क्लाईड में गिरती है । इस झील का क्षेत्रफल ४५ वर्गमील है और ग्रेट ब्रिटन में यह झील सब से बड़ी है लाच-के टर् आर्ईन झील पार्थशायर मे है । लाच इरन लाच टे, लाच रैनक ये झीले भी पार्थशायर में है ।
लाच ईरक यह झील इचर्नैस्सशायर में है । लाच लेगन लाचलाची, ऐक और नेस्स इचर्नैस्सशायर मे हैं । लाच-आ झील आर्गाइलशायर में है ।
हाईलैराड पर्वत के उत्तर में लाच सीन, आर्कवेग, लाचशील, लाच मरी और पेसिन्ट ये झीले हैं ।

समुदाय स्काट्लैराड ३१ प्रदेशों में विभक्त है । जिन्का विशेष वर्णन नीचे लिखा जाता है,

प्रदेश	नगर	विशेष-वार्त्ता
वार्विक	ग्रीनलडन्सआर	
	कोलडुस्ट्रीम	
राक्सबरा	जेडबरा	
	हाविक	
	केल्सो	
	मेलरोज	
सेलकार्क	सेलकार्क	
	गेलासेल	
पीवल्स	पीवल्स	

	इन्वरलिथन
हेडिंगटनवा	हेडिंगटन
ईस्टलोथियान्	डुन्वार
	नार्थवार्विक
	प्रेस्टोनपान
पेडनवरावा	पेडन्वरा
मिडललोथियान	लीथ
	पोर्टोवेलो
	मसलबरा
	डाकिन्थ
लिन्लिथगोवा	लिन्लिथगो
वेस्टलोथियान्	वरोस्टोनेस
	बातगेट
स्टार्लिङ्ग	स्टायरलिंग
	वेन्नकवर्न
	फलकार्क
	कैरन्
	ग्रेन्जमोथ
क्लैकमानन	क्लैकमानन
	आलोआ
	डुलार
किनरस्स	किनरस्स
फाईप	करूपर
	डन्फर्मलाईन

प्रदेश	नगर	विशेषवार्ता
	कार्ककाल्डी	
	डाईसार्ट	
	सेन्टऐन्ड्रूस	
पार्थशायर	पार्थ	
	डंकेल्ड	
	ब्लेअरगौरी	
	क्रिफ	
	अकरार्डर	
	डन्ब्लेन	
	कैलेण्डर	
फारफर	फारफर	
	डन्डी	
	आरब्रोथ	
	मान्ट्रोज़	
	ब्रेचिन	
किन्कार्डाई-	स्टोनहैवन	
	लारेन्सकर्क	
	बार्वी	
ऐबरडीन	ऐबरडीन	
	पिटरहैड	
	फ्रैसरबर्ग	
	हण्टली	
बैन्फ	बैन्फ	

	पोर्टशाय
	कूलन
	किन्थ
एल्जीनवा	एलजीन
मरे	फारेस्स
	फकावास
नैरेराड	नैरेराड
	कोडर
इन्वरनेस्स	इन्वरनेस्स
	फोर्टविलियम्
	फोर्ट अगस्टस
	फोर्ट जार्ज
	फोर्ट्री
रास्स और	डिङ्‌वाल
क्रामर्टी	पोर्ट रोज
	टाईन
	क्रामर्टी
	स्टेनोवे
सौदर्लेराड	डार्नक
	गलस्पी
केटनेस्स	वीक
	थर्सो
आर्क्नी और	कार्कवाल
शटलेराड	स्टोर्मनेस्स

	लार्विक
आर्गाईल	इन्वैरैरी
	ओवान्
	कैम्बलटौन
	डून्
ब्यूट	रौथसे
	ब्राडिक
	मिल्पोर्ट
डम्बर्टन	डम्बरटन
	हैलेन्सबरा
	कार्किनटिलक
लैनार्क	लैनार्क
	हैमिल्टन
	रदर्ग्लेन
	ग्लास्गो
	आइर्ड्राई
रेनफ्रू	रेनफ्रू
	पाइस्ली
	जानस्टोन
	पोर्टग्लास्गो
	ग्रीनक
आयर	आयर
	लार्गस्
	आर्डसान

	टून
	आउरवाईन
	किल्मर्नक
	स्ट्रूआर्टन
	गर्वन
	मेवोल
वीक्टन	वीक्टन
	स्ट्रेनेरर
	पोर्टपेट्रिक
कार्ककाउ	कार्ककाडब्राईड
ब्राईट	केसलडोगलस
	न्यूगैलवे
डम्फ्रैस्स	डम्फ्रैस्स
	ऐनन
	मोफथ
	लेन्गहोलन,
	सैन्काहर

आयर्लेण्ड

इस के उत्तर पश्चिम और दक्षिण में अटलाण्टिक महासागर और पूर्व में आइरिश समुद्र और सेन्टजार्ज का मुहाना है ।

आयर्लेण्ड के पूर्व उपकूल अभङ्गिमान, उत्तर और पश्चिम उपकूल आशा की नाई भङ्गाकार और प्रस्तरमय हैं । अभ्यन्तर भाग पहाड़ और समभूमि के

क्रमसे स्थिति होने से उन्नतानत है ।

आयर्लैण्ड नातिशीतोष्ण देश है । इस में इंग्लैण्ड न गर की नाईं शीत वा उत्ताप नहीं, किन्तु इस की वायु इंग्लैण्ड की वायु से सजल है । आयर्लैण्ड की भूमि स्वभावसे उर्वरा है । इंग्लैण्ड में जितने प्रकार के शस्य होते हैं इस में भी वे बहुत परिमाण से उत्पन्न होते हैं परन्तु यहां के कृषिकार्य्य की रीति अच्छी नहीं इंग्लैण्ड में जितने प्रकार के पशु हैं यहां भी वैसे ही हैं । इस द्वीप में किसी प्रकार का सांप नहीं ।

आयर्लैण्ड में ताम्बा, लोहा, शीशा, और थोडे परिमाण से सोना और चांदी भी मिलते हैं । यहां पत्थरी कोलों की खानें बहुत नहीं । यहां मारबल पत्थर भी मिलते हैं और पर्वतों में संगमर्मर भी मिलता है । आयर्लैण्ड में एकमात्र वस्त्र का कारखाना है जिसका स्थान बेल्फास्ट नामक नगर है । उत्तर पूर्व और पश्चिम में स्थित नगरों में मस्लीन नामक वस्त्र और फीता प्रस्तुत होता है यहां मत्स्यव्यवसाय का बहुत विस्तार नहीं ।

आयर्लैण्ड के लोगों को आइरिश कहते हैं । ये लोग आहार व्यवहार और परिच्छद में अंग्रेजों के तुल्य हैं । ये लोग आनन्दचित्त और सद्वक्ता, कष्टसह, निर्भय और अभिलषित विषय में एकाग्र होते हैं । यहां के सामान्य लोग बहुत सुशिक्षित नहीं होते । शिल्प वा वाणिज्य विषय में इनका विशेष

प्राधान्य नहीं । आयर्लेण्ड के डब्लिन नगर में एक वि श्वविद्यालय है और स्थान २ में औरभी विद्यालय हैं। ११७२ ई॰ में हेनरी दूसरे के समय आयर्लेण्ड इंग्लेण्ड से मिलगया और १८०१ ई॰ में इसकी पार्लिमेण्ट ग्रेट ब्रिटन की पार्लिमेण्ट के साथ मिलगई । आयर्लेण्ड और इंग्लेण्ड इनदोनों देशों के कानून एक ही हैं । इस के शासन के लिये यहां पर क्वीन का एक प्रति निधि मात्र रहता है ।

प्रधान २ खलीजों और खाडियों का वर्णन

पूर्व उपकूल में— वेक्स फोर्ड हार्बर, डब्लिनबे, ड्रागहेडोबे, डण्डगबे कार्लिङ्ग फोर्डलफ, डन्ड्रमबे, स्ट्रेंग फोर्डलफ और बेलफास्टल ये खाडियें हैं ॥

उत्तर उपकूल में लफफाइल और स्वीली ।

पश्चिम उपकूल में डनीगेल, स्लीगो, किलालाबे, ब्रेडहेवन, ब्लेकसाडक्रू, गेलबे, माथ- आफ - सेनन, ट्रेली, डिंगल, केन्मेयर, बेंट्री बे ।

दक्षिण उपकूल में- किन्सेल, कार्क, योगल, डंगरवन, वाटरफोर्डहार्बर ।

प्रधान २ अन्तरीपों का वर्णन

पूर्व उपकूल में— विक्लो हेड, होथहेड ।

उत्तर उपकूल में हेअर हेड, बेंगरहेड, मेलिन हेड. ब्लाडीफोरलेण्ड ।

पश्चिम मे रासन पाइण्ट, एकीजहेड, स्लाईनहेड, लूफहेड कोहेड और मीजनहेड ।

दक्षिण में—केप क्लीयर, कारन्सोर पाइण्ट ।

आयर्लैण्ड के अन्तरीपों में उत्तर और पश्चिमस्थित अन्तरीप ऊंचे हैं । बैंगरहेड के समीप जाइएटस्स का जुय नामक एक प्राकृतिक उच्चस्तम्भ है जिस्में हजारों छोटे २ स्तम्भ मिले हुए हैं । उस्की ऊंचाई ४०० फ़ुट और लम्बाई ७०० फ़ुट और चौडाई ३५० फ़ुट

प्रधान २ द्वीपों का वर्णन

उत्तर में—रैथलिन्, टोरी, नार्थआईल्स अपारन्, ।

पश्चिम में—ऐक्अर, साथ ऐरानाईल्स, क्लेस्केट आइल, वैलन्सिया,

दक्षिण में—केपक्लीयर द्वीप, ग्रेटआइलेण्ड वा कोवद्वीप ।

प्रधान २ पर्वतों का वर्णन

आयर्लैण्ड का अधिक अंश निम्न है यहां पानी निकलने का रस्ता अच्छा नहीं इसलिये यहां अब तक भी इस्का ⅙ अंश जलमय है । यहां की पर्वत श्रेणी बड़ नहीं ।

उत्तर में—मोरन् पर्वत जिस्की सब से ऊंची चोटी स्लीव डोनार्ड है । पेरिश्रम का पर्वत, कारराटाच्चर पर्वत, डोनीगेल का पर्वत जिस के अन्तर्गत स्लीवस्नैट, इरीगेल और स्लीवलीग हैं ।

पश्चिम में—नेफिन् क्रोक, पेट्रिक कोनीमारा ।

मध्यस्थित समतल भूमि के दक्षिण में—ब्लीड्रो पर्वत, टीपेरैरी पर्वत जिस में स्लीव ब्लूम, म्याग, किपर

गाल्टी और नाक मिलेडोम पर्वत हैं ।

आयर्लैगड के पर्वतों की सर्वोच्च चोटी कारगटुाल जो केरी पर्वतों में है ।

प्रधान २ नदियों का वर्णन

आयर्लैगड की कई एक नदियों का उत्पत्तिस्थान ऊंचा है और उन्में से बहुत नदियों में नो चलती हैं ।

पश्चिम में— सेननन नदी और इस्की शाखें ईनी, ब्रस्ना, मेग, फारगस, और शाक जो दक्षिण—पश्चिम दिशा में बह के अटलाण्टिक महासमुद्र में गिरती है । दक्षिण में बेगडन, ली, और ब्लेकवाटर दक्षिण—पूर्व में बह के अटलाण्टिक महासमुद्र में गिरती हैं । स्वर और बैरो दक्षिण में बह के वाटरफोर्ड हार्बर में गिरती हैं ।

पूर्व में— स्लेनी दक्षिण पूर्व में बह के वेक्सफोर्ड में गिरती है ।

लीफी और बयेनी उत्तर-पूर्व में बह के आइरिश समुद्र में गिरती हैं ।

उत्तर में लेगन उत्तर— पूर्व में बह के बेल्फास्टलाफ में गिरती हैं । बेन और फाइल उत्तर में बह के अट-लाण्टिक महासागर में गिरती हैं ।

आरन् उत्तर पश्चिम में बह के डनीगाल बे में गिरती है

प्रधान २ झीलों का वर्णन

आयर्लैगड में झीलें बहुत हैं । प्रायः इस्का $\frac{१}{५०}$ वां अंश झीलों से भरा है ।

लाफनियाग, यह झील आयर्लेण्ड की सब झीलों से बड़ी है लाघहेलन, बेफिन, री, और डार्ग सानन नदी के तीर मे हैं लाफ आरन्, अटार गोना, आनू नदी के पास हैं । सीलन और डिवाराग ईनी नदी से मिली ऊई है । एनेल और आइल बुसाना नदी से मिली ऊई हैं । लफ कारड जिसका जल किलाला की खाड़ी में गिरता है ।

आयर्लेण्ड की सब झीलों से किलर्नी की झीलें बऊत सुन्दर हैं और ये केरी पर्वतों में हैं ।

आयर्लेण्ड पहिले प्रधान चार प्रदेशों में विभक्त हो कर ३२ विभागों मे विभक्त है ।

उत्तर में—अल्स्टर जिस में ९ विभाग हैं । मध्य और दक्षिण—पूर्व में लिन्स्टरप्रदेश जिस के १२ विभाग हैं ।

दक्षिण—पश्चिम में मानस्टर जिस में ६ प्रदेश हैं और पश्चिम में कनेट जिस में ५ प्रदेश हैं ।

प्रदेश	नगर	विशेषवार्त्ता
डाऊन	डाऊनपेट्रि	
	न्यूरी	
	न्यूटानर्डस	
	डुनाघाडी	
आण्ट्रिम	कैरिक	
	फार्गस	
	बेलफास्ट	

	लिखर्ने
	बेलीमेन
लंडुनडेरी	लंडनडेरी
	कोलारेन
डनीगेल	लीफोर्ड
	बेलीसेनन
	डनीगैल
	बेटरीफेनी
टाईरन्	उमाग
	स्ट्रेबेन
	डौंगैनन
श्रर्माग	श्रर्माग
	लर्गान
मनाघान	मनाघान
	क्लोन्स
केवन्	केवन्
	बाल्टर्बे
फार्मैनाग	एनीस्किलन
लौथ	डुंडेल्क
	डराडक
	श्रार्डी
	कर्लिङ्‌फोर्ड
मीथ	ट्रीम, नैवन
	केल्स

डब्लिन	डब्लिन
	किङ्ग्स्टोन
	बाल्ब्रिगेन
वीक्लो	वीक्लो
	आर्क्लो
किल्डेयर	एथी
	नेस
	किल्डेयर
वेक्सफोर्ड	वेक्सफोर्ड
	एनीस्कर्थी
	न्यूरस्स
कार्लो	कार्लो
	टूलो
किल्कनी	किल्कनी
	केलन
	टोमस्टोन
कीन्सकौण्टी	पर्टार्लिङ्गटन
	मेरीबरा
	मौण्टमेलिक
किङ्गसकौण्टी	टोलामोर
	पर्सन्सटोन
	फिलिप्सटोन
वेस्टमीथ	मुलिङ्गर
	एथ्लोन

	केसलपोलार्ड,	
लङ्ग्फोर्ड	लङ्गफोर्ड	
	ग्रेनार्ड	
टीपारैरी	क्लान्मेल	
	कैरीकन्	
	सियोर	
	टिपारैरी	

प्रदेश	नगर	विशेषवार्त्ता
	केसल	
	यारल्स	
वाटरफोर्ड	वाटरफोर्ड	
	डंगावान्	
	लिस्मोर	
	टैलो	
कार्क	कार्क	
	क्वीन्सटौन	
	किन्सेल	
	वैंडन	
	मूचल	
	फारमय	
	मैलो	
केरी	ट्रैली	
	डिङ्गल	
	किलर्नी	

लिमृरिक	लिमृरिक
	रैथकेल
क्लेयर	ईन्निस
	किल्रस
	किलैलो
गैलवे	गैलवे
	लफरेस
	वेलीनस्लेलो
	टूआम
मेयो	कैसलवार
	वेस्टपोर्ट
	वेलीना
स्लीगो	स्लीगो
लैट्रिम्	कैरीकन
	सैनन
रास्सकामान	रास्सकामान
	बयेली

नार्वे और स्वीडन नार्वे और स्वीडन ये दो देश अ-ब एक राजा के अधीन हैं। और दोनों मिल के एक बड़ा विस्तृत प्रायद्वीप बनते हैं जिसे स्केण्डीनिविया कहते हैं।

इन की उत्तर सीमा में उत्तरमहासागर, पश्चिम में अटलाण्टिक और जर्मन महासागर, दक्षिण में वा ल्टिक समुद्रस्थित स्केगारक और स्केटिगट और

पूर्व में वाल्टिक समुद्र बोथीनिया की खाडी और रूस।

ये दो देश मिल के ग्रेट ब्रिटन से ३ १/२ गुना बडे हैं। इस प्रायद्वीप के ईशान कोण से इस के मध्यस्थल होकर नैर्ऋतकोण तक कई एक उन्नत और बन्धुरपर्वत हैं। नार्वे में झील, पर्वत, जलप्रपात, शिलाखण्ड और दूरतक विस्तीर्ण बड़े २ जंगल दीख पडते हैं। नार्वे में काएलेन, डफ्रेन वा डोवरफील्ड, और हर्डङ्गरफील्ड ये तीन प्रधान पर्वत हैं। नार्वे की नदियों में बडी कठिनता से नौ चलती हैं क्योंकि जब सूर्य के तापसे ग्रीष्म ऋतु में हिमसंहति गल जाती है तो इन का वेग प्रचण्ड होजाता है और शीतकाल में जमी रहती हैं।

नार्वे की प्रधान नदी ग्लोमेन जो स्केगारक में गिरती है। नार्वे के उपकूल में बहुत सागर शाखे हैं जिन के समीप लाफुडेन प्रभृति छोटे २ द्वीपसमूह हैं नार्वे के पश्चिम उपकूल में मालस्त्रेम नामक एक भयानक आवर्त है। नार्वे के उत्तर अंश उजाड पडे हैं इस के अन्य अंशों में बड़े २ जंगल पशुचारणभूमि और बहुमूल्य खानि हैं।

यहां से शहतीर और लोह और देशों में भेजे जाते हैं। और इस के उपकूल में मत्स्यों का भी बहुत व्यापार है। स्वीडन में भी नार्वे की नाईं हृपप बहुत हैं परन्तु इस में कोई पर्वत नहीं इस में बहुत बेगव-

ती नदियें बहती हैं कि जिन्में से गोटा, डाल और हर्निया प्रसिद्ध हैं। यहां झीलें बहुत हैं जिन्में से वेन र, वेटर और मेलर प्रसिद्ध हैं। इस देशका प्राय एक— चतुर्थांश है जंगलों से भरा है। जिन्में अधिक जलाने की लकड़िये हैं। इस के दक्षिण और मध्यप्रदेश में खेती अच्छी होती है स्वीडन का लोह बड़ा प्रसिद्ध है। इस में ताम्बे की खानिये भी हैं। स्कान्डिनेविया प्रायद्वीप उत्तरमहासागर के होने से बहुत ठण्डा है। यहां शीत ऋतु बहुत कालतक रहती है और कष्टप्रद है। यहां शरद् और वसन्त बहुत थोड़ी होती हैं। ग्रीष्म भी थोड़ी होती है परन्तु बहुत उष्ण है। यहां सैप्टेम्बर से एप्रिल महीने तक बरफ गिरती रहती है। ग्रीष्म केवल तीन महीने होती हैं उन तीन महीनों मे दिवसमान १९ घण्टा होता है।

इस प्रायद्वीप में ग्राम्यजन्तुओं मे से बकरा, भेड़, घोड़ा, गौ और सूअर प्रधान हैं। अरण्य जन्तुओं मे से भेड़िया, तरक्षु, लेमिङ् नामक इन्दुर जातीय जन्तु, उल्वरिन् नाम हिंस्र जन्तु, हरिण, उल्कामुखी, बड़े २ रीछ और रैनडीयर प्रधान हैं। नार्वे में जव, ओट, सन् और पट प्रधान रूप से उत्पन्न होते हैं।

स्वीडन मे भी जव, सरसों और आलू होते हैं। नार्वे और स्वीडन के अधिवासी लोग प्रायः बड़े

साहसी, सरल, परिश्रमी और अतिथिसत्कारक हैं, परन्तु ये लोग बहुत मद्य पीते हैं और इसी से निन्दनीय कार्य्यों में प्रवृत्त होते हैं नार्वे के लोग सभ्य हैं और स्वीडन के लोग सम्पूर्ण असभ्य हैं ।

स्वीडन में दो विश्वविद्यालय हैं और बहुत छोटे २ विद्यालय हैं ।

नार्वे १७ विभागों में विभक्त है जिन सब को ऐम्ट कहते हैं । नार्वे का प्रधान नगर क्रिश्चेनिया जो देश के अग्निकोण में समुद्र तट पर अवस्थित है इस नगर में एक विश्वविद्यालय है यह एक प्रधान बन्दरों में से गिना जाता है और यहां से शहतीर की लकड़ी अन्य देशों में भेजी जाती है । बरजन, ड्रुन्थिम, रोरास कान्ग्सबर्ग, फ्रेड्रिकशाल्ड और हमरफेस्ट ये सभी नार्वे में प्रसिद्ध नगर हैं । इन्में से बर्जन नगर में शुष्क मत्स्य का व्यापार होता है । ड्रुन्थिम नगर प्राचीन राजधानी थी । रोरास नगर में ताम्बे की और कंग्सबर्ग नगर में चांदी की खान हैं । फ्रेडरिक शैल्डमें स्वीडन के अधिपति द्वादश चार्लस की १७१८ ई॰ में मृत्यु हुई ।

नार्वे के शासन के लिये स्वीडन के राजा का एक प्रतिनिधि रहता है परन्तु यहां के कानून स्टार्टिङ्ग नामक नार्वे वाले की सभा से प्रस्तुत होते हैं यहां का धर्म्म प्रोटेस्टेण्ट है । स्टाकहोम स्वीडन की प्रधान राजधानी है, यह नगर बाल्टिक समुद्र और

मेलार भील के संगम पर है । यह एक प्रधान बन्दर है । शीत काल में जब यहां की नहरे ज-म जाती हैं तब ये बहुत सुन्दर दीखाई देती हैं । अपसला, गाटनबर्ग, कारसक्रोन, डेन्माटाना कौ-पिङ्ग, कालमार और फाहलन येभी स्वीडन में प्र सिद्ध नगर हैं इन मे से अप्सल नगर स्टाक होम से ४० मील दूर है और बहुत प्राचीन है और इसमे एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है जहां प्रसिद्ध प्राकृतिकतत्वज्ञ लीनियससाहिब अध्यापक था । गोटनबर्ग नगर बडे २ शहतीर की लकडी और लोहे का वाणिज्यस्थान है ।

कार्लसक्रोन नगर बालटिक समुद्रस्थित पांच छोटे २ द्वीपों में है और स्वीडन के युद्धीय जहाजों का स्थिति स्थान है । डेन्मारा नगर में बहुत लो हे की खान हैं । बाल्टिक समुद्रस्थित औलेराड और गाथलेराड द्वीप स्वीडन के अधिकार में हैं । वेस्ट इराडीज में सेण्ट बर्थ लोमियो द्वीप स्वीडन के अधिकार मे है ।

लैपलेराड—यह देश स्वीडन के उत्तर पूर्व मे है और नाममात्र से स्वीडन और रूस के अधिकार मे है क्योंकि यह देश ऐसा गरीब है कि इस पर किसी का शासन करना आवश्यक नहीं । यहां के रहने वाले रैराडीयर के यूथों को लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते है और

उन का दूध और मांस इन का आहार है और चाम ड़ा इनका वस्त्र है ।

यूरोपीय रूस

इस के उत्तर में उत्तर महासागर, पूर्व में यूराल पर्वत, यूराल नदी और कास्पियन् झील, दक्षिण में काकेशसपर्वत कालासमुद्र, टर्की और आस्ट्रिया और पश्चिम में आस्ट्रिया, प्रशिया, बाल्टिक समुद्र और स्वीडन हैं ।

रूस का साम्राज्य यूरोपका आधा, एशिया के तृ से भी अधिक और उत्तर आमेरिका के कुछ अंश लेकर विस्तृत है ।

यूरोपीय रूस की भूमि प्रायः सर्वत्र ही समतल है केवल इसमें यूराल पर्वत, काकेशस पर्वत और लैपलेण्ड फिनलेण्ड और क्रिमिया में कोई एक छोटे २ पहाड़ हैं । इन्में से फिन्लैण्ड के पहाड़ों को वलडाई कहते हैं । इस देश के उत्तरभाग में जंगल और जलमय स्थान हैं, दक्षिण भाग में स्टेप नाम क प्रसिद्ध मरुभूमि है । यह मरुभूमि नीपर नदी के तीर से काले और कास्पियन समुद्र तीर होकर एशिया खण्ड तक विस्तृत है । इस का आकार सर्वत्र समान है और एकरूप रोगों से आच्छन्न है इस में कोई उच्चलता भी नहीं होती । शीतकाल में यह स्थान बरफ से आच्छन्न होता है और समय २ में प्रचण्डवायु बहती है उस समय यहां कोई जीव रह

नहीं सकता, ग्रीष्मकाल में भी यहां गरमी का बहुत प्रादुर्भाव है।

पूर्वोक्त वल्दाई पर्वतों से ये नदियें निकली हैं-पेटकोरा और डवीना उत्तर दिशा में जाके उत्तरमहासागर में गिरती हैं। नेवा दूना और नीमेन वालटिक सागर में गिरती हैं। निस्ट, बग, नीपर और डान नदियें दक्षिण में हैं। वाल्गा और इस की शाखा नदियें कास्पियन् झील के दक्षिण पूर्व में वाल्टिक समुद्र और उत्तरमहासागर के बीच बहुत झीलें हैं उन्मे से लडोगा ओनीगा, सेईमा और पीपस प्रधान हैं। वाल्टिक समुद्र में पेलण्ड, डेगो और ओसेल ये द्वीप हैं और उत्तरमहासागर में नोवा जेम्ला, वेगाच और स्पिट जबर्गेन ये द्वीप हैं। रूस का जल-वायु भिन्न २ प्रदेश में भिन्न २ प्रकार का है। समान अक्षरेखा में स्थित यूरोप के और देशों से इस में शीत और ग्रीष्म का प्रादुर्भाव है। इस के उत्तर स्थित लापलेण्ड देश में छे महीने शीत और छे महीने ग्रीष्मऋतु रहती है। हमारा एक वर्ष उन के एक दिन के तुल्य है। मालूम होता है कि शायद हिन्दूलोग इसको पितृलोक कहते थे। इस की थोडी निम्नभूमि में ग्रीष्मऋतु मे भी बरफ जमी रहती है।

रूस के केवल एक षष्ठांश भूमि में खेती होती है उत्तरभाग में राई, जव और ओट ये प्रधान हैं, मध्य और दक्षिण भाग में बहुत परिमाण से गेहूं उत्पन्न

होतीहै । वहां तमाकू, पट्ट और मक्की होती है । फलो में से यहां बेर, चरी, आड़ू बदाम, अनार, और तरबूजा होते हैं ।

रूस के मध्यभाग में बहुत विस्तीर्ण जंगल है उस में बहुत बड़े २ शहतीर की लकड़ियें मिलती हैं। इन के सिवाय यहां ऐसे भी वृक्ष हैं कि जिन्से तारपीन कातेल और तार निकलती हैं । यहां यूराल पर्वत से सोना, चांदी, ताम्बा, शीशा, और प्लैटिनम धातें निकलती हैं । फिनलैण्ड प्रदेश में ताम्बा और दस्ता मिलता है मध्यस्थल और दक्षिण भाग में लोहा बहुत उत्पन्न होता है ।

यहां गो, महिष, छाग, मेष और अश्वप्रभृति नाना प्रकार के चतुष्पद जन्तु हैं । आजकल मेरीनो और तिब्बती बकरा यहां पोषित होते हैं । लापलैण्ड में रैण्डीयर बहुत उत्पन्न होते हैं । वन मेरीछ बाघ, कालस्वार प्रभृति हरिण और बीवर आदिलोमश चतुष्पद जन्तु बहुत मिलते हैं । यहां की झील और नदियों में मत्स्य बहुत उत्पन्न होते हैं ।

रूस का क्षेत्रफल ५७०००० वर्गकोश है और अधिवासियों की संख्या ७२०००००० है । रूस के लोग विद्याभ्यास और सभ्यता में और सब यूरोपीयलोगों से कमहैं । यहां नानावंशीय और नानाभाषी लोग रहते हैं । यहां के समुदाय विद्यालय गवर्नमेण्ट के अधीन हैं । यहां की शासनप्रणाली राज-

तंत्र है अर्थात् एक अपरिमित क्षमता शाली सम्राट् समुदाय साम्राज्य पर प्रभुता करता है इस को जार भी कहती हैं। यहां परीक्षा से विना कोई पुस्तक नहीं छापा जाता।

प्रधान २ नगरों का वर्णन

आर्केञ्जल डूवीना नदी के संगमस्थान पर है। यह पहले एक प्रधान बन्दर था। सेन्टपीटसवर्ग रूस की राजधानी १७०३ में बड़े पीटर ने इसको बना या यह नीवा नदी के वांए किनारे पर स्थित है इस में नाना प्रकार के कारखाने और विस्तृत वाणिज्य हैं। इस नगर में इस के बनाने वाले की एक अच्छी प्रतिकृति स्थापित है। क्रन्स्टेट यह नगर सेन्टपीटर्सवर्ग से १० कोश दूरी पर है। और यह नीवा नदी के प्रवेश मार्ग मे है इसमे एक सुदृढ़ किला है रूसियों का वाल्टिक समुद्रस्थित युद्ध जहाजों का यह प्रधान विश्रामस्थान है। हेलसिंगफार्स यह नगर फिन्लेण्ड प्रदेश की राजधानी इस में एक बहुत दृढ़ किला है। विल्ना नगर बहुत विस्तृत वाणिज्य का स्थान है इसमें नेपल्स १८१२ में यहां फरासियों ने आक्रमण किया था। कीव नगर रूस के बीच यहां ही पहले खृष्ट धर्म्म का प्रचार हुआ इसलिये लोग इसे अब तक भी पवित्र समझते हैं। खरसन नगर जिस में १७९० ई॰ मे॰ प्रसिद्ध जनहितैषी हवर्ड साहेब की मृत्यु हुई ओडेसा यह

नगर १७९२ ई॰ में बसा और प्रधान वाणिज्य का स्थान है। क्रिमिया प्रदेश में सिम्फरपुल प्रधान नगर है। सिबस्तपुर और एक नगर है जहां १८५५ ई॰ में भयंकर युद्ध के पीछे अंगरेज और फरासीयों मिल कर अपना अधिकार विस्तार किया। नवईचार्कस्क यह नगर कसाक लोगों का प्रधान बास स्थान है। कार्कोव इस में एक विश्व विद्या लय है। ओरेल नगर में रूस के उत्तर और दक्षिण भागों के वाणिज्य का विनिमय होता है। केल्सूगा नगर में लोह, वस्त्र और चमड़े के कारखाने हैं तूला नगर बर्मिङ्हम नगर के तुल्य है। मस्को जो सेन्टपीटर्सबर्ग से ३९७ मील दक्षिण–पूर्व मे है रूस की प्रथम राजधानी था १८१२ ई॰ में जब फरासियों ने इस पर चढ़ाई की तो रूसियों ने इस को जलाया था यह नगर विस्तृत वाणिज्य और कारखानों का स्थान है, यहां अब तक भी प्राचीन रुईस लोगों की सन्तति बास करती हैं, यहां के गृह यद्यपि अच्छी रीति से निर्म्मित नहीं तथापि यह देखने में बहुत सुन्दर है, यहा क्रेमलिङ्ग नामक एक प्रसिद्ध राजप्रासाद है जिस के तोरण में ५९६०० मन का एक घण्टा लटकता है। नीज़नी नवगार्ड नगर में जूलाई से सेप्टेम्बर तक एक मेला होता है जिस में एशिया और यूरोप से अढ़ाई लाख मनुष्य आते है। काजन और सरारव नगर विस्तृत वाणिज्य के स्थान हैं आस्ट्रखान नगर वल्गा नदी के संगमस्थान से २२ कोस दूर पर है यहां मत्स्य और

अपर इन्हें का वाणिज्य बहुत है सर्केशिया प्रदेश रूस के दक्षिण-पूर्व सीमा में है यह देश एशिया और यूरोप के मध्यस्थित है यह काकेशस पर्वत के उत्तरमें कास्पियन् समुद्र से काले समुद्र तक विस्तृत है यहां के मनुष्य बहुत साहसी और सबल होते है और यहां की स्त्रियें बहुत सुन्दर होती हैं ।

पोलैण्ड – यह प्रदेश रूस और प्रूशिया के बीच मे है पहिले यह स्वाधीन था परन्तु गतशताब्द के अन्त में यह रूस, प्रूशिया और आस्ट्रिया के अधीन हुआ इस के प्रधान नगर वार्शा जो कि विस्चुला नदी के तीर में है पहले यह नगर पोलैण्ड की राजधानी था वार्सा के उत्तर में पुलटस्क नामक नगर है जहां १८०६ ई॰ में रूसियों का निपोलियन् के साथ युद्ध हुआ ।

प्रूशिया ॥

इस की पूर्वसीमा मे रूस और पोलैण्ड; दक्षिण मे आस्ट्रिया, सैक्सनी और छोटे २ जर्मन राज्य; पश्चिम मे फ्रान्स, वेल्जियम और हालैण्ड और उत्तर में है नार्वे, डेन्मार्क और बाल्टिक समुद्र है । प्रूशिया के पश्चिम प्रदेश पर्वत मय हैं अवशिष्ट भूमि निम्न और चौड़ी है । इसमें नीमेन, विस्चुला, ओडर वर्था एल्ब और राईन नदियें बहती हैं । सडेटिक पर्वत श्रेणी दक्षिण-पश्चिम से सैलिशिया तक विस्तृत है प्रूशिया के पश्चिमकी जलवायु स्वास्थ्यकर है पूर्व में शीत और ग्रीष्म इन दोनों का ही बहुत प्राबल्य होता है । मध्य में

ग्रीष्म ऋतु उतनी ही गरम होती है जितनी कि फ्रान्स के पश्चिम में और शीत ऋतु ऐसा शीतल होता है जैसा कि नार्वे के दक्षिण–पश्चिम में इसकी अधिक भूमि उर्वरा है परन्तु यहां रेती भूमि भी बहुत है और इसका ¼ अंश जंगलों से भरा हुआ है। शस्यों में से यहां राई, गेहूं, ओट, आलू, तमाकू और हाला होती हैं। कहीं २ सन् भी होती है। यहां वस्त्रों का कारखाना हैं लोह, ताम्बा और पीतल के द्रव्य और मही के बरतन और अन्य भी नाना प्रकार के यन्त्र यहां निर्म्मित होते हैं

प्रूशिया का राज्य तीन भागों में विभक्त है यथा पश्चिम, मध्य और पूर्व

प्रदेश	नगर	विशेषवार्त्ता
पोमेन	मेमल	यहां से शस्य और बडी २ लकडियें और २ देशों में भेजी जाती हैं
	टिलसिट	यहां १८०७ ई॰ में रूस के राजा पैलैक्जेण्डर प्रथम नियोलियन बहिले से लड़ा ॥
प्रीगाल	कनिङ्सबर्ग	यह प्रूशिया की प्रथम राजधानी था यहां मेडारिक जो ब्रेण्डिनबर्ग का सर्दार था, १७०१ ई॰ में प्रूशिया का राजा हुआ
	फ्रेडलैण्ड	यहां १८०७ में फरासीसियों ने रूसियों को पराजित किया
विश्चुला	डैनजिक और एल्बिंक	ये प्रधान बन्दर हैं

	ह्रुरून्	यहां १४७३ ई॰ में प्रसिद्ध ज्योतिषी कोपार्निकस्स का जन्म हुआ।
ओडर	स्टेटिन्न	यहां शस्य का बहुत वाणिज्य होता है
	फ्रैंकफोर्ट	यहां कपडों का कारखाना है और प्रत्येक वर्ष में तीन बेर मेला होता है।
	ब्रेस्ला	यहां पश्मी और कार्पास वस्त्रों के कारखाने हैं
एल्ब	मैगडिबर्ग	इस में एक बडा भारी किला है और यहां पशमीनो और चीनी बरतनों का वाणिज्य है
	विटनबर्ग	यहां १५१७ ई॰ में प्रथम समाजसंस्कार आरम्भ हुआ।
	हैली	यहां १६८४ ई॰ में हैंडल साहेब का जन्म हुआ यहां एक विश्वविद्यालय भी है।
	फ्रिस्लन	यहां १४८३ ई॰ में लूथर का जन्म हुआ।
	लूज़न	यहां गस्टावस्अडल्फस १६३२ ई॰ में पराजित हुआ
हैवल और स्प्री	ब्रैण्डन्बर्ग	प्राचीन राजधानी
	पोटसडैम्	यहां बहुत प्रासाद और बडे २ बराक हैं प्रूशिया की राजधानी यहां जितने कारखानें और विद्या की चर्चा होती है जर्मनी के किसी और नगर में इतने नहीं। यहां का विश्वविद्यालय १८१० ई॰ में स्थापित हुआ है
	बर्लिन्न	

		ओर पृथिवी में बडा प्रसिद्ध है क्योंकि राजाने यथेष्ट धनदान करके बड़े २ विद्वान् ओर विचक्षण लोगों को इसकी अध्यापना मे नियुक्त कियाहै । सोलेफटक को पार होकर इसनगर में प्रवेश होताहै
राईन	डसलडर्फ	यहां कारपस ओर रेशम के कारखाने हैं ।
	कोलन	यह प्राचीन नगर है ओर यहां अच्छा ओडीकलन प्रस्तुत होता है ओर यह बडा विस्तृत वाणिज्य स्थान है
	ऐचिनवा शेक्सला ेपिली	यहां सार्लिमन् का वास गृह था ओर यहां जर्मन सम्राट् — लोगों को राजतिलक मिलताथा ओर यहां १६६८ ओर १७४८ ई. में संधि हुई.
	मनस्टर	यहां १६४८ ई. मे वेस्टफेलिया की सन्धि हुई
	ऐरनब्रिट	
	स्टीन	यहां एक बडा प्रसिद्ध किला है
	मिराडन	इस के समीप ९ ई. में रोम की सैन्य जर्मनी से पराजित हुई ।

सम्प्रति प्रूशिया ओर फ्रान्स में जो युद्ध हुआ था उसमें प्रूशिया ने कई एक देश जीते परन्तु उनका अब तक कुछ निर्द्धारण नहीं हुआ।

प्रूशिया के लोगों का आचार व्यवहारादि जर्मन वालों की तरह है यहां के अधिवासियों की संख्या २३५००००० है । यहां विद्याशिक्षा में लोगों का बहुत अनुराग है। राजनियम के अनुसार यहां निखिल प्रजा को बालक काल में विद्याध्ययन करना पड़ता है जो लोग विद्याध्ययन का व्यय नहीं देसकते सर्कार से उन को

खरच मिलता है और यहां के राजनियमके अनुसा र समुदाय प्रजा को युद्धविद्या सीखनी पड़ती है य- हां बर्लिन, बन, ब्रेस्ला, हेली कनिंगसबर्ग और ग्रि फसवल्ड इन नगरों मे एक २ विश्वविद्यालय है ।

डेन्मार्क

इस के उत्तर में स्कागारक पूर्व में कारटीगाट सौराड और बाल्टिक समुद्र, दक्षिण में जर्मनी और पश्चि म में जर्मनमहासागर है । डेन्मार्कदेश प्रायः सर्व त्र समतल है इसकी पश्चिम उपकूल की भूमि द- लदल और बालुकामय है डेन्मार्कराज्य महादेशि- क और द्वैपिक इन दो प्रधान भागों में विभक्त है। महादेशिकभागविस्तीर्ण प्रायद्वीप है जो कि जर्म न के उत्तर से बराबर उत्तर की ओर जाकर स्को अन्त रीप में निःशेष हुआ । द्वैपिक भाग में शीलेराड हाईन, लालेराड फलस्टर, बरनह्म प्रभृति छोटे २ कई द्वीप हैं । इस की नदियों में हार्डउर नदी सब से बड़ी है यहां शीतका जितनाप्रादुर्भाव होना चा हिये उतना नहीं ग्रीष्मकाल के बिना और सब ऋ तुओं में यहां का जलवायु सजल और हिममय हो ता है । यहां गोई, जव, ओट, मटर आलू और तमा कू अधिक उत्पन्न होते हैं । यहां गो, अश्व भेड़, शूकर, और भैंसा प्रभृति नानाप्रकार के जन्तु हैं यहां का कुत्ता बुद्धि और शक्ति के लिये प्रसिद्ध है। डेन्मार्क के लोगों को डिनेमार कहते हैं ये लोग

धीर, बलवान् और विवेचक हैं इनकी सभ्यता सम्पूर्ण है ।

कोपन हेगन इस की राजधानी है और जीलेण्ड द्वीप के अन्तर्गत है इस में एक विश्वविद्यालय है और सुन्दर २ प्रासाद बहुत हैं ।

यद्यपि कोपनहेगन में एक अच्छा दृढ किला है तथापि १८०१ ई॰ में नैल्सन साहेबने इसपर अधिकार किया था गस्कील, ऐल्सीनर अल्बर्ग और ओडेन्स इस के प्रधान नगर हैं इन्में से टैास्किलनगर प्राचीन राजधानी था ऐल्सीनर नगर में जहाजों का महसूल लेते हैं । अल्बर्ग जटलेण्ड की राजधानी और ओडेन्स फूनन द्वीप की राजधानी है । महादेशिक विभाग मे ग्लेनेस्बर्ग और अल्टोना प्रधान बन्दर हैं । आइसलेण्ड द्वीप फैरो उपद्वीप, ग्रीनलेण्ड देशका पश्चिम उपकूल, कारिबट समुद्रीयद्वीपों मे सण्टाक्रुस और पश्चिम आफ्रिका के अन्तर्गत गीनी देश के समीपवर्ती कितने एक छोटे २ द्वीप ये सब विदेशीय अधिकार है ।

आइसलेण्ड एक बड़ा द्वीप है और भूमध्यस्थ अग्नि के जोर से उत्पन्न हुआ है इसका आकार बड़ा बन्धुर है । इस में प्रायः तीस ज्वालामुखी पर्वत हैं उन्में से हेकला अतिशय प्रसिद्ध है । यहां बहुत उष्ण प्रस्रवण भी हैं । इस देश का प्रधान नगर रैकाविक है ।

उत्तर जर्मन राज्य

इस में हैनोवर, उल्डेनवर्ग, मेकलन वर्ग स्क्वेरिन्, मेगलसवर्ग स्ट्लीड, फ्री-सिटीज़ आफ-ल्यूबेक, हेम्वर्ग, ब्रीमेन, ब्रन्सविक, ऐनहल्ट्यडेसउकोयन, ऐनहल्टवारनवर्ग, लीपी ऐस्कम्बर्ग, लीपीडिटमल्ड ये प्रदेश हैं।

हैनोवर के दक्षिण में हार्जनामक पर्वत श्रेणी है जिस में अच्छे २ सुहश्य स्थान हैं और बहुमूल्य खान हैं। अवशिष्ट सब प्रदेश समतल हैं और भूमि वालुकामय है। यहां की तीर भूमि बहुत निम्न है यहां एल्व, वेजर और एनसये तीन नदियें बहती हैं मेकलनवर्गस्क्वेरि और स्ट्लीन ये प्रदेश प्रशिया और होलस्टीन के बीच में है इस की राजधानी स्क्वेरिंग और विज़मर और टस्टकनामक दो प्रधान बन्दर हैं

फ्रीसिटीज-ल्यूबेक ट्रेवनदी के किनारे में एक प्राचीन नगर है। हेम्वर्ग एल्वे नदी के किनारे पर है यह बहुत वाणिज्यस्थान है। ब्रीमेन नगर वेसर नदी के किनारे पर है यह एक प्रसिद्ध बन्दर है यहां अमेरिका के लोग आकर वाणिज्य करते है और तमाकू का बहुत कारखाना है। ये सब नगर स्वाधीन हैं। १२४१ ई॰ में हेन्साकी सन्धि के द्वारा इन की स्वाधीनता हुई है।

हैनोवर—यह प्रदेश

जर्म्मन महासागर के तीरमे है और ऐल्बा और होले
गड के के बीच मे है । यह १८१४ ई॰ तक एक सामा
न्य सर्दार के अधीन था १८१५ से यह एक राज्य बना
और वर्त्तमान ब्रिटन के राजवंशीय हैनोवर से आये
हैं । १७१४ ई॰ मे १८३७ तक ब्रिटन और हैनोवर
एक राजा के अधीन थे उसके पीछे दोनो अलग२
होगये क्योंकि हैनोवर के राज नियम के अनुसार
स्त्री को राज्य नही मिलता । इस्का प्रधान नगर हैनो
वर है यह बड़ा विस्तृत वाणिज्य स्थान है और हा-
र्सेल् नामक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् का जन्म स्थान है
गटिंजेन नगर मे एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है औ
र प्रदेश का विषय कुछ जानने के योग्य नहीं ।

हालैराड

हालेराड को पहिले लोग निदर्लेराड कहतेथे १८१४
से इस का नाम हालेराड हुआ॰

इस की पूर्वसीमा हैनोवर, प्रूशिया, राईनिक; द-
क्षिण में बेल्जियम्; पश्चिम और उत्तर में जर्म्मन
महासागर ।

हालेराड अतिनिम्न और समतलदेश है स्थान२
में समुद्र खुल इस के भीतर दूरतक विस्तृत है । प-
हले समुद्र की जलवृद्धि से इस के अनेक अंश डूब
जाते परन्तु अब हालेराडवालों ने एक बन्ध निर्म्मा-
ण करके उस उपद्रव को वारण किया है । यहां
की प्रधान नदियों में रीन्, मास और शेल्ड है ।

यहां और बहुत कृत्रिम नदियें हैं । यहां के खली-जों में जवीडर्जी, लावरजी और डलार्ड वे प्रधान हैं। जवीडर्जी के सामने एक द्वीपश्रेणी है जिनमें से टेक्सिल प्रधान है । यहां समुद्र के समीप बहुत झीलें हैं परन्तु वे सब छोटी २ हैं । पहले डलार्ड-वे और जवीडर्जी भी झीलें थीं अब जर्मन महासा-गर में मिल गयी हैं । हालेण्ड के पश्चिम उपकूल में अन्तुश्च रेग दीख पड़ती है ।

हालेण्ड में बहुत जल है और कोई पर्वतादि नहिं इस लेये यहां समुद्रवायु सदा बहती है । आकाश सर्वदा सजल मेघ और कुज्झटिका से आच्छन्न २ शीत काल में बहुत नद नदियें जम जाती हैं यहां कारखाने बहुत नहीं परन्तु हर रोज वृद्धि पाते हैं यहां का वाणिज्य बहुत विस्तृत है । मत्स्य का वा-णिज्य यहां बहुत है । यहां के अधिवासियों में पशु पालन और दूध दही मक्खन आदि का व्यवसाय बहुत लोग करते हैं । यहां की खेतिओं में से गेहूं, सन, राई, मुंज, और तमाकू प्रधान हैं । हालेण्ड-वासियों को आलन्दाज वा डच कहते हैं । ये लोग अतिशय परिश्रमी, परिमितव्ययी, सीधे और साव धान हैं परन्तु इन को अहंकार बहुत है । ये लोग सभ्यों में भी गिने जाते हैं ।

हालेण्ड की राजधानी ऐम्स्टर्डम ऐम्स्टल नदी के तीर पर है । २०० बरस पहिले सारे यूरोप मेंयह

प्रसिद्ध वाणिज्य स्थान था परन्तु अब भी यह वा- णिज्य के लिये प्रसिद्ध है यह नगर एक उच्च भूमि में निर्मित हुआ है और इसके प्रवेश करने में ३०० पुल लंघ कर जाना पड़ता है

रटर्डम, हार्लेम, लीडें। अल्कमार, कैम्पडौ- न और डीहेल्डर ये सब प्रधान नगर हैं। इनों में

लीडेन नगर १५७३ ई॰ में स्पेनवालों से आक्रा- न्त हुआ उस समय स्त्रियें भी अस्त्र लेकर लड़ीं थीं उन स्त्रियों के सन्मान के लिये १५७५ में यहां एक विश्वविद्यालय स्थापित हुआ।

यहां आट्रेट और ग्रनिञ्जेन इन दो नगरों में भी एक २ विश्वविद्यालय है यहां जैराडम नामक एक नगर है जहां प्रसिद्ध रूसका राजा पीटर सूत्रध रोंका काम सीखने को आया था। हरन् नामक न गर में स्कोटेन्स नामक नाविक का जन्म हुआ जिस ने दक्षिण ऐमेरिका की दक्षिण सीमा आविष्कार क रके उसका नाम हरन् अन्तरीप रक्खा हालेण्ड का विदेशीय अधिकार भारतसागरीय द्वीपश्रेणियों में से जावा, मलक्का, बोर्निओ, सुमात्रा द्वीप का कुछ अं श, बांका और टार्नेट प्रभृति छोटे २ द्वीप।

आफ्रिका में गीनी उपकूल स्थित कई एक छोटे २ किले, दक्षिण आमेरिका में सुरीनम अर्थात् डच गाइना और कूराकव द्वीप, कारिब सागरीय द्वीप श्रेणियों में यूएन, आयर साबा, सेन्ट उस्टेसस॰

और सेन्ट मार्टीर्म्स का कुछ अंश ।

बेल्जियम

इस की उत्तर सीमा हालेण्ड; पूर्व में लिम्बर्ग और राइनिक प्रूशिया दक्षिण में फ्रान्स पश्चिम में जर्मन महासमुद्र । बेल्जियम का दक्षिण प्रान्त उच्च और बन्धुर उत्तरभाग समतल और समुद्रतल से निम्न । यहां भी बहुत लहरें आती हैं । पश्चिम में शील्ड नदी और पूर्व में मास नदी बहती है बेल्जियम में हालेण्ड की नाईं शीत का इतना प्रादुर्भाव नहीं है यहां की भूमि स्वभावतः उर्वरा नहीं परन्तु किसानों के परिश्रमों से इसकी ऐसी उर्वरता हुई है कि लोग इस को यूरोप का उद्यान कहते हैं यहां के शस्यों में से गेहूं, राई; पट, सन, तमाकू और शुक्र है यहां के बनों में ओक भूर्ज और आसप्रभृति अनेकप्रकार के वृक्ष होते हैं ।

यहां के खानिज द्रव्यों में से पत्थरी कोला बहुत परिमाण से उत्पन्न होता है और लोह ताम्बा शीशा गन्धक और फटकड़ी भी स्थान २ में मिलती है । यहां कारपेटवस्त्र और पशमीने के कारखाने भी हैं बेल्जियम के अधिवासियों को बेल्जियन कहते हैं ये लोग भी अतिशय परिश्रमी और शिल्पकुशल होते हैं ये लोग प्रत्यह अपने देश के वाणिज्य को बढ़ाते हैं इन की भाषा साधारणतः फ्रेञ्च है यहां विद्याशिक्षा का अच्छा बन्दोबस्त नहीं । इस की राजधानी

ब्रुसेलस सेन नदी के तीर मे है + यहां अच्छे मखमल गलीचे प्रस्तुत होते हैं ब्रुसेलस के दक्षिण में वाटर्लू नामक युद्धक्षेत्र है जिस में १८१५ ई॰ में अंग्रेजों ने निपोलियन् को जीता । इस के दक्षिण-पूर्व में रामीलीस नामक स्थान है जहां १७०६ ई॰ में मल्बराने जय पाई आण्टर्प, गेण्ट, ट्रुर्ने, मेक्लिन, लूवेन आल्लेस्ट ब्रुजेस, नामूर, मनस, चार्लीराय और लीज ये प्रधान नगर हैं ॥

इन में से ऐण्टर्प नगर पहिले यूरोप के उत्तर देशीय समस्त नगरों से प्रधान वाणिज्यस्थान था परन्तु १५७६ ई॰ और १५८५ ई॰ के स्पेनवालों के आक्रमण से इस का वाणिज्य कुछ घट गया है । तो भी बेलजियम् और नगरों से प्रधान वाणिज्य स्थान है यहां एक अच्छा किला है । गेण्ट नगर २६ द्वीपों मे बसा है यहां एक अच्छा गिरजाघर है और रुई के कारखाने हैं । ओडीनर्डे में १७०८ ई॰ में यूजीन से फ्रेन्चलोग पराजित हुए । टुर्ने मे गलीचों के कारखाने हैं और इस के समीप फोण्टनाय नामक स्थान है जहां १७४५ ई॰ में अंग्रेजलोग पराजित हुए थे । मेक्लिन नगर में गोटे के कारखाने हैं । लेवन नगर में पहिले एक विश्वविद्यालय था । लीज और नामूर नगर में लोहे के द्रव्य बहुत प्रस्तुत होते हैं

हालेण्ड और बेलजियम् १३६४ से १४७७ ई॰ तक बर्गण्डी के ड्यूकों के हाथ में रहे १४७७ ई॰ में आस्ट्रिया के राजा मेक्सिमिलियन ने बर्गण्डी की रानी मेरी को ब्याहके इन पर अधिकार पाया ॥

इस के पीछे उनका पुत्र फिलिप स्पेन की राजकुमारी जोआना को विवाहा। उस का पुत्र चार्लस ५ वां आस्ट्रिया, स्पेन और हालेण्ड, वेल्जियम का राजा हुआ उसके पीछे उसके पुत्र फिलिप दूसरे के समय डच लोग विद्रोही हुए परन्तु वेल्जियन लोग इस के आधीन थे। १८१५ ई॰ में वेल्जियन् लोग डचों से मिलगये और १८३० वर्त्तमान स्वतन्त्र राज्य स्थापन किया।

फ्रान्स

इस की उत्तर सीमा में नर्थ सिया प्रशिया बेल्जियम और इंग्लिश चैनल; पूर्व में सार्डीनिया स्विटजर्लैण्ड और बेडन, दक्षिण में भूमध्यस्थ सागर और स्पेन और पश्चिम में अटलाण्टिक महासागर है। फ्रान्स के पूर्व और दक्षिण-पश्चिम प्रान्त पर्वतों से आच्छन्न हैं इस का अभ्यन्तर भाग अवरन् और लाङ्गुड़ के प्रदेश को छोड़कर प्रायः सर्वत्र समतल है इसके सर्वोच्च पर्वतों में से पिरेनीज़ जो इसे स्पेन से पृथक् करता है। ऐल्पस् पर्वत दक्षिण-पूर्व में इटली से इस को विभक्त करता है। जूरा स्विट्जर्लैण्ड की सीमा में है। इन के सिवाय और भी इसमें छोटे २ पर्वत हैं। इस में राईन, मोसल म्यूस, स्कार्ट वा शील्ड, सोम्ड, सीन और इसकी सहायक नदियें, योने औब, मार्नी और आइस लायर और इसकी सहायक नदियें यथा सोन, सायन इत्यादि नदियें हैं। यहां की खलीजों में गाईकेलस बे, बिस्के की खाड़ी और लाइन्स की खाड़ी प्रधान हैं। फ्रान्स की जलवायु शुष्क, आमोद कर और स्वास्थ्यजनक है इसके पश्चिम भाग में शीतातप समान है, दक्षिण भाग में गर्मी अधिक है

और उत्तर पूर्व भाग में शीत अधिक है फ्रान्स की भूमि प्रायः सर्वत्र ही उर्वरा है फ्रान्स में नाना प्रकार के शस्य उत्पन्न होते हैं यहां द्राक्षा, भुट्टा, नारङ्गी और जैतफल बहुत उत्पन्न होतेहैं । फ्रान्समें मद्य बहुत प्रस्तुत होती है । इसमें जंगल बहुत देखने में आते हैं । और २ यूरोप के देशों में पत्थरी कोलों की आगसे रसोई होती है परन्तु फ्रान्स में लकड़ी से ।

फ्रान्स में रेशम, पशम, और कारपस वस्त्रों के कारखाने बहुत हैं । खनिजों में से यहां लोह पत्थरी कोला और लून बहुत होता है । इस का क्षेत्र फल २०१३०० वर्गकोश है फ्रान्स के रहनेवाले को फरासीस कहते है । फरासीस लोग साहसी परिश्रमी और स्थल युद्ध में निपुण होते हैं ये लोग बहुत शिल्पविद्या और लौकिक आचार व्यवहार में विशेष अभिज्ञ हैं ये लोग स्त्रियों का विशेष सन्मान करते है और सम्पूर्ण सभ्य हैं । फ्रान्स की लोकसंख्या ३८०००००० है । फ्रान्स की शिक्षाप्रणाली बहुत अच्छी है यहां पेरिस, पायेटियर्स, टूलोज़ और मान्टपेलियर इनचार नगरों में एक २ विश्वविद्यालय है । इन के सिवाय और भी १६ प्रधान विद्यालय हैं । कहते हैं कि फ्रान्स में पुस्तक और संवादपत्र मिलकर प्रतिवर्ष २४०००००० लाख मुद्रित होते हैं । फ्रान्स में पहिले राजतन्त्र शासन प्रणाली थी परन्तु सम्प्रति प्रूशिया के साथ युद्ध होने के पीछे यहां साधारणतन्त्र प्रणाली प्रच-

लित हुई हैं परन्तु यह प्रणाली भी सर्वसम्मत नहीं हुई । पहले फ्रान्स देश ३४ प्रदेशों में विभक्त था परन्तु १७८९ ई॰ के विद्रोह के पीछे यह ८६ प्रदेशों में विभक्त हुआ परन्तु अब प्रूशिया के युद्ध में इस के कुछ अंश प्रूशिया के अधिकार में गये ।

स्ट्रेसबर्ग— राईन नदी के तीर में बसा है यह नगर दृढ़ कोट के भीतर है इस में विस्तृत वाणिज्य है और एक प्रसिद्ध गिरजाघर है यह पहले जर्मनों का प्रधान नगर था १४३६ ई॰ में यहां गटनबर्ग ने मुद्रायन्त्र के लिये प्रयत्न किया इस के दक्षिण में कोलमार मलहूसन दो नगर हैं जिनमें लोहे का वाणिज्य बहुत है मोज़ल नदी के तीरस्थित मेट्ज़नगर और नानसी नगरों में बहुत वस्त्र प्रस्तुत होते हैं वालांसीन, कैम्ब्रे, लील और मार्टो नगरों में कपड़े प्रस्तुत होते हैं । डंकर्क फ्रान्स के उत्तर प्रान्तस्थित एक स्थान बन्दर यह १६५८ से १६६२ ई॰ तक अंग्रेजों के अधिकार में था । कैले— डोवर के मुहाने पर बसा है यह १३४७ ई॰ से १५५८ ई॰ तक अंग्रेजों के अधिकार में रहा बोलन नगर में बहुत मत्स्य का व्यवसाय होता है । ब्रेस्ट और चार्बर्ग इंग्लिश सागर तीर में है उनों से चेर्बर्ग बन्दर में बहुत फरासीसियों के युद्ध के जहाज स्थित हैं। एबेविल नगर के ९ मील उत्तर में क्रेसी नामक स्थान है जहां १३४६ ई॰ में एडवर्ड ३ य ने फरासीसियों को पराजित किया ।

पेमिन्कोर्ट ऐबिविल् के ९ कोस उत्तर-पूर्व मे है ज-
हां १४१५ ई॰ में हेनेरी पांचवे ने फरासीसियों पर ज-
यलाभ किया। हेवर नगर सीन नदी के तीर मे है
और एक प्रधान वाणिज्य स्थान है । रूएन नगर भी
सीननदी के तीर मे है । यहां विजयी विलियम् मरग-
या था । पेरिस नगर फ्रान्स की राजधानी है और सी-
ननदी के उभय तीर में बसा है यूरोप महादेश मे इ-
तने बडे लम्बे और बहुत मनुष्य युक्त नाम् नगर
नहीं है इस में बहुत सुरम्य अट्टालिका और नाना
प्रकार के विद्यालय हैं ।

यहां अच्छी २ पोशाक और अन्यान्य विलासोपयो-
गी द्रव्य प्रस्तुत होते हैं । इस के समीप सेण्ट डेनी
स, सेवीर और वर्सैल ये तीन नगर हैं । वर्सैल नग
र प्रस्तवरा, राजप्रासाद और उद्यान के लिये प्रसि-
द्ध है । ट्रैस नगर मोजे और वस्त्र के व्यवसाय के लि
ये प्रसिद्ध है । सीन नदी की सहायक नदियों के कि-
नारे में रीम्स नगर कार्पसवस्त्र के लिये प्रसिद्ध है प-
हिले यहां फ्रान्स के राजा राजतिलक लेते थे । की-
एटन नगर जहां स्पेन के राजा फिलिप दूसरेने १५५७
ई॰ में फ्रान्सवालों को पराजित किया । ब्रेस्ट, लारिये-
एट, ढसफोर्ट और रसल ये नगर अट्लाण्टिक महा-
सागर के तीरस्थित हैं और इन में युद्ध जहाज ठहरते
हैं । वेननगर में बन्दूक की संगीन पहिले पहिल बनी
थी इसलिये उसका नाम बैनेट है ।

लायर नदी के तीर में नान्टस, अङ्गर्स, टूर्स, आर्लीन्स और सेण्ट इटायन ये नगर हैं इन्में से नैण्टिस नगर में जहाज बनते हैं और विस्तृत विदेशीय वाणिज्य है यहां १५९८ ई॰ में हेनरी चौथे ने प्रोटेस्टेण्टों के अनुकूल आज्ञा प्रचार किया था। टूर्स नगर में ७३२ ई॰ में चार्लस मार्टन ने फरासिसों को पराजित कियाथा ।

आफ्रिका

यह एक महा देश है जो और महा देशों की अपेक्षा बहुधा अयन मण्डल के बीच है परन्तु इसका उत्तर और दक्षिण अंश उष्ण समकोटि मण्डल के अन्तर्गत है। आफ्रिका में कोई प्रदेश नही दीख पड़ता कि जिस में शीत के कारण बहुत मनुष्यों की गुञ्जाइश न होसकी हो जैसा कि एशिया के उत्तर में है। यद्यपि आफ्रिका परिमाण में एशिया के दोतिहाई के बराबर है तोभी इसका जलपवन ऐसा है कि इस में एशिया के बराबर मनुष्यों की बसति होसकी थी, किन्तु नही है– इस में दो कारण हैं। एक तो इस मे बड़ी उजाड़ और जंगल बहुत हैं, दूसरा कारण यह है कि इस के रहने वाले बड़े असभ्य हैं और इस में किसी तरह का सुशासन नहीं यही मनुष्यसंख्या की वृद्धि के न होने में कारण है ।

भूपृष्ठ पर जितने महादेश हैं उन सब से आफ्रिका उष्ण है । प्रायः इस का सम्पूर्ण अंश 'सहारा' नामी विस्तृत मरुस्थल से व्याप्त है. यह 'सहारा' क्षेत्र १० उत्तर अक्षांश से २० उत्तर अक्षांश तक विस्तृत है । इस का मध्यस्थल एक माल क्षेत्र है जिसकी ऊंचाई समुद्र-तल से २००० फुट है उसके चारों ओर की भूमि बहुत ही निम्न है; यहां तक कि उत्तर और पश्चिम में समुद्र-तल से भी निम्नभूमि है । सहारा का समुदय अंश रेत (रेतला) नहीं इसके अधिक अंश पत्थर से ढने

हुए हैं । इस में किसी प्रकार का हृद वा जलाशय नहीं दीख पड़ता । और यहां कभी वर्षा नहीं होती । इस में बहुत स्थान २ पर एक फ़वारा पानी का बड़ी सड़क के पास २ दीख पड़ता है इस कारण वणिक् लोग अपने ऊंटों की सहायता से एक फ़वारे से दूसरे तक जाकर किसी तरह इस पर से गुज़रते हैं । सहारा क्षेत्र बहुत ही गर्म हैं विशेष करके निम्न अंश समुद्र से अतिशय उच्च है, इस से ऐसा भी अनुमान किया जाता है कि यहां से समुद्र अल्पदिन हुए सूख गया होगा, ।

आफ़्रिका का मध्यभाग अर्थात् इसका जो अंश उत्तर १० अक्षांश रेखा से दक्षिण १० अक्षांश रेखा तक विस्तृत है उसके विषय में अब तक बहुत थोड़ा जाना गया है । यह अंश सहारे से सम्पूर्ण भिन्न प्रकृति का है इस में पानी की बहुत सुगमता है । आफ़्रिका के मध्यदेशों में से जिस २ स्थान पर भ्रमणकारी अंग्रेज़ लोग गए हैं वे सब स्थान उर्वर और समृद्ध हैं और उनमें मनुष्यों की वसति भी बहुत निविड़ है । मध्य आफ़्रिका के पूर्व और दक्षिणपूर्व देशों में असंख्य बड़े २ झील और नदियें हैं और उसी स्थान में जिन २ से नीलनदी निकली है वे जलाशय स्थित हैं । नीलनदी आफ़्रिका के पूर्व में दक्षिण से उत्तर में बहती है । कांगो नाम और एक नदी मध्य में पूर्व से पश्चिम में बहती है और निरक्षरेखा से पांच या छः अंश को

हरी पर है । जेम्ब सी नामतीसरी नदी इस के दक्षिण पूर्व में बहती है । आफ्रिका के जोअंश उष्णमण्डल के बाहर हैं जैसाकि (१) केप-कलोनी जो इस के दक्षिण में है और (२) बारबारियकूल जो इसके उत्तर में हैं । (३) इन्में जलपवन बहुत अच्छी हैं परन्तु वर्षा बहुत थोड़ी होती है ।

आफ्रिका में सब से ऊंचे जो अबतक विदित हुए हैं पर्वत ये हैं — किलिमञ्जरो जिस्की ऊंचाई २१,००० फ़ुट है । यह पर्वत श्रेणी जञ्जिबार उपकूलसे बहुत दूर नहीं है और उस की समानान्तराल है । इस पर्वत श्रेणी का किलिमीनजरो नामशिखर जो २१,०००- ऊंचा यद्यपि निरक्षरेखा के समीप है तो भी इस के अग्रभाग सदैव बरफ से ढपे रहते हैं । प्राचीन भूगोलवेत्ता ओं ने इसे चन्द्रपर्वत कहा है । यह पर्वत येबिसीनिया के उत्तर में है । अटलासनामक पर्वतश्रेणी जिस्का विषय बहुत प्राचीनकाल से विदित हुआ है, बारबारी उपकूल के समीप और समानान्तराल है । इस्के कई एक शिखर १५,००० फ़ुट ऊंचे हैं । कमेरूनपर्वत गिनीके समीप है इस की ऊंचाई १५,००० फ़ुट है । यह सम्भव है कि यह पर्वतश्रेणी नाइजर और कांगो नदी के स्रोतोंके बीच जो अपवाहिका है वहांतक चली गई होगी परन्तु आफरिकाके इस अंशको अबतक किसीने देखा नहीं । इसलिये कोई जानता नहीं कि वहां ऐसा उच्चपर्वत है या नहीं ।

आफ्रिका की नीलनदी बहुत प्रसिद्ध है । आजकल बहुत लोग इसे पृथ्वी की समुदय नदियों में से बड़ी कहते हैं । यह पहले कहागया है कि यह नदी आफ्रिका के पूर्व एक सीमा से दूसरी सीमातक बहती है । इसका विस्तार २,०००,००० वर्ग मील है । इस का प्रवाह किसी स्थल में बहुत वेग से चलता है । किसी स्थल में उच्च स्थान से गिर रहा है और किसी स्थल में आवर्त्तमय है इसलिये बहुत दिनतक इस का उत्पत्तिस्थान विदित नहीं हुआ — ऐसा कि पहिले समय में नीलनदी का मूल ढूंढ़ना असम्भव बातों में गिना जाता था, परन्तु बीस बरस के अन्दर अंग्रेजी भ्रमणकारी बेकर, स्पेक और लिविङ्गस्टोन साहिबों ने इसके उत्पत्तिस्थान के निर्णय में बहुत पता लगाया ।

नीलनदी का निम्न प्रवाह मिसर और न्यूबिया के बीच में से चलता है । प्रायः प्रति वर्ष जून महीने से सितम्बर तक इन देशों में इसनदी का प्लावन होता है जिस्से यहां की भूमि उर्वरा होती है । पूर्व और मध्य आफ्रिका में वर्षाऋतु में बहुत पानी बरसता है जिस कारण नदी बढ़कर इन देशों को प्लावित करती हैं ।

मिसरदेश की दक्षिणसीमा और न्यूबिया में नीलनदी के प्रसिद्ध जलप्रपात लक्षित होते हैं । उभयपार्श्वस्थित पर्वतों से नदी के प्रवाह अधिक संकोचित होने से ऐसे प्रपात उत्पन्न हुए हैं ।

न्यूबिया के दक्षिण खारतमनामक स्थान में यह नील-

नदी और दो शाखा नदियों से सङ्गत हुई है; उनमेंसे एक का नाम "ह्वाइट नील" जो दक्षिण पूर्व दिशा से प्रवाहित होकर एबूसीनिया होकर आती है। दूसरी को "ह्वाइट नील" कहते हैं। यह नदी दक्षिण दिशा से आती है। यथार्थ में ह्वाइट नील अधिकतर चौड़ी है इसलिये प्राचीन समय में लोग इसी को ही प्रकृत(असली) नीलनदी समझते थे, परन्तु इसका उत्पत्ति स्थान बहुत समीप में है। ह्वाइटनील का उत्पत्तिस्थान निरक्षरेखा के दक्षिण बहुत दूर में है। अब इस बात का निश्चय हुआ है कि यह ह्वाइटनील विक्टोरिया निन्ज़ा और एलबर्ट निन्ज़ा नामक दो विस्तृत झीलों से निकली है। जबतक इन झीलों में गिरती हुई नदियों के विषय में विशेष कुछ नहीं जाना जावे तब तक इन्हें को ही नीलनदी का मूल समझना चाहिए।

विक्टोरिया निन्ज़ा झील के दक्षिण और नैर्ऋत कोने की ओर ५०० सात सौ मील दूरीपर और जेञ्जिबार की एक अक्षांशरेखा में एक बड़ी विस्तृत झील है, जिसे टैङ्गानिका झील वा उजिजि समुद्र भी कहते हैं। उसझील वा समुद्र के पूर्व तीर पर उजिजि नाम एक शहर है। इस नगर से कभी २ दास और हाथी के दांत से बने हुए वस्तु बेचने के लिये जेञ्जिबार में भेजे जाते हैं। यहां से जेञ्जिबार पहुंचने में पांच या छः महीने लगते हैं। टैङ्गानिका झील से लसोवानामी एक बड़ी नदी निकलती है। थोड़े दिन हुए यह नदी आविष्कृत हुई।

इसके आविष्कार होने पर यह सोचा गया कि शायद लुलावा नदि विक्टोरिया निन्जा झील में गिरती हुई होगी और टैङ्गानियका झील नीलनदी का मूल होगी। परन्तु इस बात का अच्छी तरह से निर्णय हुआ है कि, लुलावानदी आफ्रिका के मध्यदेशों में होकर पश्चिम की ओर वहती है और पीछे से कङ्गो नाम से पुकारी जाती है। इसलिये नील और कङ्गो नदी की वाटरशेड अबूवाहिकाभूमि अवश्य ही टैङ्गानिया और निन्जा नामदोनों झीलों के बीच में होगी।

टैङ्गानिका झील के पश्चिम के ओर थोड़ी ही दूरपर जेम्बसी नाम एक बड़ी नदी का मुख दीख पड़ता है। यह नदी कङ्गो नदी की विपरीत दिशा अर्थात् दक्षिण से पूर्व दिशा में वह कर भारतमहासागर में मडागास्कर द्वीप के सामने गिरती है।

आधुनिक भ्रमणकारी लैफ्टेनेएट केमारनने कहा है कि कङ्गो नदी जो पश्चिम की ओर वह कर अट्लाण्टिक महासागर में गिरती है और जेम्बसीनदी जो पूर्व दिशामें वहकर भारतमहासागर में गिरती है इन दोनों नदियों के बीच वाटरशेडवा अबूवाहिकाभूमि इतनी थोड़ी है कि जिस साल जलप्लावन बहुत बढ़के होता तब उन के मध्य स्थितभूमि प्रायः अदृश्य होजाती और उन्होंने यह भी कहा कि यदि इनके बीच बीसमील लम्बी एक कनाल वा प्रणाली बनाई जावे तो इन दोनों नदियों में सदाकाल के लिये नावसे जाने आने का मार्ग होसक्ता है।

जैम्बेसीनगर में विक्टोरियाफाल्सनामी जो जलप्रयान है वह पृथिवी के समुदय जलप्रयानों से बड़ा और चमत्कारी है और आमेरिकास्थित नाइयाग्राफाल्स नाम से प्रसिद्ध जलप्रयानों से अधिकतर सुदृश्य है।

पश्चिम आफ्रिका की बड़ी प्रसिद्ध और कङ्गो छोड़ के सब से बड़ी नदी नाइजर है जिसका 'वेसिन्' अर्थात् खोन सहाराम्रु के दक्षिण और गिनि की खाड़ी के उत्तर में है। इसकी गति बहुत वक्र है इसलिये यह भिन्न२ देशों में भिन्न२ नामों से पुकारी जाती है। मध्य आफ्रिकास्थित टिम्बकटु के समीप यह नदी जलिबा नाम से प्रसिद्ध है और समुद्र के समीप कवारा वा कोयारा नाम से प्रसिद्ध है। यह जिस देश के बीच से बहती है वह देश समृद्ध, ऊर्वर, विविधशस्य से पूर्ण और जनाकीर्ण है परन्तु वह देश यूरोपवासियों के लिये अच्छा नहीं, बहुत पीड़ा कर है। इस नदी के किनारे पर रहने वाले नीग्रो लोग नीग्रोजाति के आदर्शस्वरूप हैं इन्में नीग्रोजाति के सम्पूर्ण लक्षण मिलते हैं।

आफ्रिका की पश्चिम सीमापर सिनीगाल, गैम्बिया और राइयो ग्राण्ड ये तीन बड़ी नदियें हैं। इनके बीच सिनिगैम्बिया नामी ऊर्वर प्रदेश है। इस देश की प्रकृति नाइजर नदी के तीरस्थित देशों के समान है। इस देश में यूरोपीय लोगों की बहुत वसतियें हैं परन्तु वहां यूरोपीय लोग प्रायः ताप से मरजाते हैं।

आफ्रिका के दक्षिण में आरेञ्ज नाम से प्रसिद्ध एक बड़ी नदी है। इस नदी के स्रोत में अधिक करके सोने की कनियां दीख पड़ती हैं और इसी प्रधान कारन नदी वाल के स्रोत में बड़े २ हीरक खण्ड भी थोड़े दिन से आविष्कृत हुए हैं।

इवोंक विक्टोरिया निन्जा अलबर्ट निन्जा और टैङ्गानिका झीलों के सिवाय अफ्रीका में और भी बड़ी २ झीलें आविष्कृत हुई हैं। जैसा उत्तर आफ्रीका रेती और पत्थरी भूमि से पूर्ण है ऐसा मध्य और दक्षिण आफ्रीका की भूमि उर्वर और सजल है। नैयासा झील जिस की लम्बाई २०० मील और चौड़ाई ५० मील है, जेम्बेसी नदी से मिली हुई है। इसके किनारे पर मनुष्यों की बसति बहुत घनी है और दासवाणिज्य का यही प्रधान स्थान है। उत्तमाशा अन्तरीप-केप आफ-गुड होप के समीप गामी नाम से प्रसिद्ध और एक बड़ी झील है।

ऊपर कही गई झीलें तीस बरस के अन्दर २ आविष्कृत हुई हैं। पहिले समय आफ्रीका में केवल एक ही झील विदित थी जो चांद का सार नाम से प्रसिद्ध है यह झील नाइजर नदी से मिली हुई है और सहारा मरु के दक्षिण में है।

आफ्रिका नीग्रो या काफ्रि जातीय मनुष्यों का आदिम वासस्थान है। इस जाति के मनुष्यों का वर्ण और आंखें सम्पूर्ण काली हैं। केश काले और पशम की

नाई हैं। नाक मोटा और चपटा है, सिर लम्ब और सं-
कुचित है। ललाट स्फीत होता है और ओंठ बहुत
मोटे होते हैं।

सहारा मरु से न्यूबिया के दक्षिण समुद्र देशों
में नानाप्रकार के नीग्रो लोग वास करते हैं। केपका-
लोनी और दक्षिण आफ्रिका में जो काफ्रीजातीय म-
नुष्य वास करते हैं, उन के आकारादि नीग्रोजाती-
य मनुष्यों से बहुत मिलते हैं। परन्तु साधारणतःवे
लोग उन से कुछ सुरूप और योद्धा होते हैं। उन दे-
शों मे हटेण्टटनामी और एक जातीय मनुष्य भी दी-
ख पड़ते हैं। इन का आकार और मनोवृत्ति ऐसे कु-
त्सित हैं कि मनुष्य समाज में उपमा नहीं मिलती। आ-
फ्रिका के पूर्वप्रान्त, जो अरब के आमने सामने हैं, व-
हां और ऐबीसीनिया के अग्निकोण में स्थित देशों में
'समालि' नाम से प्रसिद्ध एक जातीय मनुष्य वास
करते हैं। यद्यपि इन्का आकार आदि नीग्रो जातीय
मनुष्यों से बहुत भिन्न है, तौ भी वे उन्हीं की शाखामें
गिने जाते हैं।

उत्तर आफ्रिका, बार्बेरीप्रदेश मिसर, न्यूबिया और
ऐबीसीनिया इन देशों में नानाजातीय मनुष्यों की ब-
सति है। उन्में से ककेसियान्तर्गत सेमेटिक जातीय
मनुष्य ही अधिक हैं। वे आरबी और यहूदियों से ब-
हुत सादृश्य रखते हैं। यह अनुमान होताहै कि यहां
के आदिम निवासी लोग बर्बेर जातीय थे, क्योंकि उन

की संख्या आजतक भी अधिक दीख पड़ती है। इन दि-
नों में प्राचीन बर्बर भाषा के खुदे हुए अक्षर पढ़े गये
हैं। बर्बर जातीय मनुष्यों की बसति के कारण देश
का नाम बार्बरी हुआ। आल्जीरिया में इन बर्बरों को
काबिल कहते हैं। उत्तर आफ्रिका में अरबी लोगों
की संख्या अधिक देखी जाती है। वे सब उन मुसल-
मानों के वंश में उत्पन्न हुए हैं जो अरब से इस देश
को जीतने के लिए आये थे। उन देशों में अरबी भाषा
का व्यवहार बहुत है। मुअर नाम से प्रसिद्ध मनुष्य
मिश्रजातीय हैं अर्थात् इन्में से कोई २ तो बर्बर वा प्राची-
न निवासियों के वंश में उत्पन्न हुए और कोई २ इर्वोक्त
अरबियों के वंश में से उत्पन्न हुए। मिसर देश में जो
कप्ट नामी मनुष्यजाती वास करती है, वह मिसर के
पुराने निवासियों की सन्तति है। वे लोग एक तरह के
ईसाई हैं। इन्में यह एक आश्चर्य है कि इन्के पूर्व पु-
रुषों की प्रतिकृति, जैसी मिसर के प्राचीन कीर्तिस्त-
म्भों में दीख पड़ती है, इनके आकार भी ऐसे हैं।

ऐबीसीनिया के निवासियों में से कोई तो सैमेटिक
जाति का है और बर्बर लोगों से बहुत सादृश्य रखते हैं
और अवशिष्ट जो "गल" नाम से प्रसिद्ध हैं वे सोमालि
जातीय मनुष्यों की नाईं नेग्रोसे सादृश्य रखते हैं।

आफ्रिका में ऐसे बड़े २ बन्यजीव दीख पड़ते हैं कि
उन के सजातीय जीव और किसी देश में नहीं दीख प-
ड़ते। और यह भी स्थिर हुआ है कि ऐसे बहुत बन्यजीव

हैं जो पृथिवी के और २ स्थानों में अधिक दीख पड़ते हैं परन्तु आफ्रिका में नहीं हैं, जैसा कि आफ्रिका में किसी प्रकार का रीछ नहीं होता। तो यह निश्चय है कि जितने बड़े २ वन्य जीव आफ्रिका में दीख पड़ते हैं उतने और किसी देश में नहीं। यहां यह भी कहना उचित है कि आफ्रिका में केवल भिन्न २ प्रकार के ही ऐसे जीव नहीं रहते बल्कि, उन्की संख्या भी अधिक है। किसी २ समय दक्षिण आफ्रिका में कृष्णसार मृग के झुण्ड, जिस में २०,००० एकत्र मिले होते हैं, आते रूप देखे जाते हैं। विशेषकर्के जब अनावृष्टि के कारण ये अपने पूर्व्वका सस्थान छोड़के दूसरे स्थान में जाते हैं।

आफ्रिका के प्रायः सर्वत्र ही हाथी बहुत दीख पड़ते हैं। केवल उत्तर प्रान्त में नहीं। ये हाथी भारतवर्ष के हाथियों के बराबर हैं केवल दांत और मस्तै में कुछ भिन्नता रखते हैं। पहले रोमन लोग यहां से हाथी लेजाकर युद्ध के लिये तैयार करते थे। क्योंकि उस समय तोप का व्यवहार नहीं था। उस समय भूमध्यसागर के दक्षिण उपकूल में हाथी बहुत परिमाण में रहते थे।

आफ्रिका में गण्डार चार प्रकार के हैं जिन्में से दो काले और दो श्वेत वर्ण के हैं, उन्का आकार हिंदुस्तान के गण्डारों से बहुत मिलता है। सहारा के दक्षिण इन्की संख्या बहुत है। ये जीव निर्जनप्रिय हैं। सिन्धु घोटक, जो एक प्रकार के मोटे चाम वाले बड़े जीव हैं अब

केवल आफ्रिकामें ही दीख पड़ते हैं । इन्का आका-र और परिमाण गदहों के तुल्य है, भिन्नता यह है कि इन्के नाकों से सींग नहीं निकलते, । और नाक बहुत चौड़ा होता है । ये जीव सर्वदा दश बीस एकत्र रहते हैं । मिसर से केपकालोनी तक जितनी नदियें हैं । उन सभों में वे दीख पड़ते हैं । वे उद्भिद खाकर प्राणनिर्वाह करते हैं; और किसी प्रकार के अपराध के बिना किसी की हानि नहीं करते । पश्चिम आफ्रि-का में दूसरे प्रकार के सिन्धुघोटक दीख पड़ते हैं । प्राचीन समय में समुदय यूरप और एशिया के पश्चि-म देशों में सिन्धुघोटक बहुत थे ।

आफ्रिका में बड़े २ शूकर हैं जिन्के दांत बहुत स-रल होते हैं । यहां हिराक्सनामी एक प्रकार के छो-टे जीव देख पड़ते हैं जिन्की लम्बाई दो फुट से कम होती है, इन्के दांत और पाद शूकर के बराबर हैं पर-न्तु इन्की चेष्टा खरगोश की नाईं होती है ।

आफ्रिका में अच्छे सुन्दर गधे मिलते हैं । दक्षिण आफ्रिका में जाब्रानामक जीव के यूथ बहुत मिलते हैं। जाब्रा देखने में एक बड़े गधे की नाईं है, परन्तु इसका स-मुदय शरीर बाघ की नाईं काला और श्वेत रोमरेखा से व्याप्त है । जाब्रा बहुत ही शीघ्रगामी है और बहुत दुः-ख से पालित होता है । आफ्रिका में और दो प्रकार के वन्य जीव दीख पड़ते हैं जिन्को ज्यालाजी (भूप्रकृतिवि-द्या) वालों ने जाब्रा कहा है परन्तु असल में गधे से उन

की बहुत भिन्नता नहीं दीख पड़ती ।

उत्तर आफ्रिका में गृहपालित जन्तुओं में से घोड़े ही अधिक देखे जाते हैं जिन्में से बहुत अरबी घोड़ों के तुल्य होते हैं ।

केपकालोनी से भूमध्यस्थसागरपर्य्यन्त समुदय आफ्रिकाखण्ड में सिंह सदैव देखे जाते हैं । थोड़े दिन हुए कि अंग्रेज़ों ने केपकलोनी स्थित अपने अधिकार से समुदय सिंह निकाल दिये हैं ।

आफ्रिका में व्याघ्र नहीं है । यहां चीता वनबिडाल और तज्जातीय छोटे २ जीव बहुत हैं । गीदड़, भेड़िया आदि जीव भी बहुत हैं ।

आफ्रिका में साधारण हरिण नहीं दीखपड़ता परन्तु यहां जिराफ नाम एकप्रकार का बड़ा जीव है जिस्का आकार हरिण से बहुत साहृश्य रखता है । जिराफ़्का शरीर एक लम्बे हरिण की नाईं है । भिन्नता यह है कि उस्का सम्मुख भाग ऊंचा और पिछला भाग नीचा होता है । इस्का सिर भी हरिण की नाईं है परन्तु कद बहुत लम्बी है, इतनी कि यह बीस फ़ुट ऊंचे वृक्ष से भी पत्र खासक्ता है । यह जीव बहुत धीर, और हरिण की नाईं स्वभाववाला भी है । नूबिया से केप कलोनी तक यह जीव रहता है विशेषकरके पूर्व आफ्रिका में इन्की संख्या बहुत है । पृथ्वी पर इस्के बराबर और कोई जीव देखने में नहीं आता

ऊंट, जिसे मरु का जहाज कहते हैं, इस्का बहुता-

व समुदय उत्तर आफ्रिका में होता है; और पश्चिम के द्वीपों (कनेरी) में भी इसका व्यवहार होता है। ऊंट की यह एक विचित्र शक्ति है कि यह पानी पीने से बिना ही मरुभूमिस्थित कठिन कंटकवाले जंगलों के पत्रादि खाकर बहुत दिन चलसक्ता है।

यह प्रचण्ड सूर्य्य की किरणों से उत्तप्त बालू और पत्थरों में अनायास से जाता है।

कृष्णसारमृग, भारतवर्ष के केवल शुष्क प्रदेशों में दीख पड़ते हैं, परन्तु आफ्रिका इनका प्रधान वासस्थान है। आफ्रिका में इस जाति के मृग असंख्य और नाना प्रकार के दीख पड़ते हैं। प्राकृतेतिहास में अनभिज्ञ लोग कालासार वा कृष्णसार को हरिणजातीय समझते हैं, किन्तु असल में वे एक प्रकार के छाग जातीय हैं। आफ्रिका में एलाण्ड नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार का काला सारमृग है जो कि बैल के बराबर होता है। कालासार मृग के यूथ विशेषकर के दक्षिण आफ्रिका में बहुत दीख पड़ते हैं।

छाग, भेड़ा और बैल आफ्रिका के पशुओं में से प्रधान हैं। केप में महिष ऐसे भयङ्कर हैं कि उन को कोई भी नहिं पालसक्ता। वे ऐसे बलवान् होते हैं कि सिंह से लड़सक्ते हैं।

आफ्रिका में बांदर नानाजाति के और असंख्य हैं परन्तु उनमें से हम दोजातीय बांदरोंका विशेष वर्णन करेंगे, जो कि मनुष्य से अधिक सादृश्य रखते हैं। उनमें

से चिम्पेंज़िनामक एक प्रकार का बांदर है उस्का रंग काला होता है । यह पांच फ़ुट ऊंचा होता है । आफ्रिका के पश्चिम उपकूल और गबून नदी के किनारे पर वे असंख्य दीख पड़ते हैं । इन्की बुद्धि असाधारण है । दूसरे को गोरिला कहते हैं जो मनुष्य से निहायत सादृश्य रखता है । इस का बल असीम है। काङ्गोनदी के किनारे पर इस जाति के बंदर बहुत हैं । गिनी में मैण्ड्रिलनामी एक प्रकार का बांदर है । जिस्का मुंह कुत्ते के बराबर है और चिबुक की हड्डी नील रङ्ग की है, और नासिका लाल है । हिन्दुस्तान में इस प्रकार के बंदरों को कभी २ खिलाने के लिये लाते हैं ।

आफ्रिका में पक्षी भी बहुत बड़े २ और नाना जाति के हैं । उन्में से उष्ट्रपक्षी बड़ा प्रसिद्ध है । यह ४ से ६ फ़ुट तक ऊंचा होता है । यह उड नहीं सक्ता, परन्तु ऐसा दौड़ता है कि बड़े वेगवाले घोड़े से भी पकड़ा नहीं जाता। पेरिस नगर में धनीलोग लड़कों की गाड़ी चलाने के लिए इसजाति के पक्षी को पालते हैं । इस्का पर भी बहुत काम में आता है ।

आफ्रिका में नानाजातीय बड़े २ सर्प देखे जाते हैं, उनों में कोई २ विषवाला और कोई विष से रहित होता है । आफ्रिका में असंख्य और नानाप्रकार के कीड़े पतङ्ग और सरीसृप देखे जाते हैं । आफ्रिका में एक प्रकार की ऐसी मक्खी है कि जिस्के डसने से घोड़े बैल आदि गृहपालित जीव प्रायः मर जाते हैं ।

आफ्रिका में कितने प्रकारके उद्भिज्ज हैं ये अब तक सम्पूर्ण विदित नहीं हुए और जो विदित हुए उन्की प्रकृति भी ठीक २ नहीं जानीगई ।

आफ्रिका की दक्षिण सीमा छोड़कर और समुदय स्थानों में बादल उत्पन्न होते हैं । आफ्रिका के दक्षिण भाग में तालवृक्ष अधिक होते हैं । आफ्रिका के उत्तर में खर्जूर का वृक्ष बहुत होताहै और वहां के रहने वालों के खाद्यों में यही प्रधान है । आफ्रिका में अयनमण्डल के बीच जितने देश हैं, उन सबों में प्रायः हिन्दुस्तान के समुदय वृक्ष अधिक परिमाण से बोए जाते हैं । और आमली और रूई के वृक्ष प्रायः सर्वत्र ही दृष्ट होते हैं । उत्तर आफ्रिका में भूमध्यस्थ समुद्र के किनारे पर यूरप के दक्षिणदेशस्थित वृक्षसमुदय मिलते हैं । आफ्रिका के दक्षिण अयनमण्डल के बहिःस्थित देशों में अनेक प्रकारके फूलों के वृक्ष मिलते हैं जो कि हिन्दुस्तान में नहीं दीख पड़ते । यहां गोपादयनाम से प्रसिद्ध एक प्रकारका वृक्ष है जिस्का नीर, दूध के सदृश होताहै । इन्के सिवाय यहां और भी नानाविध वृक्ष उत्पन्न होते हैं । जैसा मेहगनि, सैण्डन्, बाबल इत्यादि

पहिले पहिल आफ्रिका में दास व्यापार विस्तृत था परन्तु आजकल अंग्रेजों कीकृपा से बहुत कम हो गया ।

आफ्रिका में सोना, ताम्बा, हीरा आदि बहुत प्रकार

के खनिज धातु मिलते हैं ।

आफ्रिका के प्रदेशों में से केवल समुद्र के किनारे, पर स्थित कोई एक प्रदेश और द्वीपों की अवस्था कुछ विदित हुई है जिन का नाम नीचे, उत्तर पश्चिम दिशा से प्रारम्भ कर, क्रम से लिखा जाता है ।

(१) मोराक्को (२) अलजीरिया (३) ट्यूनिस, त्रिपोली बारका (ये तीन देश बार्बरीप्रदेश नाम से प्रसिद्ध हैं)। (४) मिसर, न्यूबिया, (५) ऐबिसीनिया (६) जेञ्जीबार (७) मोजांबिकी (८) केप कालोनी (९) बेंगर्फ़ला, कांगो, लाआङ्गो (१०) गीनी (११) आफ्रीका द्वीपसमूह ।

मोराक्को

यह प्रदेश अटलांटिक समुद्र के किनारे से अटलास पर्वत तक विस्तृत है । यह देश उर्वर और मनुष्यों से भरा है । यहां की मनुष्यसंख्या ४,०००,००० के लगभग है, जिन्मे से मुअर, अरबी और बर्बर जाति मिले हैं । इसकी प्रधान राजधानी मोराक्को जिस्मे ५०,००० मनुष्य रहते हैं । इस देश में चावल, अंगूर, गेहूं, रुई, तमाकू इत्यादि बहुत उत्पन्न होते हैं । यहां के राजा को सुल्तान कहते हैं । यह बड़ा यथेच्छाचारी है । यहां अटलास पर्वत १०,००० फ़ुट ऊंचा है और उसपर सुन्दर वन शोभायमान है । इस पर्वत के दक्षिण पूर्व अंश क्रम से नीचे होकर सहारा के बालू में मिलगये हैं। इसकी उपत्यका में खजूर वृक्ष बहुत हैं, । इसलिये इसे खजूर की भूमि कहते हैं ।

अलजीरिया

यह राज्य मोराक्को के पूर्व में है । प्राचीन काल मे यह देश न्यूमिडिया नाम से प्रसिद्ध था । ईस्टीय सोलहवीं सदी में तुरुक का सुल्तान इसे अपने अधिकार मे लाया ।

१८३० ई॰ तक यह राज्य मुसल्मानों के अधिकार में रहा । उस समय मुसलमान पाशा इस्पर शासन कर्ता रहा । तब इसकी अवस्था शोचनीय रही और यहां के लोग समीप के समुद्र में डाकू मारते रहे । १८३० ई॰ में सौभाग्य के वश से यह देश फरांसीस के अधिकार में आया । इसकी राजधानी अलजियर्स जो देखने में यूरोपीय नगरों के सदृश है । इसमें और चार प्रधान नगर हैं । यथा—ब्याने, ट्रिमिजन, बेन और कन्सटान्टिया ।

इस देश का प्राकृतिक आकार मोराक्को जैसा है । भेद यह है कि मोराक्को के पश्चिम में समुद्र है और इसके उत्तर में । अलजीरिया के दक्षिण में अटलास पर्वत की श्रेणी चली आती है और उसपर खजूर वृक्ष की श्रेणी तडागी की नाईं शोभा पाती है । आजकल अलजीरिया में २००,००० यूरोपीय मनुष्य वास करते हैं जिनके बीच फरांसीसों की संख्या अधिक है । और यहां ३,०००,००० मुसलमान मनुष्यों का वास है । इसकी राजधानी में ६०,००० मनुष्य वास करते हैं । अब फरांसीस लोगों के परिश्रम से यहां पर कई

और पशम के कारखानों ने बहुत उन्नति पाई है और नमक की खाने निकाली गई हैं ।

ट्यूनिस, त्रिपोली और बारका

ट्यूनिस—अलजीरिया के पूर्व में है । यह देश एक प्रायद्वीप है । इस्की उत्तरसीमा 'वन' अन्तर सिसिली-द्वीप से ४५ कोस के बीच में है । यह देश मुसलमान-के अधिकार में है और इस्के स्वामी को 'को वे' कहते हैं ।

मुसलमान अधिकारों में से यहां की शासनप्रणाली बहुत अच्छी है । इस्का राजा नाममात्र कुस्तुन्तुनिया के सुल्तान के अधीन है परन्तु वास्तव में यह स्वाधीन है । यहां के रहने वालें की संख्या २,०००,००० हैं । यहांभी अटलास पर्वतश्रेणी खजूर वृक्षों से आच्छन्न होकर विस्तृतहुई है । इस्की राजधानी 'ट्यूनिस' नाम से प्रसिद्ध है । उस के समीप फिनिसीय राज्य का प्रधान नगर कार्थेज का खण्ड दीख पड़ता है ।

त्रिपोली—ट्यूनिस के पूर्व में है । बारका इसराज्य के अन्तर्गत है । यह देश देखने में ऊपर कहे हुए तीन राज्यों से सम्पूर्ण भिन्न है क्योंकि यहां अटलासपर्वत सहारे के रेतों में मिल गया है । इसलिये त्रिपोली और बारका राज्यसैतवालुका समुद्रवत् प्रतीयमानहोता है । और अरब के लोग इन्हें श्वेतसमुद्र कहते हैं । इनमें खेती बहुत थोड़ी होती है । ये दोराज्य किसी एक मुसलमान पाशाके अधीनहैं । इसकी राजधानी त्रिपोली है ।

मिसर और न्यूबिया

मिसर देश नील नदी के दोनों पुलिन पर स्थित है और चारों ओर पर्वत से वेष्टित है । इस्की चौड़ाई सर्वत्र प्रायः सात मील है । इस के सीमन्तपर्वत किसी स्थल में नदी से ११ ग्यारह मील दूरी पर हैं और किसी स्थल में नदीतट निहायत समीपवर्त्ति है । मिसर का जो खण्ड नील नदी के पश्चिम किनारे पर है उसमें बड़े २ शहर बसे हुए हैं । इस्के उत्तर में भूमध्यस्थसागर, पूर्व में स्वेज का मुहाना और लालसमुद्र दक्षिण में न्यूबिया और पश्चिम में लिबिया और बारका । हर साल नदी के प्रवाह से समुदय देश प्लावित होने का कारण क्षेत्रसमुदय कृषि के उपयोगी होते हैं । इस लिये इस देश को 'नदीमातृका' कहते हैं । यहां वर्षा नहीं होती ॥

मानचित्र वा नक्शे में मिसरदेश की चौड़ाई सात मील से अधिक देख पड़ती है परन्तु समुदय देश मनुष्य का वासोपयोगी नहीं है । नील नदी की संकीर्ण (कम चौड़ी) । पुलिनभूमि और छोटे २ ओएसिसनाम से प्रसिद्ध क्षेत्रों के सिवाय समुदय मिसरदेश बालुका से पूर्ण मरुभूमि है ।

मरुभूमि के बीच जो दूर्वा दल श्यामल, शस्यपूर्ण ऊर्वर क्षेत्र दृष्ट होते हैं, उन्हीं को 'ओएसिस' कहते हैं । समुद्र के बीच द्वीप सकल जैसे शोभित होते हैं मरुभूमि के बीच ओएसिस भी वैसे ही हैं । उन ओएसिस क्षेत्रों

में से 'सिवोया' बहुत प्रसिद्ध है । यह क्षेत्र नील नदी के तीर पर स्थित 'बेनिसाउयफ' नगर से १३८ कोस पश्चिम में है । यहां जुपिटर आमान नामक देव का एक मन्दिर था ।

नूबिया, मिसर की दक्षिण सीमा से ऐबीसीनिया तक विस्तृत है । यह देश मिसर के अधिपति खेदिव के अधीन में है यहां नीलनदी दो पर्वतों के बीच बड़े वेग से बहती है । मिसर और नूबिया के बीच एक बड़ा जल प्रपात है । यही प्रथम प्रपात है । और इसी प्रपात से उन की भाषा भिन्न हुई है । क्योंकि मिसर के लोग अरबी, भाषा बोलते हैं और नूबिया के लोग वर्बरी भाषा बोलते हैं । नूबिया के बीच पांचवें जलप्रपात तक नील नदी एक रूप से बहती है, और यहां भी थोड़ी भूमि मनुष्य के वासोपयोगी और खेती के योग्य है ।

यूरोप के ऐतिहासिकों के मतमें पृथिवी में एकमात्र मिसरदेश के इतिहास ही बहुत प्राचीन काल से मिलते हैं । इस्से ३,००० वर्ष पहिले के इतिहास अद्यापि वर्त्तमान हैं । उस प्राचीनकाल में इस राज्य का प्रताप बड़ा प्रबल था । और उसी समय बड़े २ मन्दिर और पिरामीड समुदाय इस देश में बने थे, जिस्के खण्ड अबतक विद्यमान हैं । इन पिरामीडों में से कोई २ त्रिकोण, कोई चतुष्कोण, कोई २ इस्से भी अधिक कोणविशिष्ट हैं । वे सब हस्तिशुण्ड की नाईं क्रमशः सूक्ष्म होकर उत्थित हुए हैं । वे ऊंचे स्तम्भ बड़े २ पत्थरों से बने हुए हैं । मिसर के अधिप-

ति को खेदिव कहते हैं । यह खेदिव नाममात्र से कुस्त-न्तुनिया के सुल्तान के अधीन है परन्तु वास्तव से यह सम्पूर्ण स्वाधीन है ।

मिसर में नानाजातीय मनुष्यों की वसति है । उन्में से अरब, कप्ट, तुरक्क, यहूदी और वारबर ये ही प्राचीन अधिवासी हैं । वे सब मुसलमान धर्म मानते हैं । यहां अपरजातीयमनुष्य यथा अंग्रेज, फरांसीस और जर्मनप्रभृति वाणिज्यादि कार्य्य के लिये बसे हैं । मिसर में मनुष्यसंख्या ४,०००,००० और नूबिया में ३,०००,००० । मिसर देशीयों के अवयव अरब वालों की नाईं हैं और इन दोनों देशों के मनुष्य हीं अधिक करके इन्द्रिय के अधीन होते हैं ।

कुछ दिन हुए कि मिसर के खेदिव ने फरांसीस इञ्जिनीयरों के द्वारा स्वेज को काट कर मुहाना बनाया था। जिस से जहाजों के जाने आने में बहुत सुगमता हुई ।

मिसर की राजधानी कैरोनगर जो नील नदी के पूर्व किनारे पर वसा हुआ है । यह नगर आफ्रिका के समुदय नगरों में से विस्तृत है । यहां ३५०,००० मनुष्यों का वास है । यहां इतनी बड़ी २ मसजिदें देखी जाती हैं कि जिन्के समान पृथिवी में और कहीं नहीं । सिकन्द्रिया मिसर का एक प्रधान नगर और बंदर है । यह नगर नील नदी के मुख पर स्थित है । इसमें २०००,००० मनुष्य रहते हैं । इस नगर को बड़े सिकन्दर ने २००० बरस हुए बनाया था । २ यह नगर सो बरस तक

पृथिवी के प्रधान नगरों में से गिनाजाताथा। इसमें 'क्लियो पैट्राका निडेल' और 'पम्पि का पिलर' नामक दो बड़े स्तम्भ हैं। यहां से स्वेजतक एक रेल की सड़क भी बनी है। और स्वेज से कैरो तक दूसरी रेल की सड़क भी बनी है। इनके सिवाय सम्पूर्ण आफ्रिका में और कहीं रेल नहीं है। केवल केप कलोनी में एक छोटी सी सड़क है। मिसर में डामियेटा रोसेटा सायूत और स्वेज़ ये सब नगर भी बड़े प्रसिद्ध हैं।

न्यूबिया की राजधानी खार्तुम इसिमबाकोका इम्बुल और सेनारप्रभृति और भी प्रधान नगर हैं न्यूबिया अब मिसराधिप की अधीनता में आया है

मिसर और न्यूबिया इन दोनों देशों में ग्रीष्म बड़ा है और दोनों में ही एक प्रकार के शस्य उत्पन्न होते हैं।

एबीसीनिया

यह न्यूबिया के दक्षिण और लाल समुद्र के दक्षिण पश्चिम कोण में है। ऐबीसीनिया एक अति ऊंची अधित्यका में स्थित है। इसके चारों ओर इतने ऊंचे पर्वत हैं कि उनके शिखरों पर सदा ही बरफ जमी रहती है। ऐबीसीनिया उच्चभूमि है इसलिये इसकी प्रकृति मिसर और न्यूबिया से सम्पूर्ण विभिन्न है। यहां वैशाख से आश्विन तक वृष्टि बहुत होती है जो वृष्टि नील नदी के बढ़ने का हेतु है।

ऐबीसीनिया में भी नानाजातीय मनुष्य वास करते हैं। इसके प्राचीन अधिवासियों का आकार यूरोपीयों से बहुत सादृश्य रखता है। मनुष्यवंश निर्णय करने वाले पण्डित लोग कहते हैं कि, ऐबीसीनिया के प्राचीन अधिवासी लोग फारसकी खाड़ी के तीर से यहां आए होंगे। और वे यह भी कहते हैं कि वे लोग ही आफ्रिका में सबसे पहिले सभ्य हुए। और मिस्र के लोगों ने उनसे सभ्यता सीखी। परन्तु आज कल इस देश में किसी प्रकार की सभ्यता का चिन्ह नहीं देखा जाता। जब रोमसाम्राज्य नष्ट होकर कुस्तनतुनिया में साम्राज्य स्थापित हुआ, तब ऐबीसीनिया के लोग खृष्टधर्म में दीक्षित हुए। अब तक भी यहां के लोग ईसाई हैं। उन के अतिरिक्त यहां अरब के मुसलमान, यहूदी और नीग्रोलोग रहते हैं। १८६७ ई॰ में ऐबीसीनिया के राजा ने अपनी कितनी एक अंग्रेजी प्रजाको कैद किया था तब लार्ड नेपियर की अधीनता में अंग्रेजी सैन्य इस पर चढ़ाई के लिये भेजा गया। उसी साल इसका राजा अंग्रेजों से लड़कर मर गया और समुद्य झगड़ा भी मिट गया परन्तु उसी दिन से यहां कोई निश्चित राजा नहीं और यह देश अंग्रेजों के अधीन है। ऐबीसीनिया में मनुष्य संख्या ४,०००,००० है।

ऐबीसीनिया में झीलें बहुत हैं। उनमें से बहर जाना वा डेम्बिया झील बहुत प्रसिद्ध है। इस ऐबी-

सीनियादेश को हवश भी कहते हैं ।

ज़ैंज़िबार

यह देश निरक्षरेखा पर और एक मुसलमान सुल्तान के अधीन है । पहिले यह दासव्यवसाय का एक प्रधान विपणिस्वरूप था । यहां से दासलोग अरब में भेजे जाते थे । यहां का उपकूल बहुत उष्ण और आर्द्र है । यह देश समुद्र के किनारे से क्रम से ऊंचा होकर अन्त में २०,००० फुट उच्च पर्वतरूप से परिणत हुआ है । पृथिवी में इसके सदृश सुन्दर प्रकृति का देश और नहीं परन्तु इसके अधिवासियों के दोष से यह बहुत हीनावस्था में है ।

मोज़ाम्बिकी

यह देश ज़ैंज़िबार के दक्षिण में है और इसकी प्रकृति और आकार भी ज़ैंज़िबार की नाईं अर्थात् उपकूलभाग उष्ण और आर्द्र है । इसमें पहिले पोर्त्तुगीज़ लोगों का अधिकार बहुत था परन्तु अब बहुत थोड़ा होगया । उनके अधिकार में अब तक भी दास का वाणिज्य चला आता है ॥

दक्षिण आफ्रिका और केपकलोनी आदि ।

आफ्रिका की दक्षिण सीमा में वृष्टि नहीं होती इसलिये यह प्रदेश बड़ा शुष्क है । आफ्रिका के दक्षिण प्रान्त से समुद्रतीर से पश्चिम की ओर ३२० कोस जाने पर एक खाड़ी देखी जाती है, जिसको डेल्गोविस की खाड़ी कहते हैं । कल्पित रेखा मान कर भूगोल वेत्ताओं ने दक्षिण

आफ्रिका की उत्तर सीमा निश्चित की है। दक्षिण आफ्रिका में यद्यपि ओरेञ्ज आदि नदियें नकशे में लिखी गई हैं तोभी यहां सदैव अनावृष्टि की सम्भावना रहती है। यहां की जल पवन उष्ण है। यहां गेहूं, दाख और अपर यूरोपीय फल भी उत्पन्न होसकते हैं। दक्षिण आफ्रिका में केप कालोनी और नेटल ये दो प्रदेश प्रसिद्ध हैं।

केपकालोनी— यह प्रदेश ओरेञ्ज नदी के दक्षिण से दक्षिण आफ्रिका की दक्षिण सीमा तक विस्तृत है। जब बहुत से मनुष्य इकट्ठे होकर एक देश से दूसरे देश में जाकर बसते हैं उसे हिन्दी में उपनिवेश और अंग्रेजी में कलोनी कहते हैं। पहिले डच वा ओलन्दाज लोगों ने आफ्रिका के इस प्रान्त पर आकर कालोनी अर्थात् उपनिवेश का स्थापन किया था इसलिये इस प्रदेश का नाम कालोनी है। और प्रसिद्ध उत्तमाशा अन्तरीप (केप आफ गुडहोप) इसके अन्तर्गत है इसलिये इस स्थान को केप कालोनी कहते हैं क्यों कि अंग्रेजी में अन्तरीप को केप कहते हैं। हिन्दी में इस स्थान को अन्तरीप उपनिवेश कहा जा सकता है।

१८०६ ई० से यह स्थान अंग्रेजों के अधिकार में आया। यहां अब तक भी बहुत हबशी लोग वास करते हैं। यहां के हबशी लोग देखने में बहुत सुन्दर हैं। कोई २ दीर्घाकार बड़े बल शाली हैं। १००,०००

श्वेत मनुष्य रहते हैं। यहां के आदिम अधिवासियों को हटेण्ट कहते हैं। वे लोग काले और देखने में चीनदेशीयों की नाईं होते हैं। परन्तु यहां के यूरपियों के अत्याचार से इन की संख्या आजकल बहुत कम होगई है। केपकालोनी में १०,०००,००० भेड़ें और बैल ७००,००० इतने हैं। यहां का प्रधान नगर केप टौन है जिस में २५००० मनुष्य रहते हैं।

केप कालोनी के आस पास और छोटे २ उपनिवेश भी स्थापित किए गये जिनमें से नेटल प्रधान है। नेटल काफ्रियादेश में स्थित है। इसमें ५०,००० यूरोपीय और ३५०,००० काफ्रीलोग रहते हैं। सम्प्रति यहां बहुत हीरे की खानें आविष्कृत हुई हैं। नेटल की जल वायु अच्छी है। यहां रूई, इक्षु काफी, गेंहु और बुट्टा उत्तमरूप से उत्पन्न होते हैं।

१८७९ में यहां के देशियों से अंग्रेजों की लड़ाई प्रारम्भ हुई जिस में फरासीस सम्राट का एकमात्र पुत्र मारा गया। इन के सिवाय और समुदय उपनिवेश स्थान बहुत छोटे २ हैं। मिकालेराडबेच नामक स्थान अब अंग्रेजी गवर्नमेंटके अधीनहुआहै

वें टूला कांगो, लांगो, गो।

सहारा मरु के वायुकोण से लेकर आयाफ्रिसकी खाड़ी तक विस्तृत अटलांटिक समुद्र के उपकूल भाग को पश्चिम आफ्रिका कहते हैं॥ इस पश्चिम आफ्रिका के दो अंश हैं (१) सिनिगेम्बिया अ-

र्यात् जिस्के बीच सेनिगाल और गेम्बिया नदी बह- ती है। दूसरे भाग को गिनि कहते हैं। यह गिनि भी दो अंश में विभक्त हुई। एक दक्षिण गिनि दूस- री उत्तर गिनि। इनमें से दक्षिण गिनि के अन्तर्गत क्रम से ऊपर तीन प्रदेश हैं बेंगू ला, कांगो और लोंगो अंगो। इनतीन प्रदेशों को पहिले पोर्तुगीज ने अधिकार में लाये परन्तु अब इनके अधिकार में केवल दोतीन छोटे २ शहर और दोतीन वाणिज्योपयोगी स्थान हैं जो परस्पर दूरवर्ती हैं। उन्के व्या- पारों में से कोई न्यायानुगत है, कोई न्यायविरुद्ध है जैसा दास व्यवसाय इत्यादि।

ये सब देश अतिशय उष्ण हैं। यहां का पवन सजल है और भूमि बहुत ऊर्वर है, परन्तु यहां य- द्यपि पोर्तुगीज़ लोग २५० वर्ष तक राज्य करते हैं तो भी कुछ उन्नति नहीं दीख पड़ती।

गिनि उपकूल
वा
उत्तर गिनि।

यह उपकूलभाग २,००० मील विस्तृत है और स- र्पकुण्डल की नांई वक्राकृति है। लोग समझते हैं कि इस्का सम्पूर्ण अंश अंग्रेजों के अधिकार में है पर- न्तु वास्तव में ऐसा नहीं। केवल इस के अन्तर्गत क- ई एक भिन्न २ देशों में अंग्रेजोंका अधिकार है। इस के अन्तर्गत सिराल्लियोन, दासोपकूल, आशान्टि,

उहोमि, देनिन और वियाफ्रा ये प्रदेश हैं। इनमें से सिरालियोन सब से प्रधान है और इसमें ५०,००० मनुष्य रहते हैं। इंगलगड से इस उपकूल का वाणिज्य चलता है विशेष करके नारिकेल तैल का।

इस उपकूल में लिब्रिया नामक स्थान बडा प्रसिद्ध है। यह देश सिरालियन और केप ग्राम के मध्य में है। यह देश स्वाधीन है और यहां की राजनीति भी स्वाधीनतन्त्र है। आमेरिका से छुडाए हुए नीग्रो (दास) लोग यहां भेजे जाते हैं। यहां उन को भेजने के तात्पर्य्य दो हैं। पहिला कि वे लोग अपनी पैतृक भूमि में आकर वास करें, दूसरा कि इनके द्वारा आफ्रिका में सभ्यता का विस्तार हो। क्योंकि दासता से छुडाए हुए नीग्रोलोगों में से बहुत से सुशिक्षित और न्यायपरायण होते हैं। यह स्थान १८४९ ई॰ में स्थापित किया गया, परन्तु इतने अल्पकाल में इसकी उन्नति अधिक हुई देख कर इसके चारों ओर के लोग इसकी अधीनता में रहना चाहते हैं। आजकल यहां की मनुष्यसंख्या ७२०,००० है, जिनमें से ९९००० आमेरिका से छुडाए नीग्रो दास हैं। इसके प्रधान नगर का नाम मन्रोभिया है।

लिब्रिया के पूर्व ओर गिनि की खाडी के उत्तर में स्थित उपकूल को स्वर्णोपकूल (गोल्डकोष्ट) कहते हैं। इसके अन्तर्गत दो स्वाधीन नीग्रोराज्य हैं। और दोनों ही अधिक असभ्यावस्था में हैं। इनमें से एक आ-

आशान्टी राज्य जिसका प्रधान नगर 'कोमासी' है सन् ए ७३ में इसपर अंग्रेजों ने चढ़ाई की और इसके प्रधान नगर को जला दिया। दूसरा डहोमि जिसका प्रधान नगर अबोमि है। यह इसलिये प्रसिद्ध है कि यहां के राजा के दो हजार सशस्त्र स्त्री शरीर रक्षक हैं, जिन को आफ्रिका में आमेजन (योद्धास्त्री) कहते हैं।

सूदनराज्य

आफ्रिका के मध्य में सूदनराज्य है। यहां के रहनेवाले इसे टक्रू कहते हैं। यूरोपीय लोग इसे सूदन वा नेग्रासिया कहते हैं। इसके उत्तर में सहारा, पूर्व में मिसर आदिदेश, दक्षिण में चंद्रपर्वत और पश्चिम में सिनिगाम्बिया और उत्तरगिनि है। इस में काफ्रिजातीय लोग रहते हैं। सूदन में साकाटू, टिम्बकटू, फराड्डा, बुसा, कोना, कुका और सिकोवे प्रधान नगर हैं। यहां की जलपवन बड़ी उष्ण है। और यहां ग्रीष्म और वर्षा ये दो ऋतु बड़ी प्रधान हैं।

आफ्रिकाद्वीपसमूह

आफ्रिका के समीप जितने द्वीप हैं वे सब प्रायः छोटाकारहैं। उनमें से मेडागास्कर बड़ा है। यह द्वीप ब्रिटन से भी विस्तृत है और उस से दुगुने मनुष्य यहां रह सक्ते हैं, किसी २ भूगोल में इसकी लम्बाई ३६० कोस और चौड़ाई १९० कोस लिखी है।

यह पृथ्वी के समुदय प्रसिद्ध द्वीपों में गिनाजाता है । यह द्वीप सम्पूर्णरूप से स्वदेशीय के अधिकार में है । यहां के प्राचीन रहनेवाले नीग्रोजातीय हैं और होवस जातीयमनुष्य जो मालयवंशीयों से बहुत सादृश्य रखते हैं, यहां पर राज्य करते हैं । यहां के मनुष्यों की संख्या ५,०००,००० है । इस की उत्तर सीमा से दक्षिण सीमा तक विस्तृत एक पर्वत है जिसकी ऊंचाई १०,००० फुट है । इस में अनेक प्रकार की खेती होती है । यहां बहुतेरे वृक्ष और पशु ऐसे हैं कि जो और देश में नहीं दीख पड़ते । इसका प्रधान नगर टैनेनैरिवो वा आमाटेव ।

मैडागास्कर के समीप ही मरिसस और बोरबों नाम दो लघु द्वीप हैं । उनमें से मरिसस अंग्रेजों के अधिकार में है और बोरबों फरासीसों के अधिकार में है । मरिसस पर्वताकीर्ण और बन्धुर है । इसमें ३,०००,००० लोग रहते हैं । और यहां के औपनिवेशिक लोग चीनी कारखाना करते हैं । बंगाले से यहां बहुत कुलीलोग और उनके खाने के लिये चावल भेजे जाते हैं, और इसलिये यह द्वीप लघु होकर भी कलकत्ते में बहुत प्रसिद्ध है । मरिसस और बोरबों ये दोनों ही देखने में बहुत सुंदर हैं दोनों ही ऊर्वर है । बोरबों में एक ज्वालामुखी पर्वत है जिससे प्रायः सर्वदाही अग्नि निकलती है । मरिसस में आवलसमभूति बहुमूल्य वृक्ष उत्पन्न होते हैं ।

केप वर्डद्वीपसमूह—ये द्वीप पोर्तुगीज़ों के अधिकार में हैं । यहाँ गर्मी बहुत होती है इसलिये यहां खेती नहीं होती । यहां से लवण और छागचर्म और देशों में भेजे जाते हैं । मैकेरोसेनीय द्वीपसमूह जिसके अन्तर्गत तीन द्वीपसमूह हैं उनमें से कानेरी द्वीपसमूह और मेडीरा द्वीपसमूह यूरोप के बीच गिने जाते हैं । वे द्वीपसमूह अट्लाण्टिक समुद्र के मध्यस्थित ज्वालामुखी पर्वत के शिखर स्वरूप हैं। इसलिये यहां की भूमि उर्वर है । अतिअल्पकाल व्यतीत हुआ कि कानेरी के ज्वालामुखी पर्वत से आग निकलने लगी । इसमें टेनेरिफ का पहाड़ सब से ऊंचा है उसकी ऊंचाई १२००० फ़ुट है । कानेरी द्वीपसमूह स्पेन के अधिकार में है । यहां बहुत अच्छी २ शराब बनती है । इसकी राजधानी सान्टाक्रूज़ । मेडीरा द्वीप पोर्तुगीज़ों के अधिकार में है । यह द्वीपसमूह देखने में बहुत सुन्दर है । यह द्वीप मदिरा नामक मद्य के कारण प्रसिद्ध है । आज़ोर द्वीपसमूह कुछ उत्तर में है, इसलिये वहां मेडीरा से कुछ शीत का प्राबल्य है । ये द्वीपसमूह अच्छी २ नारंगी के कारण प्रसिद्ध हैं । यूरप में आज़र की नारंगी सेण्ट मैकेल नाम से पुकारी जाती है क्यों कि इन द्वीपसमूहों में सेण्ट मैकेल नाम द्वीप बड़ा है

फेरोद्वीप—यह प्राचीन यवनों की पश्चिम सीमा पर है । सेण्ट हेलीना—यह द्वीप बहुत छोटा और

पर्व्वतमय है यहां फरांसीस सम्राट् नेपोलियन बन्दी हुआ था ।

आस्ट्रेलिया

आस्ट्रेलिया की लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक २२०० मील है और इसकी चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक २००० मील है । इसलिये हिंदुस्तान से तिगुना है और समुद्र यूरोपके ¾ अंश के तुल्य है ।

आस्ट्रेलिया का एक तृतीयांश उत्तरायन वृत्त के बीच, इसलिये उस अंश की प्रकृति हिंदुस्तान की नाईं है । यहां नवम्बरसे गर्मी होती है उस के पीछे दिसम्बर जनवरी और फेब्रुअरी इन तीन महीनों में वर्षा होती है और उस समय देश की प्राकृतिक अवस्था ऐसी होती है जैसी वर्षाऋतु में कलकत्ते की होती है । आस्ट्रेलिया के बाकी दो अंश उष्णमण्डल के बीच हैं और इस अंश को दक्षिण आस्ट्रेलिया कहते हैं । यूरप के दक्षिणभाग की प्रकृति जैसी है, इस अंश की प्रकृति भी वैसी ही है इसलिये यहां अंग्रेज लोग इकट्ठे होकर निवास करते हैं ।

आस्ट्रेलिया ऐसी एक अक्षांशरेखापर है कि जिसकारण इसमें अधिक मनुष्यों की गुजरान हो सकती है । और यद्यपि यह यूरोप का एक चतुर्थांश है तो भी यहां मनुष्यवासोपयोगी वस्तु यूरोप से अधिक मिलती हैं अर्थात् यूरोप से यहां फल, खेती और छाग प्रभृति पशु बहुत उत्पन्न होते हैं ।

अबतक भी आष्ट्रेलिया के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं हुआ। १६०६ ई॰ में डचों ने पहिले इसका आविष्कार किया और इसका नाम "टेरा आष्ट्रेलिया" अर्थात् दक्षिणदेश ऐसा नाम रक्खा परन्तु पीछे से इसे "न्यूहालेण्ड" इस नाम से पुकारने लगे १७६४ ई॰ में कप्तान कुक इसपर आयाथा। और ९९ १० से अंग्रेज़लोग इसपर उपनिवेश स्थापित करने लगे। लेटिन भाषा में इसे "टेरा आष्ट्रालिस" ऐसा कहते हैं जिससे अंग्रेज़ी में इसका नाम आष्ट्रेलिया हुआ है। आजकल यहां २,०००,००० अंग्रेज़लोग निवास करते हैं और ये लोग धनी और शक्ति युक्त हैं। यहां के प्राचीननिवासी असभ्यलोग बहुत थोड़े हैं। अंग्रेज़लोग इसकी सम्पूर्णभूमि पर अधिकार का दावा रखते हैं।

जैसा यूरोपप्रभृति और देशों का मध्यभाग ऊंचा होता है आष्ट्रेलिया का ऐसा नहीं। यहां जो पर्वत हैं उन में सब से बड़े पर्वत की ऊंचाई ७००० फुट है। यहां विक्टोरियानामक उपकूल के समीप एक ज्वालामुखी पर्वत है।

आष्ट्रेलिया में एक मात्र बड़ीनदी है जिसका नाम 'मरे' है यहां लवणदेश बहुत है इसलिये और जो २ छोटी नदियां हैं वे शुष्कप्राय रहती हैं। इस कारण यहां जलकष्ट अधिक हैं। इसके उत्तर भाग में दिसम्बर से जनवरी तक सर्वदा ही वर्षा होती है।

वही यहां का ग्रीष्मऋतु है। दक्षिणभाग में जून से आगस्ततक अर्थात् यहां के शीतऋतु में पश्चिममहासागर से वायु बहने लगती है और बीच २ में वर्षा भी होती है परन्तु ऐसी वर्षा नियम से नहीं होती है। कभी २ स्थान २ पर दो तीन साल से वर्षा नहीं होती और ऐसी अनावृष्टि से वे सब स्थान मरुभूमि के सदृश होजाते हैं। आष्ट्रेलिया के मध्यमें बड़ी विस्तृत मरुभूमि भी है जिसकी प्रकृति आफ्रिका वा सिन्धु के तीरस्थित मरु के सदृश है। समस्त आष्ट्रेलिया में ग्रीष्म ऋतु में उत्ताप बहुत बढ़ता है और उन दिनों में वहां लू चलती है। तो भी दक्षिण आष्ट्रेलिया की जलपवन अच्छी स्वास्थ्यकर है। यहां आकाश सर्वदा निर्मल रहता है और वायु सर्वदा शुष्क रहती है ऐसी कि शीतऋतु में भी यहां कुज्झटिकादि देख नहीं पड़ता। यह स्थान अंग्रेजों के लिये बहुत स्वास्थ्यकर है और अपरस्थान से यहां जो गौआदि गृहपालित पशु लाये गए हैं वे भी यहां बहुत सुख से रहते हैं।

जिस समय आष्ट्रेलिया आविष्कृत किया गया तब इसमें असभ्य लोग रहते थे और उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी। आष्ट्रेलिया के आदिम असभ्य लोग ईषताम्र कृष्णवर्ण हैं। वे लोग अंग्रेजों से कुछ छोटे होते हैं। इनके केश काले और वक्र होते हैं, परन्तु हबशियों की नाईं पशु प्रकृतिक नहीं होते। वे लोग बहुत असभ्य होते हैं। इनके सदृश असभ्य पृथ्वी पर और कहीं नहीं दीख पड़ते। ये लोग स्त्रियों से ऐसा वर्त्तते हैं।

जैसा कौनवाल से । इन्हों ने ऐसे असभ्य होकर भी बुमा-
रैंग नामक एक प्रकार का नया यंत्र निकाला है

यह यंत्र बहुत कठिन काष्ठखण्ड से बनता है
यह चपटा और धनुष की न्याईं टेढ़ा होता है इस में
विलक्षणता यह है कि यदि दूर से किसी उच्चस्थित
पक्षी को लक्ष्य करके इसको फेंका जावे और उस लक्षि-
त वस्तु को न लगे तो फिर फेंकने वाले के हाथके स
मीप चला आता है । आष्ट्रेलिया का दक्षिण पूर्वभाग
अंग्रेजों के अधिकार में है और उन प्रदेशों से इसके प्रा
चीन निवासी लोग प्रायः भाग गए हैं । जो अवशिष्ट
हैं वे पशु चारणादि करते हैं । इसके आदिम रहने
वाले उत्तर और उत्तर पश्चिम में अबतक भी देख पड़-
ते हैं । वे लोग न खेती करते हैं और न पशुचारण
करते हैं इसलिये इनकी संख्या थोड़ी है । आष्ट्रेलि-
या में बाघ, बाघ, हाथी, ऊंट हरिणप्रभृति बड़े२ व-
न्यजीव नहीं देख पड़ते जैसे एशिया वा आफ्रिका में
देख पड़ते हैं । आष्ट्रेलिया में प्रधान आरण्य जीव
कंगारु नामसे प्रसिद्ध है । इन जीवों के अगले दो पांव
छोटे होते हैं और पीछे के दो पांव और इंब लम्बे हो
ते हैं । वे जीव मूषिक की नाईं पिछले पांव और इंब
पर बैठकर अगले पांव के पञ्जों के द्वारा खाते हैं इस
का सिर हरिण से कुछ२ सादृश्य रखता है । आष्ट्रेलि
या में नानाप्रकार के जीव दीख पड़ते हैं । कोई२ आठ
फुट लम्बे भी होते हैं । वे जीव उद्भिज्ज भोजी हैं,

और किसी को कुछ कहते नहीं। इसमें एक आश्चर्य-बात यह है कि इन की स्त्री जातिकोंपर एक प्रकार की थैली होती है जिसमें वे लोग अपने छोटे २ बच्चों को एक स्थान से दूसरे स्थान में लेजासके हैं। वे जीव बड़े शीघ्रगामी होते हैं यहां तक कि वे अना वृष्टि के समय एक बूंद पानी के लिये सैंकड़ों मील तक दौड़ते हैं।

आष्ट्रेलिया में और एक विचित्र बात यह है कि यहां के समुदय जीव प्रायः करके "पौचड़" थैली वि-शिष्ट होते हैं। इसके अपरजीवों में बिल्ली, मूषिक, शश और रीछ के सदृश जीव बहुत हैं परन्तु इनस ब जीवों के शरीर में ही थैली होती है ऐसी थैलीवा-ले जीवों को प्राणितत्वविद्या (जूआलोजी) में "मेर-सुपिपलस" कहते हैं। यहां फेलंगरनाम एकजीव होता है जिसे अंग्रेजलोग अपोसमस कहते हैं। इस जाति के जीव नानाप्रकारके दीख पड़ते हैं को-ई २ तो भेड़े की नाई बड़े होते हैं और कोई २ तीन इञ्च लम्बे होते हैं। स्तन्यपायी जीवों में से आष्ट्रेलिया में कोयलमूषिक और चर्मचटिका ( ) होते हैं इनके शरीर में थैली नहीं होती।

वर्तमान समय में केवल आष्ट्रेलिया और उसके समीपस्थित द्वीपों में ऐसी थैलीवाले जीव देखे जाते हैं, परन्तु प्राचीनसमय में ऐसे जीवसमुदय पृथ्वी में रहते थे, ऐसा अनुमान होता है। आस्ट्रेलियाके

समुद्र में ह्वेलप्रभृति बड़े २ मत्स्य भी रहते हैं

आष्ट्रेलिया में तोता, कबूतर, ईगल, बगले प्रभृति साधारण पक्षी भी बहुत दीख पड़ते हैं । इन के सिवाय यहां विशेष जातीय पक्षी भी बहुत हैं जो कि और स्थान में नहीं दीख पड़ते । जैसे यमू 'एमू' नाम एक प्रकार का उष्ट्रपक्षी है जो छः फुट ऊंचा होता है, परन्तु उसके पर नहीं होते । यहां एक प्रकार का बड़ा पक्षी है जो १५ फुट ऊंची और ६० फुट परिधि की दीवार बनाकर उसमें डिम्ब त्याग करता है । यहां और एक प्रकार का पक्षी है जो बड़े २ लम्बे लतागृह बनाकर उसमें वास करता है । यहां काले स्वान पक्षी जो बहुत दिनतक यूरोप में अप्रसिद्ध वस्तुओं में गिने जाते थे, देखे जाते हैं ।

आष्ट्रेलिया के उत्तरभाग की नदियों में कुम्भीर बहुत हैं । और २ उष्णदेशों की नाईं यहां भयंकर सर्प बहुत हैं और भारतवर्ष में जितने कीड़े और पतंग देखे जाते हैं वे सब यहां भी मिलते हैं । अयनान्तर्गत और २ देशों में जो वृक्ष होते हैं वे इसके उत्तरभाग में भी होते हैं जैसे ताल, बांस इत्यादि और समग्र भारत में जो वृक्ष उत्पन्न होते हैं इसके दक्षिणभाग में वे ही वृक्ष बहुत करके उत्पन्न होते हैं । यहां यूरोप की नाईं नानाजातीय देवदारुवृक्ष उत्पन्न होते हैं और यहां बाबल, जम्बु और सिड़ वृक्ष भी मिलते हैं । इनके सिवाय यहां ऐसे २ वृक्ष उत्पन्न होते हैं

कि जिन्के तत्स्वरूप आजकल और कहीं नहीं देखे जाते परन्तु प्राचीन समयमें ये पृथ्वी पर व्याप्त थे ऐसा चिन्ह मिलता है ।

आष्ट्रेलिया में अब इंग्लैण्डप्रभृति देशों से बहुत प्रकार के पशु और हलादि लेजाकर वर्द्धित किए जाते हैं । यहां गेहूं, आलू, ऊख, नारंगी और अङ्गूर का बीज यथेष्टरूप से उत्पन्न किए जाते हैं ।

कुछ दिन पहिले अंग्रेज लोग अपने देश से फौजदारी में अपराधी हुए मनुष्यों को यहां भेजते थे, जैसा भारतवर्ष से निर्वासित लोग आण्डामन में भेजे जाते हैं । १७८८ ई० में पहिले अपराधी लोग "बोटानिबे" नामस्थान में भेजे गए । इसका नाम "बोटानिबे" इसलिये हुआ कि जब कप्तान कुक साहिब को इस के उपकूल भाग का पता लगा तब इस स्थान पर जोसफबेंकस और डक्टर सालण्डर ने एक बाग बनाया जिसमें ऐसे २ वृक्ष इकट्ठे किए कि जिन्का नाम पहिले ज्ञात नहीं था । जैसे हिन्दुस्तान में, "कालापानी गया" इस वाक्य से 'किसी बड़े अपराध से निर्वासित हुआ' ऐसा अर्थ समझा जाता है वैसे ही अंग्रेजी में "बोटानिबे में गया" इस वाक्य से भी बहुत दिन तक ऐसा ही अर्थ विदित होता रहा ।

१८३० ई० में, यहां बसे हुए अंग्रेजों ने देश में अच्छी २ पशु चारणभूमि देखकर इसमें उपनिवेश स्थापन किया । जब उन्की संख्या बढ़ने लगी तब

यहां भेजे हुए कैदी लोगों को बहुत दुःख हुआ और उपनिवेश करनेवालों की संख्या दिन २ वृद्धि पाती रही विशेषतः १८५१ ई० में यहां अधिक परिमित सोने । के आविष्कार होने के कारण यहां उपनिवेश करने वाले बहुत ही बढ़ गए।

आजकल पृथ्वी पर आष्ट्रेलिया की खानें सब से समृद्ध हैं । यहां सोना, कोला और तामा अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं ।

आष्ट्रेलिया नीचे लिखे प्रदेशों में विभक्त हुआ है । इन प्रदेशों के शासन के लिये इंग्लैण्ड से एक गवर्नर भेजा जाता है । यहां एक पार्लीमेण्ट सभा भी है ।

प्रदेश	प्रधान नगर	क्षेत्रफल वर्गमीलों में	मनुष्य संख्या
न्यूसोथवेल्स	सिडनी	३२३,४३७	५०३,९८१
वेस्टआष्ट्रेलिया	पर्थ	९७५,९००	२९,७०५
विक्टोरिया	मैलबोर्न	८८,१९८	७३१,५२८
साउथआष्ट्रेलिया	अडेलाइड	७६०,०००	१८५,६२६
क्वीन्सलैण्ड[1]	ब्रिस्बेन	६७८,६०००	१२०,१०४
टैसमेनिया[2]	होबार्टटौन	२६,२१५	१०१,७८५

१ क्वीनविक्टोरिया के सम्मान के लिये इस स्थान को भी क्वीन्सलैण्ड कहा जाता है अर्थात उनके राज में ही यहां उपनिवेश स्थापित हुआ

२ टैसमैन नाम किसी इसने इस स्थान का आविष्कार किया इसलिये इस का नाम टैसमेनिया हुआ इस द्वीप की अवस्थिति सीलोन वा सिंहल द्वीप से उपमित हो सक्ती है ।

न्यूज़ीलैण्ड
वा
नवज़िलैण्ड

यह द्वीप समूह आष्ट्रेलिया के अग्निकोण पर है। इसके अन्तर्गत दो बड़े २ द्वीप और एक मनुष्य से शून्य छोटा सा द्वीप है। इसका क्षेत्रफल १०२,००० वर्ग मील है। यह द्वीपसमूह ब्रिटन से बहुत बड़ा है और प्रायः उसके विपरीतपदी है (   ) तथा निरक्षरेखा के बहुत समीपवर्ती है। १७६९ ई॰ में कप्तान कुक ने इसका आविष्कार किया उस समय वहां २००,००० आदिम निवासी रहते थे जिनका नाम मेओरिस है। वे लोग देखने में सुन्दर और लम्बे होते हैं तथा अपर असभ्यों से इनकी बुद्धि भी अच्छी है परन्तु वे नरमांसभोजन दोष से सर्वदा विरहित नहीं होते हैं। १८४० ई॰ से अंग्रेज लोगों ने यहां पहिले उपनिवेश किया। न्यूज़ीलैण्ड में एक पर्वतश्रेणी है जिसकी ऊंचाई ९००० फुट है। जिसके बहुत शिखर ज्वालामुखी भी हैं। यहां शूकर के सिवाय और किसी प्रकारका जीव देखने में नहीं आता। यहदेशसाधारणतः पहाड़ीऔरजंगलीहै।

न्यूज़ीलैण्ड के अधिवासियोंने ईसाईधर्म स्वीकार कर लिया है। वे पहिले से बहुत सभ्यहुए हैं। इनमें से बहुतेरों ने अच्छी तरह लिखने और पढ़ने का अभ्यास किया है। कई एक इंग्लैण्ड भी देख आये हैं, और कई एक न्यूज़ीलैण्डपार्लिमेण्ट के सभ्य भी हुए हैं।

पोलीनीशिया

आष्ट्रेलिया के पूर्व में प्रशान्तमहासागर के बीच एक छोटे २ द्वीपों का समूह देखाजाता है इसेपोलीनीशियाकहतेहैं यह द्वीपसमूह एक शताब्दी हुई, आविष्कृत हुआ है । उस समय इस में वक्रकेशवाले हबशी मनुष्य रहते थे । इनों से बहुत लोग आग्रह से मनुष्यों का लहू पीते थे और शूकरों के सिवाय अपर गृहपालित जीव नहीं रखते थे । यहां एक प्रकार का वृक्ष है जिसका फल कटहर की नाईं बड़ा २ होता है । यहां के रहनेवाले रोटी की जगह उसी फल को खाते हैं, और यह भी कहते हैं कि ऐसे तीन वृक्षों से एक मनुष्य का सब प्रकार का निर्वाह होता है । पोलिनीशिय द्वीपसमूह की जलवायु नरमप्रकृति की है । इसके चारों ओर बड़े २ समुद्र के होने से यहां गर्मी का जोर बहुत नहीं होता । इसकी स्थिति उष्णमण्डल के बीच होने से यहां कभी शीत काभी मालूम नहींहोता है । यहां नारिकेल वृक्ष भी बहुत हैं । इन द्वीपसमूह में ज्वालामुखीपर्वत बहुत हैं । जिनकी ऊंचाई १४,००० फुटतक भी होती हैं । इनों से बहुत द्वीप प्रवाल(मूंगे)कीट से बने हुए हैं परन्तु खजूर आदि वृक्ष भी बहुत उत्पन्न होतेहैं ।

इस द्वीपसमूह में अनेक अंग्रेज आकर बैठे हुए हैं ईसाईधर्मप्रचारक भी बहुत हैं । यहां सेण्डवीच द्वीपों में आमेरिकाकी अंग्रेज सदैव गमनागमन करते हैं ।

सैराउवीच द्वीपों का प्रधाननगर होनोलुलनाम से प्रसिद्ध है । ह्वाईट द्वीपसमूह, फ्रान्सीसों के अधिकार मे है । और फिजिद्वीपसमूह १८७४ में अंग्रेजों के अधिकार में आया है ।

आमेरिका

आमेरिका के उत्तर में उत्तर हिमसागर, पूर्व में अट्लाण्टिक महासागर, दक्षिण में दक्षिणमहासागर, और पश्चिम में स्थिर वा प्रशान्त महासागर । इस्का परिमाण ३५,००,००० कोश है ।

आमेरिका दो भागों में विभक्त हुआ है, एक को उत्तर आमेरिका और दूसरे को दक्षिण आमेरिका कहते हैं । इन दोनों भागों के वीच एक डमरुमध्य है जो पनामा नाम से प्रसिद्ध है ।

उत्तर आमेरिका

इस्के उत्तर में उत्तर हिमसागर, पश्चिम में स्थिर वा प्रशान्त महासागर, दक्षिण में स्थिर वा प्रशान्तमहासागर, पनामाडमरुमध्य और मेक्सिको की खाड़ी और पूर्व में अट्लाण्टिक महासागर ।

उत्तर आमेरिका का परिमाण एशिया के आधे से छोटा है और दक्षिण आमेरिका से थोड़ा सा बड़ा है । उत्तर आमेरिका का अधिक अंश उत्तर हिममण्डल के मध्यमें है । इस्का जो अंश ५२° अक्षांशरेखा के उत्तर में है उसमें ऐसा शीत है कि वहां मनुष्य नहीं रह सकें

क्योंकि यहां गेहूं उत्पन्न नहीं होता, और नदी सकल उत्तरवाहिनी हैं ।

इसलिये साईबीरिया की नाईं यहां भी केवल दोचार पशुघाती व्याध पशुचर्म के लिये वास करते हैं इसलिये उत्तर आमेरिका यद्यपि दक्षिण आमेरिकासे बड़ा है तो भी यहां वहां से मनुष्यवासोपयोगी वस्तु बहुत थोड़ी हैं । परन्तु यह देश अंग्रेजजाति के अधिकार में है इसलिये इस में नानाप्रकार की उन्नतिहुई है । सभ्यता भी बहुत बढ़ गई है, और यूरोप के पीछे इस के सदृश समर्थशाली देश आजकल पृथ्वी पर और कोई नहीं देखा जाता ।

१४९२ ई॰ में कलम्बसनाम नाविकने इसका आविष्कार किया । उस समय इस में एकजातीय मनुष्य रहते थे जिन्हें यूरोपीयलोग 'आमेरिका इण्डियन' कहते हैं, ऐसा कहना भ्रम है क्योंकि आमेरिका इण्डिया अर्थात् हिन्दुस्तान का अंश नहीं और न वहां के रहने वाले हिन्दुस्तान वा यहां के हिन्दुओं से किसी तरह का शारीरिक सादृश्य रखते हैं इसलिये उनको केवल आमेरिकन कहना उचित है । परन्तु आजकल आमेरिकन इस नाम से यूनाईटेडस्टेट्स में रहने वाले अंग्रेजलोगोंकीप्रसिद्धि हुई हैं । इसलिये जबकभी आमेरिकन इण्डियन इसशब्द का व्यवहार होगा तब उससे आमेरिका के आदिम रहनेवालों को समझना चाहिए ।

उस समय आमेरिकनलोग सम्पूर्ण आमेरिकामें फैले हुए थे, नाना जातियों में विभक्त थे और उनकी भाषा में भी कुछ २ भिन्नता दीख पड़ती थी उनका वर्ण ताम्र की नाईं है और उनका शरीर अंग्रेजों से कुछ छोटा है इनका चिबुक ऊंचा और केश लम्बा, सीधा और काला है। लोग अनुमान करते हैं कि वे लोग मंगोलियनवंशीय हैं। प्राचीनकाल में मंगोलियनलोग बेह्रिंग के मुहाने से आमेरिका को गए होंगे क्योंकि दक्षिण एशिया ही समुदय मनुष्यजाति का प्रथमनिवासस्थान है। जब आमेरिका प्रथम आविष्कृत हुआ तब वहां के मनुष्यों की अवस्था व्याधों की नाईं थी। वे लोग खेती नहीं करते थे। केवल समुदय देशों में बर्छी और तीरों से हरिण और महिषप्रभृतिपशु ओं को मार २ कर फिरते थे। इस कारण वहां मनुष्यसंख्या बहुत थोड़ी थी क्योंकि जितने स्थानपर वनचर वृत्ति से एक मनुष्य प्रतिपालित होता है यदि खेती की जावे तो उतने ही स्थान पर पचास मनुष्य निवास करसके हैं। उस समय केवल मेक्सिको और पेरु के लोग कुछ उन्नत अवस्था में थे। वहां वसति बहुत सघन थी और वहां के रहनेवाले खेती करते थे और बहुत शहर भी बसे हुए थे। वहां इतिहास और राजनीति भी प्रचलित थी।

जिस समय आमेरिका आविष्कृत हुआ उस समय यूरोप में स्पेन राज्य सब का प्रभु था और समुद्र में

पोर्त्तुगालवालों की विजयपताका उड़ती थी। आमेरिकामें सोना इतना अधिक दृष्ट हुआ कि उसकारण स्पेन के लोग बहुत जोर शोरसे आमेरिका और उस के समीपस्थित वेस्ट इण्डियन् द्वीपों को अपने अधिकार में लाने के लिये तयार हुए। उन्होंने यहां आकर मेक्सिको और पेरू का ध्वंस किया। और ब्रेज़िल मेक्सिको और वेस्ट इण्डियन द्वीपों को छोड़कर प्रायः आमेरिका के समुदय दक्षिण अंश में उपनिवेशस्थापित किया। पोर्त्तुगालवालों ने ब्रेज़िल पर एक उपनिवेशस्थापित किया। कुछ दिन पीछे अंग्रेज और फरांसीसों ने उत्तर आमेरिका के पूर्व उपकूल में उपनिवेश बनाया। अवस्पेन और पोर्त्तुगाल वाले वहां के प्राचीननिवासियों से रलगए आजकल इस महाद्वीप के प्रायः सम्पूर्ण देशों में प्रायः ऐसे संकरजातीय मनुष्य देख पड़ते हैं।

पहिले पहिले समुदय यूरोपीय विशेष करके स्पेनके लोग आमेरिका के प्राचीन रहने वालोंसे ऐसी कठिनरीति से वर्त्तने लगे कि थोड़े ही दिनों में इन का एक बार ही नाश होगया और जो ऐसे दुष्ट व्यवहार से बच रहे वे ब्रांडी और शीतला से मरने लगे। यहां तक कि वहां बसे हुए यूरोपियों को अपने काम कराने के लिये मजूर मिलना मुश्किल होगया और उसीकारण आफ्रिका में दास वाणिज्य की प्रवृत्ति हुई॥

सीडीलोग आफ्रिका में खरीदेजाते और आमेरि-

का में दासकर्म के लिये भेजेजाते थे जब इस काम से बहुत मुनाफा होने लगा हजारहा दास आफ्रिका से भेजे जाते रहे और उनसे स्पेनी, पोर्तुगालवालों ने मिलकर संकरजातीय मनुष्य भी उत्पन्न किए।

आमेरिका में सन् १७५६ से १७६० तक अंग्रेजोंने फरांसीसों से लड़कर उनके उत्तर आमेरिकास्थित उपनिवेश समुदय अपने अधिकार में कर लिया। फिर आमेरिका में बसे हुए अंग्रेज इंग्लेण्ड के राजा से बिगड़ गए और सन् १७७५ ई० से १७८२ तक युद्ध करते रहे जिसका फल यह हुआ कि आमेरिका के यूनाइटेडस्टेटसमुदय स्वतन्त्र होगए और केवल कनाडादेश इंग्लेण्ड के राजा के आधीन रहा। सन् १८२० ई० में स्पेनी औपनिवेशिक लोग अपने राजा से विरुद्ध होकर स्वतंत्र होगए। इसी तरह वहां बसे हुए पोर्तगीज़ लोगों ने भी ब्रेज़िल को स्वाधीन बनाया। इनदिनों में आमेरिका के आदिम रहनेवाले क्रमर से ध्वंसप्राप्त हुए। १८२५ ई० से, इंग्लेण्ड, आयर्लेण्ड और जर्मनी से बहुत मनुष्य आकर यूनाइटेडस्टेटस में बसने लगे जिससे वहां मनुष्यसंख्या प्रतिदिन ही बढ़ती जाती है। १८६२ में समुदय दासलोग जो यूनाइटेडस्टेटस में थे छुड़ाए गए।

ऊपर लिखी हुई घटनाओं का फल यह निकला कि मेक्सिको छोड़कर समुदय उत्तर आमेरिका में और कोई जाति नहीं केवल अंग्रेज ... आमेरि

स और जर्मनलोग भी मिले हुए हैं, और नीग्रोलोग रह गए उन्में से अंग्रेजों की संख्या ४०,०००,००० और नीग्रों की संख्या ४,००० ००० । मेक्सिको और दक्षिण आमेरिका में आमेरिकन इंडियन लोग अबतक भी हैं और उन की संख्या १०,०००,००० है । यहां पहिले संकर जातीय मनुष्यों की संख्या अधिक है विशुद्ध स्पे नी और पोर्तुगालीयों की संख्या बहुत थोड़ी है ।

उत्तर आमेरिका देखने में अच्छा है । पश्चिम उपकूल के समीप राकिनाम पर्वतश्रेणी उस्से समान्तराल होकर उत्तरसीमा से पनामाडुमरूमध्यतक विस्तृत है। राकिपर्वत के कोई २ शिखर १६००० फुटतक ऊंचे हैं परन्तु उन्की ऊंचाई साधारणतः ८००० फुट है । जो नदियां स्थिरमहासागर और अटलांटिकमहासागर में गिरती हैं उन्का वाटरशेड अर्थात् अपवाहिका राकि पर्वत से बना है । उन्केस्थान २ में यह पर्वतश्रेणी लम्बमान होकर अनेक उच्चसमतलक्षेत्ररूप से परिणत हुई है जिनें से मेक्सिको का उच्चसमतलक्षेत्र बहुत प्रसिद्ध है, कैसकेडनाम और एक पर्वतश्रेणी उस पश्चिम उपकूल के बहुत समीप और समान्तराल है । पूर्वोक्त राकि पर्वत और इसकैसकेड पर्वतश्रेणी के बीच असंख्य उच्चसमतल क्षेत्र हैं, जिन्का जल बहकर ऊटानाम लवणमय झील में गिरता है, यह झील कास्पियनसमुद्र की नाईं गंभीर और प्रवाहशून्य है। यह समुद्र से ४२०० फुट उच्चस्थान पर है । ।

उत्तर आमेरिका की उत्तर-पश्चिमसीमा पर बड़ी२ ज्वालामुखी हैं। मेक्सिको एक प्रधानज्वालानिर्गम क्रिया का स्थान है।

यूनाइटेडप्रदेशों के पूर्व में अट्लान्टिक समुद्र के समीप और उसे समान्तराल होकर आलिघनिनाम पर्व्वतश्रेणी है। इस पर्वतश्रेणी से मिसिसिपि और छोटी नदियां जो अट्लान्टिक में गिरती हैं उनका वाटरशेड (अपवाहिका) बना है। समुदय उत्तर आमेरिका जिस्के पूर्व में आलिघनिपर्वत, पश्चिम में राकि पर्व्वत और दक्षिण में मेक्सिको की खाड़ी और उत्तर में उत्तर हिमसागर है, एक विस्तृत समतल क्षेत्र है। मिसिसिपि और रेडनदी (जो उत्तर हिमसागर में गिरती है) के बीच एक अल्पोच्च वाटरशेड है।

उत्तर आमेरिका की प्रधान नदी मिसिसिपि जो पृथिवी की समुदयनदियों से बड़ी है, मेक्सिको की खाड़ी में गिरती है। मिसोरी नदी थोड़ी दूर बहकर मिसिसिपि से मिलके उसी नाम से पुकारी जाती है। इस्की दो करद नदियें है (१पहिली) आहिओ जो पूर्व से आकर यहां गिरती है, दूसरी आर्कानसस जो पश्चिम से आकर इसमें गिरती है। ये दोनों नदियां भी बहुत बड़ी हैं।

उत्तर आमेरिका में सेएटलारेन्सनाम दूसरी बड़ी नदी है। यह नदी पांच झीलों के बीच होकर उत्तर हिमसागर में गिरती है। यह नदी कुछ दूरतक यूनाइटेड-

प्रदेश और कानेडा की सीमास्वरूप रही शीतकाल में इसका जल जमजाता है ।

उत्तर आमेरिका के उत्तर में और भी बड़ी २ नदियां बहती हैं परन्तु बहुतशीत के अधीन होनेसे वे कुछ उसके उपकार में नहीं आतीं । उनमें से सस्कचियन, मेकेन्ज़ि — इत्यादि प्रधान हैं । रेड नदी कुछ दक्षिण में बहती है । इस के तीर पर स्थान २ में गेहूं उत्पन्न होते हैं ।

राइओ डिल — नर्ट नदी टेक्सस नाम प्रदेश में होकर मेक्सिको की खाड़ी में गिरती है । राइओ कोलोरेडो नदी कालिफार्निया होकर स्थिरमहासागर में गिरती है । ये दोनों नदियें बड़ी प्रसिद्ध हैं ।

उत्तर यूरोप की नाईं उत्तर आमेरिका में भी असंख्य झीलें हैं । उनमें से पांच झीलें जिनके बीच से सेण्ट लारेन्स नदी बहती है, बहुत प्रसिद्ध हैं । और वाणिज्य के लिये बहुत उपकारी हैं । उनका नाम नीचे लिखा जाता है । सुपीरियर झील जो पृथिवी के समुदय स्वादुजल वाली झीलों से बड़ी है, परन्तु कोई २ यह भी समझते हैं कि आफ्रिका की विक्टोरिया निअंजा झील इससे भी बड़ी है । ईरि और आण्टारियो नाम दो झीलों के बीच 'नाइग्रा' नाम जलप्रपात है जो पृथिवी के समुदय प्रपातों से बड़ा है । ह्यूरन और निकारगुया ये दो झीलें भी बहुत प्रसिद्ध हैं । निकारगुया पनामा डमरूमध्य में है ।

जब स्पेनियों ने आमेरिका का आविष्कार किया तब वे लोग प्रथम ही इस बात पर हैरान हुए कि आमेरिका के वृक्ष और पशु पुरानी पृथ्वी से सम्पूर्ण भिन्न प्रकार के दृष्ट हुए। उन का ऐसा हैरान होना ठीक था क्योंकि कैपहरन और मेक्सिको में किसी प्रकार पुरानी पृथ्वी के पशु वा वृक्ष नहीं देख पड़ते। परन्तु उत्तर आमेरिका में ऐसे जीव और पशु बहुत हैं जो प्राचीन पृथ्वी के उत्तर प्रदेशों में मिलते हैं। दक्षिण आमेरिका की ओर लोग जितने जाते हैं उतने ही नए नए पशु और वृक्ष देखे जाते हैं।

आमेरिका के पशु साधारणतः अपने सजातीय प्राचीन पृथ्वी के पशुओं से छोटे और थोड़े शक्तिवाले होते हैं। हाथी, गण्डार, सिन्धुघोटक वा इनके तुल्य जातीय जीव उत्तर आमेरिका में नहीं देखे जाते। यद्यपि यहां वन्य सूकर और जंगली घोड़े अधिक परिमाण से देखे जाते हैं परन्तु यह अनुमान होता है कि वे पशु इसके प्राकृतिक नहीं किन्तु किसी समय यहां लाए गए होंगे।

आमेरिका के किसी २ स्थान में पुमा नामक एक प्रकार का विड़ाल (बिल्ली) रहता है जो छे फुट लम्बा होता है परन्तु इसकी शक्ति और साहस प्राचीन धरती के चीतों के बराबर नहीं होती। दक्षिण आमेरिका से कनाडा तक ये जीव मिलते हैं, कनाडा में लिंक्स नाम एक प्रकार की बिल्ली भी रहती है। उत्तर आमेरिका के आधे प्रदेशों में नानाप्रकार के भेड़ और

लमडियें रहती हैं और गीदड़ नहीं होते। आमेरिका में राजहंस नहीं हैं।

आमेरिका के आग्नेय उपकूल में दोप्रकारके समुद्र कौओ देखे जाते हैं। आमेरिका के जलजन्तु ओं में से अटलाण्टिक समुद्र में तिमि जातीयमत्स्य बहुत हैं। स्तन्यपायिजलचरों मेंसे ग्रीनलेण्ड में ह्वेल प्रसिद्ध है वे ८० फुट तक लम्बे होते हैं। ह्वेल यद्यपिमत्स्यजाति में गिने जाते हैं तथापि असल में ये मत्स्य नहीं क्योंकि ये अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं। ऐसीबात और मत्स्य में नहीं देखी जाती।

उत्तर आमेरिका में अनेक जातीय बड़े २ रीछ हैं। हरिण भी यहां नाना प्रकार के मिलते हैं। रेण्डियर नाम हरिण केवल उत्तर हिममण्डल में रहते हैं। उस प्रदेश के थोड़े दक्षिण में 'मुसडियर' नाम हरिण रहते हैं। वे समुदय हरिणों से बड़े होते हैं वे ७ फुट तक ऊंचे होते हैं। वापिटिनाम एक प्रकार का सुन्दर हरिण मेक्सिको के समीप मिलता है, यह पांच फुट ऊंचा होता है। उत्तर आमेरिका के मध्य में प्रङ्गबकनाम से प्रसिद्ध एक जातीय कालासार हरिण रहता है। राकि पर्वत में एक प्रकार का जंगली भेड़ा देखा जाता है।

उत्तर आमेरिका में विसन नामएक जातीय बड़े २ महिष देखे जाते हैं। मस्क—अक्स, नाम एक प्रकार का जंगली बैल भी यहां बहुत होताहै। यह अत्-

मान होता है कि यूरोप से यहां पर बैल लाए गए हों गे। उत्तर आमेरिका के उत्तर प्रदेशों में बांदर नहीं होते परन्तु मेक्सिको और मध्य प्रदेशों में बहुत मि लते हैं आमेरिका के बांदर छोटे २ होते हैं। यहां के जंगली जीवों से अपोसम बहुत प्रसिद्ध हैं। वे जीव दे खने में बड़े बिडाल की नाईं हैं। वे पशु यूथचर नहीं हैं, रीछ वा और २ शीत देश के पशु ओं की नाईं वे स मुदय शीतकाल में प्रायः गंभीर निद्रा में रहते हैं। वे जब सोने को जाते हैं। तब उनका शरीर बड़ा मोटा होता है परन्तु जब वे जागते हैं तब अतिकृश होजा ता है। जब कोई इसे पकड़ता है तब वह अपने को मुर्दे की नाईं निश्चेष्ट दिखालाता है और पकड़नेवाला मर गया समझ के जब इस पर ध्यान नहीं रखता तब यह धीरे २ से भाग जाता है।

आमेरिका में अनेक प्रकार के पक्षी, सांप, कीड़े और पतङ्ग मिलते हैं। पक्षियों में कबूतर, बत्तक और मुरग बहुत हैं। आमेरिका में एक प्रकार के 'हमिंग' अर्थात् गुनगुनकारी पक्षी रहते हैं जो और कहीं नहीं मिलते इन का आकार बहुत छोटा होता है। आमेरिका में अग्नि मारी नाम एक प्रकार की अद्भुत मक्षि है।

उत्तर यूरोप और हिमालय की नाईं आमेरिका में कनाडा और राकि पर्वत में देवदारु वृक्ष बहुत होते हैं, कनाडा के अपर वृक्षों में से ओक, विलो प्रभृति वृक्ष बहुत हैं।

यूनाइटेड प्रदेश और कनाड़ा के दक्षिण में गेहूं अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं। यहां आज कल भुट्टा, रूई, ईख और चावल अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं। ये सब शस्य पहिले यहां नहीं थे, प्राचीन पृथ्वी से लाए गए।

यहां के अयनमण्डलस्थित प्रदेशों में जंगली वृक्ष बहुत हैं। मेक्सिको में जलपवन का जैसा भेद है वैसा वृक्षों का भी है। मेक्सिको और राकिपर्बत में पत्र से शून्य एक जातीय वृक्ष होते हैं जो २० वा ३० फुट तक लम्बे होते हैं। मेक्सिको में अनेक जातीय आलू उत्पन्न होता है। मेक्सिको के उपकूल और मध्यदेशों में अयनमण्डलीय समुदय शस्य उत्पन्न होते हैं। इस लिये यहां बांस भी उत्पन्न होता है जो यूरोप और अपर शीतप्रधान देशों में नहीं होता।

आमेरिका में कोला, चांदी, सोना और ताम्बा प्रभृति की खान असंख्य हैं। कालिफर्नियां, मेक्सिको पेरू प्रभृति स्थानों में सोना अधिक परिमाण से उत्पन्न होता है। बेंकूवर और कलम्बिया द्वीप में भी सोना की खान आविष्कृत हुई हैं। सुपीरियर झील के समीप ताम्बा बहुत उत्पन्न होता है।

उत्तर आमेरिका नीचे लिखे हुए प्रदेशों में विभक्त हुआ है।

प्रदेश	परिमाण वर्गमील में	मनुष्यसंख्या
ग्रीनलैण्ड	४००,०००	७०००
कनाडाराज्य	३,५२२,७९२	३,७४८,६५७
यूनाइटेडप्रदेश	३,६०३,८४४	३८,५५८,३७१
मेक्सिको	१,०३०,४४२	९,१७६,०८२
मध्यप्रजातन्त्रराज्य	१९६, ५९४	२,४०४, ५२०
ब्रिटिशहैंडोरास	१३ ५००	२४,७१०
वेस्टइण्डियनद्वीपसमूह	९२०००	४,०००,०००

न्यूफौण्डलैण्ड अबकनाडाराज्य से मिलगयाहै इसलिये उस का नाम स्वतन्त्ररूप से नहीं गिना जाता । रूसियन आमेरिका जो अलस्का नाम से प्रसिद्ध है यूनाइटेडप्रदेशों के रहने वालों ने उसको रूसों से खरीदा है इसलिये अब यह स्थान यूनाइटेडप्रदेशों के अन्तर्गत है । मध्यप्रजातन्त्रराज्य में यद्यपि पांच भिन्न २ राज्य हैं तथापि उन की परस्पर बहुत सादृश्य देख कर उन को एक नाम से प्रसिद्ध किया ।

ग्रीनलैण्ड.

ग्रीनलैण्ड–यह एक बड़ा द्वीप उत्तर आमेरिकाकी उत्तर–पूर्व दिशा में है । यद्यपि यह द्वीप बहुत बड़ा है परन्तु सर्वदा ही घन बरफ से आच्छन्न है । आजतक कोई मनुष्य इसके भीतर नहीं गया । यह पर्वतमय है । इस में किसी प्रकार का तृण वा वृक्ष नहीं होता । ग्रीष्मऋतु में इसके दक्षिण उपकूल स्थित

बरफ गलजाता है और तब समुद्र के मध्य से उस अंश की भूमि सबज देखी जाती है। उस स्थान पर कई एक गांव हैं जिन्के रहने वाले मत्स्य जीवी हैं। इस्में करीब १००० के डेन अर्थात् डेनमार्क के रहने वाले रहते हैं इसलिये इस्का डेनिश अमेरिका भी कहते हैं। इस्के बाकी अधिवासी एस्कीमक्स जातीय है जिन्की संख्या ७००० है। यह एस्कीमक्स जाति वह है जो यूरोप में आर्य्यजातियों के आगमन से पहिले वास करतीथे।

कनाडाराज्य

यह राज्य सुपीरियर आदि पांच झीलों के समीप से सेण्टलारेन्स नदीके तीरतकवि स्तृत है। कनाडे के तीन प्रदेश केवल मनुष्योंसे व से हुए हैं प्रथम सेण्टलारेन्स नदी और बड़े२ झीलों के तीरस्थित देश। द्वितीय बैंकूवर द्वीप कालम्बिया नदी के तीर जो राकि पर्वत के पश्चिम में स्थित है। तृतीय रेड नदी के तीर पर स्थित उपनिवेशस्थान जो विनिपेग- पर्वत के दक्षिण में स्थित है। इस्के अवशिष्ट प्रदेशों में आदिम असभ्य लोग रहते हैं जो पशुओं को मार कर उन के चमड़े से जीविका निबाहते हैं। इन की संख्या बहुत थोड़ी है। कनाडे का दक्षिण अंश केवल गेंहू उत्पन्न करने का उपयोगी गरम है परन्तु यह स्थान भी शीत के चार वा पांच महीने बरफ से आच्छन्न रहता है।

कनाडे के जिस अंश में मनुष्यों की वसति है वह अंश यद्यपि लंडन से निरक्षरेखा के समीप स्थित है तोभी यहां लण्डन से शीत प्रबल है।

कुछ दिन पहिले ब्रिटिश आमेरिका भिन्न २ स्वाधीन उपनिवेश में विभक्त था परन्तु अब वे सब कनाडाराज्य में मिलगए। न्यूफौंडलेण्ड अब तक इसमें शामिल नहीं, आशा है कि थोड़े दिनों में यह भी मिल जायगा। कनाडा के वासिन्दों में अंग्रेज, स्कच आइरिश लोग अधिक हैं। यहां अति प्राचीन काल से वसे हुए फरांसीसों के वंशीय भी हैं।

कनाडा राज्य इंग्लेण्ड से १२ दिन के रास्ते पर है। यह देश थोड़े दिनों में उन्नत और सभ्य हुआ है। इस देश में एक बहुत अच्छी रेलकी सड़क सेण्ट लारेन्स नदी के समान्तराल बनी है। कनाडा से बड़े२ लक्कड़ दूसरे देशों में भेजे जाते हैं। इस में माण्ट्रिल, क्विबेक और अटवाये तीन प्रधान नगर हैं। अटवा राजधानी है।

१८५८ ई॰में ब्रिटिश कोलम्बिया और वेंकूवर द्वीप में सोने का आविष्कार होने से उपनिवेश स्थापित कियागया, अबउसमें ६०००० मनुष्य रहते हैं और सिवाय सोने के अब यहां कोले की खान भी निकली है। यहां की जलपवन नातिशीतोष्ण है।

रेड नदी के किनारे पर की वसति बहुत छोटी है परन्तु यहां खेती की बहुत उन्नति हुई है।

यह विचार किया गया कि मध्य कनाडे की रेल रेड नदी के किनारे तक बढ़ाई जावे और वहां से ब्रिटिश कलम्बिया तक भी रेल की सड़क बनाई जावे; ऐसा होने से अटलांटिक सागर से स्थिरमहासागर तक रेल की सड़क होगी। यह सड़क २५०० मील लम्बी होगी। ऐसी रेल से उभयदेश की ही उन्नति होगी।

यूनाइटेड प्रदेश

इन प्रदेशों के उत्तर में ब्रिटिश अमेरिका, पूर्व में न्यूब्रन्स्विक और अटलांटिक सागर, दक्षिण में मेक्सिको की खाड़ी और मेक्सिको पश्चिम में स्थिर महासागर। इसके अन्तर्गत सैंतीस प्रदेश हैं वे सब प्रदेश साधारण तन्त्र हैं। प्रत्येक देश की मनुष्यसंख्या के अनुसार प्रतिनिधि भेजेजाते हैं जो किसी मध्यस्थान में एकत्रित होकर राज्य के प्रबंध करते हैं। जो देश ऐसे छोटे हैं कि प्रतिनिधि नहीं भेज सकें उसे टेरिटोरी वा अधीन प्रदेश कहते हैं। यद्यपि समुदय यूनाइटेड प्रदेशों की जलपवन मनुष्यों के रहने के उपयोगी है तौ भी यहां के केवल चार स्थानों में मनुष्य निविड़ बसे हुए हैं और स्थानों की वसति इतनी संघन नहीं।

उनमें से प्रथम इंगलैण्ड प्रदेश जो उत्तर-पश्चिम दिशा में अटलांटिक सागर के तीर पर है; प्रायः दो सौ पचास बरस होगए यहां मुख्य करके इंगलैण्ड से अंग्रेजों ने आकर उपनिवेश बसाया। क्योंकि उस

समय इंगलण्ड में धर्म की स्वाधीनता को रखना बहुत कठिन था नवीन इंगलण्ड में जो पहिले आकर बैठे उन को फादर्स पिलोग्रिम कहते हैं । दूसरा दक्षिण प्रदेश—वे देश आलिघनिस और अट्लाण्टिक सागर के बीच में है । यहां न्यू इंगलण्ड से पीछे उपनिवेश स्थापित हुआ । इन्हें से लूइसाना नाम प्रदेश में पहिले फ्रेञ्च लोग आकर बसे थे । तीसरा पश्चिम प्रदेश जो आलिघनिस से पश्चिम दिशा में स्थित है और मिसिसिपि नदी के बेसिन अर्थात् जलधार के मध्य में है । कुछ चालीस वर्ष हुए कि, यहां यूरोप के नाना स्थानों से विशेष करके आयर्लैण्ड और जर्मनी से मनुष्य आकर बसने लगे । चतुर्थ—कालिफर्निया प्रदेश—यहां १८४८ ई० में सोने की खानों का आविष्कार हुआ और उसी दिन से यहां उपनिवेश स्थापित होने लगा । कालिफर्निया की नाईं अच्छी जलपवन पृथ्वी में थोड़ी मिलती है । यहां रांकिपर्वत के बीच से एक रेलकी सड़क भी बनी है ।

यूनाइटेड प्रदेशों के मनुष्यों में से ३३,५००००० श्वेतकाय और ५०००,००० नीग्रो हैं । श्वेतकायों में से यूरोप के उत्तर के रहने वाले और अंग्रेज मिले हुए हैं । १८६० ई० में यूनाइटेड प्रदेशों में आमेरिक न इण्डियन ४४००० थे, परन्तु १८७० ई० में उनकी संख्या २५००० होगई थी आजकल इससे भी घटी होगी ।

यूनाइटेड प्रदेशों में ६०,००० मील रेल बनी है ।

समुदय ब्रिटन और आयर्लैण्ड में केवल १९००० मील ही रेल बनी है ऐसी २ तुलना से पृथिवी के और२ देशों से यूनाइटेड प्रदेशों में मन्यह उन्नति होती है यही जान पड़ता है । सामुद्रिक वाणिज्य में भी यूनाइटेड प्रदेश केवल इंग्लैण्ड के नीचे हीं है । यहां यद्यपि उद्यशाला थोड़ी है परन्तु साधारण शिल्पोंमें वे इंग्लैण्ड से बड़े और स्विटज़रलैण्ड और जर्मनी के बराबर हैं ।

यह पहिले कह चुके हैं कि यूनाइटेड प्रदेश साधारणतन्त्र हैं यहां सेनापति व सदय देश हितकार कार्य्य एक बड़ी सभा वा पार्लिमेण्ट से सम्पादित होते हैं । इस सभा के पति को प्रेसिडेण्ट आफ – दी – यूनियन कहते हैं । उस सभा के सिवाय प्रत्येक प्रदेश में एक २ गवर्नर और एक २ सभा होती हैं । उस २ प्रदेश के उपयोगि विशेष २ नियम ऐसी सभा से बनते हैं ।

यूनाइटेड प्रदेशों में नीचे लिखे हुए प्रदेश और अधीन प्रदेश हैं ।

नाम	श्रेणी	क्षेत्रफल वर्गमील में	लोकसंख्या
मेन	प्रदेश	३५,०७६	६२६,९१५
न्यूहैम्पशायर	॥------	९२८०	३१८,३००
वरमाण्टस	॥------	१०,२१२	३३०,५५१
मासाचुसेट्स	॥------	७,८००	१,४५७,३५१
रोड आइलैण्ड	॥------	१,३०६	२१७,३५३
कनेक्टिकट	॥------	४,६७४	५३७,४५४
न्यूयार्क	॥------	४७,०००	४,३८२,७५९
पेनसिलवेनिया	॥------	४,४६०००	३५२१,९५१
न्यूजरसी	॥------	८,३२०	९०६०९६

डेलावर	प्रदेश	२,१२०	११२,०९१
मेरिलेण्ड	॥	११,१२४	६८७,०४९
कलम्बिया	अधीनप्रदेश	६०	१३१,७००३
विर्जीनिया	॥	६१,३५२	१,४२१,६६१
नार्थकारोलीना	॥	५०,७०४	९९२,६२२
साउथकारोलीना	॥	२९३,८५	७०५,६०८
जर्जिया	अधीनप्रदेश	५८,०००	१,०५७,२८६
फ्लोरिडा	॥	५९,२६८	१८७,७४८
अलबमा	॥	५०,७२२	९६४,२०१
मिसिसिपि	॥	४७,१५६	८२७,९२२
लुइसियाना	॥	४१,३४६	७०८,००२
आर्कानसास	प्रदेश	५२,१९८	४८४,४७१
टेनेसि	॥	४४,६०००	११०९,८०१
केन्टुकि	॥	३७,६०००	१,१५५,६८४
वेस्टवर्जीनिया	॥	२३,०००	४४२,०१४
ओहियो	॥	३९,९६४	२,६६५,२६०
इण्डियाना	॥	३३८०९	१,६८०,६३७
मिचिगन	॥	५६,४५१	१,१८४,०५९
विसकनसिन	॥	५३,९२४	१०५४,६७०
इलिनइस	॥	५५,४१०	२५३९,८९१
लोवा	॥	५५,०४५	१,१९४,०२०
मिसौरी	॥	६५,३५०	१,७२१,२९५
टेक्सास	प्रदेश	२३७,५०४	८१८,५७९
कानसेस	॥	८१,३१८	३६४,३९९
डाकोटा	अधीनप्रदेश	१४७,४९०	१४,१८१
इडाहो	॥	९० ९३२	१४,९९९
नेब्रासका	प्रदेश	७५,९९५	१२२,९९३
मिनेसटा	॥	८३,५३१	४३९,७०६
नेभाडा	॥	११२,०९०	४२,४९१
मनटाना	॥	१४३,७७६	२०,५९५
वायमिङ्ग	॥	९७,८८३	९,११८
वासिङ्गटन	अधीनप्रदेश	६९,९९४	२३,९५५

अरेगन	प्रदेश	५२, ४६५	९०, ९२३
कालिफर्निया	॥	३७९, ९९४	५६०, २४७
यूटा	अधीनप्रदेश	४०, २७३	८६, ७८६
कालोरेडो	॥	३४, २७७	३९, ८६४
न्यूमेक्सिको	॥	९३, ५१६	९१, ८७४
अरिजोना	॥	४३ ६१६	९, ६५८

१८७० सन् की आदमशुमारी से यह सिद्ध हुआ कि यूनाइटेड प्रदेशों में १४ शाहर हैं जिन्का नाम नीचे लिखा जाता है ।

शाहर	प्रदेश	लोकसंख्या
न्यूयार्क	न्यूयार्क	९४२, २९२
फिलिडल्फिया	पेनसिलवेनिया	६७४, ०२२
बुकलीन	न्यूयार्क----	३९६०९९
सेण्टलूइस	मिसौरि-----	३१०, ८६४
शिकागो	इलिनईस----	२९८, ९७७
बाल्टिमोर	मेरिलैण्ड----	२६७, ३५४
बस्टन	मासाचुसेट्स---	२५०, ५२६
सिनसिनाटि	ओहियो-----	२१६ २३९
न्यूअरलिनस	लुइसाना	१९१, ४१८
सेनफ्रान्सिस्को	कालिफर्निया---	१४९, ४७३
बुफालो	न्यूयार्क	११७७१४
वाशिङ्गटन	कलम्बिया----	१०९, १९९
न्यूवार्क	न्यूजर्सि----	१०५, ०५९
लुइसवीरली	केनटकि----	१००, ७५३

न्यूयार्क—सिवाय लगडन के इस्के बराबर सर्वप्रकार से समृद्ध नगर पृथ्वी में और कोई नहीं। यद्यपि पेरिस और पेकिन में इस्से अधिक मनुष्य रहते हैं तो भी उन्से इस्का धन और वाणिज्य अधिक है। यह ही लगडन के नीचे है और पृथिवी के द्वितीय शहर रूप से गिना जाता है। लगडन की नाईं यहां का समुद्र भी जहाज से पूर्ण रहता है।

बोस्टन नगर—एक बन्दर है। यहां एक प्राचीन उपनिवेश स्थान है और छे उदीच्य प्रदेशों की राजधानी—स्वरूप है। इस्को नवीन पृथ्वी का एथेन्स कहते हैं अर्थात् यहां की बहुत चर्चा है। यहां से कलकत्ता और लगडन प्रभृति नगरों में बरफ भेजा जाता है।

वाशिंगटन नगर यूनाइटेड प्रदेशों की राजधानी है। यहां ही प्रेज़ीडेगट का कार्य्यालय है और प्रधान पार्लिमेगट सभा यहां ही बैठती है।

अरलिन्स नगर मिसिसिपि नदी के मुख पर स्थित है। यह एक बन्दर है। यहां से और देशों में रूई भेजी जाती है। यह नगर फरासीसों ने स्थापित किया और फ्रान्सस्थित आलिन्स नगर के नाम से इस्का भी पुकारा गया। मेक्सिको की खाड़ी के आसपास जो प्रदेश हैं वहां की जलपवन न्यू इंग्लेगड से गरम है। उस्के दक्षिण में कारोलीना नगर है जहां चावल अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं और यहां के ही चा-

वलोंका इंग्लेण्ड में बहुत व्यवहार होता है। उस खाड़ी के चारो ओर स्थित प्रदेश और उनके समीपस्थित प्रदेशों में रूई बहुत उत्पन्न होती है। उनमें जैसी अच्छी रूई उत्पन्न होती है ऐसी पृथिवी के और किसी स्थान पर नहीं और यहां से ही इंग्लेण्ड में अधिक परिमाण से रूई भेजी जाती है। १८६१ ई॰ तक नीग्रो दासों से रूई का काम कियाजाताथा उसी साल में आमेरिका में प्रबल गृही व्यविवाद उत्पन्न हुआ और जिसका परिणाम यह हुआ कि समुदय दास छुड़ाए गए और थोड़े दिन के लिये आमेरिका से इंग्लेण्ड में रूई आनी एक दम से बन्द होगयी। उन दिनों में भारतवर्ष में रूई का व्यापार बढ़ गया परन्तु अब फिर आमेरिका में पहिले की नाईं उत्पन्न होती और इंग्लेण्ड में भेजी जाती है।

मिसिसिपि नदी के किनारे पर स्थित प्रदेश विशेषकरके आइवा, इल्लिनईस, और इण्डियाना समतल और उर्वर है। यहां गेहूं अधिक परिमाण से उत्पन्न होता है ऐसा पृथ्वी पर और कहीं नहीं उत्पन्न होता। यहां से ही गेहूं इंग्लेण्ड में अधिक आता है। यहां से रेल के द्वारा चिकागो प्रभृति नगरों में गेहूं भेजा जाता है और फिर वहां से इंग्लेण्ड में। यूनाईटेड प्रदेशों में प्रायः भेजे जाते हैं। उन नगरों का नाम नीचे लिखा जाता है, ओहियोप्रदेश में सिनसिनाटि, मिसौरी और मिसिसिपि नदी के संगम स्थान पर सेण्ट

लूइस नगर, केराटकि में लुइसभाइल ।

इन प्रदेशों के पश्चिम में एक बड़ा विस्तृत मैदान है जिस पर अब तक किसी ने अधिकार नहीं किया। उस क्षेत्र में कोई बड़ा हृक्ष भी नहीं यह सर्वदा घासों से हरा और छोटे २ फूलों के हृक्ष से भरा रहता है ।

स्थिरमहासागर के तीर पर कालिफोर्निया प्रदेश है । यह बहुत सुदृश्य और स्वास्थ्याकर स्थान है। यहां की जल पवन बहुत ठण्डी वा गरम नहीं इसलिये यहां वर्षा भी थोड़ी होती है और वर्षा ऋतु तीन महीने से अधिक नहीं रहती। यहां अंगूर, नारंगी, पिच और सेव प्रभृति अच्छे २ फल उत्पन्न होते हैं । यहां खानें भी बहुत हैं । यहां सैन फ्रान्सिसको वा फ्रिस्को नाम बड़ा बन्दर है । और वही यहां का प्रधान नगर है । यहां से धूआंकश जापान, चीन और भारतवर्ष में आते हैं । जो लोग कलकत्ते से स्थिरमहासागर होकर इंग्लैण्ड में जाते हैं वे भी यहां से होकर आते हैं जैसा कलकत्ते से पहिले जापान के योकोहमा नाम स्थान में मुकाम करते हैं वहां से सनफ्रांसिसको में, फिर वहां से रेल के द्वारा न्यूयार्क आते हैं और न्यूयार्क से धूआंकश पर चढ़के लिवरपुल में आते हैं ।

ऊटाहदेश मारमनों की वसतिनाम से प्रसिद्ध है। जोसेफस्मिथनामी किसी मनुष्य ने अपने को ईश्वर प्रेरित कहाकर बहुत मूर्ख लोगों को अपने वश किया और निर्विघ्नता से अपने मतप्रचार के लिये उन सब को

साथ लेकर यहां आके बसा जोसेफ के शिष्यों को मा रमन कहते हैं । उन मारमनों के साथ बहुत गरीब अंग्रेज भी आए । अब यह प्रदेश यूनाइटेड प्रदेशों की गवर्न्मेण्ट के अधीन हुआ । इसके प्रधान नगर का नाम सेल्ट लेक है ।

मेक्सिको

आमेरिका के अवशिष्टभागों के विषयमें अति अल्प ही कथनीय है । यद्यपि उनकी प्रकृति यूनाइटेड प्रदेशों से किसी तरह हीन नहीं तौभी राजनैतिकादि विषयों में वे उनसे बहुत ही न्यून हैं ।

मेक्सिको के उत्तर मे टेक्सस, और उत्तर कालिफर्निया ये दोनों ही यूनाइटेड प्रदेश के अन्तर्गत हैं। पूर्व में मेक्सिको की खाड़ी और यूकाटन प्रायद्वीप; दक्षिण पूर्व में गोयाटिमाला, पश्चिम में शान्त महासागर।

मेक्सिको में आमेरिकन इण्डियन और स्पेनीय इन दोनों जातियों से उत्पन्न संकर जातीय लोग बहुत करके बसते हैं । यहां राज्यशासन का कुछ बंदोबस्त नहीं प्रजारक्षक कोई नहीं । सर्वदा ही हरहल्ला होती है । यहां वाणिज्य का प्रचार बहुत ही थोड़ा है । यहां के संकरजातीय मनुष्य रोमन के थोलिक धर्मावलम्बी हैं और स्पेनीभाषा बोलते हैं ।

मेक्सिको के मध्यस्थल माल्भेत्र(   )है। जिस्की ऊंचाई समुद्रतल से ६,०००, से ८,००० फ़ुट तक है । उन स्थलों में सब प्रकार के यूरोपीय शस्य और

फल उत्पन्न होते हैं मेक्सिको की भूमि अतिशय उर्वर है। यहां भिन्नदेशीय वृक्ष और लता भी बोई जा सक्ती हैं भुट्टा, नारिकेल वृक्ष, रूई नील और आलू बहुत उत्पन्न होते हैं।

मेक्सिको की कानोंमें केवल सोना और चांदी ही अधिक परिमाण से नहीं मिलते किन्तु पारा, तांबा, और टीन भी बहुत मिलते हैं। अफसोस यह है कि राज के अच्छा बन्दोबस्त न होने से इन सब स्थानों से भी कुछ लाभ नहीं होता क्योंकि यहां के प्रधान नगर में जहाज नहीं जाता और न यहां वर्तमान समय में रेल बनी है। कुछ दिन पहिले हरसाल यहां की कानों से ५,०००,००० पौण्ड के सोना और चांदी निकते थे सन् १८२१ में यहां बसे हुए स्पेनी लोगों ने अपने देशीयों के विपक्ष में बलवा उठाया जिस्से कानोंकाकाम यहां बन्द होगया।

मेक्सिको में ज्वालामुखी पर्वत हैं। इसलिये समय२ वहां भूचाल होता है और उन्से आग निकलती है उन ज्वालामुखी पर्वतों में से "पपोकेटिपेटल" पर्वत १७००० फुट ऊंचा है

मध्यसाधारणतन्त्रप्रदेश

वर्तमान समय में इन देशों के पांच विभाग हैं।

साधारणतन्त्रप्रदेश	क्षेत्रफलवर्गमीलोंमें	मनुष्यसंख्या
कोस्टारिका	२६,०४०	१९०,०००
ग्वाटीमाला	४१,८३०	१,१९०,०००
होंडुरास	३९,६००	१५०,०००
निकारागुआ	४९,५००	३५०,०००
सानसाल्वेडर	९,५९४	६३४,५१०

इन देशों का नाम कथन करने की कुछ आवश्य
कता नहीं क्योंकि सर्वदा ही इनकी सीमा नाम आदि
बदलता रहता है ।

मेक्सिको का मालदेश यहांपर आकर ह्र-
स्व हुआ है । यद्यपि यहां बीच २ में एक २ उच्च पर्व
त हैं तथापि साधारणतः यह देश ग्वाटिमाला के
दक्षिण पूर्व से निम्न है यहां की भूमि दलदल और
जङ्गलमय है । जलपवन उष्ण और सजल है
इसलिये पीड़ाकर है ।

पनामा का डमरूमध्य ५० मील से चौड़ा नहीं
और इसके मध्यस्थितभूमि १०० फुट से ऊंची नहीं।
बहुत दिन से इसके बीच से जहाज जाने के उपयो-
गी एक नहर करने का विचार होरहा है । ऐसी नह
र जब तयार होजायगी स्वेज की नहर से भी अधि-
क वाणिज्य का उपकार होगा क्योंकि इसके द्वारा अं-
ग्रेजी जहाज समुद्र बराबर आमेरिका के पश्चिम उप
कूल में आसकेंगे और अब जैसा इंगलण्ड से जापान
वा चीन में आने का समय उत्तम आशा अन्तरीप घूम-
ना पड़ता है इस नहर के होने से ऐसा नहीं करना पड़े
गा । ऐसे २ और भी बहुत स्थानों का रस्ता सीधा होजा
यगा । सुनता हूं कि इस नहर के लिये एक कम्पनी
भी बनी है ।

ब्रिटिश हण्डुरास

यह स्थान मेक्सिको की खाड़ी पर है इसका प्रधान

नगर वा बन्दर बेलिज नाम से प्रसिद्ध है । यहां से इंग्लैण्ड में महगनी आदि लकड़ी भेजी जाती है ।

वेस्ट इण्डियन द्वीपसमूह

इन द्वीपों में से क्यूबा द्वीप सब से बड़ा है । यह द्वीप स्पेन के अधिकार में है और यहां अधिक करके स्पेनी और नीग्रो लोग रहते हैं । क्यूबा भी और २ वेस्ट इण्डियन द्वीपों की नाईं बहुत उर्वर है और इस्की स्थिति उष्णमण्डल के बीच होने से यहां तमाकू, रूई, इक्षु, तथा और २ उष्णदेश के हदलनादि अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं । इस्की राजधानी और प्रधान बन्दर हेवाना है । यह नगर देखने में बहुत सुन्दर है और यहां २००,००० मनुष्य रहते हैं । बहुत दिन से क्यूबा में झगड़ा होरहा है कि जिस्से यहां की उन्नति बन्द होगई । यहां रहने वालों में से अधिक लोग इसे स्पेन की अधीनता से छुड़ाने चाहते हैं ।

हैटीद्वीप पहिले फरासीस और स्पेनी औपनिवेशियों से अधिकृत हुआ । वे लोग नीग्रो दासों के द्वारा अपनी २ खेती कराते थे परन्तु दासों ने अपने स्वामियों को मार के भगा दिया और आप मालक बन बैठे यहां की अवस्था बहुत शोचनीय है ।

जैमेकाद्वीप अंग्रेजों के अधिकार में है । इस्की जलवायु और २ वेस्ट इण्डियन द्वीपों की नाईं है । यहां से चीनी, नारियल, नील और तमाकू अन्य देशों में भेजे जाते हैं । १८३४ ई॰ में यहां के दास लोग स्वाधी

न किए गए। और उसी दिन से लेकर वे लोग कठिन परिश्रम नहीं करते क्योंकि थोड़े परिश्रम से ही यहां लोगों को अन्न मिलता है। इसलिये अंग्रेजी खेती करने वाले लोग कलकत्ते से कुलिओंको वहां पर मंगाते हैं।

दक्षिण आमेरिका

दक्षिण आमेरिका का आकार उत्तर आमेरिका से बहुत मिलता है अथवा केवल आकार ही नहीं, इसके नदी पर्वत आदि भी उसके सदृश हैं। आँडेश पर्वत श्रेणी पनामा के डमरूमध्य से दक्षिण आमेरिका की दक्षिण सीमा अर्थात् अन्तरीप तक विस्तृत है और इसके साथ उत्तर आमेरिका स्थित राकि पर्वत का सादृश्य होसक्ता है ब्रेजिल के पूर्व में समान्तराल पर्वतश्रेणी उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है जिसके साथ उत्तर आमेरिका के आलिगनिस पर्वतश्रेणी का अधिक सादृश्य है। दक्षिण आमेरिका के उत्तरभागों में जो आमेजन नदी बहती है उस्से सेएट लारेन्सनदी की तुलना होसक्ती है। प्लेट नदी जिसे स्पेनी लोग (राइयो डिला साटा कहते हैं दक्षिण आमेरिका के मध्य से बहकर दक्षिण समुद्र में गिरती है इस नदी से मिसिसिपि नदी की तुलना होसक्ती है।

परन्तु दोनों के अक्षांश में भिन्नता होने से और किसीविषयमेंसादृश्य नहीं दीख पड़ता है। कलम्बिया और ब्रेजिल के उत्तर भाग जो निरक्ष रेखा के नीचे हैं

बहुत उष्ण है और उष्णदेशीय जंगल से भरे हुए है।
यहां ताल और बांस वृक्ष बहुत उत्पन्न होते हैं । यहां
बन्दर अधिक देख पड़ते हैं । उधर कनाडा में शीत-
देशीय वृक्ष अधिक है । और यह देश बरस के चार
महीने बरफ से आच्छन्न रहता है । आन्देशपर्वत-
श्रेणी समुदय ज्वालामुखी है । आमेरिका के आ-
विष्कार से आजतक इस बहुत बेर ज्वाला निकली
और भूचाल हुआ जिससे बड़े २ नगर नष्ट होगए ।
यहां के ज्वालामुखी शिखर समुदय १०००० फ़ुट से
भी ऊंचे हैं इसलिये निरक्षरेखा पर भी यह शिखर
बरफ से ढके रहते हैं और जिस समय उन्से ज्वालानि
कलती है उसी समय वहां के बरफ समुदय गलक-
र निचली भूमि जलप्लावित भी करते हैं । आन्देश
पर्वत की ऊंचाई १५००० से २०,००० फ़ुट तक है ।
इसलिये ऊंचाई में यह पर्वत केवल हिमालय से नी-
चे हैं । इसमें आकनगुआ नाम सर्वोच्च ज्वालामुखी
शिखर है । यह चिली नाम स्थानपर है और इसकी
ऊंचाई २३ ९०० फ़ुट है ।

आन्देश पर्वत पश्चिम की ओर अपनी अधित्य-
का (टेबल लैंड) से कट गया हुआ है परन्तु पूर्व की
ओर इसकी ढलाई क्रम से हुई है । आन्देश पर्वत के
पूर्व की ओर पेरू और बलिविया में ८००० से ११,०००
फ़ुट तक उच्च समतल देख पड़ते हैं और वहां से क्रम-
शः आर्जेनटाइन और पेटेगोनिया के समुद्रतट तक ढल

गता ऊई है । ब्रेजिल के पूर्व में उत्तर से दक्षिण तक समान्तराल पर्वत श्रेणी । आन्देशकी तुलना से इस्की ऊंचाई बऊत थोड़ी है । समुद्र के समीप यह यद्यपि उच्च देख पड़ती है परन्तु इस्की ऊंचाई ६००० फ़ुट से अधिक कहीं नहीं । ब्रेजिलस्थित पर्वत के शिखर समुदय जंगल से भरे ऊए हैं । पेरु और बलिविया के माल भूमि पर एक भी वृक्ष नहीं ।

ग्वाईयाना दक्षिण से कुछ पश्चिम तक जो पर्वतश्रेणी स्थित है उस्की उच्चता समुद्रतल से ८००० फ़ुट से अधिक नहीं । यह पर्वत श्रेणी आमेजिन के जलाशय (बेसिन) को आरिनको के जलाशय से पृथक् करती है ।

आमेजन नदी पृथ्वी की समुदय नदियों से बड़ी है इस्के मुख से ४५० मील तक इस्की चौड़ाई ४ मील है । यह ऐसे वेग से समुद्र में आकर गिरती है कि इस्के मुख से ५०० मील तक समुद्र का जल आविल रहता है । १५०० मीलतक आन्देश पर्वत से जितनी छोटी २ नदियां निकली हैं वे सब आमेजन में आकर गिरती हैं । इस्की दो प्रधान शाखा नदी हैं— दक्षिण में मेडीरिया और उत्तर में राइयोनीग्रो । टकाण्टिस नदी यद्यपि आमेजन नदी के मुख में गिरती है तोभी उसे इस्की सहायक वा शाखानदी नहीं कहा जा सक्ता । इन नदियों के मध्यस्थान मनुष्य के वासोपयोगी नहीं वे सब जंगल से भरे ऊए हैं ।

ओरिनू की नदी भी बड़ी नदियों में गिनी जाती है इसकी पुलिनभूमि में बज्जत जंगल नहीं। इसके तीर पर बड़े २ विस्तृत मैदान हैं जिन्में हृक्ष थोड़े होते हैं और जो वर्षाकाल में जल से ढके ज्जए रहते हैं।

प्लेट वा राश्यो डिलाप्लाटा यह भी एक एथ्वी की बड़ी नदियों में है

दक्षिण आमेरिका में कोई बड़ी झील नही। बलिविया में टिटिकाका नाम झील है जो समुद्रतल से १२,८००० फ़ुट उच्च है। माराकैबो झील जो कलम्बिया में है; यह एक समुद्र की खाड़ी है और इसका जल लवणमय है

दक्षिण आमेरिका का वह भाग जो इसकी उत्तर सीमा से दक्षिणायन रेखा के बीच है, वह उष्णमंडल के बीच है और उसकी जलवायु उष्ण है। हां, यहां के पर्वतों पर जलवायु शीतल है और ६००० फ़ुट उच्च मालभूमि की जलवायु नाति शीतोष्ण है। दक्षिणायन रेखा के दक्षिण में दक्षिण आमेरिका की जलवायु यहां तक कि पटागोनिया की जलवायु बज्जत ही ठण्डी है। वहां सर्वदा शीतल वायु बहती है परन्तु यूरोप उसी अक्षांश रेखा पर जो देश है उसकी प्रकृति यहां से उष्ण है। यह एक जो प्राकृतिक नियम है कि दक्षिण सममण्डल की जलवायु निरक्षरेखा से उतनी ही दूरी पर किसी अक्षांशरेखा में स्थित सममण्डल की जलवायु से शीतल है इसनियम का उदाहरण यहां ही है।

दक्षिण आमेरिका के पश्चिम भाग जो चिलि के आर से कलम्बिया तक और समुद्र के उपकूल से आन्देश पर्वत तक विस्तृत है उस पर वर्षा बहुत थोड़ी होती है। केवल समय २ मेघ आकर आमेज़न नदी की पुलिनभूमि पर दो एक बूंद पानी बरसा कर खुश्क हो जाते हैं। आन्देश पर्वत के पश्चिम में सदैव शुष्क हवा चलती है।

आन्देश पर्वत के मध्य में अर्थात् पेरु से चिली तक जितनी खाने हैं उनसे ही बहुत करके पृथ्वी के देश देशों में चांदी भेजी जाती है। यहां तांबे की खान से बहुत लाभ होता है इसलिये पेरुनिवासी लोग कहते हैं कि जो सोने की खानों से मुनाफा करना चाहता है उसके सर्वस्व का नाश निश्चित है और जो चांदी की खान से लाभ करना चाहता है उसकी जीविका कथंचित् होजाती है और जो तांबे की खानों से जीविका करना चाहता है उसकी सम्पत निश्चित है।

आन्देश पर्वत के मध्य में शीशा, लोहा, पारा, प्लाटिमनि और संखिया प्रभृति धातुओं की खान हैं परन्तु चांदी की खानों की अधिकता से उन की प्रसिद्धि नहीं हुई है।

पृथिवी के अपर स्थानों से दक्षिण आमेरिका की बसति बहुत ही विरल है। यहां के रहने वाले आमेरिकन इण्डियन और संकर जातीय हैं। ब्रेज़िल में

पोर्त्तुगीज़ श्रौर नीग्रो जातीय लोग भी बहुत हैं । ब्रेजिल में पोर्त्तुगीज़ भाषा का बहुत प्रचार है । यहां स्पेनियों से उत्पन्न संकर जातीय लोक स्पेनी भाषा भी बोलते हैं । जो लोग स्पेनी श्रौर पोर्त्तुगीज़ भाषा बोलते हैं उन का धर्म्म रोमन कैथोलिक है । श्रामेरिकन इण्डियनों में नानाप्रकार की भाषा प्रचलित है । यहां की भाषा पुरानी पृथ्वी की किसी भाषा से नहीं मिलती । दक्षिण श्रामेरिका के सब प्रदेशों में प्रायः रोमन कैथोलिक पादरी ईसाई धर्म के प्रचार के लिये बसे हुए हैं । बहुत स्थानों में इनका यत्न सफल हुश्रा है । उन पादरियों की सुशिक्षा से बहुत श्रामेरिकन इण्डियन एक स्थान में स्थिर होकर खेती करने लगे हैं ।

दक्षिण श्रामेरिका में हाथी वा गैंडा नहीं देख पड़ता । पम्पसनाम से प्रसिद्ध देशों में बन्यघोटक बहुत हैं । यहां असल शूकर नहीं; पेकरी नामक शूकर जीव दो प्रकार के देख पड़ते हैं । बिल्लियों में पुमाजातीय बिल्लियें जो उत्तर श्रामेरिका के उष्ण देशों में रहती हैं यहां भी बहुत जगह देख पड़ती हैं। जागुयार नामक एक प्रकार की बड़ी बिल्ली दक्षिण श्रामेरिका के उष्ण प्रदेशों में रहती है । यह बिल्ली बाघ से छोटी श्रौर हीनबल है परन्तु चीते से बहुत जोरावर श्रौर बड़ी है । यह जीव हृक्ष पर चढ़ जाता श्रौर बांदरों को पकड़ २ कर खाता है।

कहते हैं कि यह बांदर मांस का प्रिय है । दक्षिण आमेरिका में गृहपालित बिल्ली से बड़ी २ बिल्ली नानाप्रकार की देखी जाती हैं ।

दक्षिण आमेरिका के पूर्व उपकूल के समीप ह्वेलमत्स्य नानाप्रकार के हैं । बड़ी नदियां जहां गिरती हैं वहां ९० फ़ुट लम्बी समुद्र गो देख पड़ती है । दक्षिण आमेरिका की नदियों में एक प्रकार का मत्स्य है जो १५ फ़ुट तक लम्बा होता है ।

लामा वा आल पाका जीव जो प्राणितत्त्वविद्या के अनुसार ऊंट जातियों में गिना जाता है परन्तु इस्का आकार ऊंट से बहुत छोटा होता है । यह जीव साधारणतः बड़े २ छागों की नाईं दीखपड़ता है । इस्का लोम लम्बा और सुन्दर होता है । इसी के लोम से ही अलपाका नाम से प्रसिद्ध वस्त्र और शाफार आदि प्रस्तुत होते हैं । इस्के ऊपर लोग पहाड़ में द्रव्य भेजा जाता है यह सौ पाउंड तक का भार उठा सक्ता है और रोज़ १५ मील तक जासक्ता है ।

यहां शाकून नाम एक प्रकार का वन जीव जो देखने में भल्लूक की नाईं है परन्तु इस्का आकार लोमड़ी से भी छोटा होता है ।

यहां बांदर नानाजातीय है । मारमोसेट नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार छोटा बांदर है जिस्का शिर गोल है और पूछ लम्बी होती है दक्षिण आमेरिका

में और एक प्रकारके बांदर रहते हैं जिन्का आकार बहुत ही छोटा परन्तु इन्के गले पर एक थैली है जिसे आवाज एक मील के उपरान्त दूर पर से भी सुनी जाती है ।

यहां तीन प्रकार के अपोसमनाम थैली वाले जीव हैं । दन्त शून्य स्तन्यपायी पशु केवल दक्षिण आमेरिका में ही रहते हैं । यहां बहुत बड़े स्तन्यपायी पशु नहीं मिलते ।

दक्षिण आमेरिका में एक प्रकार का पिपीलिका (कीडी) भुक पशु है । इस्का मुख और जीभ लम्बी होती है । इन्में से कोई साढ़े चार फुट लम्बा होता है । वहां आरमाडिलोनाम एक प्रकार का वन्य जीव रहता है इस्का आकार छोटा शूकर का सा है । इन्का शरीर स्वाभाविक अस्थिमय चर्म से आच्छादित है । यहां स्लोथ नाम एक प्रकार का जीव है जो दो फुट लम्बा होता है और सर्वदा वृक्ष पर ही रहता है ।

आमेरिका की दक्षिण सीमा पर पेंगुइन नाम से प्रसिद्ध एक प्रकारके जलचर पक्षी असंख्य दीख पड़ते हैं । इन्का पर बहुत छोटा और खुला हुआ होता है । इस लिये यह उड नहीं सक्ता यह पक्षी सर्वदा जलमें ही रहता है । और मछली की नाईं अपने छोटे परों को फैला कर इधर उधर घूमता है । यह अंडे देने के समय के-

वल जमीन पर आता है । इस्की विष्ठा से गुत्राने नामसे प्रसिद्ध और उसे भूमि की उर्वर शक्ति बढ़ती है । इसलिये बड़े २ जहाज भर के उनका विष्ठा इंग्लेण्ड देशमें भेजा जाता है । जलचर पक्षियों में बक नाना जातीय देखे जाते हैं । आमेरिका का उष्ट्रपक्षी आफ्रीका के उष्ट्रपक्षी की नाईं बड़ा नहीं होता । और इस्का पर भी उतने मोल से नहीं बिकता। यहां के उष्ण प्रदेशों में नानाजातीय तोता देख पड़ता है । यहां टेंगर नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार का पक्षी रहता है जो और देशों में नहीं है । इस्का वर्ण नाना प्रकारका होता है । दक्षिण आमेरिका में इस पक्षी के १०० भेद देखे जाते हैं । फ्रुट क्रो (फल-काक) नामी एक जातीय पक्षी केवल दक्षिण आमेरिका में होते हैं । इन्के भी अनेक भेद होते हैं। उन्में से एक प्रकार एसा है कि उन्का रंग सारा श्वेत ही होता है और घण्टा नाद की नाईं बोलता है । ये १२ इञ्च तक लम्बे होते हैं । दक्षिण आमेरिका में हमिंग पक्षी, बाज ईगल और गृध्र बहुत हैं ।

यहां अनेक प्रकार के विषयुक्त सर्प, कुम्भीर आदि जीव बहुत हैं । यहां कीड़े और पतंग भी नानाप्रकार के होतेहैं परन्तु इन्में से ऐसे बहुत हैं जो पुरानी पृथ्वी के कीड़े वा पतंगो से नहीं मिलते ।

दक्षिण आमेरिका में अच्छे और उपकारी उद्भिज्ज भी अनेक प्रकार के होते हैं ।

घासों में भुट्टा और गेहूं प्रधान हैं । वृक्षों में नानाविध बांस, ताल, खजूर आदि, केला, देवदारु, प्रभृति बहुत हैं । पेंपियो वृक्ष जो भारतवर्ष के बंगाला प्रभृति उष्णप्रधान देशों में आजकल बहुत देखे जाते हैं । इस्की उत्पत्तिस्थान दक्षिण आमेरिका ही है । वहां इस्के अनेकप्रकार के भेद हैं । दक्षिण आमेरिका के उपकारी वृक्षों में से कक्कुया नाम एक प्रकार का वृक्ष है जिस्के द्वारा उत्तर और दक्षिण आमेरिका के लोगों को भोजननिर्वाह होता है । यह वृक्ष क्षुद्रजातीय है ।

दक्षिण आमेरिका में बहुत अच्छी मेहगनि लकड़ी उत्पन्न होती है । गोल आलू जो अब पृथ्वी के सर्वत्र ही उत्पन्न होता है यह पहिले पहिल दक्षिण आमेरिका के आन्देश पर्वत के ऊपर ही उत्पन्न होताथा । ऐसा तमाकू और सिनकोना जिस्से ज्वर का महोषध कुनीन उत्पन्न होता है वे भी दक्षिण आमेरिका देशीय हैं ।

दक्षिण आमेरिका में नीचे लिखे हुए राज्य हैं ।

देशविभाग	प्रधाननगर	क्षेत्रफल वर्गमील में	मनुष्यसंख्या
त्रनीदाद (द्वीप)	पोर्ट-आफ-स्पेन	१७५४	१०९,६३८
इक्वेडर	क्विटो	२४८,९९४	१,३००,०००
कलम्बिया	बगोटा	४३२,४००	३,०००,६३३
वेन्जुला	कारकस	३६८,२३५	२,२००,०००
ब्रिटिशगाइना	जार्जटौन	७६,०००	१९३,४९१
डचगाइना	पारामारिबो	६०,०००	५०,२१०
फ्रेञ्चगाइन	केयिनि	४०,०००	२४,४३२
ब्रेजिल	राइयोजेनेरियो	३,२७५,३२६	१०,१९६,२३८
पेरू	लिमा	५०२,७६०	३,९९९०००
बलिविया	लापज	४७३३००	१,९४२,३५२
पारागुए	असनकपन	५७,३०३	१,३००,०००
उरुगुए	मण्टिविडियो	७३,५३८	२२२,२४३
लाप्लाटा	बुइनसएरेस	५१५,७००	१७३६९२२
चिलि	सेंटियागो	२५०९७७	२००८,८६१
पाटागोनिया		३००,०००	५०,००
फाकलैण्डद्वीप		१३,०००	६२१

त्रनिदाद द्वीप अंग्रेज़ों के अधिकार में है। यह वेस्टइण्डियन द्वीपों में है तो भी दक्षिण आमेरिका के अधिक समीप होने से इसी के अन्तर्गत समझा जाता है। इसकी भूमि अतिशय उर्वर है। इसमें अंग्रेज़ी पाठशाला हैं जिनमें बड़े २ विद्वान् अंग्रेज शिक्षा देते हैं। यहां के छात्र केम्ब्रिज विद्यालय की परीक्षा में उत्तमरूप से उत्तीर्ण हुए हैं।

इक्वेडर— यहां के अधिवासियों में १०,१०००००० स्पेनी संकरजातीय और २००,००० आदिम असभ्य जातीय मनुष्य। यहां राज्य शासन का अच्छा बंदोबस्त नहीं। यहां से कक्रया और सिनकोना इंगलैण्ड

में भेजे जाते हैं । इस्का प्रधान नगर किटो समुद्र-तल से ९५०० फ़ुट ऊंचा हैं । इस्के तुल्य ऊंचा नगर पृथ्वी पर बहुत थोड़ा है । यहां सदैव भूचाल होतेहैं । बहुत बेर यह शहर उजाड़ होगया क्योंकि यह नगर ज्वालामुखी के समीप है । ७९० ई. में इक्वाडोर का दूसरा नगर राइसोबम्बा भूचाल से अधिवासियों समेत आकाश में उड़कर लिकन नदी में गिरा था ।

कोलम्बिया—इस्के वासिन्दों में १९००,००० स्पेनी संकर जातीय, १००,००० आदिम असभ्य जातीय और थोड़े नीग्रोजातीय हैं । यहां के राज का भी कुछ ठिकाना नहीं और सर्कारी ऋण अधिक है । यहां से सिनकोना इंग्लैण्ड मे भेजा जाता है । यहां के लोगों का प्रधान खाना कदलीफल है यहां सोना चांदी और ताम्बे की खान बहुत है परन्तु यहां की गवर्न्मेण्ट इस्से कुछ लाभ नहीं उठासकी । पहिले स्पेनियों का बसाया हुआ कोलम्बिया नगरप्रधान था अब इस्की कुछ रौनक नहीं ।

वेनेज्वेला—इस्के अधिवासियों में ६००,००० स्पेनी वर्णसंकर और ६००,००० आदिम असभ्य लोग हैं । यहां कुछ दिन हुए कि बरोगी विद्रोह होता रहा जिस्से देश का ऋण बहुत बढ़ गया । यहां से इंग्लैण्ड में काफ़ी और रूई अधिक करके भेजे जाते हैं । यहां चांदी टीन और शीशा की खानें हैं परन्तु

उन्से बड़त थोड़ा फाइदा होता है । इस्की राजधानी और प्रधान नगर काराक्कास है जिस्मे ५०,००० मनुष्य रहते हैं । पहिले कलम्बिया इक्काडोर और वैनेज़िला के अन्तर्निविष्ट था । अब अयोगी विवाद के कारण यह उन्से पृथक् किया गया ।

ब्रिटिश गाइना।— इन्के अधिवासियों में ४०,००० आदिम असभ्य हैं । इस्के उपकूल की ओर थोड़ेर अंग्रेज, उचनीग्रो और संकर जातीय मनुष्य रहते हैं । यहां चीनदेशीय और हिन्दू कुली भी बड़त हैं।

डच गाइना— ब्रिटिश गाइना और डच गाइना ये दोनों ही प्रदेश पहिले डचों से बसाए ड़ए और उन्से अधिकृत थे । डच गाइना को सुरिनम भी कहते हैं क्योंकि यहां सुरिनम नाम एक बड़ी नदी है।

फ्रेञ्च गाइना— इस स्थान पर फ्रेञ्चलोग अपराधियों को निर्वासित करते हैं । यह देश बसने के उपयोगी नहीं क्योंकि यहां का जलपवन अच्छा नहीं ।

ब्रेज़िल—यह देश पोर्त्तुगीज़ों का उपनिवेश है परन्तु सन् १८२१ से स्वाधीन ड़आ । यहां स्पेनियों के उपनिवेशों से उन्नति देखी जाती है । यहां की भूमि उर्वर है । यहां १०,००,००० मनुष्य रहते हैं जिन्में से २,०००,०० नीग्रो हैं । अब शेषों में संकर जातीय, पोर्त्तुगीज़ और आमेरिकन इण्डियन हैं । इसमे तीन प्रधान नगर हैं—राइयोजेनिरो, वाहिया, और

पारनम्बुको । इनमें से राइयो जेनिरो राजधानी है । ब्रेजिल से इंग्लेगड में रूई और चीनी भेजी जाती है । यहां पर ७५० मील रेल बनी है । यहां अबतक अधिक भूमि उजाड़ पड़रही है । यह स्थिर हुआ कि यदि ब्रेजिल में नियमित रूपसे खेती की जावे तो उस्से यूरोप के द्विगुण मनुष्यों का पोषण होसक्ता है । आमेजन नदी में अब धुंआकस भी चलते हैं ।

पेरु—इसके अधिवासियों में से आधे आमेरिकन इण्डियन हैं चौथा हिस्सा आदिम संकर जातीय हैं और बाकी स्पेनी, चीनदेशीय, नीग्रो और अपर जातीय हैं । यहां के वाणिज्य द्रव्यों में से ग्वानो नाम उर्वर कारी मैला प्रधान है । पेरु का मध्यभाग मालक्षेत्र है जिस्की ऊंचाई १०,००० से १२,००० फुट तक है । यहां चांदी की खानें बहुत हैं । इसकी राजधानी लामा है जिसमे १२००१० मनुष्य रहते हैं । यहां अनेक वार भूचाल हुआथा । यहां ६०० मील रेल बनी है । यहां सर्कारी ऋण ऐसा बढ़ गया है कि थोड़े दिन में जब यह मैला न रहेगा तो यह देश दरिद्र होजायगा ।

वोलिविया—यह एक स्पेनदेशीय उपनिवेश स्थान है यहां भी बहुत दिन से घरेलू विवाद चल रहाहै । यहां के अधिवासियों में २००,००० आदिम असभ्य हैं और १,७००,००० स्पेन देशीय वर्णसंकर हैं । यहां से ग्वानो नाम मैला, चांदी सिनकोना,

और कक़ुया अपर देशों में भेजे जाते हैं । इस देश की आमदन विशेष करके विदेश में भेजे हुए ग्वानो और त्रिनकोना पर लगे हुए मसूल से होती है परन्तु यहां सर्कारी ऋण अधिक है । बलिविया का मध्यभाग भी मालक्षेत्र है और उस्की ऊंचाई १०,००० से १४,००० फ़ुटतक है।इस्का प्रधान नगर लापाज़ है ।

पराग्वे— इस्के अधिवासियों में से आमेरिकन इण्डियन की संख्या अधिक है । युद्ध के स्वभाव से यह देश एक वेर नष्ट होगया । यह देश ऐसा निर्धन होगया है कि पुनः उन्नति की आशा नहीं । यहां के वाणिज्यद्रव्यों में से तमाकू और चा प्रधान हैं ।

उराग्वे— इसमें स्पेनी वर्णसंकर और आदिम असभ्य लोग रहते हैं । इसमें आजकल यूरोप से नानाजातीय लोग आकर बसने लगे हैं । यह देश बैल और मेष के पोषण के लिये बहुत अच्छा है । इस्का प्रधान नगर मांटि विडियो एक बन्दर है । उस्से वाणिज्य का अधिक प्रचार है । यह देश भी ऋण युक्त है ।

लाप्लाटा— इसे आर्जेण्टिन साधारणतन्त्र भी कहते हैं । यह भी एक पाम्पा देश है । इस में तृण से आच्छन्न बहुत विस्तृत समतल क्षेत्र हैं जिनमें गो मेष आदि पशु अच्छी रीति से प्रतिपालित होते

हैं । इसमे आमेरिकन इण्डियन और स्पेनदेशीय संकर जातीय मनुष्य अधिक करके रहते हैं उन के सिवाय अंग्रेज, इतालीय, जर्मन और अपर यूरोपीय मनुष्य भी नए बैठे हुए हैं । यहां से पशुलोम और चमड़ा विदेश में भेजे जाते हैं । इसका प्रधान नगर वियुयेन आयर है जिसमें २००,००० मनुष्य रहते हैं । यहां ६०० मील रेल चलती है ।

चि ली– आन्देश पर्वत के पश्चिम तट पर है । यह भी एक स्पेन देशीय साधारणतन्त्र है । यहां ६०० मील रेल बनी है । यहां से तांबा गेहूं, चांदी और पशुलोम अपर देशों में भेजे जाते हैं । चिली के उत्तर प्रदेश में वर्षा बहुत थोड़ी होती है । इसका प्रधान नगर सैण्टियागो । बल पराइसो नगर इसका प्रधान बंदर है । दक्षिण आमेरिका स्थित स्पेन अधिकृत देशों में से चि लीकी अवस्था अच्छी है ।

पटागोनिया– यह एक ऊषर प्रदेश है इसमें पैटगोनियन नाम बड़ी असभ्य जाति रहती है । उसका व्यापार केवल मछली पकड़ना और पशु मारनाहैं ।

फकद्वीप समूह– अंग्रेजों के अधिकार में हैं ये भी ऊषर हैं ॥

इतिश्री·